

विषयः	पृष्ठाङ्कः
कफका विवरण ...	२६
स्नायुकार्य तथा सन्धिलक्षण...	२६
हृदियों व ममोंके कार्य ...	२६
शिराओं व धमनियों के कार्य ...	२७
पेशी, कण्ठराच छेदों का विवरण,	२७
कुफुलादिकों का रूप व लक्षण	२७
लक्षण ...	२७
चूक, वृषण व लिङ्गका लक्षण ...	२८
हृदय के लक्षण व देहपुष्ट्यर्थ	२८
व्यापार ...	२८
प्राणवायुका व्यापार ..	२८
आयु व मरण के लक्षण	२८
अर्वाय सृत्युको कहकर रोगों का	२८
निवारण...	२८
साध्यव्याधि का उपाय न कर	२८
दूसरी अवस्था में जाना ...	२८
दोषोंकी विषम व समवस्था	२९
वृष्टिक्रम का निरूपण ..	२९
परमात्मा का प्रकृति द्वारा विश्व	२९
रचना ...	२९
एकसे कार्यकी उत्पत्ति का क्रम	२९
तीन प्रकार बहद्धार के कर्म ...	२९
तन्मात्राओंकी उत्पत्ति व तन्माना	३०
पञ्चकों का विशेष ..	३०
पृथिव्यादि पञ्चभूतों की उत्पत्ति	३०
व इन्द्रियों के विषय ...	३०
मूल प्रकृति के नाम व चौबीस	३०
तत्त्वों का पृथक्करण, षोडशवि-	३०
कार तथा चौबीसतत्त्वराशि	३०
जीवके बन्धन, काम, क्रोध, लोभ,	३१
मोह और बहद्धार ...	३१
बन्धन, अबन्धन, व्याधि और	३१
आरोग्य के लक्षण ...	३१

इति पञ्चमाध्यायः ॥

विषयः	पृष्ठाङ्कः
<b>अथ षष्ठाध्यायः ॥</b>	
आहार की गति व अवस्था ...	३१
उक्त आहार की दो अवस्था ...	३१
रस और आम के वृत्त्य ...	३२
आहार का सार कहकर ति-	३२
स्तार का कथन ...	३२
मलका अधोगमन करना ...	३२
कार्यत्व से सारभूतरस का भी	३२
स्थानान्तर में जाना ...	३२
रुधिर की प्रधानता ...	३२
रसादि धातुओं का उत्पत्तिक्रम	३२
गर्भोत्पत्ति व पुत्र तथा कन्याके	३२
जनने का कारण ...	३२
बालकों की मात्राओं का माग	३३
अज्ञानादि लगाने का समय, व-	३३
मन व विरेचनादि कर्म ...	३३
बाल्यादि दश पदार्थों की हानि	३३
वातप्रकृति, पित्तप्रकृति तथा	३४
कफप्रकृति के लक्षण ...	३४
द्वित्रिदोषज प्रकृति के लक्षण	३४
निद्रादिकों की उत्पत्ति तथा	३४
ग्लानि व भालस्य के लक्षण	३४
जंभाई, छींक और डकार के	३५
लक्षण ...	३५
इति षष्ठाध्यायः ॥	
<b>अथ सप्तमाध्यायः ॥</b>	
त्वरादि रोगोंकी गणना ...	३६
अतीसार व संप्रहणीरोग ...	३६
प्रवाहिका व अजीर्णरोग ..	३७
अलसक व विद्व्यादिरोग .	३८
धवासीर, चर्मकोल व वृमिरोग	३९
पाण्डुरोग, कामला, बुम्भकाम	४०
ला, हलीमक व रकपित्तरोग	४०

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
फास (खांसी) व क्षयीरोग ...	४०	वीसभांति के कफरोग ...	६४
शोथ व द्रुमासरोग ...	४१	रक्तरोग तथा औष्ठरोग ...	६५
हिचकी व जाठराग्निविषकार ...	४१	दशभांति के दन्तरोग व तेरह प्रकार के दन्तमूलरोग ...	६५
शरोचक व छट्टिरोग ...	४२	जिह्वा, तालु और गले के रोग	६६
स्वप्नेद, कृष्णा, मूच्छी, भ्रम, निद्रा, वन्द्रा और संम्यासरोग तथा म्दरोग ...	४२	आटभांति मुदान्तर्गत रोग ...	६७
गदात्यय, दाह, उन्माद व भूतोन्मादरोग ...	४३	अठारह भांति के कर्णरोग ...	६७
✓ अपस्मार (मिरगी) व आमघात रोग तथा शूलरोग	४४	सातभांति के कर्णपालीरोग ...	६८
परिणाम शूल व उदावर्तरोग ...	४५	कर्णमूल व नासरोग ...	६९
जानाह, प्रत्यानाह, उरोग्रह और उदररोग ...	४६	दशभांति के शिरीरोग ...	६९
अध्विध शुक्ल (गोला) रोग ...	४६	नवभांति के कपालरोग ...	७०
तेरहप्रकार का सूनाघात व मूत्रकृच्छररोग ...	४७	चौरानव भांति के नेत्ररोग ...	७०
✓ पथरीरोग तथा प्रमेहरोग ...	४८	सौवीस धर्मरोग ...	७१
एक प्रकारका सोमरोग ...	४८	नेत्रसन्धिगत व नेत्रशुद्धिगत रोग	७१
✓ प्रमेहपिटिका, मेदोरोग व शोथ रोग ...	४९	नेत्रके कालेयदूले के रोग ...	७१
वृद्धि, धण्डवृद्धि, गण्डमाता, गलगण्ड व अपचीरोग ...	५०	छ भांतिका फाचबिन्दुरोग ...	७२
अर्जुन, इलीपद और विद्रधिरीरोग	५१	तिमिर, लिंगनाश, दृष्टि, अभिचन्द, अधिमन्य, सर्वाक्षि रोग, पदरोग और शुक्रदोष	७४
पन्द्रह प्रकार के प्रणरोग, वागन्तुन प्रणरोग, कोष्ठ तथा अस्थिभंगरोग ...	५२	छिर्यो के आतंय व प्रदररोग	७३
अग्निवृद्ध, नाड़ीद्वण, भगन्दर व उपपन्नरोग ...	५३	वीसभांति के योनिरोग ...	७३
रूतुरोग तथा कुष्ठरोग	५४	योनिक्न्दरोग तथा गर्भकुरोग	७३
कुष्ठ, विरुकोष्ठक तथा मसुरिका रोग ...	५५	स्वनरोग, रीदोष, प्रसृतिरोग तथा बालरोग ...	७४
गवप्रकार का विसर्परोग ...	५७	बारहभांति के चाटग्रह ...	७६
शीतपित्त व अम्लपित्तरोग ...	५८	बलुकरोगों का संग्रह ...	७७
घातरक्त व घातज रोगगणना ...	६०	पञ्चकर्मों के मिथ्यादि धोष से भावीरोग या स्नेहादिकों से उपजे रोग ...	७७
धमालीस भांति के पिधरोग ...	६३	शीतादिकों से उपजेरोग ...	७७
		र्याग्र, जंगम व वृत्रिममेद से तीनभांति का विपरोग ...	७८
		विपनेद, अन्याधिपनेद, उपद्रव और आशुतुक भेद ...	७९
		इति सप्तमाध्यायः ॥	
		( इति प्रथमखण्डः )	

विषयः	पृष्ठाङ्कः	विषयः	पृष्ठाङ्कः
<b>अथ मध्यखण्डः ॥</b>		<b>अथ द्वितीयाध्यायः ॥</b>	
स्वरसादि पञ्चकपाय ...	८०	आमनातपरदूसरासौंठिपुटपाक	८५
स्वरस य स्वरसकी दूसरीविधि	८०	बनासीर पर सूदन पुटपाक ..	८५
स्वरस की तृतीयाविधि य उसमें		हृदयशूलपर हरिणभृङ्गपुटपाक	८५
औषध मिलाने का मान ...	८०	इति प्रथमाध्यायः ॥	
अमेहपर अमृतादिस्वरस ..	८०	<b>अथ द्वितीयाध्यायः ॥</b>	
रक्तपित्तादिकों पर अडूसादि		काथ ( काड़ा ) बनाने का	
काथ ... ..	८१	विधान ... ..	८५
कामलापर त्रिकलादि स्वरस ...	८१	काढ़े में यांष्ट, मिथी और शहद	
धिपमज्वरपर तुलस्यादिस्वरस	८१	ढालने का प्रमाण ...	८५
रक्तातिसारपर जम्ब्यादिस्वरस	८१	काढ़े में जीरादि य दूधआदि	
अतीसार पर धवूरादिस्वरस ...	८१	मिलाने का मान ... ..	८५
अण्डकोश य द्वास पर आर्द्रक		सर्वज्वरों पर गुडूच्यादि काथ	८६
स्वरस ... ..	८१	घातज्वरपर गिलोयादिकाथ ..	८६
पाश्यादि शूलों पर थिऔरे का		घातज्वरपर शालपण्यादिकाथ	८६
स्वरस ... ..	८१	घातज्वर पर कादमर्यादिकाथ	८६
पित्तशूल पर शतायरीस्वरस ...	८२	पित्तज्वर पर कट्फलादिकाथ	८६
गण्डमाला य अपची पर मोरख-		पित्तज्वरपर पित्तपापरादिकाथ	८६
मुण्डीका स्वरस ... ..	८२	पित्तज्वर पर द्राक्षादिकाथ ...	८६
सूक्ष्मोयतादि पर मुण्डीस्वरस	८२	कफज्वर पर थिऔर पाचन ...	८७
उन्माद पर घ्राह्यादिस्वरस ...	८२	कफज्वर पर चिरायतादिकाथ	८७
उन्मादपर श्वेत कृष्णाण्डस्वरस	८२	कफज्वर पर पटौलादिकाथ ..	८७
घावपर थरियाका स्वरस ...	८२	घातज्वरपर पित्तपापरादिकाथ	८७
पुटपाकरत्त का विधान ...	८२	कफघातज्वरपरछोटीभट्टय देया	
सूर्यातीसारपर कुरैयापुटपाक	८३	काथ ... ..	८७
घावल घोषन की विधि ...	८३	घात कफज्वरपरअमलतासादि	
अरलूपुटपाक ... ..	८३	काथ ... ..	८७
न्यग्रोधादि य दाहिमादिपुटपाक	८३	अमृताष्टक काथ ... ..	८८
उपाकीपर थिऔरेका पुटपाक ..	८३	सय ज्वरोंपर भटकटैयादिकाथ	८८
रक्तपित्त य कासज्वरपर अडूसा		घातकफपर दशमूलकाथ ...	८८
पुटपाक ... ..	८४	सन्निपातज्वरपर हरीतकीकाथ	८८
कास द्वास पर भटकटैया का		सन्निपातादिकों पर अष्टादशरु	
पुटपाक ... ..	८४	काथ ... ..	८९
पुराने आमातीसारपर सौंठि		कासादिकोंपरकाथकरादिकाथ	८९
पुटपाक ... ..	८४	गुडूच्यादि काथ तथा पर्यटादि	
		काथ ... ..	८९

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
सर्वशीतज्वरपर भटकटैयाकाथ	८९	कफशूलपर परण्डमूलादिषाथ	९५
विषमज्वर पर मोषाकाथ ...	८९	हृदयरोग पर दशमूलादिषाथ	९५
नित्यधातेज्वर पर पटोलादि काथ ... ..	९०	मूत्रहृच्छपर अर्जुनादि काथ...	९५
सृतीयज्वरपर गुडूच्यादिकाथ .	९०	अश्मरी ( पथरी ) व शर्करादि पर पलादिकाथ... ..	९५
चातुर्थिकज्वर पर देवदाण्याय	९०	मूत्रहृच्छ पर गोधुरादिकाथ...	९६
ज्वरातीसार परसुडूच्यादि काथ	९०	सूत्रकृच्छ पर त्रिकलादिकाथ ..	९६
ज्वरातीसार पर नागरादिकाथ	९०	प्रमेह पर त्रिकलादिकाथ ...	९६
आमशूल पर धान्यपञ्चदशकाथ	९०	प्रदरपर दारुहल्दीकाथ ...	९६
सरक्तातीसार आमातीसार पर कुरैया काथ ... ..	९१	क्षतग्रणादिपर वटादिकाथ ...	९६
सद्यतीसार पर कुटजाष्टक काथ	९१	मेदोरोग पर पित्वादिकाथ ...	९७
अतीसार पर नेत्रनालादि काथ	९१	पुनस्त्रिकलादिकाथ ...	९७
बालकों के लय अतीसारों पर घबफूलादि काथ ... ..	९१	उदररोग पर चच्यादिकाथ ...	९७
क्षेमग्रहणी पर चनउर्दाकाथ . ...	९१	पेट फूलनेपर गदापुरैनादिकाथ	९७
आमासक ग्रहणीपर चतुर्भद्रक काथ ... ..	९१	पिलही पर हरीतक्यादिकाथ...	९७
सर्वातीसारपर इन्द्रयनादि काथ	९२	शोधपर गदापुरैनादिकाथ ...	९७
कृमिवाँ पर त्रिकलादिकाथ, ..	९२	अण्डबुद्धिशोध पर त्रिकलादि काथ ... ..	९७
कामला पर त्रिकलादि काथ ...	९२	अन्त्रबुद्धि पर रोस्नादिकाथ...	९८
शोधादिक, फास व पाण्डु पर गदापुरैनाकाथ ... ..	९२	गण्डमाळा पर कांबनारोंदि काथ ... ..	९८
रक्तपित्त पर रूसादिषाथ ...	९२	फौलपावपर सहोडादि काथ	९८
क्वासज्वर पर वासादिकाथ ...	९२	अन्तर्दिश्रधि पर गदापुरैनादि काथ ... ..	९८
क्वासद्वयस पर शुद्रादिकाथ ...	९३	बदणादिगणकाथ .. ..	९८
द्विचक्रों पर मेघझीकाथ ...	९३	भगन्दर पर खादिरादिकाथ ...	९८
उदकाई पर पित्वादिकाथ ...	९३	उपदश ( सरमी ) पर पटोलादि काथ ... ..	९९
गृध्रसीनाशुपर दशमूलाकाथ ...	९३	वातरक्तपर गुडूच्यादि काथ व द्वितीय पटोलादिकाथ ...	९९
वायुपर रास्नापञ्चकाथ ..	९३	वातरक्त व कुष्ठपरलघुभोजिष्ठादि काथ ... ..	९९
वायुपर रास्नासप्तक काथ .	९३	सर्वकुष्ठबुद्धि पर गृह्णन्मजिष्ठादि काथ ... ..	९९
सर्ववायुपर महासस्नादि काथ	९३	शिरस्शूल व नेत्ररोगों पर हरीतक्यादिकाथ ...	१००
छाती फी वायुपर परण्डालक काथ ... ..	९४		
घातशूल पर सौंठिभादि काथ	९४		
पित्तशूल पर त्रिकलादि काथ	९४		

विषयः	पृष्ठाङ्कः
नेत्ररोगोंपरचासादि व शुद्ध्यादि	...
काथ ... ..	१००
क्षतपर पिप्पल्यादिकाथय द्वितीय	...
काथ का विधान ... ..	१०१
रक्तातीसार परमोथादिप्रमथ्या...	१०१
यवागू व यूषका विधान ... ..	१०१
स्रग्निपात पर संतमुष्टियूष	१०१
पानादिकल्पना ... ..	१०२
ज्वर में तृषा (प्यास) पर उशी- रादिपान ... ..	१०२
उष्णजल का विधान ... ..	१०२
क्षीरपाकविधि ... ..	१०२
संक्षेप से अन्नों का विधान ... ..	१०२
धिलेपी विधान ... ..	१०३
पेयाविधान ... ..	१०३
भातका विधान ... ..	१०३
शुद्धमांड का विधान ... ..	१०३
अठगुने मांडका विधान ... ..	१०३
पित्तादिकों पर यवमण्ड ... ..	१०३
लाजमण्ड का विधान ... ..	१०३
इति द्वितीयाध्यायः ॥	
<b>अथ तृतीयाध्यायः ॥</b>	
घातपित्तज्वरपर मधूकादिफाण्ट	१०४
प्यास पर आम्रादिफाण्ट ... ..	१०४
पित्तज्वरप्यासपरमधूकादिफाण्ट ..	१०४
फाण्टभेदीय मन्थका विधान ... ..	१०५
इमली का मन्थ ... ..	१०५
उबकाई पर मसूरादि मन्थ ... ..	१०५
तृष्णापर यवमन्थ ... ..	१०५
इति तृतीयाध्यायः ॥	
<b>अथ चतुर्थाध्यायः ॥</b>	
हिम व शीतका विधान ... ..	१०५
रक्तपित्त पर आम्रादिहिम ... ..	१०५
तृष्णादिपर मरिचादिकाथ ... ..	१०५

विषयः	पृष्ठाङ्कः
पित्तज्वरपर नीलफमलादिहिम	१०६
जीर्णज्वर पर गुदूच्यादिहिम	१०६
रक्तपित्त पर धान्यादिहिम ... ..	१०६
इति चतुर्थाध्यायः ॥	
<b>अथ पञ्चमाध्यायः ॥</b>	
कलक का विधान ... ..	१०६
पाण्डु पर वधेमान पीपरि ... ..	१०७
घावपर निम्बकक ... ..	१०७
गृद्धती पर यजायन कटका ... ..	१०७
औषधमोगी का पथ्य ... ..	१०८
ऊरुस्तम्भपर पिप्पल्यादिकक	१०८
परिणाम शूलपर विष्णुक्रान्ता-	...
दिकक ... ..	१०८
पुनर्नागरादिकक ... ..	१०८
सूनी बवालीर पर चिरचिरादि	...
कक ... ..	१०८
रक्तातीसार पर बेरकक ... ..	१०९
रक्तक्षयी पर लाहीकक ... ..	१०९
रक्तप्रदर पर चौलाईकक ... ..	१०९
अतीसार पर अंकोलकक ... ..	१०९
घिपपर लिखसाकक ... ..	१०९
दीपन व पाचन हरीतकीकक	१०९
कृमिरोग पर निशोथकक ... ..	१०९
रक्तातीसार पर नवगीतकक	१०९
इति पञ्चमाध्यायः ॥	
<b>अथ षष्ठाध्यायः ॥</b>	
चूर्णका विधान ... ..	११०
सर्वज्वर पर आमलकादिचूर्ण	११०
ज्वरादिकों पर पीपरिचूर्ण ... ..	१११
ग्रमेह पर त्रिफलाचूर्ण ... ..	१११
कफादि पर पञ्चकोलचूर्ण ... ..	१११
विगन्ध, चातुर्जात व जीवनीय	...
गण ... ..	१११
विष्णुत्रपर लवण पञ्चकचूर्ण	११२

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
गुल्मादि पर खार ... ..	११३	यातपित्त कफ छर्दि पर पलादि	
खवन्वर पर सुदर्शनचूर्ण ...	११३	चूर्ण ... ..	१२५
कासदनासन्वर पर त्रिफलादि		कुष्ठ पर पञ्चनिम्ब चूर्ण ...	१२५
चूर्ण ... ..	११४	पुष्टिपर शतावरीचूर्ण ...	१२६
कफखर पर कायफलादि चूर्ण	११४	पुष्टिपर अद्दमन्धादिचूर्ण ...	१२६
यालकोंके कासखरपर काकड़ा-		धातुवृद्धि पर नवायसादि चूर्ण	१२६
सिंगीधादिचूर्ण ... ..	११४	स्तम्भनपर मकरकरभादि चूर्ण	१२७
आमातीसार पर शुण्ठ्यादिचूर्ण,	११५	द्विखतेदुहे दांतोंपर मौठस्तिरी	
आमवात पर हरीतक्यादिचूर्ण	११५	की छालके चूर्णका मजन	१२७
सर्वातीसारपर लघुगङ्गाधरचूर्ण	११५	इति पद्याभ्यायः ॥	
अतीसार पर वृद्धगङ्गाधरचूर्ण	११५		
संम्रहणी पर कपित्थाष्टकचूर्ण...	११६	<b>अथ सप्तमाध्यायः ॥</b>	
महणी पर दाडिमामृष्टकचूर्ण ...	११६	घटिका, गुटिका, घटी घमोद-	
अतीसारपर वृद्धदाडिमामृष्टकचूर्ण	११६	कादिकों की कल्पना ...	१२७
क्षयीपर लयगादिचूर्ण ...	११७	घवासीर पर याहुशालगुड ...	१२८
जातीफलादिचूर्ण ... ..	११७	कासपर भरिचादिगुटिका ...	१२८
अरुचिपर महाक्षण्डघसंज्ञकचूर्ण	११८	श्यासादिकोंपर गुड्यादिगुटिका	१२९
उदररोग पर नारायणचूर्ण ...	११८	प्यासपर मांघलादिवटिका ...	१२९
पेट फूलने आदिबोम अनुपान...	११९	सभिपातपर संजीवनी गुटिका	१२९
मजीणं पर हनुपादिचूर्ण ...	११९	पानसादिकों पर त्रिहुटादिघटी	१२९
शूलादि पर पञ्चसमचूर्ण ..	१२०	अर्शपर वृद्धदारमोदक ...	१३०
अफरा आदिपर पिप्पल्यादिचूर्ण	१२०	अर्शपर सूदनघटिका ...	१३०
यहूत् घ ङ्गीहादिकों पर लयण		घवासीर पर वृहत्सूदनघटिका	१३०
त्रयादिचूर्ण ... ..	१२०	घामलादिकोंपर मण्डूरघटिका	१३१
शूलादिकों पर नुम्यवादिचूर्ण...	१२१	प्रमेहादिकोंपर चन्द्रमभाघटिका	१३२
गुल्मादिकों पर चित्रकादिचूर्ण	१२१	गुल्मपर अजवायनगुटिका ...	१३२
अनुपानिकादिकों पर च्युष्टकचूर्ण		यातादिकोंपरत्येगराजगुग्गुल	१३३
चूर्ण ... ..	१२२	यातरक्तदिकोंपर केशोरगुग्गुल	१३४
यातादिकों पर अजमोदादिचूर्ण	१२२	अर्गदरादिकोंपर त्रिफलागुग्गुल	१३६
शूलादिकों पर हिंवादिचूर्ण .	१२२	प्रमेहादिकोंपर गोक्षुरादिगुग्गुल	१३६
अदन्वादिकों पर यवानोष्णण्डय		कुष्ठादिकों पर त्रिफलामोदक	१३६
चूर्ण ... ..	१२३	गण्डमालादिकों पर कांचनार	
अदन्वादिकोंपर तालीसादिचूर्ण	१२३	गुग्गुल ... ..	१३७
कासक्षयपित्ताक्षिपरसितोपलादि		गन्धमज्जल में इमका अनुपान ..	१३८
चूर्ण ... ..	१२४	धातुपुष्टिपर भापाविमोदक ...	१३८
महणी पर लवणमास्करचूर्ण ...	१२४	इति सप्तमाध्यायः ॥	

विषयाः पृष्ठाङ्काः

**अथ अष्टमाध्यायः ॥**

पंचलेह व लेहकी कल्पना	१३८
हिचकी, कास व श्वासादिकों पर मटकटैयावलेह	१३९
क्षयोदिकों पर च्यवनप्राशावलेह	१३९
रक्तपित्त पर कूष्माण्डपाक	१४१
अर्शो ( ववासीर ) पर खण्डकूष्माण्डावलेह	१४२
क्षयोपर अगस्यहरीतकी	१४२
ववासीर पर कुरैयावलेह	१४२
बकरी के दुग्धादिकों से इसका अनुपात	१४३
सर्वातीसार पर कुरैयाष्टक	१४३

इति अष्टमाध्यायः ॥

**अथ नवमाध्यायः ॥**

घृत व तैलादिकों का साधन	१४४
पिलहीआदिकोंपर क्षीरपदपल	१४६
संग्रहणी, अतीसार पर चाहेरी घृत	१४६
अतीसारदिकों पर मयूरघृत	१४७
रक्तपित्त पर कामदेवघृत	१४७
अपस्मारदिकों पर कल्याणघृत	१४८
घातरक्तपर अमृतादिघृत	१४९
घातकुष्ठादिपर महातिकादिघृत	१४९
कुष्ठ, दाह व पाऊपर कासीसादिघृत	१५०
घावों पर जात्यादिघृत	१५०
उदररोग पर विन्दुघृत	१५१
नेत्ररोगादिकोंपर त्रिफलादिघृत	१५१
घावोंपर गौर्यादिघृत	१५२
शिरोरोग पर मयूरघृत	१५२
अध्यांरोग पर फलघृत	१५३
योनिदोषों पर त्रिफलादिघृत	१५३
विषमज्वर पर पञ्चतिलघृत	१५४

इति नवमाध्यायः ॥

विषयाः पृष्ठाङ्काः

**अथ दशमाध्यायः ॥**

तैलसाधनप्रकार	१५४
ताश्वादितैल	१५४
सर्धघातपर नाराणतैल	१५५
घातपर बरियारातैल	१५६
घातकफजन्य विकार व घादी पर प्रसारिणीतैल	१५७
प्रीवास्तम्भादिकोंपर मापादितैल	१५७
शूल व घातादिकों पर शतावरी तैल	१५८
ववासीर पर कासीसादितैल	१५९
घातरक्त पर पिण्डतैल	१६०
खुजलीआदिकों पर मदारतैल	१६०
कुष्ठादिकों पर मरिचादितैल	१६०
अर्शों पर त्रिफलादितैल	१६०
पलितरोग पर निम्बचीजतैल	१६०
यालभागेपर मुलेठीतैल	१६१
इन्द्रजित पर करञ्जादितैल	१६१
पलितादिरोगों परनीलिकादितैल	१६१
पलितादि रोगोंपर भृङ्गराज तैल	१६१
मुखदन्तादिरोगों पर इरिमेवादि तैल	१६२
कर्णशूल पर हिंम्वादितैल	१६२
अधिरत्नपर बिल्वादितैल	१६२
कानबहनेपर खारतैल	१६२
पिनसुरोग पर पाठादितैल	१६३
नासिकारोग पर मटकटैयातैल	१६३
छाँफ आनेपर कुष्ठादितैल	१६३
नासादी पर शुद्धमादितैल	१६३
सचकुष्ठों पर वज्रतैल	१६४
लोमशातनपर करवीरादितैल	१६४
अथ आस्यकल्पना	१६४
शोथुआदि मर्शोंका भेद	१६५
रक्तपित्तादिकों पर अशीशास्य	१६६
अर्शोंपर पिप्पल्यास्य	१६६

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
पाण्डुर पर लोहासव ...	१६७	सुरमा व गेरुआदिकों का शोधन	
उररादिकों पर कुरैयारिष्ट ...	१६७	व मारण ...	१८०
विट्टादीनादिकों में विट्टाकारिष्ट ...	१६८	मैनशिलका शोधन व मारण ...	१८१
प्रमेहादिकों पर देवदारुअरिष्ट ...	१६८	हरतालका शोधन ...	१८१
कुष्ठादिकों पर अदिरारिष्ट ...	१६९	उपरिया का शोधन ...	१८१
क्षयादिकों पर चञ्चूलारिष्ट ...	१७०	सब धातुओं के सत निकालने का विधान ...	१८१
उरक्षतादिकों पर ब्राह्मरिष्ट ...	१७०	दीराका शोधन व मारण ...	१८१
धयासौरादिकों पर रोहितारिष्ट ...	१७१	दीरेकी भस्मका दूसरा विधान व तीसरा विधान ...	१८२
क्षयी व प्रमेहादिकों पर दशमूलारिष्ट ...	१७१	वैकान्तका शोधन व मारण ...	१८२
इति दशमाध्यायः ॥		सर्षपकों का शोधन व मारण ...	१८३
अथ एकादशाध्यायः ॥		शिलाजीत का शोधन ...	१८३
स्वर्णादि धातुओं का शोधन प्रकार ...	१७३	शिलार्जात शोधने का दूसरा प्रकार ...	१८३
सोना मारने का विधान ...	१७३	मण्डूर काने का विधान ...	१८४
सोनेकी भस्मका छिर्तीय विधान ...	१७३	क्षार बनाने का विधान ...	१८४
सोनेकी भस्मका तीसरा विधान ...	१७४	इति एकादशाध्यायः ॥	
स्वर्ण भस्मका प्रकारान्तर ...	१७४	अथ द्वादशाध्यायः ॥	
चाँदीकी भस्मका विधान ...	१७५	सर्षेरोगदारक व पुष्टिकारक पारा का निरूपण ...	१८५
नृपायन्त्र के बनानेकी रीति ...	१७५	पाराके नाम व सूर्यादि नयग्रहों के नामसे तांबाआदि धातुओं के नाम ...	१८५
चाँदीभस्मका दूसरा विधान ...	१७५	पाराके शोधने का प्रकार ...	१८५
पीतलकी भस्मका विधान ...	१७५	गन्धक व सिंगरफ का शोधन सिंगरफ से खार निकालने का विधान ...	१८६
तांबेकी भस्मका विधान ...	१७६	शुद्ध किये पाराके मुख करने का विधान ...	१८६
खीसेकी भस्मका विधान ...	१७७	मुख व पक्षच्छेदन का दूसरा प्रकार ...	१८७
खीसेके मारनेका दूसरा विधान ...	१७७	कच्छपयन्त्र के द्वारा गन्धक फूँकनेका विधान ...	१८७
खीसेकी भस्मका प्रकार ...	१७७	पारा मारण का विधान ...	१८८
लोहेकी भस्मका प्रकार ...	१७७		
लोहभस्म का दूसरा प्रकार ...	१७८		
लोहभस्म का तीसरा प्रकार ...	१७८		
सात उपधातुओं का शोधन ...	१७८		
सोनामातीका शोधन व मारण ...	१७९		
रूपामातीका शोधन व मारण ...	१७९		
तूनीया का शोधन ...	१७९		
धसकका शोधन व मारण ...	१७९		
अन्नरु शोधनका दूसरा विधान ...	१८०		



विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
पाराभस्मकरने का दूसराप्रकार	१८८	समस्त उदररोगों पर महावह्नि	
तथा तीसरा व चौथा प्रकार ...	१८९	रस ... ..	२०६
सर्वज्वरापहारक ज्वरांकुश रस	१८९	गुग्गुआदिरोगोंपर विद्याधररस ...	२०६
येकाहिकादि ज्वरों पर ज्वरारि		पक्ति ( परिणाम ) शूलादिकोंपर	
रस ... ..	१८९	त्रिनेत्ररस ... ..	२०७
शीतज्वरारिरस ... ..	१९०	शूलादिकोंपरशूल गजकेसररस	२०७
ज्वरघ्नी गुटिका ... ..	१९०	मन्दाग्न्यादिकों पर अग्निवृण्डी	
क्षयादिरोगोंपर लोफनाथरस ...	१९१	रस ... ..	२०७
क्षयादिकों पर मृगांक रोडलीरस	१९३	अजीर्ण व हैजादिकों पर अजीर्ण-	
कफक्षयादिकों पर हेमगर्भपोट-		कण्टक रस ... ..	२०८
लीरस ... ..	१९५	कफरोग पर मन्थागुग्गुआरस ...	२०८
कासादिकों पर हेमगर्भरस ...	१९६	घातविकारोंपर घातनाशनरस	२०८
अतीसारादिकों पर आनन्दभैर-		सन्निपात पर कनकसुन्दररस ...	२०९
घरस ... ..	१९७	सन्निपात पर भैरवरस ...	२०९
सन्निपात पर लघुसूचकाभरण	१९७	संग्रहणी पर ग्राणीकपाटरस ...	२१०
सन्निपात पर जलबुन्दरस ...	१९८	संग्रहणी पर घजकपाटरस ...	२११
सन्निपात पर पञ्चवक्त्ररस ...	१९८	वाजीकरणपर मदनकामदेघरस	२१२
मदारमूलकाथ ... ..	१९९	वाजीकरण पर कन्दर्पसुन्दररस	२१२
सन्निपात पर उन्मत्तरस ...	१९९	क्षयादिकों पर लोहरसायन ...	२१३
सन्निपात पर अङ्गन ...	१९९	इति षाडशाध्यायः ॥	
शूलादिकों पर नाराचरस ...	१९९	( इति मध्यखण्डः )	
शूलादिकों पर इच्छाभेदीरस	२००		
क्षयीर्षर राजमृगाङ्गरस ...	२००		
क्षयादिकों पर स्वयमग्निरस ...	२००		
इनासपर सूर्यावर्तरस ...	२०१		
घातरोग पर स्वच्छन्दभैरव रस	२०१		
संग्रहणी पर हंसपोटलीरस ...	२०२		
अक्षमरी ( पधरी ) पर त्रिवि-			
क्रमरस ... ..	२०२		
कुष्ठादिकोंपर महातालेश्वररस	२०२		
कुष्ठपर कुठाररस ... ..	२०३		
कुष्ठपर उदयादित्थरस ...	२०३		
श्वेत कुष्ठपर लेप का विधान ...	२०४		
कुष्ठादिकों पर सर्वेश्वररस ...	२०४		
सुतिकुष्ठपर स्वर्णक्षीरीरस ...	२०५		
प्रमेहरोग पर प्रमेहपद्धरस ...	२०५		
		अथ उत्तरखण्डः ॥	
		प्रथम स्नेहपानक्रिया ...	२१६
		स्नेहभेद व स्नेहपानका समय...	२१६
		स्नेहका सात्व्य व स्थलविशेषमें	
		थोजना ... ..	२१६
		स्नेहमात्रा प्रकार ... ..	२१६
		अमात्रा से स्नेह पीने में दोष ...	२१७
		दीप्त, मध्य व अल्पाग्नि में मात्रा	
		प्रमाण ... ..	२१७
		स्नेह की मात्राओं का भेद ..	२१७
		अल्प, मध्य व ज्येष्ठमात्राओं के	
		गुण ... ..	२१७
		दोषों में उचित अनुपात ..	२१७

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
धपररोगों पर घों पिलाने योग्य प्राणी ... ..	२१८	जिनके पहले स्वेद निकाला गया उनके लिये गोमूत्रादिकों का विधान	२२२
तेल पिलाने योग्य रोगी ...	२१८	मगन्दरादि रोगों में पसीना निकालने की अनुज्ञा ...	२२२
पसापान योग्य अस्थिमज्जा योग्य स्नेहपान करने का समय ...	२१८	स्वेदके निकालने में देश व काल	२२२
पूतादिक कर्मविशेषों पर नास के कारण ... ..	२१८	स्वेद निकालने पर किस मार्ग से दोषों का दूर होना ... ..	२२२
स्नेहपान में अनुपान विधान ...	२१९	स्वेदोंके चित्तस्थ स्थ करने का यज्ञ	२२२
भार के साथ स्नेहपिलाने योग्य रोगी ... ..	२१९	स्वेदके अयोग्य रोगों का निरूपण	२२२
स्नेहके बिना यवागू से शीघ्र स्नेहन होनेवाले ... ..	२१९	अल्पपसीना निकालने योग्य प्राणी के अंग ... ..	२२३
घारोष्णदूध से उसी क्षण धातु का उपजना ... ..	२१९	यहुतपसीना निकालने में उपद्रवों का उपजना ... ..	२२३
मिश्रयाद्वार विहारादिकों से अपक्व स्नेहका उपाय ... ..	२१९	चार भौतिके स्वेदोंमें तापस्वेदके लक्षण ... ..	२२३
स्नेहजन्य अजीर्ण का उपाय ...	२१९	ऊष्मसंश्लक स्वेदके लक्षण ...	२२३
स्नेहजन्य पित्तकोष का यत्न ...	२१९	उपनाहसंश्लक पसीनाके लक्षण	२२४
स्नेहपान के अयोग्य रोगी ...	२२०	उपनाहमें महाशाल्यण क्रिया का धातुपोडलिकासिक्तविधि ...	२२४
स्नेहपान करने में योग्य प्राणी गुणदायक स्नेहके लक्षण ...	२२०	द्रवसंश्लक स्वेदके लक्षण ...	२२५
अत्यन्त स्नेहपान के दोष ...	२२०	पसीना निकालनेकी अद्यधि ...	२२५
रूपके स्निग्ध व स्निग्धको रूपा करना ... ..	२२०	स्वेदनिकालनेके अनन्तर उपचार इति द्वितीयाध्यायः ॥	२२६
स्नेहादिक सेवने के गुण ...	२२०	<b>अथ तृतीयाध्यायः ॥</b>	
स्नेहक्षेत्री को वर्जनीयपदार्थ ...	२२१	यमन (छर्दि) विरेचन (दस्त) में कालका विधान ...	२२६
इति प्रथमाध्यायः ॥		यमनयोग्य रोगियोंका निरूपण	२२६
<b>अथ द्वितीयाध्यायः ॥</b>		यमनमें अयोग्य रोगी ... ..	२२६
स्नेहपानानन्तर स्वेद निकालने का विधान ... ..	२२१	यमनके पूर्व उपचारोंका निरूपण	२२७
वायुकी तारत्वम्यता से न्यूनाधिक स्वेदकी योजना ...	२२१	यमनमें सहायकारी पदार्थ ... ..	२२७
योग विशेष से स्वेदविशेष की योजना ... ..	२२१	यमनमें काढा करने का प्रमाण ...	२२७
		यमनमें काढा पीनेका प्रमाण ...	२२७
		यमनमें कृत्वादिषोंका प्रमाण ...	२२७
		यमनमें उत्तम, मध्यम व कनिष्ठ रोगोंका प्रमाण ... ..	२२८

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
घमनके विषयमें प्रस्थका प्रमाण	२२८
घमनमें औषध विशेषोंसे फका- दिकों का जीतना	२२८
घमनसे कफादिकों के निकालने की औषध	२२८
घमन करनेमें यादहिराउपचार	२२९
मलीभांति घमनके न होने में उपद्रव	२२९
घट्टत घमनहोनेमें उपद्रव	२२९
अतिघान्तमें त्रिकित्सा	२२९
घमनमें जीमफेपठनेपर चिकित्सा अतिघान्तसे जीम चाहर निकल आने का यज्ञ	२२९
घमनद्वारा नेत्रोंमें धिकार होनेका उपचार	२२९
घमन करते २ ठोड़ी रहजाने पर उपचार	२२९
घान्तकरनेमें हनुस्तम्भका उपचार	२३०
घमनके घान्तमें रक्त गिरनेका यज्ञ	२३०
अतिघमनसे प्यारा घड़ने का यज्ञ	२३०
रसाधून घनानेका विधान	२३०
घान्तके उत्तम होनेका लक्षण	२३०
घान्तके होजाने पर रोगी के लिये पथ्य	२३०
घमनके उत्तम होनेपर संयम	२३०
इति सृतीबाध्यायः ॥	
<b>अथ चतुर्थाध्यायः ॥</b>	
घमनान्तमें विरेचनका विधान	२३०
रेचन ( वस्त ) का दूसरा प्रकार	२३१
विरेचनका सामान्यकाल	२३१
विरेचनयोग्य रोगीका कथन	२३१
दोषनिवारणमें विरेचनकी उत्क- र्षता	२३१
वस्त करानेमें अयोग्यरोगी	२३२
विरेचनमें मृदु, मध्य च दूरकोष्ठ	२३०

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
मृदु च मध्यमादिकोष्ठों में मृदु- भ्यादिऔषध	२३२
उत्तमादि भेदोंसे वस्तोंका प्रमाण	२३३
विरेचनमें काथादि की मात्राओं का प्रमाण	२३३
विरेचनमें कलकादिकों का मान	२३३
रेचनमें द्रव्योंका प्रकार	२३३
अपरऔषधोंसे रेचनका विधान	२३३
शतुभेदसे रेचनका प्रकार	२३३
क्षारद्रुमें रेचन	२३३
हेमन्तमें विरेचन	२३४
शिशिर, वसन्त तथा ग्रीष्ममें रेचन	२३४
रेचनपर अमयादिक मोक्ष	२३४
अच्छेप्रकार रेचनहोनेका यज्ञ	२३५
रेचनसमयका साधनाप्रकार	२३५
रेचन देनेपर वेगोंके न उपजने पर उपद्रव	२३५
उत्तम जुलावके न होनेपर उप- चार	२३५
अत्यन्त विरेचनमें उपद्रव	२३६
अतिविरेचन में उपश्ले उपद्रवों का यज्ञ	२३६
वस्त पन्धकरनेकी औषध	२३६
वस्तोंके रोकनेका उपाय	२३६
उत्तम वस्त होनेके लक्षण	२३६
जुलाबलेनेमें मुर्गाका निरूपण	२३६
रेचनमें धर्मितपदार्थ	२३६
रेचनमें रोगीके लिये पथ्य	२३७
इति चतुर्थाध्यायः ॥	
<b>अथ पञ्चमाध्यायः ॥</b>	
घस्तिकर्मका विधान	२३७
अनुवातनवस्तिकी द्रव्यों का प्रमाण	२३७
अनुवातनवस्तियोग्य रोगी	२३७

विषयः	पृष्ठाङ्कः	विषयः	पृष्ठाङ्कः
धूम्रगण में उपयोगी की प्रवृत्ति	२५९	प्रतिसारण का प्रकार	२६३
धूम्रमें नलीका विचार	२५९	प्रतिसारण (मंजन) के लिये	२६३
धूम्रगण के लिये शिपिका (नैचा)		चूर्ण -	२६३
का विधान	२६०	गण्डूपादि के हीनयोगादि होने	२६३
धूम्र विधान व धूम्रमें फल्को की		के लक्षण	२६३
शौषध	२६०	भलीभांति प्रये गण्डूपादि के लक्षण	२६४
घान्मटोकरादिगण	२६०	इति दशमाध्यायः ॥	
घालग्रह निवारक चूर्ण	२६१		
धूम्रगण में परिहार	२६१	अथ एकादशाध्यायः ॥	
इति नवमाध्यायः ॥		लेपका विधान	२६४
अथ दशमाध्यायः ॥		दोपनाशकलेप का विधान	२६४
गण्डूपा, कयल व प्रतिसारण का		दशाङ्गलेप का विधान	२६४
विधान	२६१	विषहार्दकलेप का विधान	२६५
दोपमेंदो, से स्नेहिकादि गण्डूपा		लेपका दूसरा विधान	२६५
की योजना	२६१	मुखकान्तिकारकलेपका विधान	२६५
गण्डूपा तथा कयल की रीति	२६१	कारिकारकलेपका दूसरा प्रकार	२६५
गण्डूपा व कयल में द्रव्यों का		तारुण्यपिटका (मुहांसे) परलेप	२६५
प्रमाण	२६२	व्यङ्ग (झाई) रोगपर लेप	२६५
गण्डूपा व कयलयोग्य अवस्था	२६२	मुखपर की झाईपर लेप	२६५
अवस्था भेदसे कृते करने का		तारुण्यपिटकादिकों पर लेप	२६६
प्रमाण	२६२	भट्टिका (रुखी) पर लेप	२६६
गण्डूपा धारण करने में दूसरा		दरी पर दूसरा लेप	२६६
प्रमाण	२६२	दाहणरोग पर लेपका विधान	२६६
बाड़ीके रोगोंमें स्नेहिकगण्डूपा	२६२	लेपका दूसरा प्रकार	२६६
पित्तमें द्रामनसंशक गण्डूपा	२६२	इन्द्रजित पर लेपका विधान	२६६
व्रणादि रोगों पर मधुगण्डूपा	२६२	लेपका दूसरा प्रकार	२६६
विषादियोंपर गण्डूपाका विधान	२६२	केशवर्धकलेप का विधान	२६६
दांतोंके हिलने पर गण्डूपा	२६२	घाल जमानेका लेप	२६७
मुखसोदरोग पर गण्डूपा	२६२	इन्द्रजितरोग पर लेप	२६७
फफादियोंपर गण्डूपा	२६२	घाल धाजाने पर दूसरा लेप	२६७
वक्त्र व रजपित्त पर गण्डूपा	२६३	घाल स्याह करने का लेप	२६७
मुखपाव (छालोंपर) गण्डूपा	२६३	लेपका दूसरा प्रकार	२६७
गण्डूपा के समान प्रतिसारण		तीसरा तथा चौथा प्रकार	२६७
कयल का विधान	२६३	फालेकेन करने का पाँचवाँ प्रकार	२६८
कयल का प्रकार	२६३	सोमशातन (सालगिराने) पर	
		लेप	२६८

विषयाः	पृष्ठाङ्कः	विषयाः	पृष्ठाङ्कः
होमशासन का दूसरा प्रकार ...	२६८	कफजन्यशोथ पर लेप ...	२७४
सफ़ेद फोड़पर लेपका विधान	२६९	गामान्तुक तथा रक्तजन्यशोथ पर लेप ...	२७४
लेपका दूसरा व तीसरा प्रकार	२६९	मणपकाने पर लेप ...	२७४
सेदुवां पर लेपका विधान ...	२६९	मणफोरने पर लेप ...	२७४
लेपका दूसरा प्रकार ...	२६९	मणफोरने पर दूसरा व तीसरा लेप ...	२७४
नेत्ररोग पर लेपका विधान ...	२६९	मणशोधन में लेपका प्रकार ...	२७४
लेपका दूसरा प्रकार ...	२६९	मणशोधन व रोपपर लेप ...	२७५
खुजली पर लेपका विधान ...	२७०	एमिरोनानाशक लेप ...	२७५
सूरीफाज पर लेप ...	२७०	पेटपीड़ा में नाभिपर लेप ...	२७५
लेपका दूसरा प्रकार ...	२७०	यातविद्रधिपर लेप ...	२७५
रक्तपित्त पर लेप ...	२७०	पित्तविद्रधिपर लेप ...	२७५
उदरादिरोगों पर लेपका विधान	२७०	कफविद्रधिपर लेप ...	२७५
घातविसर्प रोगपर लेप ...	२७१	आयानुष्टविद्रधिपर लेप ...	२७५
पित्तविसर्प पर लेप ...	२७१	वातजन्यशोथ पर लेप ...	२७५
कफविसर्प रोग पर लेप ...	२७१	कफजन्यशोथ पर लेप ...	२७५
पित्तघातरक्त पर लेप ...	२७१	अन्त्ररोगपर लेप ...	२७५
नासिकारक्तस्रावपर लेप ...	२७१	अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
घातज शिर पीड़ा पर लेप ...	२७१	शिर पर ...	२७५
शिरपीड़ा पर दूसरा लेप ...	२७१	अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
पित्तसंभव शिररोग पर लेप ...	२७१	शिर पर ...	२७५
कफसम्यन्धी मस्तकपीड़ापर लेप	२७२	अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
मस्तकपीड़ा पर दूसरा लेप ...	२७२	अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
स्यार्धर्ष तथा अर्धभेदकपर लेप ...	२७२	अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
फनपटी अनन्तघात तथा शर		अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
शिर रोगों पर लेप ...	२७२	अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
लेपका द्वारा विधान ...	२७२	अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
प्रलेप व प्रदेहक लेपांकी वैचार		अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
का प्रमाण ...	२७२	अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
साधारण लेप विषयमें निषेध ...	२७२	अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
रात्रिमें लेपनिषेधका कारण ...	२७२	अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
रात्रिमें प्रलेपादिकों का विधान		अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
व उसके योग्य रोगी ...	२७३	अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
मणोपचार सब प्रकार लेपपर	२७३	अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
मणसम्यन्धी घातशोथनिवारक लेप ...	२७३	अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
पित्तजन्यशोथ पर लेप ...	२७३	अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५
		अन्त्ररोग में सुदोष कफजन्य	२७५

विषया.	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
शिरोवस्ति प्रकार ...	२७९	रुधिर के दुष्ट होने के लक्षण ...	२८४
शिरोवस्ति प्रमाण तथा मात्राओं का प्रमाण ...	२७९	रुधिर बढ़ने के लक्षण ...	२८४
शिरोवस्ति का समझ ...	२७९	क्षीणरुधिर के लक्षण ...	२८४
शिरोवस्ति के पीछे कर्तव्यक्रिया ...	२७९	घातदूषित रक्त के लक्षण ...	२८४
शिरोवस्ति के गुण ...	२७९	पित्तदूषित रुधिर के लक्षण ...	२८४
फानमें औषध डालने का विधान ...	२८०	कफदूषित रुधिर के लक्षण ...	२८४
फानमें द्रव्यधारने का प्रमाण ...	२८०	त्रिदोष व त्रिदोष दूषित रुधिर के लक्षण ...	२८४
तथा मात्राओं का प्रमाण ...	२८०	अतिदुष्ट रुधिर के लक्षण ...	२८४
फानमें रसादिक तथा तैलादिक डालने का समय ...	२८०	शुद्धरक्त के लक्षण ...	२८५
कर्णव्यथा पर औषध ...	२८०	रक्तमोक्षणयोग्य रोगी ...	२८५
कर्णशूल पर मूत्रप्रयोग ...	२८०	रक्तमोक्षण का प्रकार ...	२८५
कर्णशूल पर तीसरा प्रयोग ...	२८०	शिरोच्छेदन में अयोग्य रोगी ...	२८५
कर्णशूल पर पांचवां प्रयोग ...	२८१	घातादिदूषित रुधिर निकालने का विधान ...	२८६
कर्णशूल पर दीपित तैल ...	२८१	सिंगीआदि से रुधिर छींचने का प्रमाण ...	२८६
कर्णशूल पर द्योनाकतैल ...	२८१	रुधिरमोक्षणमें अयोग्यरोगी ...	२८६
कर्णनादपर तैल ...	२८१	शिरारक्त न देने का यज्ञ ...	२८६
कर्णनादादिकों पर धेष्टतैल ...	२८१	रक्तमोक्षण का समय ...	२८६
रुधिररक्तपर अपामार्गक्षारतैल ...	२८२	अतिरुधिरस्त्राय में कारण ...	२८७
कर्णमणपर शम्बूकतैल ...	२८२	अत्यन्तरुधिर निकलनेपर उपाय ...	२८७
कर्णस्त्रावपर औषध ...	२८२	दग्धहत रोगशमनोपाय ...	२८७
पञ्चकपायवृत्तों के नाम ...	२८२	दुष्टरक्त के निकालनेपर अघशिर के गुण ...	२८८
कर्णस्त्रावपर औषध ...	२८२	रुधिरसे देहोत्पत्तिआदिका प्रकार ...	२८८
फान से राह बहनेपर औषध ...	२८२	रुधिरमोक्षण पर दोषदूषित होने का यज्ञ ...	२८८
कर्णकीट के दूर होने का तैल ...	२८२	रुधिरमोक्षणपर पथ्यविधार ...	२८८
कर्णकीट के दूर होने का दूसरा व तीसरा प्रयोग ...	२८३	अच्छे प्रकाररक्तमोक्षणके लक्षण ...	२८८
इति एकादशाध्यायः ॥		रक्तमोक्षण पर निषेद्ध पदार्थ ...	२८८
अथ द्वादशाध्यायः ॥		इति द्वादशाध्यायः ॥	
रुधिरमोक्षण का विधान ...	२८३	अथ त्रयोदशाध्यायः ॥	
रुधिरस्त्राव का सामान्यकाल ...	२८३	नेत्रोपचार प्रकार ...	२८९
रुधिर का स्वरूप ...	२८३	सेकविधान ...	२८९
रुधिर में पृथिव्यादि पञ्चतत्त्वों के गुण ...	२८३		

विषयः	पृष्ठाङ्कः	विषयः	पृष्ठाङ्कः
स्नेहनादिभेदोंसेसेककेतीनप्रकार	२८९	अञ्जननामिका पिष्टिकी पर	२९३
सेककी मात्राओंकाप्रमाण ...	२८९	लेप ... ..	२९३
सेक सेवन करने का समय ...	२८९	नेत्ररोगपर तर्पण का विधान ...	२९४
घाताभिष्यन्दरोगपर सेकविधान	२८९	तर्पणकी मात्राओंका प्रमाण ...	२९४
घाताभिष्यन्द पर दूसरा प्रकार	२८९	तर्पण में कफकी अधिकताका	
पित्तरक्त व अभिघात पर सेक	२९०	उपाय ... ..	२९५
रक्ताभिष्यन्द पर सेक ...	२९०	तर्पण में दिनों का प्रमाण ...	२९५
नेत्रशूलपर सेक ... ..	२९०	भलीमांति तर्पण होने के लक्षण	२९५
आश्च्योतन का विधान ...	२९०	अत्यन्त तर्पण होने के लक्षण...	२९५
लेखनादि आश्च्योतन में बिन्दु		हीन तर्पण के लक्षण...	२९५
डालने का प्रमाण ... ..	२९०	तर्पण से अतिस्निग्ध व हीन	
आश्च्योतन में मात्राओंका प्रमाण	२९१	स्निग्ध नेत्रों का उपाय ...	२९५
नेत्रघाताभिष्यन्दपर आश्च्यो-		पुटपाककी रीति का निरूपण...	२९५
तन विधान ... ..	२९१	पुटपाकसम्यग्धी रस नेत्रों में	
घात व रक्तपित्तपर आश्च्योतन	२९१	धारने का विधान ...	२९६
सर्वाभिष्यन्द पर आश्च्योतन...	२९१	स्नेहनादि भेदों से पुटपाकक्रिया	२९६
रक्तपित्ताभिष्यन्दपर आश्च्यो-		स्नेहनपुटपाक विधान ...	२९६
तन ... ..	२९१	रोपण नामक पुटपाक का प्रकार	२९६
पिण्डी या कवलिकाका प्रकार	२९१	दोषोंके संपाक होने से अञ्जन	
नेत्राभिष्यन्द पर शिरोपिरेचन	२९२	व साधारण अञ्जन का	
सर्वाधिग्रन्थपर उपचार ...	२९२	विधान ... ..	२९७
अभिष्यन्दादिपर पिण्डिकानंधन	२९२	अञ्जन के भेदों का निरूपण...	२९७
घात व पित्ताभिष्यन्द पर कवलि-		गुटिकादि भेदों से अञ्जन के	
काविधान ... ..	२९२	तीन प्रकार ... ..	२९७
पित्ताभिष्यन्दपर द्वितीयपिण्डी	२९२	अञ्जन में अयोग्य रोगी ...	२९७
कफाभिष्यन्दपर पिण्डी का		तीरण अञ्जन की दृष्टी का	
विधान ... ..	२९२	प्रमाण ... ..	२९७
कफपित्ताभिष्यन्दपर पिण्डी ...	२९२	अञ्जन में रसका प्रनाप ...	२९७
रक्ताभिष्यन्दपर पिण्डी ...	२९२	विरचन अञ्जन में चूर्ण का	
नेत्रशोथ व राजपर पिण्डी ...	२९२	प्रमाण ... ..	२९७
विडालनामक लेप का विधान...	२९३	पत्थर व घातु आदि शलाका	
सर्वाक्षिरोगों पर विडाल ...	२९३	(सलाई) का प्रनाप ...	२९८
सर्वनेत्ररोगोंपर दूसरा विधान	२९३	अञ्जन लगाने का समय ...	२९८
सर्वनेत्ररोगोंपर तीसरे व चौथे		चन्द्रोदयवर्ती का विधान ...	२९८
लेपका प्रकार... ..	२९३	शुक्रादिक ( फूली आदि )	
भ्रमररोग पर लेपका प्रकार ...	२९३	पर लेखनवर्ती	२९९

विषया	पृष्ठाङ्कः	विषया	पृष्ठाङ्कः
तथा फूली आदिकों पर दूसरा प्रकार .. ...	२९९	नेत्र स्वच्छ होनेकेलिये रसक्रिया	३०२
लेखनी दन्तवर्ती ...	२९९	शिरोत्यातरोग पर रसक्रिया ...	३०२
तन्द्रानियारक लेखनी वर्ती ...	२९९	धुन्धिरोगपर रसक्रिया ...	३०२
रोषिकों कुमुमिका वर्ती ...	२९९	लेखनचूर्णाञ्जन ...	३०२
रसोंको दूर करने का वर्ती ..	२९९	रतोष्णीपर लेखनचूर्ण ...	३०२
नेत्रस्त्रावपर स्नेहन वर्ती ..	३००	कण्डू आदिकोंपर लेखनचूर्णाञ्जन	३०२
रसक्रियाका निरूपण ..	३००	सर्ध नेत्ररोगों पर मृदु चूर्णाञ्जन	३०३
फूली दूर करने की रसक्रिया ...	३००	सर्वाक्षि रोगोंपर सोवीराञ्जन ...	३०३
शक्ति निद्रा नाशक लेखनी रसक्रिया ...	३००	सीसे का शलाका का विधान	३०३
तन्द्रानियारक रसक्रिया ..	३००	प्रत्यञ्जन करने का विधान ...	३०३
सन्निपातपर लेखनरसक्रिया ..	३००	सदोषनेत्रपर निषेद ...	३०४
नेत्रदाहपर रसक्रिया . ...	३०१	प्रत्यञ्जन चूर्णका विधान ...	३०४
दहनी रोगपर रसक्रिया .	३०१	सर्पविष निवारक अञ्जन ..	३०४
तिमिररोग पर रांपणी रसक्रिया	३०१	नेत्रवाधाहारक शीतल जल का प्रकार ...	३०४
अञ्जानन्तमें अनुपान का विधान	३०१	ग्रन्थ को समूलत्व सूचनापूर्वक निजाभिमानका परिहार ...	३०४
नेत्रस्त्रावपर रोषणी रसक्रिया ...	३०१	ग्रन्थ के पढ़ने का फल व अभ्यास करने का प्रयत्न ...	३०५
नेत्रस्त्रावपर दूसरा प्रकार .	३०२		

इति श्रीमत्सुबुलशक्तिधररचितशाङ्गधरसंहितायाः  
सूचीर्षनसमाप्तिप्रगामितिशियम् ॥





## शाङ्गधरसंहिता ॥

### भाषाटीकासमेता ॥

श्रियंसद्व्याद्भवताम्पुरारिर्यदङ्गतेजःप्रसरेभवानी ।  
विगजतेनिर्मलचन्द्रिकायां महौषधीवज्वलिताहिमाद्रौ १

श्रियभित्ति स फहे सो श्रीके देनगरे होहु सो पुरारि कैसे हूँ जिनके तेजप्रसारित प्रंग में भवानी विराजमान हैं कैसी हैं भवानी जिनके निर्गत निर्मलमुख मयङ्गी चन्द्रिकाकहे चादनी प्रकाश करिरही है कामिव काकीनाई जैसे हियरुहे पाला अद्रिरुहे पर्वत हिमाद्रि विषे महाओषधि संजाग्न्यादि ज्वलितकहे प्रकाशित होइ रहीहै यह अर्द्धांगी अनुपम स्वरूप निराकार निप्रकार जगदाधार सदाशिव परमेश्वर ने अनादिरचनादि एकरूपलोपकरि अनेकरूप प्रकाशकरन इच्छारामय अद्वय प्रकृति पुरुषसंयुक्त दृश्यमान अर्द्धांगीस्वरूप धारण किया है इस स्वरूप की महिमा वा उपमा वेदशास्त्र पुराण काव्यादि नहीं कहिसके काहेसे कि एवही रूपहै इस स्वरूप की उपमा उपमाविना है रूपसंयुक्त किये नहीं होसक्ती है और द्वै उपमासे द्वैत भासित होता है इसलिये परमेश्वर की उपमा हिमाद्रि परमेश्वरी की उपमा महौषधि करते भये फिर हिमाद्रिगुण शीतलता भगवती के मुखचन्द्र की चन्द्रिका में घटितकरि और ओषधिन की प्रज्वलिता भगवान् के तेजमें प्रकट करि अथवा तेज चन्द्रिका का एक ठौर होना असंगत है परन्तु इहा दोनों समान प्रकाश करते है क्योंकि भगवती की शीतल चन्द्रिका करिके सदा शातिमूर्ति सतोगुणी श्वेत कर्पूरवर्ण विश्वनाथ शोभित दैरेहै हैं और श्रीभगवान् के तेजवरिके त्रैलोक्यजननी श्रीपार्वतीजी काचनवर्ण दीप्यमान है रही है अर्थात् दोनों उपमा

प्रसिद्धयोगामुनिभिः प्रयुक्ताश्चिकित्सकैर्ये बहुशाऽनुभू-  
ताः । विधीयते शार्ङ्गधरेण तेषां सुमंग्रहस्सञ्जनगञ्जनाद्य २  
हेत्वादि रूपाकृति सात्त्व्यजातिभेदैः समीच्यातुरसर्व्वरो-  
गान् । चिकित्सातं कर्षणवृंहणख्यं कुर्व्वीत वैद्यो विधिवत्सु-  
योगैः ३ दिव्योषधीनां बहवः प्रभेदा वृन्दारकाणां भिव वि-  
स्फुरन्ति । ज्ञात्वेति सन्देहमपास्यधीरैस्सम्भावनीया विधि-  
धप्रभावाः ४ स्वाभाविकागन्तुककायिकान्तरारोगाभवेयुः

अर्द्धांगी सूचित भई क्योंकि प्रकृति की उपमा के गुण पुरुष में पाये गये पुरुष की  
उपमा के गुण प्रकृति में पाये गये पुनरर्थः मयम कविलीग अपने इष्टदेवसे मंगला-  
चरण में यान्यमान होइ ग्रंथको घटित करते ई कि महादेवजीका तेज उष्ण पित्ता-  
धिपति पार्थसीगी की चन्द्रिका शीतल रलेप्मानियति और मसारणभ्रम वा व्याल  
भूषण करिके चाप्यधिपति जैसे गौरीशङ्कर को शोभास्त्री गुणसहित सेइरहै तैसे  
शार्ङ्गधरचेत्ता घेघों की सेवा में श्रीयशके देनेवाले होइंगे कैसा है शार्ङ्गधर जैसे  
हिमाद्रि महाओषधीन करिके ज्वलित कहे प्रकाशित होइरहा है तैसे शार्ङ्गधर म-  
हौषधीयुक्त है ॥ १ ॥ शार्ङ्गधर सू कहते हैं कि मैं सञ्जन मनुष्यन के मनोरंजन  
के निमित्त सुधुत चरकादि गुनि और श्रेष्ठ प्राचीन वैद्यों के निश्चित किये प्रसिद्ध  
योग या शार्ङ्गधर में संग्रह करि ग्रन्थित करताहूँ ॥ २ ॥ प्रथम चैद्य इन पंचमकारमें  
व्युत्पन्न होय हेतु १ आदिरूप २ आकृति ३ सात्त्व्य ४ जातिभेद ५ तत्र पीडित रोगी  
की निदानपूर्वक कर्षण वृंहणादि चिकित्सा करै कर्षण कहे घटावना वृंहण कहे य-  
दावना वातादि दोषन की घटावै हेत्वादिलक्षणा हेतु कहे निदान आदिकारण  
जिससे रोगकी उत्पत्ति है १ आदिरूप कहे मयम रोगी की देहदृष्टना जँभवाईमा-  
वना २ आकृति कहे चेष्टा मलिनहोना वृष्णा मूर्च्छा सम्भ्रम दाह निद्रानाश ३  
सात्त्व्य कहे रोगीकी अपेक्षा अित वस्तुको यन चाहै यथा गर्मीलगै पवनप्लासे में  
पानी वा हितकारक जैसे जाटालगै बल हित करै ४ जाति कहे इन्द्रियपरिज्ञान  
अपने भ्रममें सायमान वा विहलता ॥ ३ ॥ जैसे वृन्दारक कहे देरतनमें बहुत श्रेष्ठ  
गुण निस्फुरित कहे प्रकाशित हैं तैसेही दिव्यकहे उत्तम ओषधिन में भी भाशित है  
सो ज्ञात्वा कहे जानिकै धीर वैद्य सन्देह छोड़िकै ऐसी सम्भावना करै कि मेरे  
निरवय से भी अधिक गुण और प्रभाव ओषधिन में है ॥ ४ ॥ और स्वाभाविक

किलकर्मदोषजाः । तच्छेदनार्थदुरितापहारिणःश्रेयोमयान्योगवरान्नियोजयेत् ५ प्रयोगानाममात्सिद्धान्प्रत्यक्षादनुमानतः । सर्व्वलोकहितात्ययवक्ष्याम्यनतिविस्तृतात् ६ प्रथमंपरिभाषास्याद्गैषज्याख्यानकन्तथा । नाडीपरीक्षादिविधिस्ततोदीपनपाचनम् ७ ततःकालादिकाख्यानमाहारादिगतिस्तथा । रोगाणांगणनाचैवपूर्वखण्डोऽयमीरितः ८ स्वरसःकाथफाण्टौचहिमःकल्कश्चूर्णकम् । तथैवगुटिकालेहो स्नेहसन्धानमेवच ९ धातुशुद्धिरसाश्चैवखण्डोऽयमध्यमःस्मृतः । स्नेहपानंस्वेदविधिर्वमनंचविरेचनम् १० ततस्तुस्नेहवस्तिःस्यात्ततश्चापिनिरुहणम् ।

आगन्तुक कायिक आन्तरिक इन चारों से वा तीनों दोषन से वा भारव्यकर्म से रोग होइ ताके नाश करिवे को दुरित कहे पातक प्रहार करनवरि श्रेष्ठ योग वैद्य करै स्वभावादिलक्षणा स्वाभाविक विहाराहार विषमता यथा शिनुशुभा गतशुभाराम या हीन विपरीत भोजन वा निर्भोजन योंही तृपा और अन्न ते मरणपर्यंत अवस्थासे विपरीत कर्म्य होना १ आगन्तुक शस्त्रापघात पतन प्रहार विष मद् सर्प पशु पीड़ितादि २ कायिक व्यायाम श्रम मैथुनगति प्रागुन्यूनाधिकत्वसे दोषत्र कुपित होना ३ अन्तर मनमें खेद क्रोध चिन्ता शोक मूर्च्छा संन्यास श्वासनिरोधादि ४ ॥ ५ ॥ प्रत्यक्षसे औ अनुमानसे शास्त्रसे जे प्रसिद्धयोगसी लोकके हितार्थ संज्ञेय करि कहता हूं ॥ ६ ॥ या शर्द्धवर के तीन सण्ड हैं ताके प्रथमसण्ड में पहिले परिभाषा कहे ओपधि की तोलकी फिरि भैषज्याख्यान कहे ओपधिमक्षयविधि फिरि नाडीपरीक्षा स्वप्न शकुन विचार श्वर दीपन अग्निज्वलित करना पाचन जो मलको भरम करि पचावे ॥ ७ ॥ ताके पीछे ओपधिमक्षण समय फिरि आहार अन्तरप्रवेश गति कही और रोगोंकी संख्या कही इतनी बातें प्रथम सण्डमें हैं ॥ ८ ॥ ( अथ मध्यखण्डेऽनुक्रमणिका ) द्रव्यनका रत्न काय कही कादा फास्ट कही द्रव पदार्थ का अग्नियोगसे फाड़ना रतिकी भिन्नोई ओपधि का मातः बल लेइ इसे हिम कहिये करककरे पीठी सूर्य गोली अचलेह कही चटनी तेल ॥ ९ ॥ धातुशुद्धिरसक्रिया ये मध्यसण्ड में कही ( अथोत्तरखण्डेऽनुक्रमणिका ) मृततेल पीना स्वेदविधिरेकना और ओपधिशे से पत्तीना निकालना

ततश्चाप्यत्तरोत्रस्तिस्ततो नस्यविधिर्मतः ११ धमपा-  
नविधिश्चैव गण्डूपादिविधिस्तथा । लेपादीनांविधिः  
ख्यातस्तथाशोणितविस्रुतिः । नेत्रकर्मप्रकारश्चखण्डः  
स्यादुत्तरस्त्वयम् १२ द्वात्रिंशत्प्रमिताध्यायैर्युक्तेयंसंहिता  
स्मृता । षड्विंशतिरातान्यत्रश्लोकानांगणितानि च १३ ॥

परिभाषा ॥ नमानेन विनायुक्तिर्द्रव्याणां जायते क्वचित् ।  
अतः प्रयोगकार्यार्थमानमत्रोच्यते मया १४ जालान्तरगते  
भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः । तस्यात्रिंशत्तमो भागः परिमाणुः  
स उच्यते १५ त्रसरेणुर्वृधैः प्रोक्तस्त्रिंशत्ता परिमाणुभिः । त्रस-  
रेणुस्तु पर्यायैर्नाम्ना वंशीनि गद्यते १६ जालान्तरगते रसूर्य  
कर्णवंशीनि गद्यते । षड्वंशीभिर्मरीचिः स्यात्ताभिः षड्भिरतु-  
राजिका । तिगुभीराजिकाभिश्च सर्षपः प्रोच्यते वृधैः १७  
यवोऽष्टसर्षपैः प्रोक्तो गुञ्जा स्यात्तच्चतुष्टयम् । षड्भिस्तुरक्लि-  
काभिः स्यान्मापकौ हेमवान्यकौ । माषैश्चतुर्भिः शाणः स्या-  
वमन कही उद्धार विरेचन कही दस्त ॥ १० ॥ स्नेहस्ति कहे गुदमार्ग से पिच-  
कारी देना निरुदहण कहे कादा दूधशी पिचकारी देना उचरवस्ति कहे पिचकारी  
का विमान अनन्तर नासविधि ॥ ११ ॥ ध्रुवां पीनेशी विधि गण्डूपादिविधि जिते  
पवनकुत्रा कहते हैं लेपादि की विधि अरु शोणितविस्रुति कही रक्त निकालना  
नेत्रांजन ये सब उत्तरखण्ड में कहे हैं ॥ १२ ॥ यह रत्तिस अध्याय में कहा  
इस में दो सहास्र छम्भौ श्लोक हैं ॥ १३ ॥

(परिभाषा) त्रिनतुली ओषधि त्रयोम्यहं इति लिखे प्रयोगके निमित्त में माग्य  
परिभाषाको दहताहं ॥ ११ ॥ भरो पाके द्विद्रोमें जो सूर्यकी आभासे रजकण उड़ते  
देखपडते हैं उनके तीसरे भागको परिमाणु कहते हैं ॥ १५ ॥ किसी २ के मतसे जो  
द्विद्रोमें सूर्यकी किरणें दिनाई पड़ती हैं उस ३० परिमाणुका एक त्रसरेणु होता है  
इसीको वंशी कहते हैं वा छः वंशीकी एक मरीची छः मरीचीकी एक राई तीन राई  
की एक सरसौं ॥ १६ । १७ ॥ आठ सरसौंका एक यत्र चार यत्रकी गुंजा अर्थात्  
पारची छः रचीवा एकमाशा सोई हेम थां धन्य कहते हैं चारमाशका एक

द्वरणःसनिगद्यते १८ टङ्कःसएवकथितस्तद्व्यंकोलउ-  
 च्यते । क्षुद्रःकोलवटश्चैवद्रङ्गणस्मनिगद्यते १९ कोलद्व-  
 यंचकर्षःस्यात्साप्रोक्तापाणिमानिका । अक्षःपिचुःपाणित-  
 लंकिञ्चित्पाणिश्चतिन्दुकम् २० विडालपदकंचैवतथा  
 षोडशिकामता । करमध्यंहंसपदंसुवर्णकवलग्रहः २१ उ-  
 द्दुम्बरश्चपर्यायैःकर्षएवनिगद्यते । स्यात्कर्षाभ्यामर्द्धपलं  
 शुक्तिरष्टमिकातथा २२ शुक्तिभ्यांचपलंज्ञेयं मुष्टिराश्वंच  
 तुथिका । प्रकुञ्चःषोडशीविल्वंपलमेवात्रकीर्त्यते २३  
 पलाभ्यांप्रसृतिर्ज्ञेयाप्रसृतश्चनिगद्यते । प्रसृतिभ्यामञ्ज-  
 लिःस्यात्कुडवोर्द्धशरावकः २४ अप्रमानंचसंज्ञेयंकुडवा-  
 भ्यांचमानिका । शरावोष्टपलंतद्वज्ज्ञेयमत्रविचक्षणैः २५  
 शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थश्चतुष्टयप्रस्थैस्तथाढकम् । भाजनं  
 कांस्यपात्रंचचतुःषष्टिपलंचतत् २६ चतुर्भिराढकैर्द्रोणः  
 कलशोनलवणोर्मणः । उन्मानश्चघटोराशिर्द्रोणपर्याय  
 संज्ञितः २७ द्रोणाभ्यांशूर्पकम्भौचचतुःषष्टिशरावकः ।  
 शाण यदी धरण ॥ १८ ॥ औ टङ्क कहाताहै दो टङ्क का एक कोल उसी को क्षुद्र, को-  
 ल वट, द्रङ्गण कहतेहै ॥ १९ ॥ दो कोल का कर्ष होताहै उसे पाणिमानिका, अक्ष,  
 पिचु, पाणितल, किञ्चित्पाणि, तिन्दुक, ॥ २० ॥ विडालपदक, षोडशिका, करमय,  
 हंसपद, सुवर्ण, कवलग्रह ॥ २१ ॥ और उदुम्बर कहतेहै ये सत्र कर्ष के पर्यायहै दोकर्ष  
 को अर्द्धपल, शुक्ति व अष्टमिका कहतेहै ॥ २२ ॥ दो शुक्ति को एकपल औमुष्टि,  
 आश्र, चतुथिका, प्रकुञ्च, षोडशी, विल्व कहतेहै ये सत्र पल की पर्याय कहिये ॥ २३ ॥  
 और दोपलकी एक प्रसृति जानना चाहिये और प्रसृतभी कहते है दो प्रसृतको अञ्ज-  
 लि, कुडव और अर्धशराव कहतेहै ॥ २४ ॥ और अप्रमान भी कहतेहै दोकुडव को  
 मानिका उसी को जो सद्वैद्य है अप्रमल कहते हैं ॥ २५ ॥ दो शरावकी एक प्रस्थ  
 संज्ञा है २ प्रस्थ वा आठ शराव वा चौसठि पल की आठक संज्ञाहै इसे भाजन  
 औ वास्यपात्र भी कहते हैं ॥ २६ ॥ चार आठकको एक द्रोण उसके सात नाम  
 है कलश, नलग्न, अर्मण, उन्मान, गट, राशि द्रोण ॥ २७ ॥ दो द्रोणका एक

शूर्पाभ्यां च भवेद्द्रोणीवाहोगोणी च सांस्मृता २८ द्रोणी  
 चतुष्टयं खारी कथितासूक्ष्मबुद्धिभिः । चतुःसहस्रपलिका  
 ष्षं सवत्यधिका च सा २९ पलानां द्विसहस्रं च भार एकः प्रकी  
 र्तितः । तुलापलशतं ह्येयं सर्वत्रैवैष निश्चयः ३० मापट  
 ङ्काक्षविल्वानिकुडवः प्रस्थमाढकम् । राशिर्गोणी खारिकेति  
 यथोत्तरचतुर्गुणाः ३१ गुञ्जादिमानमारभ्य यावत्स्यात्कु  
 डवस्थितिः । द्रवाद्रेणुषु कद्रव्याणां तावन्मानं समं मतम् ३२  
 प्रस्थादिमानमारभ्य द्विगुणं तद्द्रवाद्रेयोः । मानं तथा तुला  
 यास्तु द्विगुणं न क्वचित्स्मृतम् ३३ मृदस्तु वेणुलोहादेर्भाण्डं  
 यच्च तुरङ्गुलम् । विस्तीर्णं च तथोच्चं यत्तन्मानं कुडवं वदेत्  
 ३४ यद्दोषधन्तु प्रथमं यस्य योगस्य कथ्यते । तज्जान्मैवसयो  
 गोहिकथ्यतेऽत्र विनिश्चयः ३५ ॥ इति मागधपरिभाषा ॥

स्थितिर्नास्त्यवमात्रायाः कालमग्निवयो बलम् । प्रकृ  
 तिदोषदेशोच दृष्ट्वा मात्रां प्रकल्पयेत् ३६ यतो मन्दाग्नि  
 शूर्प, कुम्भ इसे चौसठि शरावभी कहते हैं दोशूर्पकी एकद्रोणी और वाह और गोणी  
 भी कहते हैं ॥ २८ ॥ चारद्रोणीकी एक खारी चारिसहस्र धानके पलकी खारी  
 संज्ञा है ॥ २९ ॥ दोसहस्र पलको भार कहिये सौ पलको तुला कहिये सब ठौर यही  
 निश्चय जानो ॥ ३० ॥ मासे से चौगुना दडु दडुते चौगुना ऋक्ष गक्तते ४ पिलय  
 धिल्वते ४ कुडव कुडवते चौगुना प्रस्थ प्रस्थते ६ आढक आढकते ४ राशि राशि  
 ते ४ गोणी गोणीते ४ खारी एकते एक चौगुनी जानो ॥ ३१ ॥ गुञ्जाते कुडवली  
 सजलपस्तु सम लेना ॥ ३२ ॥ कुडवते तुलाली सजली दूनीलेना तुला ते ऊपर  
 ओदी द्रव्य दूनीलेना ॥ ३३ ॥ चारि थंगुल चौडा वा ऊंचा समान वासन मा  
 दी वा लोहादि किसी हा होय उसकी कुडवसंज्ञा जानो ॥ ३४ ॥ जिस रोगपर  
 जो औषध कहेंगे तिस में जिस द्रव्यका प्रथमनाम आवै उसीको योग निश्चित  
 फरसे हैं जो रास्नादिकाय इसमें प्रथम नाम रास्ना है ॥ ३५ ॥ इति मागधपरिभाषा ॥

( अथ कर्लिंगपरिभाषा ) मात्राका कुडवमापनहीं स्थितिकिया समयअग्नि  
 अरस्था बल प्रकृति रोग देश देलकर वैद मात्राका प्रमाण करै ॥ ३६ ॥ क्योंकि

प्रोहृस्वाहीनसत्त्वानराःकलौ । अतस्तुमात्रातद्योग्याप्रो  
 च्यतेसुक्ष्मसम्मता ३७ यवोद्वादशभिर्गौरसर्षपैःप्रोच्य  
 तेषुधैः । यवद्वयेनगुञ्जास्यात्त्रिगुञ्जोवल्लउच्यते३८ मा  
 षोगुञ्जाभिरष्टाभिःसप्तभिर्वाभवेत्कचित् । स्याच्चतुर्माषकैः  
 शाणःसनिष्कष्टङ्कएवच ३९ गद्यानोमाषकैःषड्भिःकर्षः  
 स्याद्दशमाषकः । चतुष्कर्षैःपलंप्रोक्तंदशशाणमितंशुधैः ।  
 चतुष्पलैश्चकुडवंप्रस्थाद्याःपूर्ववन्मताः ४० कालिङ्गमा  
 गधंचेति द्विविधंमानमुच्यते । कालिङ्गान्मागधंश्रेष्ठमि  
 तिमानविदोविदुः ४१ नवान्येवहियोज्यानि द्रव्याण्य  
 खिलकर्मसु । विनाविडङ्गकृष्णाभ्यां गुडधान्याज्यमाक्षि  
 कैः ४२ गुडूर्वाकुटजोवासाकूष्माण्डश्चशतावरी । अ  
 श्वगन्धासहस्रौ शतपुष्पाप्रसारणी । प्रयोक्तव्यास्सदे  
 वार्द्राद्विगुणानैवकारयेत् ४३ शुष्कलघ्वीनंयद्द्रव्यंयोज्यं  
 सकलकर्मसु । आर्द्रञ्चद्विगुणंयुञ्ज्यादेषसर्वत्रनिश्चयः  
 ४४ कालेऽनुक्तेप्रभातंस्यादङ्गेऽनुक्तेजटामवेत् । भागेऽनु  
 कलियुगमें मनुष्य मन्दाग्नि लघुशरीर और बलहीन होयगे इससे सदैवका मतहै  
 कि मात्रा रोगी को यथायोग्य देनी ॥ ३७ ॥ चारह गौर सरसों का एक यव दो  
 यव की एक गुंजा तीन गुंजाका एक बल्ल कहाताहै ॥ ३८ ॥ आठ गुंजा तथा सात  
 गुंजाका माशा चार माशे का शाण उसी को निष्क और टंकरी कहनेहैं ॥ ३९ ॥  
 छःमाशे का गद्यान दश माशे का कर्ष चार कर्षका पल उसे दश शाणमी कहतेहैं  
 चारि पलका कुडब और प्रस्थाटिकोंको प्रथम कही रीतिसे जानो ॥ ४० ॥ कनि  
 गप्रमाण से मागधप्रमाण सदैव उत्तम मानने हैं ॥ ४१ ॥ सर्वकर्मों में सब औषध  
 नवीन लेना विना पीपरि, विडंग, घनियां, घी और शहदके ॥ ४२ ॥ गुर्चे, जुरैया, स्ना  
 कुम्हडा, श्वेतशतारि, असगन्ध, पात कटसरैया, कृष्णकटमारैया, सौंफ, गेयन्सार  
 णी ये द्रव्य ओदी दूनी न लेना और सूनीद्रव्य सकल प्रयोगमें नवीनदेना और  
 ओदी द्रव्य सूरी से दूनी देना यह सर्वत्र निश्चयहै ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ निम्न औषधिके  
 खान पानका काल नहीं कहा उसका मात्राः जल जानना और निम्न औषधिके प्रेग

क्लेशान्प्रस्यात्पात्रेऽनुक्तेचमृन्मयम् ४५. एकमप्योषधं  
 योगे यस्मिन्पुनरुच्यते । मानतोद्विगुणंप्रोक्तं तद्द्रव्यं  
 तत्त्वदर्शिभिः ४६. चूर्णरनेहासवालेहाः प्राचशश्चन्द  
 नान्विताः । कषाथलेपयोः प्रागोयुज्यतेरक्तचन्दनम् ४७  
 गुणहीनं भवेद्दर्पादूर्ध्वतद्रूपमौषधम् । मासद्वयात्तथा चूर्णं  
 हीनवीर्यत्वमाप्नुयात् ४८. हीनत्वंगुटिकालेहौलभेतेवत्सरा  
 त्परम् । हीनाः स्युर्धृततैलाद्याश्चतुर्मासाधिकारुतथा ४९  
 ओषध्या लघुपाकाः स्युर्निर्वीर्यावत्सरात्परम् । पुराणाः स्युं  
 र्गुणैर्युक्ता आसवाधात्तवोरसाः ५०. व्याधेरयुक्तं यद्द्रव्यं गु  
 णोक्तमपितस्यजेत् । अनुक्तमपियुक्तं यद्योजयेत्तत्रतद्बुधः ॥  
 आग्नेयाविन्ध्यशैलाद्याः सौम्योहिमगिरिर्मतः ५१. अत  
 रतदौषधानि स्युरनुहृपाणिहेतुभिः । अन्येष्वपि प्ररोह

का नाम नहीं लिखा तथा मूल लेना जहाँ कई ओषधि हैं और भागभेद नहीं है  
 वहाँ समभाग लेना जहाँ ओषधि उनाने के पात्र की जाति नहीं लिखी तथा मा  
 दीकाही पात्र लेना जहाँ ओषधि को गीली करना होय और रस वा पानी वा  
 दूध सिरका वा मूल कुछ नहीं लिखा तथा जाने लेना ॥ ४५ ॥ जिस प्रयोगमें ग्रंथ  
 कार जहाँ एकही ओषधि को दोवार लिखे तथा वही ओषधि के दोभाग लेना यह  
 प्रकार तत्त्वदर्शी वैद्य कहते हैं ॥ ४६ ॥ और चूर्ण, तेल, तृत हिम अर्क अश्लोह  
 आदिकन में केवल चन्दन लिखा हो तहाँ रवेत लेना कादे और लेपमें लालच  
 न्दन लेना ॥ ४७ ॥ वर्षभर ओषधिमें गुण रहता है फिर कम होजाताहै दोमास  
 बीते चूर्ण क्षीणताको प्राप्त होताहै ॥ ४८ ॥ वर्षबीते गोली अश्लोह का गुणहीन  
 होनाहै सोलह मास बीते घी, तेल गुणरहित होते हैं ॥ ४९ ॥ वर्षबीते लघुपाक  
 निर्गुण होतेहैं जैसे भेषी, मोदक और दारु, धातु, रस पुराने गुणदायकहोतेहैं ॥ ५० ॥  
 जो ओषधि रोगको अग्निगुणदायकहो उसे ग्रंथकी लिखी भीत्यागदेह और जो रोग  
 को हितकरै सो अनलिखी भी ग्रहणकरै ॥ ५१ ॥ दक्षिणके विध्याचनादि पर्वत  
 सप्तप्रकृति हैं उनपर उत्पन्न ओषधि भी सप्तप्रकृति होती हैं उत्तर के हिमाच  
 लादि पर्वत शीतल हैं उनपरकी सप्तप्रकृति ओषधि भी ठण्डी होतीहै और बन



न्ति वनेषूपवनेषु च ५२ गृहीयात्तानिसुमनाः शुचिः प्रा-  
 तःसुवासरे । आदित्यसम्मुखोमौनीनमस्कृत्यशिवंहृदि ॥  
 साधारणंधराद्रव्यं गृहीयाद्दुत्तराश्रितम् ५३ बल्मीककु-  
 तिसतानूपशमशानोपरमार्गजाः । जन्तुबह्निहिमव्याप्ता-  
 नौपध्यःकार्यसाधकाः ५४ शरद्यखिलकार्यार्थं ग्राह्यं सर-  
 समौषधम् । विरेकवमनार्थंचवसन्तान्तेसमाहरेत् ५५ अ-  
 निस्थूलजटायास्तुतासांग्राह्यास्त्वचोबुधैः । गृहीयात्सू-  
 दमसूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान् ५६ न्यग्रोधादेस्त्वचो-  
 ग्राह्यासारःस्याद्बीजकादितः । तालीसादेशचपत्राणिफलं  
 स्यात्त्रिफलादितः ॥ धातक्यादेशचपुष्पाणिस्तुह्यादेःक्षी-  
 रमाहरेत् ५७ ॥ इति शार्ङ्गधरेपरिभाषाऽध्यायः प्रथमः १ ॥

वन में जो द्रव्य होती हैं सो जैसा उस पृथ्वीका स्वभाव होताहै वैसाही उसकी  
 उत्पन्न द्रव्यका भी स्वभाव होताहै ॥ ५२ ॥ मनुष्य प्रातःकाल पवित्रहो शुभदिन  
 गौनहोके हृदयमें शिवका ध्यानकरि सूर्यके समुद्राहो ओपत्रिलावै साधारण  
 जगहकी द्रव्य उत्तर मुखही होके लेना ॥ ५३ ॥ और इतनी जगहकी द्रव्य न लेना  
 सर्पकी बांवी कुतिसतभूमि जहां रणभयाहो समरानकी उत्तर जहां रहे चूना निक-  
 लता होइ तरमार्ग की जहां गदहे लोटते हैं और मार्गकी दलदल कृमिस्थान  
 की दग्धभूमि की पाला मारी हुई इत्यादि भूमिकी द्रव्य कार्य साधक नहीं हैं ॥  
 ५४ ॥ सर्व कार्य अर्थ शरद्ऋतु में ओदी ओपधि लावै और वमन विरेचन  
 के अर्थ वसन्त के अन्त में ओदी वस्तुलावै ॥ ५५ ॥ और अतिस्थूल वृत्तके  
 जड़की छाल सदैव लेते हैं और सय छोटे वृत्तन की जड़ ग्राह्य है ॥ ५६ ॥ और  
 धरगदादि वृत्तनकी छाल ग्राह्यहै विजयसेनारादि वृत्तका हीर लीजै तालीमांदि  
 वृत्तकी पाती लीजै त्रिफलादिक का फल लीजै धवआदिकके पुष्प लीजै सेंहुड़ा-  
 दिक का दूध लीजै इस रीति से वही ग्रहणकरै जहां केवल वृत्तका नाम है  
 अज्ञ नहीं है ॥ ५७ ॥

इति श्रीशार्ङ्गपरिव्याख्यायां परिभाषाऽध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

भैषज्यमभ्यवहरेत्प्रभातेप्रायशोबुधः । कपायश्चवि  
 शेषेणतत्रभेदस्तुदर्शितः १ ज्ञेयःपञ्चविधःकालोभैषज्यग्र  
 हणेनृणाम् । किञ्चित्सूर्योदयेजातेतथादिवसभोजने ॥ सा  
 यन्तनेभोजनेचमुहुश्चापितथानिशि २ प्रायःपित्तकफोद्रे  
 केविरेकत्रमनार्थयोः । लेखनार्थंचभैषज्यंप्रभातेतत्समाच  
 रेत् ॥ एवंस्वात्प्रथमःकालोभैषज्यग्रहणेनृणाम् ३ भैष  
 ज्यंविगुणेषाने भोजनाग्रेप्रशस्यते । अरुचौचित्रभौज्यै  
 श्चमिश्रंरुधिरमाहरेत् ४ समानवातेविगुणेमन्दाग्नाव  
 ग्निदीपनम् । दद्याद्भोजनमध्येचभैषज्यंकुशलोभिषक् ५  
 व्यानकोपेचभैषज्यंभोजनान्तेसमाहरेत् । हिक्काक्षेपककम्पे  
 पुपुर्वमन्तेचभोजनात् ॥ एवंद्वितीयःकालश्चप्रोक्तोभैषज्य  
 कर्मणि ६ उदानेकुपितेवातेस्वरभङ्गादिकारिणि । ग्रासेग्रा  
 सान्तरेदेचंभैषज्यंसान्ध्यभोजने ७ प्राणप्रदुष्टेसान्ध्यस्यभु

वैद्यलोग ओषधि सभरे खवावै और कपायादि विशेष प्रातःकाल में फांट हिम  
 स्वरस करक आवश्यक देना और जो ओषधि देने का समय है सो आगे कहता  
 हूँ ॥ १ ॥ ओषधि खानेके पांच समय हैं प्रथमकाल किञ्चित् सूर्योदयमें दूसरा  
 दिनके भोजन समय में तीसरा संध्याको चौथा निशिमें भोजनके समय पांचवां  
 रात्रिमें सोनेके समय ॥ २ ॥ जिस मनुष्यको पित्त और कफका वेगहो उसे रेचन  
 या वमनरुही उद्वार वा लेखनक्रिया प्रातःकाल करे लेखन कहे चमड़ेकी पट्टी  
 माथेपर धारिके ओषधि भरे पित्त के अधिकार में वमन कफके अधिकार में रे-  
 चन और लेखन यह ओषधि करनेका प्रथम कालचांथा ॥ ३ ॥ अपानवायुके  
 विगरे में भोजनके प्रथम ओषधिदेय अरुचि में विचित्र भोजनके संग रुधिकारक  
 ओषधि खवावे ॥ ४ ॥ सदैव समानवायु और मन्दाग्नि में अग्निज्वलित कारक  
 द्रव्य भोजन के मध्यमें देय ॥ ५ ॥ व्यानवायु के कोपमें भोजन के अन्त में ओष-  
 धि खवावे और हिचकी आलेपक कम्पवायु में भोजनके आदि अन्त में देय यह  
 दूसरा कालहै ॥ ६ ॥ स्वरभंगादि करनेवाली उदानवायु के कोप में संध्या  
 समय प्राण ग्रासके अन्त में ओषधि देइ ॥ ७ ॥ माण वायु के कोप में

कस्यान्तेचदीयते । औषधंप्रायशोधीरैः कालोयंरयात्तृती  
 यकः ८ मुहुर्मुहुश्चतुर्छर्दिहिकाश्वासगरेषुच । सान्नञ्च  
 भेषजंद्यादितिकालश्चतुर्थकाः ९ ऊर्ध्वजत्रुविकारेषुले  
 खनेवृंहणे तथा । पाचनंशमनंदेयमनन्नंभेषजंनिशि ॥ इ  
 तिपञ्चमकालस्स्यात्प्रोक्तोभैषज्यकर्मणि १० द्रव्यैरसो  
 गुणोवीर्यं विपाकःशक्तिरेवच । सम्बन्धेनक्रमादेताःप  
 ञ्चावस्थाःप्रकीर्तिताः ११ मधुरोऽम्लःपटुश्चैव तिक्तःक  
 टुकपायकः । इत्येतेषुद्रसाख्यातानानाद्रव्यसमाश्रिताः  
 १२ धराम्बुद्धमानलजलज्वलनाकाशमारुतैः । वायव्य  
 ग्निक्षमानिलैर्भूतद्वयैरसभवःक्रमात् १३ गुरुस्निग्धश्च  
 तीक्ष्णश्च रूक्षौलघुरितिक्रमात् । धराम्बुवह्निपवनव्यो  
 म्नां प्रायोगुणाःस्मृताः । एष्वेवान्तर्भवन्त्यन्येगुणेषुगुणस  
 ञ्चयाः १४ वीर्यमुष्णं तथाशीतं प्रायशोद्रव्यसञ्चयम् ।  
 तत्सर्वमग्निषोमीयं दृश्यतेभुवनत्रये ॥ अत्रैवान्तर्भविष्य  
 सांस्करो भोजन के अन्त में देइ यह तृतीय काल वांछा ॥ ८ ॥ और वार वार  
 प्यास छर्दि हिचकी रसास में और त्रिपपीड़ित को अन्न के संग ओषधि देइ  
 यह चौथा काल वांछा ॥ ९ ॥ हसली के ऊपर कर्खरोग नेत्र मुग्न नासिका के  
 रोगनमें लंखनके निमित्त रातको विना अन्नपाचन समय ओषधि देइ यह पञ्चम  
 काल जानना ॥ १० ॥ ओषधि के पांच अधिकार है रस १ गुण २ वीर्य ३ वि  
 पाक ४ शक्ति ५ ॥ ११ ॥ सब द्रव्यों में द्रव्यस्वादु है मयुर १ सट्टा २ लवण ३  
 तीक्ष्ण ४ कडुसा ५ कपाय ६ ॥ १२ ॥ पृथ्वी और जलमे गुरु रस होताहै १  
 पृथ्वी पवनसे सट्टा होताहै २ जल और अग्निसे लग्न होताहै ३ आकाश और  
 वायु से तीक्ष्ण होताहै ४ वायु और अग्नि से कडुसा होताहै ५ पृथ्वी और अ  
 ग्नि से कसैला होताहै ६ यों दो तत्त्व मिलके एकरस होताहै ॥ इति स्मोत्पिः ॥  
 १३ ॥ (अथ गुण) पृथ्वीका गुण भारी है जलका चिपना अभिज्ञानेन दादु  
 का रुग्ना और आकाश का गुण हलका है ये पांचों तत्त्व के पांच गुण हैं और जो  
 गुणादि भी इनके मेल से होते है सो अनुमान से जानना ॥ इति गुण ॥ १४ ॥

न्तिवीर्यार्ण्यन्यानि यान्यपि १५ मिष्टः पटुश्च मधुरमम्ले  
 ऽम्लं पच्यते रसः । कपायकटुतिक्तानां पाकः स्यात्प्राय  
 शः कटुः १६ मधुराज्जायते श्लेष्मापित्तमम्लाच्च जायते ।  
 कटुकाज्जायते वायुः कर्माण्येतानि पाकतः १७ प्रभावस्तु  
 यथाधात्री लकुचश्चरसादिभिः । समोपिकुरुते दोषत्रित  
 यस्य विनाशनम् १८ क्वचित्तु केवलं द्रव्यं कर्म कुर्यात्प्रभा  
 वतः । ज्वरं हन्ति शिरोवद्धासह देवीजटा यथा १९ क्वचि  
 द्रसोगुणो वीर्यविपाकः शक्तिरेव च । कर्मस्वंस्वंप्रकुर्वन्ति  
 द्रव्यमाश्रित्य ये स्थिताः २० चयकोपसमायस्मिन्दोषा  
 (अथ चोत्पत्तौ) सव द्रव्यका स्वभाव गर्भ या ठंढा होता है सो सूर्य वा चन्द्रमा फरि कै  
 उष्ण शीत हैं इन्हीं दोनों से तो मधुरादि स्यादु द्रव्य के अन्तर उत्पन्न होता है ॥ इति  
 वीर्य ॥ १ ॥ (अथ विपाक) मीठे लूनलरे से मधुर रस होता है सदा विपाक पर  
 भी सदा रहता है, कपाय कटु तिक्त ये तीनों विपाक पर कटुपे होते हैं ॥ १६ ॥  
 मधुररस से कफ होता है अम्ल से पित्त होता है कटु से वायु होता है रसों के पाक  
 से तीनों दोष होते हैं ॥ इति विपाकः ॥ १७ ॥ (अथ प्रभावगुण) आंचरेका रस  
 गुणवीर्य विपाक अधिकारते ममान गुण हैं यद्यपि हलका है तौ भी निदोष नाश  
 कहे कहीं लकुचस्य ऐसा पाठ है (आंचरेका गुण) वीर्य विपाक निदोषनाशक है  
 और पटुहलका गुण ॥ वीर्य विपाक निदोषकारक है जो दोनों मिलायक दे दे तो  
 भी आचरे अपने प्रभावने निदोष नाश करता है यह रामनिन्दुका मत है ॥ १८ ॥  
 कोई कोई केवल द्रव्य के प्रभावसे रोग दूर होजाते हैं जैसे सहदेव की मूत्र मापे  
 पर बांधने से पुर छूटजाता है ॥ इति प्रभाव ॥ १९ ॥ किमी ओपधि का रस किसी  
 का गुण किसी का वीर्य किसी का विपाक किसीकी शक्ति ये सब द्रव्य के आ-  
 र्थिन है अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार गुण करती है गुरुचका रस कटुवा औ गर्भ  
 है तौ भी पित्त नाश करता है ॥ इति रस उदारण ( गुण ख० ) मूली कटुई है  
 तौभी कफ करता है ( वीर्य उ० ) सड़े पञ्चमूल का काय कटुई तौभी घातशमन  
 करता है क्योंकि उष्ण वीर्य विपाक है ॥ सोंठे तीक्ष्ण है तौभी घातशमन है क्योंकि  
 मधुर विपाक है (शक्ति उ०) जैसे सुधुतमे कहा है रस लुप्तको नाश करता है ॥ २० ॥  
 घात पित्त कफ के पढानेवाली औ कुपित करनेवाली सम करनेवाली श्रुतु का

षांसम्भवन्तिहि । ऋतुषट्कंतदाख्यातरवेराशिषुसङ्क्र  
 मात् २१ ग्रीष्मोमेषवृषौप्रोक्तौप्रावृट्मिथुनकर्कयोः । सिंह  
 कन्येस्मृतावर्षान्तुलावृश्चिकयोः शरत् । धनुर्ग्राहौ च हेमन्तो  
 वसन्तः कुम्भमीनयोः २२ ग्रीष्मेसञ्चीयते वायुः प्रावृट्काले  
 प्रकुप्यति । वर्षासु चीयते पित्तं शरत्काले प्रकुप्यति २३  
 हेमन्ते चीयते श्लेष्मावसन्ते च प्रकुप्यति । प्रायेण प्रशमं  
 याति स्वयमेव समोरणः २४ शरत्काले च हेमन्ते पित्तं प्रावृ  
 ङ्गतौ कफः । कार्तिकस्य दिनान्यष्टावष्टावाग्रहणस्य च ।  
 यमदंष्ट्रा समाख्याता अल्पाहारी स जीवति २५ चंयकोप  
 समादोपाविहारहारसेवनैः । समानैर्यान्त्यकालेपि विपरी  
 तैर्विपर्ययम् २६ लघुरुक्षमिताहारादतिशीताच्छ्रमात्  
 प्रमाण संक्रांति सेह ॥ १ ॥ मेष संक्रांति से वृष संक्रांति ताई ग्रीष्म ऋतु है मिथुनते  
 कर्कताई प्रावृट्टै सिंहते कन्याताई वर्ष है तुलाते वृश्चिकताई शरत् है धनुते मकर  
 ताई हेमन्त है कुम्भते मीन अर्थत वसन्त है यों यों दो दो पासकी एक एक ऋतु  
 होती है ॥ २२ ॥ ग्रीष्म में वायु संचित कहे इकट्ठी हो प्रावृट् में कोप करती है वर्षा में  
 पित्त बढ़के शरत् में कोप करता है ॥ २३ ॥ हेमन्त कहे शिशिर में कफ इकट्ठा हो  
 वसन्त में कोप करता है और वायु इन महीनों के बीते आसते क्षय पांचवें मिति  
 में समान होजाती है ॥ २४ ॥ शरत् ऋतु श्री हेमन्त ऋतु में पित्त सन होजाता है और  
 प्रावृट् ऋतु पाइके कफ समवर्ती होता है और कार्तिक शुक्राक्षर ही कष्टों से मनुष्य  
 कृष्ण अष्टमीताई सोलहदिन पर्वत इनदिनों की यमदंष्ट्रा संज्ञा है उम यमदंष्ट्रा  
 भर सूक्ष्म आहार करनेवाला मनुष्य सुखी रहता है बरोंके इन दिनों में पित्त के  
 कोपसे विशेष अग्नि दीसहो रुचि बढ़ता है तो भोजन विशेष करता है विशेष  
 भोजन अग्नि सन्तुष्ट फरदेता है तिस के जागेकी श्रुति में रूप संचय होता है  
 उससे अग्नि मन्द होती है तब अन्नके पस्त्राक न होनेसे रोग उत्पन्न होते हैं और  
 जो यमदंष्ट्रा के दिनोंमें अग्नि सन्तुष्ट न हो वे वर्षा में अग्नि दंष्ट्र रहै ॥ २५ ॥  
 जो मनुष्य आहार विहार के समयका संवत् रत्ते है उनके देव सम रहने है और  
 जो समय से विपरीत करते हैं उनके देव उने उने कोप करने समोते रहते  
 हैं ॥ २६ ॥ और हस्तके, रुद्रके, शोके, द्ये, अंगुर जैत यम सन्त्याके समय गेयुन

था । प्रदोषेकामशोकाभ्यांभीचिन्तारात्रिजागरैः २७ अ  
 भिघातादपाङ्गाहार्जाणैर्निघातुसङ्क्षयात् । वायुःप्रकोपंया  
 त्येभिःत्रिपरीतैश्चशाम्यति २८ । विदाहिकटुकाम्लोष्ण  
 भोज्यैरत्युष्णसेवनात् । मध्याह्नेक्षुत्तृषारोधाज्जीर्णप्रत्यन्ने  
 र्द्धरात्रके । पित्तप्रकोपंयात्येभिःत्रिपरीतैश्चशाम्यति २९  
 मधुरस्निग्धशीतादिभोज्यैर्दिवसनिद्रया । मन्देग्नौतुप्र  
 भातेच भुक्तमात्रेतथाश्रमात् । श्लेष्माप्रकोपंयात्येभिः  
 प्रत्यनीकैश्चशाम्यति ३० ॥ इति श्रीदामोदरसूनुशार्ङ्ग  
 धरेण विरचितायांसंहितायांसूत्रस्थाने भैषज्याख्यानकद्वि  
 तीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ अथ नाडीपरीक्षा ॥

करस्याङ्गुष्ठमूले या धमनीजीवसाक्षिणी । तच्चेष्टया  
 सुखंदुःखं ज्ञेयंकायस्यषण्डितैः १ नाडीधत्तेमरुत्क्रोपे  
 जलौकासर्पयोर्गतिम् । कुलिङ्गककमण्डूकगतिंपित्त  
 रयक्रोपतः । हंसपारावतगतिं धत्तेश्लेष्मप्रकोपतः २  
 लावतित्तिरवर्त्तानागमनंसन्निपाततः । कदाचिन्मन्दग

अथ शो क भय चिन्ता रातिके जगने से ॥ २७ ॥ चोट से पैरने से घासी भोजन से  
 धातुक्षय से वात क्रोप करता है जो इनसे बचै तो वायु सम है ॥ इति वायुः ॥ २८ ॥  
 दाहवाली वस्तु कड़ु, सड़ी, गरम, अतिगरम वस्तु सेवन दोषहरी को भूय प्याप्त  
 रोकना आशी रात्रि के भोजन इनसे पित्त कुपित होता है इनसे सावधान रहै  
 सम होता है ॥ इति पित्त ॥ २९ ॥ मीठा खटमिष्टा ँडे दिनमें निद्रा मूले रहना सवेरे  
 खाना अन्नश्रम इनसे कफ कुपित होता है ॥ इति कफ ॥ ३० ॥ इति श्रीदामोदरसूनु  
 शार्ङ्गधरेण विरचितायांसंहितायांसूत्रस्थाने भैषज्याख्यानकद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

(अथ नाडीपरीक्षा) धायके अगूठे की जड़ में जो नाड़ी चलती है सो जीव  
 की साक्षी है वय उसकी चेष्टा देखि है दुःख सुख पाईवान लेइ ॥१॥ वायुप्रधान  
 नाड़ी जोक सर्पकी नाई चलती है पित्तप्रधान नाड़ी गौरा और मेढककी चाल  
 चल भी है कफप्रधान नाड़ी हंस और कबूतर की चाल चलती है ॥२॥ सन्निपात

मनाकदाचिद्वेगवाहिनी ॥ द्विदोषकोपतोज्ञेया हन्तिच  
स्थानविच्युता ३ स्थित्वास्थित्वाचलतियासास्मृताप्राण  
नाशिनी । अतिक्षीणाचशीताचजीवितंहन्त्यसंशयम् ४  
ज्वरकोपेनधमनीसोष्णात्रेगवतीमता । कामक्रोधाद्वेगव  
हाक्षीणाचिन्ताभयप्लुता ५ मन्दाग्नेःक्षीणधातोश्चनाडी  
मन्दतराभवेत् । असूक्पूर्णाभवेत्कोष्णागुर्वीसामागरीय  
सी ६ लघ्वीवहतिदीप्ताग्नेस्तथात्रेगवतीमता । सुखित  
स्यस्थिराज्ञेयातथावलवतीस्मृता ॥ चपलाक्षुधितस्य  
स्यात्तृप्तस्यवहतिस्थिरा ७ ॥ अथ दूतलक्षणम् ॥ दूताः  
स्वजातयोऽव्यङ्गाः पटवोनिर्मलाम्बराः । सुखिनोऽवष्ट  
षारूढाः शुभ्रपुष्पफलैर्युताः ८ सुजातयस्सुचेष्टाश्चस  
जीवदिशिसंश्रिताः । भिषजंसमयेप्राप्तारोगिणस्सुखहेत  
वे ९ ॥ इति दूतलक्षणम् ॥ वैद्याह्वानायदूतस्यगच्छतो  
रोगिणःकृते । न शुभं सौम्यशकुनं प्रदीप्तंच सुखाव  
की सीतर व घटेर की चाल चनती है द्वन्द्वन दो दोषकी नाड़ी कहीं घीने कहीं  
जल्दी चलती है और जो नाड़ी अपने स्थानको त्यागदे तो प्राणकी इत्नेबली  
है ॥ ३ ॥ जो नाड़ी दश पांचवेर चनके बन्दहोरो चन वा कते घीरो चलै  
औ अनिठणदीहो तो रोगी न जिषे ॥ ४ ॥ ज्वर की नाड़ी गरम है जन्द् बरती है  
कामातुर और क्रोधीकी नाड़ी जल्दी चलती है चिन्ता और भयकी नाड़ी क्षीण  
होतीहै ॥ ५ ॥ मन्दाग्नि प्रौ धातुक्षीण भये नाड़ी अतिशीर चलती है रक्ताधिकार  
की कुल गरमहो पर्यरती भारी चलतीहै आंनंयुक्त तटे महिपकी गनि होती  
है ॥ ६ ॥ जिसकी अग्नि दीप्तहै उसकी नाड़ी हनकी जो जन्दी चलती है आ-  
रोग्यकी स्थिर चलवान् होतीहै भूनेकी चन अग्नेकी स्थिर चलती है ॥ ७ ॥  
इति नाड़ीपरीक्षा ( अथ दूतलक्षणम् ) अर्द्धी ज्ञेया अती ज्ञेया धंमदुद्  
श्वेताम्बरधरी चतुर सुती घोड़ेपर सवार श्वेत फल फलमंयुक्त इनहो जो अन्त  
दूतजानिये ॥ ८ ॥ अपनी जाति होय मुन्दरहो जो वैद्यकी चनव रवाना की  
और वैद्यके पास शुभ समय जाय तो रोगी सुखी होय ॥ ९ ॥ इति दूतलक्षण-

हम् १० चिकित्सांरोगिणःकर्तुंगच्छतोभिपजःशुभम् ।  
यात्रायांसौम्यशकुनंप्रोक्तंदीप्तंनशोभनम् ११ नारीपुत्र  
वतीमार्गोकुमारीदीपमालिका । ज्वलतोग्नेश्शुभाश्श  
ब्दामङ्गलंशङ्खनादिकम् १२ मृदङ्गादिध्वनिःपूर्णाकल  
शोदधिमृत्तिका । फलंचमदिरामांसंमत्स्यादिकुङ्कुमादि  
कम् १३ गजाश्वरथताम्बूलंचामरंकनकादिकम् । शुभं  
स्याद्गच्छतोमार्गोवैद्यस्यलाभदायकम् १४ ॥ इति शकु  
नम् ॥ निजप्रकृतिवर्णाभ्यांयुक्तस्त्वैनसंयुतः । चिकि  
त्स्योभिपजारोगीवैद्यभक्तोजितेन्द्रियः १५ ॥ इति रोगि  
लक्षणम् ॥ कुचैलःकर्कशस्तव्यःकुग्रामीस्वयमागतः ॥  
पञ्चवैद्यानपूज्यन्तेधन्वन्तरिसमाअपि १६ वैद्यःस्याद्  
गुरुसन्निधानकुशलःपीयूषपाणिः शुचिर्दक्षःकालवयोव

यम् ॥ और दूनरो वैद्यके तुलाने जाते समय राहमें शुभशकुनते गशुभ प्रशुभते शुभ  
जानो ॥ १० ॥ जब वैद्य रोगीके यहां यात्राकरै और उससमय यदि मांस्य शकुनहोय  
तो शुभहै और दीप्त शुभ नहींहै ॥ ११ ॥ जो मार्गमें पुगती स्त्री पिचै तथा दीपककी  
माना ग्रहण किएहुये रज्या मिनै, प्रज्वलित अग्निशिखा शंख मृदंगादिकी ध्वनि  
होती मन्मथ्य दृष्टिरे तथा कुम्भ दही मिट्टी फन मदिरा मांस मक्खली आदिक केनर  
आदि सुगन्ध पदार्थ हाथी घोड़ा रथ पान चामर सुवर्णादे पदार्थ यदि जातेहुये  
मार्गमें मिनै तो शुभहै ॥ १२ । १४ ॥ इति शकुनविचारः ॥ चिकित्सायोग्य जिस  
रोगीकी प्रकृति और वर्ण जैसेका तैसाहो और सत्त्वसंयुक्तहो और रोगीको वैद्यसे  
भक्तिहोय अर्थात् वैद्यके वाक्यमें निश्चय होय और जितेन्द्रिय अर्थात् कुपथसेची  
न होय इन्द्रिनके मंथममें मात्प्रधानहो ऐमा रोगी चिकित्साके योग्यहै ॥ १५ ॥ इति  
रोगीलक्षणम् ॥ कुचैन कही जो मैले कुचैने कुत्सितवस्त्र धारणकरै और विवादी  
कनही जड कुग्रामवासो होय और जिना तुलाने आपही आवै ये पांच वैद्य यदि  
धन्वन्तरि के भी समान होयें तौभी पूज्य नहीं हैं ॥ १६ ॥ जिस वैद्यने सधुगुह से  
शास्त्राध्ययन कियाहोय और जिसकी ओपपिते प्रायशः रोगी आरोग्य होतेहोयें  
अर्थात् जिसके हाथकी दीर्घुई ओपपि अष्टासरीसा गुणकरे व जो पवित्र व दत्तकही



लौषधिगदज्ञानोदीतःशास्त्रवित् । धीरान्तःकरणःक्रियासु  
 कुशलःकारुण्यपूर्णोस्पृहायुक्तोभूतनियन्त्रमन्त्रचतुरोवा  
 ग्नीप्रगल्भःसुखी १७ इति वैद्यलक्षणम् ॥ स्वप्नेषु न ग्नान्मु  
 एडांश्चरंक्तकृष्णाश्वरावृतान् । व्यङ्गांश्च विकृतान्कृष्णा  
 न्सर्पाशान्सायुधानपि १८ बध्नतो निघ्नतश्चापि दक्षिणां दि  
 शमाश्रितान् । महिषोष्ट्रखरारूढान्स्त्रीपुंसोर्यस्तु पश्यति ।  
 सस्वस्थोलभतेव्याधिं रोगीयात्येव पश्यताम् १९ अधोयो  
 निपतत्युज्जाज्जऽलेऽग्नौ वा विलीयते । स्वापदैर्हन्यते योपि म  
 त्स्याद्यैर्गिलितो भवेत् २० यस्य नेत्रे विलीयेते दीपो निर्वा  
 णतां व्रजेत् । तैलं सुरां पिवेद्वापि लोहं वालभते तिलान् २१ प  
 काश्लं भतेऽश्नाति विशेत्कूपं रसातलम् । सस्वस्थोलभते  
 रोगं रोगीयात्येव पश्यताम् २२ दुःस्वप्नानेव मार्दांश्च दृष्ट्वा ब्रू  
 यान्न कस्यचित् । स्नानं कुर्याद्दुपस्येव दद्याद्देम तिलानि च  
 २३ पठेत्स्तोत्राणि देवानां रात्रौ देवालये वसेत् । कृत्वैवां त्रि  
 प्रीण तथा काल पराक्रम वयोनुसार रोगका धर्तार्य ज्ञान करिके ओषधिकरे  
 और शास्त्रवेत्ता अत्यन्तधीर क्रियासु कुशल कही प्रीण और दयालु तथा धनादि  
 वाञ्छारहित यत्र मंत्रमें अतिही चतुर-प्रत्यन्त प्रगल्भ प्रसन्नचित्त धनी सम्पूर्ण  
 सुखकरके सहित सर्पटा मयुर संभाषण करै-ऐसे वैद्यकी ओषधि सर्पटा श्रेयस्कर  
 होती है ॥ १७ ॥ इति वैद्यलक्षणम् ॥ रोगी स्वप्नमें नंगा शिरमुंडा रक्त कृष्णवस्त्र  
 पहिरे भयंकर अंगभंग काला व फांसी और शस्त्रभी धरे ॥ १८ ॥ वांधता मारता  
 किसीको दक्षिण लिपेजाता आगता देखे वा भैस ऊंट व गधेपर सवार नारी  
 पुरुष कोई देखे तो आरोग्यके रोगहोय और रोगीहो तो मरिजाय ॥ १९ ॥ और  
 ऊंचेसे नीचे गिरा जलमें बूझा अग्निमें जलता पिपचिमें पड़ा या कुत्तेने काटाहो  
 या मित्र वांधत्र वा मकरादि के घुसमें लीलताहुआ देखे ॥ २० ॥ नेत्रते अन्य  
 भय दीसैदीपक बुझता देखे तैल सुराभिये स्वप्नमें लोहा वा तिलपात्रे ॥ २१ ॥  
 पकावापतेवलातेकुशां में गिरै वा रसातल जाय ऐसे स्वप्नदेखनेवाला अच्चाहो  
 वो रोगीहो रोगीहो तो मरै ॥ २२ ॥ ऐसे २ स्वप्नोंकी देखिकर किसीसे न कहै

दिनंमर्त्योद्दुःस्वप्नात्परिमुच्यते २४ स्वप्नेषुयःसुरान्भूपा  
 ज्जीवतःसुहृदोद्विजान् । गोसमिद्धाग्नितीर्थानिपश्यन्सुख  
 मपानुयात् २५ तीर्त्वाकलुषनीराणिजित्वाशत्रुगणानपि।  
 आरुह्यसौधगोशैलकरवाहान्सुखीभवेत् २६ शुभ्रपुष्पा  
 णिवारांसिमांसमत्स्यफलानिच । दृष्ट्वातुरःसुखीभूयात्स्व  
 स्थोधनमवाप्नुयात् २७ अगम्यागमनंलेपोविष्टायारुदि  
 तंमृतम् । आमसांसाशनंस्वप्नेधनारोग्याप्तयेविदुः २८  
 जलौकाभ्रमरीसर्पोमक्षिकावापिचंद्रशेत् । रोगीसभूया  
 दारोग्यःस्वस्थोधनमवाप्नुयात्-२९ -इति श्रीशार्ङ्गधर  
 संहितायांसूत्रस्थाने । नाडीपरीक्षादिस्वप्नलक्षणदूतशकु  
 नरोगिलक्षणवैद्यप्रशंसाख्यानं नामाध्यायोऽथतृतीयः ३ ॥

पचन्नामं वह्नि कृच्च दीपनं तद्यथा मिशिः । पचत्यामं नव  
 हिं च कुर्याद्यत्तद्विपाचनम् । नागकेसरवह्न्याच्चित्रोदीप  
 सपेरे नहाके सोना तिल वषट् दानकरै ॥ २३ ॥ वतीन दिन प्राणी देवताओं  
 के स्तोत्रादिकों का पाठकरै और रात्रिको देवस्थानमें रहै तो दुःस्वप्नके फलसे  
 छूटजाताहै ॥ २४ ॥ (अथ सुस्वप्न स्वप्नमें जो देवताओं राजा औंभीवत, भिन,  
 ब्राह्मण, गऊ, यज्ञ व तीर्थादि ऐसा कामदेखै तो वह सुखको प्राप्तहोया ॥ २५ ॥ और  
 मलिन जलमें पैरत शत्रुकी सेना नैतै गटारी रा परतवा हाथीवा घोडा इनसवन  
 पर चढा देखै तो सुखहोय ॥ २६ ॥ श्वेतफूल, सूक्ष्म वस्त्र, मांस, मछरी व फलों  
 को रोगी स्वप्नमें देखै तो रोगसे निर्मुक्तहोय जो आरोग्य होय देखै तो धनमाप्त  
 होय ॥ २७ ॥ अगम्यागमन कहे जिन स्त्रीन से गमन अयोग्यहै तिनकागमन करै,  
 मललपेटै, रोता, मरता, कजामांस खाता देखै वा बाँतेंकरै तो रोगी आरोग्य होय,  
 और अग्नेको द्रव्य मिलै ॥ २८ ॥ और जौक, भौरी, सर्प, माली इन्हें डसे देखै  
 तो रोगी आरोग्य होय और आरोग्य द्रव्य पावै ॥ २९ ॥

इति दामोदरमूनुशार्ङ्गधरविरचितसंहितायांभाषाटीकायांसूत्रस्थाननाडीपरीक्षा  
 स्वप्नलक्षणदूतशकुनरोगिलक्षणवैद्यप्रशंसाख्याननामाध्यायोऽथतृतीयः ३ ॥  
 (अथ दीपनपाचन) आंवको न पचवै व अग्नि ज्वलितकरै उसे दीपन कहतेहैं

नपाचनः १ नशोधयति नद्वेषिसमान्दोषांस्तथोद्धतान् ।  
 शमीकरोति विषमाच्छमनंतद्यथा मृता २ कृत्वा पाकं मला  
 नां यद्विच्छेदावन्धमधोनयेत् । तच्चानुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ता  
 हरीतकी ३ पक्कं यदपक्त्वं वै वदिलष्टं कोष्ठे मलादिकम् । नय  
 त्यधः स्रंसनंतद्यथा स्यात्कृतमालकः ४ मलादिकमवच्छं  
 चवच्छं वापि षडंतमलैः । भित्त्वा भ्रूः पातयति तद्भेदनं कटुकी  
 बधा ५ विपक्कं यदपक्कं वा मलादिद्रवतानयेत् । रेचयत्यपि  
 तं ज्ञेयं रेचनं त्रिवृता यथा ६ अपक्वपित्तश्लेष्माणौ वलादूर्ध्वं  
 नयेत्तु यत् । वमनंतद्विविज्ञेयं मदनस्य फलं यथा ७ स्था  
 नाद्बहिर्नयेदूर्ध्वमधो वामलसञ्चयम् । देहसंशोधनंतत्स्या  
 देवदालीफलं यथा ८ शिलष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलय  
 तियद्बलात् । छेदनंतद्यवक्षारो मरिचानि शिलाजतु ९ धा  
 तून्मलान्वादेहस्य विशोष्यो ल्लेखयेच्च यत् । लेखनंतद्यथा  
 यथा सौंफ और थांबको पचावै अग्नि न वडावै उसे पाचन कहते हैं यथा नागफेतर  
 और चीता ये दोनों दीपन व पाचन कहने हैं ॥ १ ॥ जो द्रव्य कोठे को न शुद्ध  
 करे व मल न वायु और बहे दोष को शमन करे उसे शमन कहते हैं यथा गुर्वि ॥  
 २ ॥ और जो द्रव्य मलको पकाय भेदनकर गिरावै उसको अनुलोमन कहते हैं  
 यथा इड ॥ ३ ॥ जो वस्तु पकनेयोग्य अन्नपकी होय कोठे में लपटिकै रहिगई  
 हो तिसे अघोमार्ग से गिरावै उसे संमन काते हैं यथा अमलतास ॥ ४ ॥ जो  
 मल वातादिक दोष से बंधा होय वा गोठे पडगये हो उसे फोरिकै अघोमार्ग से  
 गिरावै तिस द्रव्यको भेदन कहते हैं यथा कुटुकी ॥ ५ ॥ जो मल वातादि दोषसे  
 विशेष पकगया हो या अपक्वहो उसे पतलाकारि बहावै उसको रेचन कहते हैं यथा  
 मिश्रोप ॥ ६ ॥ जो द्रव्य कच्चा पित्त कच्चा कफ ऊर्ध्वमार्ग से निकालै उसे वमन  
 कहते हैं यथा मैनफल ॥ ७ ॥ जो द्रव्य दुष्टमल वा पित्त कफ स्वान्नुडाकार ऊर्ध्व  
 मार्ग या अघोमार्ग से गिरावै उसे शरीरशोधन कहते हैं ऐसी गिरावै रानी कौन  
 द्रव्य है यथा देवदाली कहे बनेतोरई ॥ ८ ॥ जो ऊँडूने अग्नि नोपनतो स्व  
 शीकरि निकारै उसे छेदन कहते हैं यथा यपातराट्टि और सौंदि, मिर्च, पीपारि,

क्षौद्रनीरमुष्णवचाचघाः १० दीपनंपाचनंयत्स्याद्द्रव्यत्वा  
 द्रसशोषकम् । ग्राहितञ्चयथाशुण्ठीजीरकंगजपिप्यली ११  
 रौक्ष्याच्छैत्यात्कृपायत्वाल्लघुपाकाञ्चयद्भवेत् । वातकृत्स्त  
 म्भनंतत्स्याद्यथावत्सकटुष्टकौ १२ रसायनञ्चतज्ज्ञेयंयज्ञ  
 राव्याधिनाशनम् । यथाऽमृतारुदन्तीचगुग्गुलुश्चहरी  
 तकी १३ यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषुहर्षोवाजीकरञ्चतत् ।  
 यथानागत्रलाद्याःस्युर्बीजंचकपिकच्छुजम् - १४ सद्यःशु  
 क्रकरंयञ्चतद्बृह्यंस्थाद्यथापयः । देहस्थूलकरंयञ्चवृह  
 णंतद्यथाभिपम् । यस्माच्छुक्ररयवृद्धिःस्याच्छुक्रलञ्चतद्दु  
 च्यते । यथाश्वगन्धामुञ्जलीशर्कराचशतावरी १५ दुग्धं  
 माषाश्चमल्लातफलमञ्जामलानिच । प्रवर्तकानिकथ्य  
 न्तेजनकानिचरेतसः १६ प्रवर्तनंस्त्रीशुक्रस्थरेचनंवृहती  
 फलम् । जालीफलंस्तम्भनञ्चशोषणीचहरीतकी १७ दे  
 हस्यसूक्ष्माच्छिद्रेषुविशेद्यत्सूक्ष्ममुच्यते । तद्यथासैन्धवंक्षौ  
 शिलाजीत इति छेदन ॥ ६ ॥ रसादि पाणु और शरीरके मल निहै सुता के  
 देहको दुर्बल करे उसे लेसन कहते हैं यथा उष्णजल वच यव ॥ १० ॥ जो  
 दीपन और पाचन करे और गर्मी करिषे कफ धातुमल इनके रमको सुन्नावै तिसे  
 ग्राही कहने हैं यथा सौंठि श्वेतजीरा और गन्धपपरि ॥ ११ ॥ जो द्रव्य रुक्तहो  
 और ठण्डाहो कपायहो और पाचनशक्ति नीरहो उस गतहत द्रव्यको र्त्तभन कहते  
 हैं यथा कुरैया और ( स्योमान्क ) सोहनपल्ली ॥ १२ ॥ जो द्रव्य कसाइस्थाके रोगन  
 को टूरकरे उसे रसायन कहते हैं यथा गुर्ध, रुद्रवन्ती, गुग्गुलु ॥ १३ ॥ जिसद्रव्यसं  
 भैयुनमें विशेष गुणहो उसे यजीकरण कहतेहैं यथापरियार क्रियाचर्मीगी ॥ १४ ॥  
 जो शीघ्रहो शुक्र कबी रीरको यदावे उसे बृध कहतेहैं यथा दूध-और जो देहको  
 स्थूल करी हृष्ट पुष्ट मोटाकरे उसे बृह्य कहते हैं यथा आमिप कही मास-जो धा  
 तुको यदावे उसे शुक्रन कहते हैं यथा श्वसगन्ध, गुग्गुली, शर्करा और शतावरी ॥  
 १५ ॥ और जो धातुकी वृद्धिकरे उसे रेतजन्य कहतेहैं यथा, दूध, उर्द भिलौनी ध्या  
 नरा ॥ १६ ॥ शुक्रको प्रकृत करनेवाला खौकी धातुको रचन करनेवाला पड़ी

द्विनिम्बतैलं सूक्ष्मम् १८ पूर्वव्याप्याखिलं कायं ततः पाक  
 उच्यते च्छति । व्यवायितयथा भङ्गाफेनं चाहिसमुद्भवम् १९  
 सन्धिवन्धास्तु शिथिलान्यत्करोति विकाशितम् । विश्ले  
 ष्यौजरचवातुभ्यो यथाक्रमकक्रौद्रवः २० बुद्धिलुम्पन्ति  
 यद्द्रव्यं मदकारितदुच्यते । तमोगुणप्रधानञ्च यथाम  
 द्यंसुरादिकम् २१ व्यवायिचविकाशिस्यात्सूक्ष्मं छेदिमदा  
 वहम् । आग्नेयं जीवितहरं योगवाहिस्मृतं विषम् २२ नि  
 जवीर्येण यद्द्रव्यं स्रोतोभ्यो दोषसञ्चयम् । निरस्यति प्र  
 माथिस्यात्तद्यथामरिचं वचा २३ पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्यं  
 रुद्धारसवहासिराः । धत्ते यद्गौरवं तस्यादभिष्यन्दियथा  
 दधि २४ ॥ इति श्रीदामोदरसूनुशार्ङ्गधरविरचितसं  
 हितायां चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

धात्वाशयान्तरस्थरतुयः क्लेदस्त्वधितिष्ठति । देहोष्म  
 णाधिपक्रोयः साकलेत्यभिधीयते । कलास्सप्ताशयास्सप्त  
 भद्रकटैया का फल है और वीर्यस्तंभी जायफल है और वीर्यरोग इह कथ्यते  
 है ॥ १७ ॥ जो वस्तु रोममार्ग से शरीरमें पैठे उसे सूचन करते हैं वस्तु  
 शहद, नीप और रेडीका तेल ॥ १८ ॥ प्रथम शरीरको बन्द करके उसके  
 व्यवायी कहते हैं यथाभाग और अपीप ॥ १९ ॥ देहके उष्ण धनिहरणसादिक  
 धातु और शुक्रको क्षीणकरे उसे विकाशी कर्णों पर सुन्नी और कोदर ॥ २० ॥  
 जो वस्तु बुद्धिको संभ्रमकरे मदकरे और बन्ध गेह मो वनेकुली है वनसुरादि  
 नशा ॥ २१ ॥ व्यवायी, विकाशी, सूक्ष्म, वेदनहृन्, मन्त्र, अग्निर्दन और हनु-  
 कारक ये सब द्रव्य जिस थोपिकासंग पाये उत्तीक सा सुगुकरे ऐसा विष होना  
 है ॥ २२ ॥ जो द्रव्य अपने पराक्रमसे मन्त्रि दोषोंको निहान करे वने मन्थी  
 कहते हैं यथा मरिच और वच ॥ २३ ॥ जो पदार्थ आपसे निम्नगुणोंवाले रमना-  
 दिनी सिराओंको निरोध करे और शरीरको बद्ध करे उसे अभिष्यन्दी कहते हैं यथा  
 दही ॥ २४ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरभाषाटीकयां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥  
 जो आर्द्रपदार्थ धातु और आम्लान के बन्ध में गिन और देहकी उष्णता

धातवस्सप्ततन्मलाः १ सप्तोपधातवस्सप्तत्वचस्सप्तप्र  
कीर्तिताः । त्रयोदोषानवशतंस्नायूनांसन्धयरतथा । द  
शाऽधिकंचद्विशतमस्थनांषत्रिंशतंमतम् २ सप्तोत्तरंमर्म  
शतंसिरास्सप्तशतंतथा । चतुर्विंशतिराख्याताधमन्योर  
सवाहिकाः । मांसपेश्यःसमाख्यातानृणांपञ्चशतंबुधैः३  
स्त्रीणांचविंशत्यधिकाःकण्डराश्चैवपोडशानृदेहेदशरन्ध्रा  
पिनारीदेहेत्रयोदश । एतत्समासतःप्रोक्तंविस्तरेणाधुनो  
च्यते ४ मांसामृग्मेदसांतिस्त्रोयकृत्प्लीहोश्चतुर्थिकाः ।  
पञ्चमीचतथान्त्राणां षष्ठीचाग्निधरामता । रेतोधरास  
प्तमीस्यादितिसप्तकलाःस्मृताः५ श्लेष्माशयः स्यादुरसि  
तस्मादामाशयस्त्वधः । ऊर्ध्वमग्न्याशयोनाभेर्धामभागे  
व्यवस्थितः ६ तस्योपरितिलंज्ञेयं तदधःपवनाशयः ।  
मलाशयस्त्वधस्तस्य वस्तिर्मूत्राशयस्त्वधः । जीवरक्ता  
विषफ हो उसका कलानाम है ( अथ शारीरक ) शरीरमें कला ७ स्थान ७  
धातु ७ धातुमल ७ ॥ १ ॥ उपधातु ७ त्वचा ७ दोष ३ सूक्ष्म मस २०० जोड  
२१० इट्टी ३०० ॥ २ ॥ मर्मस्थान १०७ मध्यमनस ७०० शूलनाडी २४ पुष्प  
के मासग्रवि ५०० ॥ ३ ॥ स्त्रीके मासकी गांठि ५०० पुष्टनसे फैलने समिटने  
वाली २६ पुरुषके शरीर में छेद २० स्त्रीके २३ यह सन्नेप कहा आगे विस्तारसे  
कहेंगे ॥४॥ ( अथ शरीर की मात कला पहिले कहते हैं ) मासकोधारण  
करनेवाली मासधरा पहलीकला रक्तको धारण करनेवाली रक्तधरा दूसी कला २  
मेदको धारे यह मेदोपरा तीसरी ३ कफको धारण करनेवाली चौथी यकृन्प्रीहा ४  
अत्र धारणवाली पाचर्षी पुरीषधरा ५ अग्निधारिणी छठीकला पिचपरा ६  
शुक्रधारणी सतई कला रेतोधरा ७ ये सातों कला हैं ॥ ५ ॥ छातीमें कफस्थान  
है जिससे कुञ्ज नीचे आमस्थान है नाभि के ऊपर बाईंओर अग्निस्थानहै ॥ ६ ॥  
तिस अग्निस्थानके ऊपर तिलहै उसे श्लोम कहतेह रही प्यासस्थान कहतेहैं और  
अग्निस्थान के तरे पनाशयहै उसे वायुस्थान कहते है उसी के नीचे आमभागमें  
मलस्थान है जिसे पकाशय कहते हैं और उसी पवनोशय के नीचे टङ्गिणभाग

शयमुरोज्ञेयास्सप्ताशयास्त्वमी ७ पुरुषेभ्योधिकाश्चान्येनारीणामाशयास्त्रयः । धरागर्भाशयःप्रोक्तःस्तनौस्तन्याशयौमर्तौ ८ रसासृच्छ्वांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः । जायन्तेन्योन्यतःसर्वे पाचिताःपित्ततेजसा ९ जिह्वानेत्रकपोलानांजलंपित्तंचरञ्जकम् । कर्णविडूसनादन्तकक्षामेढ्रादिजंमलम् १० नखानेत्रमलंवक्रेस्निग्धत्वंपिटकास्तथा । जायन्तेसप्तधातूनांमलान्येतान्यनुक्रमात् ११ कफपित्तमलश्चैव प्रस्वेदोनखरोमच । स्नेहान्नित्वंश्वंसौजश्चधातूनांक्रमशोमलाः । रसाद्रक्तंततोमांसंमांसान्मेदःप्रजायते १२ मेदसोऽस्थिततोमज्जामज्जायाश्शुक्रसंभवः । स्तन्यंरजश्चनारीणांजालेभवतिगच्छति । शुद्धमांसंभवःस्नेहो यस्सात्सृष्ट्वितेवसा १३ स्वेदोदं

तास्तथाकेशास्तथैवौजश्च सप्तमम् । ओजःसर्वशरीरस्थं  
शीतं स्निग्धंस्थिरंमतम् । सोमात्मकं शरीरस्य वलपुष्टि  
करंमतम् । इति धातुभवा ज्ञेया एते सप्तोपवातवः १४  
ज्ञेयावभासिनीपूर्वा सिध्मस्थानं च सा मताः । द्विती  
यालोहिताज्ञेया तिलकालकजन्मभूः १५ इवेतातृती  
यासङ्ख्याता स्थानञ्चर्मदलस्यसा । ताम्राचतुर्थीवि  
ज्ञेया किलासद्वित्रभूमिका १६ पञ्चमीवेदिनीख्याता  
सर्वकुष्ठोद्भवाचसा । विख्यातालोहिताषष्ठी ग्रन्थिगण्डा  
पचीस्थितिः १७ स्थूलात्वक्सप्तमीख्याता विद्रध्यादेः  
स्थितिश्चसा । इति सप्तत्वचः प्रोक्ताः स्थूलात्रीहिद्धि  
मात्रया १८ वायुः पित्तं कफो दोषा धातवश्च मलास्तं  
था । तत्रापि पञ्चधा ख्याताः प्रत्येकं देहधारणात्  
१९ पवनस्तेषुवलवान्विभागकरणान्मतः । रजोगुणमयः  
धातुकी उपधातु रजजो स्त्रीके काल पाय होती है अरु कालही पाय जाती रहती  
है शुक्र मांसकी उपधातु, वसा मेदकी उपधातु पसीना अस्थिकी उपधातु, दांत  
मज्जाकी उपधातु, वल पुरुषार्थ ऐसेही सातों धातुनमे सातों उपधातु होती हैं ॥१३॥  
१४ ॥ (अथसप्तत्वक्) यही अवभासिनी ऊपरकी खाल जिसमें से छूत्रांकी जन्म  
भूमि है १ तृती लोहिता तिसमें तिलकालक रोम होते हैं ॥ १५ ॥ तीजी श्वेतामें दाढ़  
होता है २ चौथी ताम्रा जिसमें किलास कुष्ठ होता है ४ ॥ १६ ॥ पञ्चमी वेदिनी  
सर्वकुष्ठभूमि है ५ छठी लोहिता में गण्डमाला त्रिथि अपची ये रोगहोते हैं ६ ॥  
१७ ॥ सतई स्थूला में जहरपात नासूर भगंदरादि होते हैं ये सातों मिलकै ठी यष  
समान गुणई पाती है यह चरक कहते हैं जहां मांसविशेष मोटा होता है वहां  
इतनी मोटी होती है ॥ १८ ॥ (अथ तीनों दोष) वात, पित्त, कफ ये प्रत्येक देहधारी  
के मसिद्ध है सो रसादिक धातुन का मलिन करते हैं इससे इनका नाम मल भी  
है सो पांच पांच प्रकारके मुद्गुत में लिखे हैं ( संस्कृत ) तत्रमस्पन्दनोद्भवनपूरणदि  
वेकधरणलक्षणोवायुः ॥ १९ ॥ वायु सर्वस्पन्दन को निज निज स्थानमें पहुँचा  
देता है इस कारण तीनों दोष में वायुही प्रबल है और रजोगुणी सूक्ष्म ठंडी खली



सूक्ष्मः शीतोरुक्षोलघुश्चलः । शरीरदूषणाहोषाधातज्ञो-  
 देहधारणात् २० वातपित्तकफाज्ञेया मलिनीकरणान्म-  
 लाः । पित्तंपङ्गुः कफः पङ्गुः पङ्गुवोमलधातवः । वायुनाय  
 त्रनीयन्ते तत्र गच्छन्ति मेघवत् २१ मलाशये च स्कोष्ठे  
 वह्निस्थाने तथा हृदि । कण्ठे सर्वाङ्गदेशेषु वायुः पञ्च प्रकार-  
 तः । अपानः स्यात्समानश्च प्राणोदानौ तथैव च २२ व्या-  
 नश्चेति समीरस्य नामान्युक्तान्यनुक्रमात् । हृदि प्राणो गु-  
 देऽपानः समानो नाभिसंस्थितः । उदानः कण्ठदेशस्थो व्या-  
 नस्सर्वशरीरगः २३ पित्तमुष्णं द्रवं पीतं नीलं सस्त्रगुणोत्तर-  
 म् । कटुतिक्त रसं ज्ञेयं विदग्धं चान्दलतां व्रजेत् । अग्न्याक्षये  
 भवेत्पित्तमग्निरूपं तिलोन्मितम् २४ त्वचिकान्तिं करं ज्ञेयं  
 लेपाभ्यङ्गादिपाचकम् । दृश्यं यकृतियत्पित्तं तद्रसं शोणितं  
 नयेत् । यत्पित्तं नेत्रयुगले रूपदर्शनकारितम् २५ यत्पित्तं  
 हृदयेतिष्ठन्मेधाप्रज्ञाकरञ्चतत् । पाचकं भ्राजकञ्चैव रज्ज-

कालोचकेतथा । साधकं वैवपञ्चैवपित्तनामान्यनुक्रमात्  
 २६ कफःस्निग्धोगुरुःश्वेतःपिच्छिलःशीतलस्तथा । तमो  
 गुणाधिकःस्वादुर्विदग्धोलवणोभवेत् २७ कफश्चामाश  
 येमूर्द्धिकण्ठेहृदिचसन्धिषु । तिष्ठन्करोतिदेहेषुस्थैर्यसर्वा  
 ज्ज्वाटवम् २८ क्लेदनःस्नेहनश्चैवरसनश्चावलम्बनः ।  
 श्लेष्मणश्चेतिनामानिकफस्योक्तान्यनुक्रमात् २९ स्ना  
 यत्रोवन्धनंप्रोक्तादेहेमांसास्थिमदसाम् । सन्धयश्चाङ्गस  
 न्धानादेहेप्रोक्ताःकफान्विताः । आधारश्चतथासारःकाये  
 स्थीनिबुधाधिदुः ३० सर्माणिजीवाधाराणिप्रायेणमुनयो

और धारणा चैतन्यता रखता है ताकी पांच नाम से स्थिति जानना पाचक ?  
 भ्रानक २ रंजक ३ आलोचक ४ साधक ५ इसप्रकार पिचके पांच स्थान व पांच  
 नाम क्रमसे जानना चाहिये ॥ २६ ॥ ( अथ रूप ) कफ चिकना, भारी, लसलसा  
 श्वेत, बूढा, तमोगुणी विशेष है और मयुर है दग्धभये जुनखरा होजाता है अन्य  
 मतवाले हलका कहते हैं कि पानी पर तिरताई सो कारण यह है कि स्निग्धता  
 करिके पानी में भ्रेश नहीं करता वास्तव गुरुही है ॥ २७ ॥ और आम स्थान में  
 गाधमें कण्ठमें हृदयमें संधि में ऐसे देहमें स्थितहो पुष्ट रखता है ॥ २८ ॥ तिसके  
 नाम क्लेदन १ स्नेहन २ रसन ३ अवलम्बन ४ और श्लेष्मण ५ ये नाम स्थानक्रमसे  
 जानना यथा आमस्थाने क्लेदन इसप्रकार से ॥ २९ ॥ नौसे संधिवाली नसे मास  
 हाड चरनीको लपटी रहती है और देहमें श्रेण २ प्रति संधिरुहें जो उसे कफसे लपटे  
 हैं सो संधि दोषकारकी है चर और अचर चरतो ठोडी कमर शारदा कण्ठ की हैं  
 और अंगनकी अचर रहते हैं जैसे तेलके संयोग से रथके पहिपा अपने ठौरमें फि  
 रते हैं तैसे कफके संयोगसे हड्डी विना थप फिरा करती हैं और बुधजन कहते हैं कि  
 अस्थिन के आधार देहदे ताते देहका सारहै ॥ ३० ॥ और मर्मस्थान मुनि जीवाधार  
 कहते हैं सो पाचमकारकाहै मांसमर्म १ सिरामर्म ४१ स्नायुमर्म २७ अस्थिमर्म ८  
 संधिमर्म २० सत्र मर्म १०७ हैं संधिबंधनी सिरा दोष और धनुवाहकहैं सो २४ हैं  
 निगमें दश नामस्थानमें हो नीचेजाती हैं वात, पृथ्वी, मल, शुक्र, अन्नपान रसका नीचे  
 पहुँचाना उनका कर्भहै और दश ऊर्ध्वगतहै सो शब्द, रस, गन्ध, रसास, जमुडाई और  
 क्षुभा, तृप्ता, शक्ति, डकार इन सत्रको अपने २ स्थान में दीपन करती हैं और चार

जगुः । सन्धिवन्धनकारिण्योदोषधातुवहाः सिराः ३१ धम  
 न्योरसवाहिन्योधमन्तिपवनंतनी । मांसपेश्योवलायस्युर  
 वृष्ट्मभायदेहिनाम् ३२ प्रसारणाकुञ्चनयोरङ्गाणांकण्डरा  
 मताः । नासानयनकर्णानां द्वे द्वेरन्ध्रे प्रकीर्तिते ३३ मेहना  
 पानवक्राणामेकैकं रन्ध्रमुच्यते । दशमं मस्तके प्रोक्तं रन्ध्राणी  
 तिनृणां विदुः ३४ स्त्रीणां त्रीण्यधिकानि स्युः स्तनयोर्गर्भ  
 वर्त्मनः । सूक्ष्मच्छिद्राणि चान्यानि मत्तानि त्वचिजन्मिनाम्  
 ३५ तद्वामे फुफ्फुसं स्त्रीहादक्षिणाङ्गे यकृन्मतम् । उदानवायो  
 राधारः फुफ्फुसं प्रोच्यते बुधैः ३६ रक्तवाहिसिरामूलं स्त्रीहा  
 र्व्यातो महर्षिभिः । यकृद्भ्रजकपित्तस्य स्थानं रक्तस्य संश्र  
 यम् ३७ जलवाहिसिरामूलं तृष्णाच्छादनकंतिलम् । वृ  
 जिनकी तिर्छीं गतिर्है सो अगणित शाखाहो सर्वागमं जालेकी नाई रोम २ प्रति  
 पूरित हैं जन्हीं के मुखों से स्वेद देहके बाहर रोमों में होके आता है और उसी  
 मार्गहो लेपन मर्दानादि पदार्थ प्रवेश करते हैं ॥ ३१ ॥ और रसवाहिनी धमनी  
 को नाड़ी कहते हैं वे बाणुको अपने ग्रेगसे शरीरमें पहुँचाती हैं सो सिरा दोमकार  
 की है सूक्ष्म और स्थूल तिनकी जड़ नाभिमें है वहा होके तले ऊपर दहिने बायें  
 आगे पीछे सर्वत्र फैलती हैं ये चालिसैं १० वातवाहिनी १० पित्तवाहिनी १०  
 कफवाहिनी १० रक्तवाहिनी १० सत्र ४० वातवाहिनी सिराके समीप दूसरी वात  
 चारी १०५ नसैं हैं ऐसे दश २ चारों के पास उतनी २ है इसतरह सातसैं ७०० हैं  
 और देह में यैली हैं सो बलके और रोकने के लिये है ॥ ३२ ॥ अंगके फैलने समेट  
 ने को कंडरा है और दो छिद्र नाक में दो नेत्रमें दो कान में कहे हैं ॥ ३३ ॥ एरु युल  
 एक गुदा एक लिङ्ग एक मस्तक के ऊपर ये दृश्य छिद्र हैं ॥ ३४ ॥ स्त्रीके तीन छिद्र  
 विशेष हैं दां पयोधरपर एक गर्भस्थान और अति सूक्ष्म छिद्र त्वचामें अगणित हैं ॥  
 ३५ ॥ हृदयके वामभागमें फुफ्फुस और स्त्री है दक्षिणभाग में यकृद्दे फुफ्फुसको  
 उदानवायुके आश्रित बैद्यलोग कहते हैं ॥ ३६ ॥ और रुधिरवाही सिराओंकी  
 जड़को स्त्रीहा कहते हैं और यकृतको सद्बैद्य रंजक पिचक स्थान कहते हैं और  
 रक्तका आधार है ॥ ३७ ॥ शोणितकी कीटसे उत्पन्न हुआ दक्षिणभागमें यकृतके  
 पास तिल है उसे क्रोम कहिये सो अलवाहि सिराकी जड़में रहिके प्यामागता है और

क्रौण्टिकरौप्रोक्तौजठरस्यस्यमेदसः ३८ धीजवाहिसिरा  
 धारौवृषणौपौरुपावहौ।गर्भाधानकरंलिङ्गमयनंधीर्यमूत्र  
 योः।त्रिविधःसोपिसञ्जातोरजस्सत्त्वतमोगुणैः।तस्मात्स  
 स्वरजोयुक्तादिन्द्रियाणिदशाभवन्।हृदयंचेतनास्थानमो  
 जसश्चाश्रयंमतम् ३९ सिराधमन्योनाभिस्थास्सर्वांव्या  
 प्यस्थितास्तनुम् । पुष्पान्तिचानिंशवायोस्संयोगात्सर्व  
 धातुभि ४० नाभिस्थःप्राणपवनःस्पृष्टाहृत्कमलान्तरम्।  
 कण्ठाहृदिर्विनिर्घाति पातुंविष्णुपदामृतम् ४१ पीत्वा  
 चाम्यरपीयूषंपुनरायातिवेगतः । प्रीणयन्देहमखिलंजी  
 वंचजठरानलम् ४२ शरीरप्राणयोरेवंसंयोगादायुरु  
 च्यते । कालेनतद्वियोगाच्चपञ्चत्वंकथ्यतेबुधैः ४३ न  
 जन्तुःकश्चिदमरः पृथिव्यांजायतेकचित् । अतोमृत्युर  
 वार्यं स्यात्किन्तुरोगान्निवारयेत् ४४ याप्यत्वंयातिसा  
 ध्यश्चयाप्योगच्छत्यसाध्यताम् । जीवितंहन्त्यसाध्य

जठरमें जो मेद और रक्त है तो एक पुष्टिकारक गोनाकार दोनों कहे हैं ॥ ३८ ॥  
 धीजवाही सिराके आधार पुरुषार्थ करनेवाले वृषण हैं और गर्भ धारण करनेवाला  
 लिङ्गबीर्य और मूत्रदा मार्ग है सो लिङ्ग हृदय गलेको आहक चारि कण्ठराकार मरोह  
 है और चेतनाका स्थान हृदय यलका आश्रय है ॥ ३९ ॥ और नाभिमें स्थित चौबीस  
 सिरानाम धमनी सो सब शरीर में व्याप्त होके वायुके संयोगते रसादि धातुन की  
 संचिकै सदा शरीर को पुष्ट करती हैं ॥ ४० ॥ नाभिवासी प्राणवायु हृदयकमल  
 को स्पर्श करिकै विष्णुपदामृत पीनेको कपतते बाहिरहो शिरस्य जाइके ब्रह्माण्ड  
 से गिरताहुआ अमृत पीके फिर उसी मार्गसे आशके सब शरीरको सन्तुष्टकरती  
 हुई अग्निको पावनशक्ति देती है ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ पूर्वभाषित शरीर और प्राणके  
 संयोग रहनको सुधजन आयु कहते हैं और शरीर प्राण के वियोग होने को  
 काल कहते हैं ॥ ४३ ॥ पृथ्वी में कोई शरीर अमर नहीं है इसी से मरने की  
 ओपधि नहीं है रोगनिवारणीय ओपधि है ॥ ४४ ॥ जो मनुष्य ओपधि नहीं  
 करते तो सुन्दसाध्य रोगको कष्टसाध्य करते हैं कष्टसाध्य से भसा यहते हैं।

स्तुनरस्याप्रतिकारिणः ४५ अतोरुग्म्यस्तनुरक्षेत्रः  
 कर्मधिपाकवित्तु । धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरसाधनंच  
 यत् ४६ धातवस्तन्मलादोषानाशयन्त्यसमास्तनुम् ।  
 समाःसुखायविज्ञेया वलायोपचयायच ४७ ॥ इति क  
 लादिकथनम् ( अथ सृष्टिक्रमः ) जगद्योनेरनिच्छस्यच्चि  
 दानन्दैकरूपिणः । पुंसोस्तिप्रकृतिर्नित्याप्रतिच्छायेवभा  
 स्वतः ४८ अचेतनापिचैतन्ययोगेनपरमात्मनः । अक  
 रोद्धिश्चमंखिलमनित्यंनाटकाकृतिः ४९ प्रकृतिर्विश्वज  
 ननीपूर्वबुद्धिमजीजनत् । इच्छामयीमहद्रूपामहङ्कारस्त  
 तोभवत् ५० त्रिविधःसोपिसञ्जातोरजस्सत्त्वतमोगुणैः । त  
 स्मात्सत्त्वरजोयुक्तादिन्द्रियाणिदशाभवन् । मनश्चजातं  
 तान्याहुःश्रोत्रंत्वह्नयनंतथा ५१ जिह्वाघ्राणत्वचोहस्त  
 पादोपस्थगुदानिच । पञ्चबुद्धीन्द्रियाण्याहुःसंप्रोक्तानीतरा  
 णिच । कर्मेन्द्रियाणिपञ्चैवकथ्यन्तेसूक्ष्मबुद्धिभिः ५२ तमः  
 असाध्य होके प्राण देते हैं ॥ ४५ ॥ जिससे कि धर्म अर्थ, काम, मोक्ष इनका  
 साधनहेतु शरीर है इससे शुभाशुभ ज्ञाता पुरुष अचरय शरीर की रक्षाकरै ॥  
 ४६ ॥ घटे, घड़े रसादिरु धातु वा धातुमल वा वात पित्त कफ देहके हन्ता हैं  
 जब ये सम रहते हैं तब सुख देते हैं व बल और पुष्टिको करते हैं ॥ ४७ ॥ इति  
 कलादिकथनम् ॥ ( अथ सृष्टिक्रमः ) जगद्योनि इच्छारहित ज्ञानधर्मका एकही  
 रूपहै ऐसे विष्णुकी नित्यप्रकृति सूर्यकी छायाकी नाई है ॥ ४८ ॥ सो प्रकृति  
 चैतनरहित चैतन्य इन्द्रजालकी नाई परमात्मा के योगकरिके अनित्य संसार रचती  
 भई ॥ ४९ ॥ ऐसी विश्वजननी प्रकृतिने पहिले बुद्धिको उत्पन्न किया सो इच्छा-  
 मयी महद्रूपा कहे सूक्ष्मरूपा हैं उसी बुद्धिसे अहङ्कार होताहै सो भी अहङ्कार रजः  
 सत्त्व तमोगुणों से तीन प्रकारका हुआ ॥ ५० ॥ इन तीनों अहङ्कारे साहित  
 पूर्ण अहङ्कार से दशइन्द्रिय और मनभया सो इन्द्रिय दोप्रकारकी कहताहैं श्रवण  
 त्वचा, नेत्र ॥ ५१ ॥ जीम, नाक ५ वाणी, हाथ, पाँय, लिंग. गुदा ५ पहिले

१ पूर्वजन्मकृतपापव्यापिरूपेणवापते । अतोदानादिर्बुध्भारसप्ततीष्यविधघण इति ॥

सत्त्वगुणोत्कृष्टादहङ्कारादथाभवत् । तन्मात्रंपञ्चकंसस्यना  
मान्युक्तानिसूरिभिः ५३ शब्दतन्मात्रकंसपर्शतन्मात्रंरू  
पमात्रकम् । रसतन्मात्रकंगन्धतन्मात्रंचेतितद्विदुः ५४ त  
न्मात्रपञ्चकात्तस्मात्सञ्जातंभूतपञ्चकम् । व्योमानिलान  
लजलक्षोणीरूपंपञ्चतन्मतम् ५५ शब्दस्पर्शश्चरूपंचरस  
गन्धावनुकमात् । तन्मात्राणांविशेषास्स्युःस्थूलभावमुपा  
गताः ५६ बुद्धीन्द्रियाणांपञ्चैवशब्दाद्याविषयामताः । क  
र्मेन्द्रियाणांविषयाभापादानविहारतः । आनन्दोत्सर्गकौ  
चैवकथितास्तत्त्वदर्शिभिः ५७ प्रधानंप्रकृतिःशक्तिर्नित्या  
चाविकृतिस्तथा । एतानितस्यानामानिशिवमाश्रित्यया  
स्थिता ५८ महानहङ्कतिःपञ्चतन्मात्राणिपृथक्पृथक् ।  
प्रकृतिंविकृतिंचैवसत्तैतानिविबुधाजगुः ५९ दशेन्द्रियाणि  
चित्तञ्चमहद्भूतानिपञ्चच । विकाराःषोडशज्ञेयाःसर्वव्या  
प्यजगत्स्थिताः ६० एवंचतुर्विंशतिभिस्तत्त्वैः सिद्धैवंपु  
कहीहुई ज्ञानइन्द्रिय जानी पीढे फही पांच कर्मेन्द्रियहै ॥ ५२ ॥ सत्त्व ग्गार तम से  
उत्कृष्ट रजोगुणी अहंकार भया जिसमें पंचतन्मात्रा भई उनका नाम पण्डितजन  
कहते हैं ॥ ५३ ॥ शब्द तन्मात्रा १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गन्ध ५ ये पंचतन्मात्राहै  
सो पांचों ज्ञानइन्द्रिय के लक्ष्य हैं लक्ष्य यह कि जिसकी जो तन्मात्रा है उसी का  
उत्त इन्द्रियको ज्ञानहै ॥ ५४ ॥ तिन तन्मात्रासे पंचभूत भये आकाश १ वायु २  
अग्नि ३ जल ४ पृथ्वी ५ ॥ ५५ ॥ इनको क्रमसे जानना सो शब्दादिक क्रमसे  
स्थूलभाव को प्राप्तहोके ये पांचों विशेष हैं ॥ ५६ ॥ ज्ञानेन्द्रिय के शब्दादिक पांच  
विषय माने हैं सोई कर्मेन्द्रिय के वचन १ गहिलेना २ चलना ३ सुखी ४ मल  
त्याग ५ पण्डित कहे हैं ॥ ५७ ॥ प्रधान १ प्रकृति २ शक्ति ३ नित्या ४ अविद्वत् ५  
ये प्रकृति के नामहै इसी रीति से जानना जोकि परब्रह्मका आश्रयकरि स्थितहैं ॥  
५८ ॥ महत्त्व अहंकार और पंचतन्मात्रा इन सातों को पण्डितजन प्रकृति व  
विकृति कहते हैं ॥ ५९ ॥ और दशइन्द्रिय एक चित्त पंचमहाभूत ये सोलह विकार  
जानना ये सब जगत् में व्याप्तहो स्थितहैं ॥ ६० ॥ इन चौत्रिस तत्त्वजनसहित देखें

र्गहे । जीवात्मानियतोनित्यं वसतिस्वान्तदूतवान् ६१  
 सदेहीकथ्यतेपापपुण्यदुःखसुखादिभिः । व्याप्तोवद्वश्च  
 मनसा कृत्रिमैःकर्मबन्धनैः ६२ कामक्रोधौलोभमोहाव  
 हङ्कारश्चपञ्चमः । दशेन्द्रियाणिवृद्धिश्चतस्यबन्धायदे  
 हिमः ६३ आप्तोतिबन्धमज्ञानादात्मज्ञानाच्चमुच्यते । तं  
 दुःखयोगकृद्ब्याधिरारोग्यंतत्सुखावहम् ६४ ॥ इति श्रीशा  
 ङ्गधरेकलादिकारुष्यानेपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

यात्यामाशयमाहारः पूर्वप्राणानिलेरितः । माधुर्यफेन  
 भावञ्चषड्रसोपिलभेतसः १ अथपाचकपित्तनविदग्ध  
 श्चाम्लतां ब्रजेत् । ततःसमानमरुताग्रहणीमभिधीयते २  
 ग्रहण्यां पच्यते कोष्ठवह्निनाजायतेकटुः । रसोभवतिंस  
 पक्वादपक्वादासम्भवः ३ वह्नेर्वलेनमाधुर्यं स्निग्धतांया  
 तितद्रसः । पुष्टिःपित्तधरानामसाकलापरिकीर्त्तिताऽपक्वा  
 माशयमध्यस्थाग्रहणीत्यभिधीयते । पुष्णातिधातूनखि  
 जीवात्मा सदैव स्थितरहताहै और जो ममहै सो उसका दूत है ॥६१॥ ये उंसीको  
 देही कहते हैं जो पाप, पुण्य, दुःख व सुख करिके व्याप्तहै सो मनके करे कर्मनके संग  
 धंधाहै ॥६२॥ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार ५ इन्द्रिय १० और बुद्धि ये सोनाह देह  
 बन्धनके हेतु हैं ॥ ६३ ॥ जीवात्मा अज्ञान करिके इनमें बँधारहताहै और ज्ञान करिके  
 बन्धनते मुक्त होजाताहै अज्ञानते दुःखके योगमें दुःखपाताहै और ज्ञान करिके सुख  
 पाताहै ॥ इति सृष्टिक्रमः ॥६४॥ इति श्रीशाङ्गधरेकलादिकारुष्यानेपञ्चमोऽध्यायः ५

( अध्याहार ) जो कछु भोजनकिया सो शायचायुसे प्रेरित मयम आमाशयमें  
 जाताहै परस में कोई रसहो मधुर और फेनासा होजाताहै ॥ १ ॥ अन्यद्रव्यों में  
 लिखाहै कि कफाशयमेंहो आमाशयमें जा फेनभाव होजाताहै इति, मो रमभाव  
 हो पाचक पित्त में दग्धमय सृष्टाहोजाताहै तब समानवायुका प्रेरित ग्रहणमें पहुँचा  
 है ॥ २ ॥ फिर ग्रहणीसे अग्निकोष्ठमेंपाचके कटुचा होजाताहै जो अग्नि घ्राणाग  
 में अच्छीतरह पचा तो रसहुआ अरु जो अपकरहा तो आंव होगया ॥३॥ तौन  
 रस अग्निके बलसे पचिके गुर और चिकना होजाताहै सोवर पिचररा पुष्टिकला

लान्सम्यक्पक्वोऽमृतोपमः ५ 'मन्दवह्निविदग्धश्च कंटु  
 श्याम्लोभवेद्रसः।विषभावंत्रजेद्वापिकुर्याद्वारोगसङ्करम् ६  
 आहारस्यरसःसारःसारहीनोमलद्रवः । सिराभिस्तज्जलं  
 नीतं वस्तौ मूत्रत्वमाप्नुयात् । तत्किञ्चमलं ज्ञेयं तिष्ठेत्पकाश  
 ये च तत् ७ बेलित्रितयमार्गेणयात्यपानेन नोदितम् । प्रवा  
 हिनीसर्जनीचग्राहिकेतिवलित्रयम् ८ रसस्तुहृद्यंयातिस  
 मानमरुतेरितः । रञ्जितःपाचितस्तत्रपित्तेनायातिरक्तता  
 म् ९ रक्तं सर्वशरीरस्थं जीवस्याधारमुत्तमम् । स्निग्धं गुरु  
 च्चलं स्वादुविदग्धं पित्तवद्भवेत् १० पाचिताः पित्ततापेन र  
 साद्याधातवः क्रमात् । शुक्रत्वंयान्तिमासेन तथा स्त्रीणां रजो  
 भवेत् ११ कामान्मिथुनसंयोगेशुद्धशोणितशुक्रजः । गर्भः  
 सञ्जायते नार्याः सजातोवाल उच्यते १२ आधिक्याद्भ्रजसः

कहाती है और एकाग्र आमाशय के मध्यमें स्थित ग्रंथी कही जाती है सो अन्धी  
 तरह, पकारस अमृतकी। मुख्य अखिल धातुनको पोषता है ॥ ४ ॥ जो मन्दाग्नि  
 करि अपकरइ तत्र कटुवा खट्टा विपसमान बहुतरोग उत्पन्न करता है ॥ ५ ॥ सो रस  
 आहारका सार है जब आहार से रस भिन्न भया सो सारहीन आहार मल और  
 जल रह गया उस जलको मूत्रवाहिनी सिराने लेके वस्ती जो मूत्रकी पैली तिस  
 में छोड़ा सो मूत्र है तिसके नाम उसीकी कीटमलहो पकाशय में रहता है ॥ ७ ॥  
 सो मल अपानवायुपेरित, भिन्नी में हो निकलता है त्रिजली कहै मलमार्ग तिस  
 में तीन बल शैलकी नाई है तिसके नाम मवाहिनी, सर्जनी, ग्राहिका ३ ॥ ८ ॥ सो  
 रस समानवायुपेरित हृदय में जाता है व रंजित पित्तते पचिके रक्त होजाता है ॥ ९ ॥  
 वह रक्त उत्तम जीवाया र् सन्न शरीरमें स्थित है और चिकना है गुरु है चर है स्वादु है  
 व जब दग्ध होता है तत्र पित्तसम कटु होजाता है ॥ १० ॥ पित्तकी अचसे पचिके  
 मासभरे में रसादिकुषातु क्रमसे शुक्रको प्राप्त होती है तथा स्त्रीके शरीरमें उसी क्रम  
 से रज होता है इसरीविसे एक दिनमें भोजनकारक फिर रस पचिके पांचदिनमें क  
 थिर पेसे मतिघातु पांच दिनमें पचि पचिके महीनाभर में शुक्र होता है ॥ ११ ॥  
 जब, स्त्री पुरुषकी, कामना से संयोगद्वारा शुद्ध रक्त नीर्यमिश्रित होता है - तत्र स्त्री



कन्यापुत्रःशुक्राधिकेभवेत् । नपुंसकंसमत्वेनयथेच्छापार  
 मेश्वरी १३ अस्थानिमज्जाशुक्रंचपितुरंशास्त्रयोमताः ।  
 शुक्राश्रितोभवेच्छयावोगौरश्चरजसाश्रितः १४ बालस्य  
 प्रथमेमासिदेयाभेषजरक्तिका । अवलेहीकृतैकैवक्षीरक्षौद्र  
 सिताघृतैः १५ वर्द्धयेत्तावदेकैकांयावद्भवतिवत्सरः । माषै  
 र्वृद्धिस्तदूर्ध्वस्याद्यावत्षोडशवत्सरः १६ ततःस्थिराभवे  
 तावद्यावद्वर्षाणिसप्ततिः । ततोबालकवन्मात्राहसनीया  
 शनैःशनैः । मात्रेयंकल्कचूर्णानां कषायाणांचतुर्गुणा १७  
 अञ्जनंचतथालेपःस्नानमभ्यङ्गकर्मच । चमनंप्रतिमर्श  
 श्चजन्मप्रभृतिशस्यते १८ कवलःपञ्चमाहर्षादिष्टमान्न  
 स्यकर्मच । विरेकःषोडशाहर्षाद्द्विंशतेऽथैवमैथुनम् १९  
 बाल्यंवृद्धश्छविर्मेघात्वग्दृष्टिःशुक्रविक्रमौ । बुद्धिकर्मेन्द्रि

अथैतो जीवितं दशतो हसेत् २० ( इति आहारपाकगर्भो  
 त्पित्तिकुमारपोषणानि ) अल्पकेशः कृशोरुक्षो वाचाल  
 शंचलमानसः । आकाशचारी स्वप्नेषु वातप्रकृतिकोनरः  
 २१ अकाले पलितैर्व्याप्तो घ्रीमान्स्वेद्री च रोपणः । स्वप्ने  
 पुण्योतिपाद्रष्टापित्तप्रकृतिकोनरः २२ गम्भीरबुद्धिः स्थू  
 लाङ्गः स्निग्धकेशो महाबलः । स्वप्ने जलाशया लोकीश्ले  
 ष्मप्रकृतिकोनरः २३ ज्ञातव्यामिश्रचिह्नैश्च द्वित्रिदोषो  
 ल्वणानरः । कौमार्यौवनवाद्धै प्राणिनां त्रिविधं वयः । क  
 फपित्तानिलप्रार्थक्रमतः प्रकृतिलिधा २४ ( इति हितोपदे  
 शात् ) तमः कफाभ्यां निद्रास्यान्मूर्च्छां पित्ततमो भवा । रजः  
 पित्तानिलैर्भ्रान्तिस्तन्द्राश्लेष्मतमो निलैः २५ ग्लानिरोज  
 क्षयाद्दुःखाद्जीर्णान्निश्रमाद्भवेत् । यः सामर्थ्येण्यनुत्साहस्त  
 धारणशक्ति पचासतक त्वचा साठतक दृष्टि सचरलो वीर्य अस्तीतक यत्न नष्टे  
 लो बुद्धि सौलक कर्मेन्द्रिय चलनशक्ति एकसौ दशतक चेत एकसौ वीसतक जी-  
 वत्व दश दशवर्ष प्रति यह क्रम जानना ॥ २० ॥ इति आहारपाकगर्भोत्पत्तिकु-  
 मारपोषणानि (घातप्रतिलक्षण) सूक्ष्मकेश दुर्बल रूसा वक् बादी मनस्थिर नहीं  
 आकाशचारी स्वप्न देखे ये वानप्रकृति नरके लक्षण हैं ॥ २१ ॥ (पित्तप्रकृति) लघु-  
 वयसमें येश पकें बुद्धि तीव्र स्वेद बहुत निकरै क्रोधी अग्नि नक्षत्रादि स्वप्न में देखे  
 ये पित्तप्रकृति मनुष्य के लक्षण हैं ॥ २२ ॥ (कफप्रकृतिलक्षण) गम्भीर बुद्धि  
 स्थूलशरीर धिकले केश अधिक बल जनादि स्वप्नमें देखे ये कफप्रकृति पुरुषके  
 लक्षण हैं ॥ २३ ॥ (अथ द्वित्रिदोषप्रकृतिलक्षण) जो दो दोषके लक्षण हों तौ द्वि-  
 दोषप्रकृति जानो तीनोंके लक्षण हों तौ त्रिदोषप्रकृति जानो कौमार- यौवन-  
 वृद्ध यह तीनप्रकारकी अवस्था है—और कफपित्त वायुकी आधिप्यता से प्रकृतिभी  
 तीनप्रकारकी है ॥ २४ ॥ इति हितोपदेशात् ॥ तमोगुण और कफ मिलके भीद  
 आती है इपे समावस्था रहते हैं पित्तमें तमोगुण मिलने से अचेत होता है तिसे  
 मूर्च्छा कहते हैं तमोगुण पित्तघात मिलेसे संभ्रम होता है तमोगुण कफघात संयु-  
 क्त होनेसे तंद्रा होती है तंद्रावहे निद्रा स्थित न होय ॥ २५ ॥ ग्लानिसे दुःखसे

दालस्यमुदीर्यते २६ चैतन्यशिथिलत्वाद्यःपीत्वैकंश्वास  
मुद्दरेत् । विदीर्णवदनःश्वासजृम्भासाकथ्यतेबुधैः २७ उ  
दानप्राणयोरूर्ध्वयोगान्मौलिकफस्रवात् । शब्दस्सञ्जाय  
तेतेनक्षुततत्कथ्यतेबुधैः २८ उदानकोपादाहारस्सुस्थिर  
त्वाच्चयद्भवेत् । पवनस्योर्ध्वगमनंतमुद्गारंप्रचक्षते २९  
इति प्रकृतिलक्षणानि ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरपण्डोऽध्यायः ६ ॥

रोगाणां गणना पूर्वमुनिभिर्द्या प्रकीर्तिता । मयात्र प्रो  
च्यते सैव तद्देवावहवो मताः १ पञ्चविंशतिरुद्दिष्टा ज्वरा  
स्तद्भेद उच्यते । पृथग्दोषैस्त्रिधा ह्यन्धभेदेन त्रिविधः स्मृतः  
२ एकश्च सन्निपातेन तद्देवावहवस्स्मृताः । प्रायशः सन्निपा  
तेन पञ्चस्युर्विषमज्वराः ३ सन्ततः सततश्चैव अन्येषुष्क  
स्त्वृतीयकः । चातुर्थिकश्च पञ्चैते कीर्तिताः । विषमज्वराः ४  
तथा गन्तुज्वरोऽप्येकस्त्रयोदशविधो मतः । अभिचारग्रहावे

अजीर्णसे ग्लानि होती है सामर्थ्य रखकर कृत न करे उसे आलस्य कहते हैं ॥ २६ ॥  
चैतन्य, स्थानकी शिथिलता से एकरासको खँचिके मुख फैलायके झँड़े उसे ज-  
भाई कहते हैं ॥ २७ ॥ उदान और प्राणवायु के ऊपर चढ़ने से शिरका कफ गिरा-  
ता है उसके शब्दको छींक कहते हैं ॥ २८ ॥ जब आहार अपने स्थान में गया  
वहाँ की भरी हुई उदानवायु को पकड़ि ऊपर निकलती है उसे टकार कहते हैं ॥ २९ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसंहितायामाहारकथननामपण्डोऽध्यायः ६ ॥

प्रथम मुनियोंकी कही हुई रोगों की गणना सो इस ग्रन्थ में मैं कहता हूँ रोगोंके  
बहुत भेद हैं ॥ १ ॥ पचीस भाँति के ज्वरका भेद कहा है व तीनप्रकार के भिन्न भिन्न  
हैं वातज्वर कफज्वर और दो दो दोष ते तीनप्रकार के हैं वातपित्तज्वर यातकफ-  
ज्वर कफपित्तज्वर ऐसे कहते हैं ॥ २ ॥ और एक सन्निपातज्वर है तिसके बहुतसे  
भेद कहे हैं बहुधा सन्निपातसे पाँचप्रकार के विषमज्वर उत्पन्न होते हैं ॥ ३ ॥  
वा जो ज्वर सदैव बनारहे उसे सन्तत कहते हैं १ एक वसा है दूसरा किसीवेर  
फिर आवे उसे सतत कहते हैं २ दूसरे दिन आवे उसे अन्तरिया कहते हैं ३ तीजे  
दिनवाले को तिजरिया कहें ४ चौथे दिन आवे उसे चातुर्थिक कहें ५ ये पाँचवि-

शंशापैरागन्तुकस्त्रिधा ५ अमाच्छेदात्क्षतादाहाच्चतुर्धाधा-  
 तजोज्वरः । कामाद्गीतिः शुचोरोषाद्विषादापधगन्धतः । अ-  
 भिषङ्गज्वराः पटस्युरेवज्वरविनिश्चयः ६ पृथग्दोषैः सम-  
 स्तैश्चशोकादामाद्गयादपि । अतीसारस्सप्तधास्याद्ग्रह-  
 पमज्वरैः ॥ ४ ॥ एकप्रकारका आगन्तुकज्वरैः सो तीन कारण करके तेरह प्र-  
 कारका होताहै अभिचार कहे दोना मन्त्रादि से १ ग्रहदशा से २ शाप से ३ ये  
 तीन प्रकार हैं ॥ ५ ॥ अमसे १ चोटसे २ क्षतसे ३ व जलनेसे ४ ये चारप्रकार  
 आघातके कई कामचेष्टा में स्त्रीका अभाव भये अथवा चित्तासक्त स्त्रीके वियोग  
 से १ डर से २ शोकसे ३ क्रोधसे ४ विपसे अथवा विपगन्ध से ५ प्रयत्नओपधिते-  
 र्चनसे ६ ये छः अभिपंगज्वरहै ये सय ज्वर २४ निरचय कियेगयेहै ॥ ६ ॥ अथ १ २  
 प्रथम कहे शार तेरह आगन्तुकपचीसों के लक्षण कहताहै ज्वर के आनेसे देहकापै  
 ज्वर आनेका कोई समय बन्धन नहीं ॥ दोहा ॥ मूलहोठ गर्नोदिनहै अञ्जुतिरुक्त  
 मुखफीक । शिरहदि शूलोदरफुले मलबधमम्भालीक ॥ इति वातज्वर ॥ वेगदस्त  
 भ्रूफहडवकि कण्ठघ्राणमुखपाक । श्वेतप्रलापी रूढ कटु मूर्च्छादाहपद्राक ॥ तृ-  
 प्णा पियरी मूत्रमल नयनत्वचान्द्रमुषीत । वचन भुलाने भ्रमसहितसो पित्तज्वर  
 नीत ॥ २ ॥ इति पित्तज्वर ॥ शीतलता संकुचिततन आलस मध्य सताय । श्वेत  
 मूत्रमलपीठगुरु गुरुताअरुविजडाय ॥ जाडारोमांचौउचकि अतिनिद्रा तन पीर ।  
 रोध नासिका भवणहल भवलमूत्र गम्भीर ॥ सूक्ष्मस्वेद लघुउष्णता अपचनासि-  
 द्रवकासु । अरुबिनयन सितनयनरंगकफज्वर कहियेतासु ॥ इति कफज्वर ॥  
 तृपणा मूर्च्छा दाहभ्रमर्नादि नमस्तकपीर । रोमहर्षगरमुखसुखैधुधमरुचिउपकीर ॥  
 सांठि सांठि पीडाकरै गत पित्तज्वर जान ॥ इति दाहपित्तज्वर ॥ संकुच शीतल  
 जकड़ तन खांसी नैदि प्रधान । सन्धिपीर मस्तक जकड़ घ्राण द्राव अतिस्वेद ।  
 मध्यमज्वरसंतापयुतवातकफज्वरखेद ॥ इति वातकफ ॥ कटुलसलसमुख दन्तक्षत  
 हिक्काकास रुप्यास । खनजाडाखनहीअरुचिकफापित्तज्वरवास ॥ इतिकफपित्त ॥ खन  
 जाडा खनदाहपुनि अस्थिमायमपीर । लारनयनमल अवरणमेशब्दविलक्षणचीर  
 तंद्राकंटककंठगत मोहप्रलापकास । श्वासअरुचिभ्रमजम्भखरदग्धसदृशआभास ॥  
 तनमस्तफरतउत्तअधिररक्तमुपित्तकफन । प्यासअनिद्राहृदयभय दुष्टस्वेद मनहैन ॥  
 अति दुर्बलतायातनहै परधर कण्ठहि होई । उष्णगात फिरकीअसित दामकले-  
 दरमोई ॥ गुग्गुलाग पक पेटगुरु दोष बहुत दिनपाक । दोषवदेषावकपटैलक्षणस

पीपञ्चमती ७ पृथग्दोषैः सन्निपातात्तथाचामेनप्रञ्चमी ।  
 प्रवाहिकाचतुर्द्वास्यात् पृथग्दोषैस्तथासतः ८ अजीर्णं

त्रिनिशाक ॥ कहि असाध्य लक्षण सकल कष्टसाध्यजोगाट । थोरलक्षण साध्य  
 ये जो लघु सरितापाट ॥ इति सन्निपात ॥ सातके दश द्वादश दिवस घटेनसंतत  
 साप । सततचर्दें द्वैमरे नित कहत वैथ निष्पाप ॥ इतिसंततसततज्वर ॥ वदैन्यनेद्युः  
 धारइक टिकैवटीउआस । अंतरिया दिन थीचर्दें तिजरी द्वैतमिनास ॥ चातुर्थिक  
 दिनत्रै विरै कहत सकल रुग्णहार । भूत प्रेत विपरीतजप, होमजनित अभिचार ॥  
 राजसादि पीडाजनित कहिज्वरग्रह आग्नेश ॥ वृद्ध सिद्धद्विजगुरु शपित कहतशाप  
 ज्वर देश ६ ॥ अतिसारसप्तप्रकार । प्रतिदोष दोषविकार ॥ पुनिशाकअवढराय ।  
 ग्रहणीपुंषकहाय ॥ प्रतिदोषसंतोआम । रहिजातजो भुगखाम ७ ( अथातीसार  
 रोग ) अतीसार सातप्रकारकेहैं वातातीसार, पित्तातीसार, कफातीसार, त्रिदोषा  
 तीसार, शोकातीसार, आमातीसार और भयातीसार ७ ( लक्षण ) जिसकेमलमेंआं  
 वा फेनामिला पतला गिरै लालरंग रूखा वा हलका होय धारधार ज्वग होहो भर-  
 भराहटसे शूल से होये वातातीसारके लक्षण हैं ॥ पीत व नीला व तावमल गिरै  
 मूर्च्छा होय गुदा में जलन और गुदा पक जाय प्यास ये पित्तातीसारके लक्षणहैं ॥  
 श्वेतरंग गाढा कफसहित त्रिसेदी गंधमलवढादेहमेंरोमहर्षहोय इति कफातीसार ॥  
 सूकर मेना तथा मांस शोबन, सा मज गिरै और वातादि दोषातीसारनके लक्षण  
 मिलै उसे त्रिदोषातीसार जानिये बहुत कठिनसाध्यहैं ॥ इति ॥ जो धन पुत्रादि  
 वा प्रतिष्ठादि हानिके शोकसे भोजन न करे उसके शोककी उष्णता ओझड़ी में  
 हो अग्निको विकल करती है उसके तेज से श्थिर उफना ताध्वरंगहोय मलकेसाथ  
 गिरै वा केवल श्थिर गिरै औ आमगन्ध हो वा अतिदुर्गन्ध हो उसे शोकाती  
 सार कहते हैं सो भी अतिही कष्टसाध्य है अतिउष्णचीज औ पित्तकचीज खाने  
 से वा व्रतसे गरमी होके निरे श्थिर का भाड़ा होता है उसे रक्तातीसार कहतेहैं  
 और मूलव्याधि अर्शे शोक से भी निरारक्त गिरताहै इति रक्तातीसार ॥ और अन्न  
 व रसके परिपाक न होनेसे आंशुहोतीहैसोमलके संगअनेकरंगहो गिरतीहैऔरशूल  
 फरती है उसे आमतीसार कहतेहैं भयसे अतीसार होता है भयसे तीनों दोषकोप  
 करते हैं जिस दोष के लक्षण मिलै उसी दोषका कोपजानना ॥ इति अतीसार-  
 लक्षण ( अथ ग्रहणीरोग ) पांचतरहकी ग्रहणी होतीहै ॥ आवातग्रहणी, पित्त-  
 ग्रहणी, कफग्रहणी, त्रिदोषग्रहणी, आमग्रहणी ५ ( गृहणीलक्षण ) जप अग्न्याशय

त्रिविधं प्रोक्तं विष्टब्धं वायुनामंतम् । - पित्ताद्विदग्धं विज्ञेय  
 कफेनामंतदुच्यते ६ विपाजीर्णरसादेकदोषैः स्यादल्ल  
 सखिधा । विसूचीत्रिविधा प्रोक्ता दोषैः सा स्यात्पृथक्पृथ  
 क् ॥ दण्डकालसकश्चैव मेकैकस्याद्विलम्बिका १० अ

में पांतादिकदोष स्थित होके कोपकरतेहैं उससे उत्पन्नग्रहणीरोग होताहै इससे  
 आंचगिरता है दुर्गन्धसमेत वा वायुकरिके स्थित खुल के भाड़ा नहीं होता और  
 पित्त करिके क्षयक्षय भर में दिशालगती है तब कधी आंच वा जितनी प्रकृत,  
 नी गिरती है शक्ति घटतीहै आलस्य, वदताहै अग्नि मन्दहोती है उससे अन्नरू  
 पाक अश्रीमरह नहीं होता और बरी आन्न शरीरको जड़ करती है यह संग्रहणी  
 का अथम रूहै वायु के कुपितभये शूल, पेटफूनना, सांसी, और श्वास होता है  
 उसे घातसंग्रहणी कहिये-पित्तके कुपितभये खट्टीडकारआतीहै छाती कंड जलता  
 है खसि न होइ उसे पित्तसंग्रहणी कहतेहैं-कफ, केकुपित भये ज्वासी, मुत्तमीठा,  
 लिबलिया, खासी, नाकनहना, आलस्य ये कफसंग्रहणी के लक्षण जानिये-  
 जिसमें तीनोंदोष के लक्षण होयें यह सन्धिपातसंग्रहणी है आमघातसेहो सो आम  
 संग्रहणी और संचितहोके अर्थमें चौथेदि न गिरै तितसे अमातीसार कहतेहैं और मवा  
 हिका चार भातिकी है सो अतीसारके श्रेद् जानीं यातसे पित्तसे कफसे वरक्तसे इन  
 चारों से होताहै वायु कोप करिके ओभ्रुदीमें कफसेच्यकरै फिर कुपय्यके कारण  
 पाके कफ मल में मिल पतला करि बहताहै उसे मवाहिका कहते हैं जो वायुहोतो  
 शूल हो और मलके संग फेन गिरै यह घातमवाहिकाहै और दाहहो पीतमल गिरै  
 सो विचमव हिका है जो देह टूटै आलस्य होके कफमिश्रित पांडुरंगमलगिरै उसे  
 कफमवाहिका कहतेहैं जो खरि मिल पतलामलवहै कैनहीं उसे रक्तमवाहिका कह  
 तेहैं ॥८॥ अजीर्ण के तीन भेदहैं क्रिया हुआ भोजनयथ योग्य न पचै उसे अजीर्णक  
 हतेहैं जो वायु करके कोष्ठवद्ध होता है तब शरीरमें शूल, डडफूटन, पेटफूलै, उसे  
 विष्टब्ध अजीर्ण कहते है जो सम्भ्रम, मूर्च्छा, दोह, देहपीर, खट्टी डकारआचै जो  
 वायुकरके कोष्ठबंधे उसे पित्तविदग्घाजीर्ण कहतेहैं जो ज्वकार, डकार, देहभारी,  
 देहमूजन उसे कफ अमाजीर्ण कहतेहैं ॥९॥ वो अन्नभोजनकरि रस होताहै उससे  
 एक विपाजीर्ण होताहै जो रस न पचै सो विष तुल्य होके मरणावस्थाके अनेक  
 रोगको संचय करताहै सो वीतप्रकारकाहै विसूची, दयडालस, विलंबिना, लक्षण )  
 भाड़ा खरुदी २ आचै मूर्च्छा, सुषाकी शूल, भ्रम, देह में दाह, जृम्भा, देहपुनना

शांसिषड्विधान्याहृवातपित्तकफास्रतः । सन्निपाताश्च  
संसर्गात्तेषाम्भेदोद्विधास्मृतः । सहजोत्तरजन्मभ्यांतथाशु  
ष्काद्रभेदतः ११ त्रिधैवचर्मकीलानिवातात्पित्तात्कफाद्  
पि। द्वाविंशतिप्रकारेणक्रमयःस्युर्द्विधोच्यते १२ बाह्यास्त  
थाभ्यन्तराःस्युस्तेषुयूकावहिश्चरोः १३ लिख्याश्चान्ये  
भ्यन्तरास्स्युःकफात्तेहृदयादकाः । अन्त्रादाउदरावेष्टाश्चु  
रंवश्चमहागुहाः १४ सुगन्धादर्भकुसुमास्तथारक्ताश्चमा  
तरः। सौरसालोमविध्वंसारोमद्वीपाह्युदुम्बराः १५ केशादा  
श्चतथैवान्येशकृज्जातामकेरुकाः । लेलिहाश्चमलूनाश्च  
आतिस्वेद इसे विसृचिका कहतेहै कोई हलका कहतेहै शरीर देहाकारहो अकड  
जाय म्यास डकार इसे दगडालस कहतेहै व अघो ऊर्ध्वयायुर्दधके पेटस्तम्भहो फूलो  
शूलहो इसे पिलम्बिका व गुमशीतरस व वन्द हैजा कहतेहै ॥ १० ॥ अंशकहै व  
शंमीर छःमंकारकी है वाताश, पित्ताश, कफाश, सन्निपाताश, रक्ताश व संसर्गाश व  
इनके दो भेदहै एक शरीरसे होताहै जिसे गुष्क कहतेहै दूसरा विपरीताहार विहार  
से होताहै जो श्लोकार चक्र मलमार्गमें साके पांच अंगुलकाहै उसमें वातादिक  
के कोपसे मांसका अंफुर उभर आताहै (लक्षण) माथेमें शूल, कटिरीडा, मन्दाग्नि  
ये लक्षण वाताशकेहै ज्वर, दाह, स्वेद, मूर्च्छा ये लक्षण पित्ताशकेहै देवासभेद, क  
चचि, मापाभारी औ अंफुरफूलके पीडाकर बैठने में क्रेश ये लक्षण कफाशकेहै ऐसेही  
सन्निपाताशहै और आति गरमी से रक्त गिरै देह पीली यन्त्रीण जह रक्ताशहै  
मलके वेगसे अंफुर रक्तदेह काटेसे गैके ये संसर्गाश के लक्षणहै ॥ ११ ॥ चर्मकील  
। सीनि भांतिकी होतीहै यातज, पित्तज व कफज देहमें दाहसतरह के कृपिहै दोन  
ऊर्ध्वशासी जुवा चीवहर किलनी ये केश वस्त्रकी मलिनतासे होतेहै और अतारह  
अन्तरवासीमें सात भेदहै सो कफसे होतेहै हृदयादक ? अत्राद् २ उदरावेष्टश्चुरव  
( चिन्ना ) ४ महागुह ५ सुगन्ध ६ दर्भकुसुम ७ ये कफागुद से आभाराय प्रवेद होते  
है कुपित होके ऊर्ध्वमार्ग अघोमार्ग हो निकलतेहै स्वेदवर्द्ध, ताद्वरख, मोटे, लम्बे  
तथा धानसमान लक्षण मन्दाग्नि सदाकी ज्वर नाभिलान्त ॥ १२ ॥ ११ ॥ आर. छः  
रक्तसे शत है मातर १ सौरस २ लोमविध्वंस ३ रोमहृद ४ उदुम्बर ५ ॥ १५ ॥  
आर वेशाद्वये रक्तवाही सिराके पानमें होतेहै ( लक्षण ) लाल क्रतिसूत्रम जो

सौसुरादामकेरुकाः । तथान्येकफरक्काभ्यांसञ्जाताःस्नायु  
काःस्मृताः १६ व्रणस्यकृमयश्चान्येविषमात्राह्वयोन्मयः ।  
पाण्डुरोगाश्चपञ्चस्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा १७ त्रिदोषैर्मृ  
त्तिकाभिश्चतथैकाकामलास्मृता । स्यात्कुम्भकामलाचै  
कातथैवचहलीमकम् १८ रक्तपित्तत्रिधाप्रोक्तमूर्ध्वगंकफ  
सम्भवम् । अधोगंगमारुताङ्गोयंतद्वयेनद्विमार्गगम् १९ का  
साःपञ्चसमुद्दिष्टास्तेत्रयःस्युस्त्रिभिर्मलैः । उरःक्षताच्चतुर्थः  
स्यात्क्षयाद्वातोश्चपञ्चमः २० क्षयाःपञ्चैव विज्ञेयास्त्रि

देव नहीं परं वह कष्ट उत्पन्न करते हैं और मकेरुक, लीलह, मन्नुन, सौसुराद व  
मकेरुक ये पाच प्रबलतर कृमि मलमें होते हैं कचे मलमें रहते हैं श्वेत पीतदीर्घ मोटे  
कभी मुखसे कभी मल केसंग गिरते हैं अग्निमन्द पीड़नादि उपद्रव होते हैं कफ और  
रक्तसे उत्पन्न होते हैं उसे स्नायुक (नाहरू) कहते हैं ॥ १६ ॥ और बहुत विषम व  
बाण्योनि ये त्रणके कृमि हैं (अथ पाण्डु) पाण्डुरोग पांच भातिका होता है वातज,  
पित्तज, कफज, त्रिदोषज, माटी भक्षण से ५ (लक्षण) मुस कातिहीन भावर कंफ  
सूजन पेट पजावा आलस्य ये पाहुस्वरूप हैं और कमलपाहु-कुम्भकपाहु हलीमकपाहु  
इनके (लक्षण) पीतचमरा, हृदीसा मूत्रनाल मल उष्ण बलहीन ये कमल पाहुदेह  
कृष्ण वा पीत कभी हरित सामर्थहानि अनिमन्द सूक्ष्मज्वर नपुंसकतावासी ये कुम्भ-  
कपाहु के लक्षण हैं ऐसे ही लक्षण हलीमकपाहु हैं ॥ १७ ॥ रक्तपित्तके तीन भेद  
जानो निदान उसका यह है परिधम शोक्रमार्गमग्न वसैथुनइत्यादि श्वाति करनेसे रधिर  
छफनाय मुख और दिशासे गिरतेसे रक्तपित्त बरते हैं जब वह उफना रधिर निदान  
उसका यह है कफ वेपता है तो मुखसे गिरता है जो वायु कोपता है तो मलमार्गसे गिरता  
है अग्नित्रोपसे नाकमे गिरता है और कफवात दोनोंसे मुख और दिशासे गिरता है ॥  
१८ ॥ १९ ॥ कासकहे खासी पाच प्रकारकी है वातसे, पित्तसे, कफसे, कलेजेके रिक  
हो व घातुक्षीणसे ५पेटकोप हृदय मस्तकपीडासूती घास खोली ये वातकास के लक्षण  
हैं ॥ २० ॥ ज्वर, मस्तकदाह, रुमेरु, पीतकफ निकलना ये पित्तकासके लक्षण हैं ॥  
शुजरी, कफसे देह जकड़ना ये कफकासके लक्षण हैं ॥ और वातसे करेजेमें वात  
सूली खासीकेपीडे रक्तमाना, पमुरीपीडाये क्षतकासके लक्षण हैं ॥ वात क्षय  
ः दृश सर्वसन्नि पीडाकारिके खासी उत्पन्न होती है यह घातु क्षयकाल लक्षण है ॥ २



भिर्दोषैस्त्रयश्चतौचतुर्थस्सन्निपातेनपञ्चमःस्यादुरःक्षता  
 त् २१ शोषाःस्युःषट्प्रकारेणस्त्रीप्रसङ्गाच्छुचोत्रणात् । अ  
 ध्वश्रमाञ्चव्यायामाहार्द्धक्यादपिजायते २२ श्वासाश्च  
 पञ्चविज्ञेयाःक्षुद्रस्स्यात्तमकस्तथा । ऊर्ध्वश्वासोमहाश्वा  
 सश्छिन्नश्वासश्चपञ्चमः २३ कथिताःपञ्चहिकास्तुता  
 सुक्षुद्रात्तजातथा । गम्भीरायमलाचैवमहतीपञ्चमीत्  
 था २४ चत्वारोग्निविकाराःस्युर्विषमोवातसम्भवः।तीक्ष्णाः  
 पांचमकारकी क्षयीकहते हैं वातक्षय, पित्तक्षय, कफक्षय, सन्निपातक्षय, उरःक्षय  
 इनका चरकके मतसे निदान कहताहूं भुजा कौलें जलना, हाथ पावें जलना, ज्वर,  
 घ्यथा, कंठस्वर विपरीत, हाथ पावें पिराना, खांसी ये वातप्रक्षयके लक्षणहैं दाह  
 होना, ज्वररहना, अतीसार, रक्तसहित मल गिरना यह पित्तक्षय के लक्षण हैं  
 फोष्टमं पीडाशोः, कफगिरै, ज्वर होइ, खांसी यह कफक्षयके लक्षण हैं ज्वर रहै,  
 खांसीरहै, अन्तर्दाहहोइ यह सन्निपातक्षय के लक्षण हैं कण्ठ घरघराना, ज्वर  
 होना, खांसी आना, अग्निमन्द, दुर्गन्धि सहित कफकी गांठिगिरै यह उरःक्षय  
 के लक्षण हैं ॥ २१ ॥ शुष्करोग छःप्रकारका अतिमैथुनसे, शोचसे, क्षयसे, अति  
 चलने से, अतिपरिभ्रम से, अति बुढापे से जब रसादिक सात धातु शरीर को  
 सुखाती हैं ॥ २२ ॥ श्वास कहे ( दमा ) पांच प्रकारका है क्षयीरवास, तमक  
 श्वास, ऊर्ध्वश्वास, क्षिद्रश्वास, महाश्वास वायुकोप से ऊर्ध्वश्वास चरती है देह  
 में मंद पीरये क्षयश्वास साध्यलक्षण हैं कंठ घरघराना, पसुरी पीर, अतिदुःख  
 से कफ निकलै, दमरहै ये तमकश्वासके लक्षण हैं बहुत ऊंची श्वासगतींके लक्षे  
 ऊर्ध्वश्वास कहते हैं घरघराके जोरसे श्वासआवै बिडलहो खांसने की शक्ति न  
 रहे उसे महाश्वास कहतेहैं हृदयमें जाड़ा, मूर्च्छा, मलाप ( अतिपक ) श्वास दृ-  
 ना यह ऊर्ध्वश्वास असाध्यहै ॥ २३ ॥ हिकाकहे हिचकी पांच प्रकारकी है सुद्रा,  
 अन्नजा, गम्भीरा, यमला, महती जो बारवार वायु मद्देग से ऊर्ध्वगमनकरै उने  
 क्षुद्रहिका कहते हैं विशेष खाने पीनेसे अन्नजा हिका होती है भारी शब्दसे हिचकी  
 आवै उसे गम्भीरा कहतेहैं रहि रहिके आवै उसे यमला कहते हैं देह कांपिके निरं-  
 तर हिचकी आवै तिसको महाहिका कहतेहैं ॥ २४ ॥ जठराग्नि के चार प्रकारके  
 विकार हैं वातकोपसे हो उसे विषण कहतेहैं पि तसेहो उसे तीक्ष्ण कहतेहैं कफने  
 हो उसे मन्दाग्नि कहते हैं वातपित्तसे हो उसे भस्माग्नि कहते हैं ( अथलक्षण )

पित्तात्कफान्मन्दोभस्मकोवातपित्ततः २५ पञ्चेवारोचका  
 ज्ञेयावातपित्तकफैस्त्रिधा । सन्निपातान्मनस्तापाच्छर्द्वयः स  
 तधामताः २६ त्रिभिर्दोषैः पृथक्त्रिः कृमिभिः सन्निपाततः ।  
 घृणायाश्चतुर्थाणां गर्भाधानाञ्च जायते २७ स्वरभेदाः  
 षडेव स्युर्वातपित्तकफैस्त्रयः । मेदसात्सन्निपातेन क्षयात्पृष्ठः  
 प्रकीर्तितः २८ तृष्णाचषड्विधा प्रोक्ता वातात्पित्तात्कफाद्  
 पि । त्रिदोषैरुपसर्गेण क्षयाद्वातोश्च षष्टिका २९ मूर्च्छा च  
 तुर्विधा ज्ञेयावातपित्तकफैः पृथक् । चतुर्थी सन्निपातेन तथै  
 कश्च भ्रमः स्मृतः । निद्रा तन्द्रा च तन्व्यासो ग्लानिश्चैकैक  
 शः स्मृतः । क्षे० मदास्सप्तसमाख्याता वातपित्तकफैस्त्रयः ।

जो अन्न कमी पचे कमी न पचे यह विषमग्नि है व भोजनपर भोजनकरै उसे  
 तीक्ष्णग्नि कहते हे व थोडा भोजन करने से भी न पचे उसे मंदाग्नि कहते हैं  
 जो दारना भोजनकरै अन्नपचै और देहमें न लगै उसे भस्मग्नि कहते हैं ॥  
 २५ ॥ अरुचिके पाचभेदे वातसे, पित्तमे, कफसे, सन्निपातमे, संतापसे ( लक्षण )  
 दातलपेटे, मुँहफीका, हृदयपीडा यह वातरोचक है मुँहकडुवा, स्वादहीन ये पित्त  
 अरुचि है दुह फीका व चिटका यह कफ अरुचि है तीनों लक्षणों तो सन्निपात  
 अरुचि है मन सतापहो तिसमें जो दोष अधिकहो वही लक्षण जानो छर्दिकहे  
 वमन सो सातमकारका है ॥ २६ ॥ या छर्दि कहे धार २ उनांत वातछर्दि, पित्त  
 छर्दि, कफछर्दि, सन्निपातछर्दि, कृमिछर्दि व मृषाछर्दि तथा स्त्रीके गर्भधारण समय  
 सातवीं छर्दि होती है (अथ लक्षण) हृदय मस्तक पीडा मुसमुरी नाभि शूल  
 उबाकी पैनयुक्त उकार देह पीत ये वातछर्दि, उवकाई पीत हरित दाहयुक्त ये  
 पित्तछर्दि, कफ संयुक्त उवकाईहो तो कफछर्दि हो उवकाई खटी नीली लाल  
 दाहयुक्त हो तो सन्निपातछर्दि, जो निरंतर जीमिचलाय विशेष धूँकै तो कृमिछर्दि जो  
 कुडने उवाकै कुड धंभिरहै तो मृषाछर्दि कहै अन्य ग्रंथकारका मत है कि स्त्रीकी  
 जैनी पित्त मृहतिहो उत्तनी छर्दिहो ॥ २७ ॥ स्वरभेद छः प्रकारका है वातस्वर  
 पित्तस्वर कफस्वर गतेम विशेष भेदसे सन्निपात व घातुत्तयसे ॥ २८ ॥ मृषा छः  
 प्रकारकी है वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज धावलने से, घातुत्तयसे ॥ २९ ॥  
 मूर्च्छा चार प्रकारकी है वातमूर्च्छा पित्तमूर्च्छा कफमूर्च्छा सन्निपातमूर्च्छा (तल-

त्रिदोषैरसृजोमद्याद्विषांदापिचसप्तमः ३० मदात्ययश्च  
तुर्धास्याद्वातात्पित्तात्कफादपि । त्रिदोषैरपिविज्ञेयएकः  
परमदस्तथा ३१ पानाजीर्णतथैकैकतथैकःपानविभ्रमः ।  
पानात्ययस्तथाचैकोदाहांस्सप्तमतास्तथा ३२ रक्तपित्ता  
त्तथारक्तात्तृष्णायाःपित्ततस्तथा । धातुक्षयान्मर्मघाता  
द्रक्कपूर्णोदरादपि ३३ उन्मादाःपट्समाख्यातास्त्रिभिर्दो  
षैश्चायश्चते । सन्निपाताद्विषाज्ज्ञेयः पष्ठोदुःखेनचेतसः  
३४ भूतोन्मादाविंशतिःस्युस्तेदेवादानवादपि । गन्धर्वा  
त्किञ्चराद्यक्षात्पितृभ्योगुरुशापतः ३५ प्रेताच्चगुह्यकाद्वृ  
क्षर्ण ) संज्ञा कहे चेष्टाकी वहानेगली जो नाड़ी सो वातादिक से रुधिरको  
अरुस्मात् तमोगुणको भास्यो तमोगुण कहे दुःख सुखका तिरस्कार करनेवाला  
काष्ठवत् भूमिपर गिरादेताहै उसे मूर्च्छा कहतेहैं और भ्रम एक प्रकारका ( तिसका  
लक्षण ) संदेह सहित घुमेर आना निद्रा एक प्रकारकी है तन्द्रा एक प्रकारकी है  
( लक्षण ) कुञ्ज जगै कुञ्ज सोवै संन्यास एक प्रकार का ( लक्षण ) हाथ पाँव  
चलै नहीं मृतक समान पढ़ारहै उसे संन्यास कहतेहैं संन्यासरोगमें बहुत जल्दी  
प्रथन करै तो मनुष्य तुरत मरजाइ इससे हाथ पाँवकी कलाई में सूचीबिंद रुधिर  
निकालै मस्तकमें फस्तदे रुधिर निकालै तो जियै ग्लानि एक प्रकारकी है ( ले० )  
मदरोग सात प्रकारका है वातमद, पित्तमद, कफमद, सन्निपातमद, रक्तके कोपसे  
अधिक मद्य सेवनेसे, त्रियसानेसे, कधी सुपारी खानेसे, जोदवरयानेसे, धनूराखाने  
से जैसे मद होताहै ऐसाही वातादिक कुण्ठितहो मनको विभ्रम करते हैं उसे मडकहते  
हैं ॥ ३० ॥ मदात्ययरोग कहतेहैं अतिमद से चार विधिके रोगहैं पानमे, पिचसे,  
कफसे, त्रिदोषसे एक परममद कहतेहैं मनुष्यकी बुद्धिअंशहो अनेक भ्रान्ति सिद्ध  
करै प्राण विकलरहै उसे मदात्यय कहते हैं ॥ ३१ ॥ पानाजीर्ण एक प्रकार एक  
पानविभ्रम एक प्रकार पानात्यय दाह सातप्रकारका है ॥ ३२ ॥ रक्तपित्ते, व्याससे,  
पित्तसे, धातुक्षयसे, मर्मगतसे, माररानेसे, दृढयमें रुधिर संचिन्न होनेसे ॥ ३३ ॥  
उन्माद रोग, दुःखः भ्रमरक्ता है वातोन्माद, दिचोन्माद, वफोन्माद, विपसेवन से,  
शोकसे ( लक्षण ) नर वातादि दोष अतिके स्वर्ग ओदि माहीनार्गमें जाके चित्त  
की भ्रमकरै उसे उन्माद कहतेहैं तब ईसै रोवै नाचै कालाहोनाइ अजीर्ण वल्ल  
त्याग बुद्धिसृति मांस भोजनमें अरुचि ॥ ३४ ॥ भूतोन्मादरोग बीसतरहके हैं

द्वात्सिद्धाद्भूतात्पिशाचतः । जलाधिदेवतायाश्चनागाच्च  
 ह्यराक्षसात्पराक्षसादपिकूष्माण्डात्कृत्यवैतालयोरपि ३६  
 अपस्मारश्चतुर्धास्यात्समीरात्पित्ततस्तथा । श्लेष्मणोपि  
 तृतीयः स्याच्चतुर्थः सन्निपाततः ३७ चत्वारश्चामवाताः  
 स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा । चतुर्थः सन्निपातेन शूलान्यष्टौ  
 धाजगुः ३८ पृथग्दोषैस्त्रिधाहन्द्भेदेन त्रिविधान्यपि ।

देवसे, दानव से, गंधर्व से, किन्नर से, यक्षसे, पितर से, गुह्यरापसे ॥ ३५ ॥ भैत  
 से, गुह्यक से, वृद्ध और सिद्ध शापसे, भूतसे, पिशाच से, जलदेवता से, सर्पसे,  
 ब्रह्मराक्षस से, राक्षस से, कूष्माण्ड से, कर्चप्य से ( लक्षण ) संतुष्ट, विभ्रता,  
 सुगंध माला धारण, संस्कृत भाषा ये देवोन्माद-प्राणण, गुरु, देवताकी निंदा,  
 निर्भय ये गंधर्वोन्माद-किन्नर, गंधर्व, आपको जानै, लाल औरि, मलिन, रक्त  
 बल्लमिष, दंभ, पितृक्रियारहित, मांस, तिल, गुह्यपर विशेष इच्छा करै ये पितृ  
 उन्माद गुह्यराप से गुह्यरापोन्माद वृद्ध सिद्ध गुरुवत् मृत प्रेत गुह्यक बुद्धि अनुमान  
 से जानो उर्ध्वे प्राय होय बद्धबद्धाय अमंगल भाषे दुर्गंधयुक्त रहै तो पिशाचो-  
 न्मादी जानो जलधि, देवता, श्मशान देववत् जो श्रोत्र भोजनमें गांधीभस्मे  
 चाटे तो सर्पोन्माद है देव, गुरु, वेद, शास्त्र व द्राघण्य को निंदै तो ब्रह्मराक्षसो-  
 न्माद जानो मद मांस विषयातुर निर्लज्जा यह राक्षसोन्माद है अरु अनुमान  
 से जानना ॥ ३६ ॥ अपस्मार कहे ( मृगी ) के चार भेदहैं वातज, पित्तज, कफज,  
 त्रिदोषज ( लक्षण ) तनकंप, दांतफड़कड़ाना, श्वासपरचराना यह वातापस्मार  
 है जो मुखसे फेज पीला उगलै तो पिशापस्मारहै हाथ पांच परधराना देह सफेद  
 और ठंडीहो तो कफापस्मार है तीनों दोषलक्षण मिलै, तो सन्निपातापस्मारहै  
 असाध्य जानना ॥ ३७ ॥ आमवात चार प्रकार का है वातज, पित्तज, कफज,  
 त्रिदोषज वातादि दोष कोष करके जठराग्नि को मंदकरै तो भोजन अपकरै  
 सो आंत्र होजाय तिससे देहमें पीर उन्नर अरुचि गात्र अकट्टै मृत सामान्य लक्षण  
 हैं जिस में देह पीड़ा विशेष हो तो वातज है दाहहो तो पित्तसे पित्तज कफसे  
 आमवात है देह अकट्ट जाय म्लजली हो तो कफ आमवातहै तीनों लक्षणहों  
 तो सन्निपातामवात है शूलके आठ भेदहैं ॥ ३८ ॥ वातसे, पित्तसे, कफसे, वात  
 पित्तसे, पित्तकफसे, कफवात से, आंबसे, सन्निपातसे इसका मुख्य कारण वायुहै  
 तो मृत्ती स्त्री द्रव्य से इनसे कूपितहोय हृदय पसुरी संभिनमें पौंडे शूल उपजाती

आमेनसप्तमं प्रोक्तं सन्निपातेन चाष्टमम् ३९ परिणामभवं  
 शूलमष्टधापरिकीर्तितम् । मूर्त्तैर्यैः शूलसङ्ख्यास्यात्तैरेवंप  
 रिणामजम् । अन्नद्रवभवं शूलं जरत्पित्तभवन्तथा ४० एकैकङ्ग  
 णितं सुज्ञैरुदावर्तास्त्रयोदश । एकः क्षुन्निग्रहात्प्रोक्तस्तृष्णा  
 रोधाद्वितीयकः ४१ निद्राघातात्तृतीयः स्याच्चतुर्थः श्वास  
 निग्रहात् । मूत्ररोधात्पञ्चमः स्यात्षष्ठः क्षवधुनिग्रहात् ४२  
 जुम्भारोधात्सप्तमः स्यादुद्गारग्रहतोष्टमः । नवमः स्यादश्रु  
 रोधाद्दशमः शुक्रधारणात् ४३ मूत्ररोधान्मलस्यापिरोधा

द्वातविनिग्रहात् । उदावर्ताख्यश्चैते घोरोपद्रवकारकाः ४४  
 आनाहोद्विविधोज्ञेयस्कः पक्वाशयोद्भवः । आमाशयोद्भ  
 वश्चान्यः प्रत्यानाहस्सकथ्यते ४५ उरोग्रहस्तथाचैको  
 हृद्गोगाः पञ्चकीर्त्तितः । वातादयस्तयः प्रोक्ताश्चतुर्थः स  
 न्निपाततः ४६ पञ्चमः कृमिसञ्जातस्तथाष्टावुदराणि च ।  
 वातात्पित्तात् कफात्स्त्रीणि त्रिदोषेभ्योजलादपि । छिद्भिः क्षता  
 द्वद्गुदादष्टमं परिकीर्त्तितम् ४७ गुल्मास्त्वष्टौ समा  
 निरोध से टकार विशेष मरोर शोना पेटफूटना १२ वायुनिरोध से नानाप्रकार  
 के उदर रोग १३ ॥ ४४ ॥ आनाह रोग दो तरह का होता है एक जो पक्वाशय  
 का होके पेटफुनाता है उसे आनाह कहते हैं एक आमाशय से होता है उसे मत्या-  
 नाह कहने है ( तस्यलक्षणम् ) कटिमें पीटा, मलस्तंभ, आलस्य, पेट फूटना ये  
 आनाहके लक्षण हैं आमाशय में शूल, मुत्र से रार, टकार यह मत्यानाह है ॥  
 ४५ ॥ उरोग्रह एवप्रकारका है रक्त, मास, शीरा और यकृत इन सवों के बढने से  
 उरोग्रह होता है हृद्गो पाचप्रकारके हैं वातज, पित्तज, कफज, सक्षिरातज, कृ-  
 मिज ५ हृद्गमें मुर्सी चुभना, हृदयसे दुःखना, दुल्हाईसे फारना, आरीसे चीरना  
 ऐसा दर्दहो तो वातज है हृदय में श्लानि, मूर्च्छा, घुआसी, टकार ये पित्तज हैं देह  
 भारी, खासी, अरुचि ये कफज हैं जो तीनों दोषने लक्षणहों तो हृदय में विशेष  
 पीडाहो तो त्रिदोषज है ॥ ४६ ॥ उरुकाई, शूल, मुत्रमें तार, धुकधुकी ये कृमिज  
 लक्षण हैं उदररोग आठ भातिके हैं वातोदर, पिचोदर, कफोदर, त्रिदोषोदर, जलो-  
 दर, प्लीहोदर, जतोदर, पद्मगुदोदर ( अस्पलक्षणम् ) हाय, पाच, नाभि ॥ कोखमें  
 शोथ संधिपीडा, पेटशूल, पेट गुडगुहाना ये वातोदर हैं ज्वर, मूर्च्छा, दाह, लुजली,  
 अतीसार, शरीर पीत वा ताप ये पिचोदर हैं शरीर शान्ति, निद्रा, देहगुण, खासी  
 अरुचि, रवास यह कफोदरहें विषेत्तन्व, दुर्बुद्धि, मल, केश, मूत्र, मल खी लोभ  
 श्यदेतु पुरुषको खिलाटेती तिससे नपरोप कुपित होता है मूर्च्छा, मोठ, पाहुवर्ण  
 शरीर दुर्बल, तृपानुर यह त्रिदोष है पेट चिचना, फली नईं दर्सै, प्यास अधिक,  
 देहहृश यह जलोदर है पेटगडा, वीर्य नृश, मंज्वर, पेट पत्थर सदृश पाहुवर्ण ये  
 प्लीहोदर हैं पेट और नाभिके मध्यमें पीडा, अतिदेहहृश, मज पीवता पानीसा मिला  
 गिरै वा रार दिशमजाय यह जतोदर है जो मल मूलाहुत्रा अतिकष्टे थोडा थोडा  
 कालकै गिरै यह पद्मगुदोदर लक्षण है ॥ ४७ ॥ गुल्म आठ प्रकारका है चात

ख्यातावातपित्तकफैस्त्रयः । ह्रन्द्भेदात्त्रयः प्रोक्ताः सप्तमः  
 सन्निपाततः ४८ रक्तादृष्टमकः ख्यातो मूत्रघातास्त्रयोदश ।  
 वातकुण्डलिकापूर्ववाताष्ठीलाततः परम् ४९ वातवस्ति  
 स्तृतीयः स्यान्मूत्रातीतश्चतुर्थकः । पञ्चमम् मूत्रजठरं षष्ठो  
 मूत्रक्षयः स्मृतः ५० मूत्रोत्सर्गः सप्तमस्यान्मूत्रग्रन्थिस्त  
 थाष्टमः । मूत्रशुक्रञ्चनवमं विड्घातो दशमः स्मृतः ५१ मू  
 त्रासादश्चोष्णवातो वस्तिकुण्डलिका तथा । त्रयोप्येते मू  
 त्रघाताः पृथग्घोराः प्रकीर्तिताः ५२ मूत्रकृच्छ्राणि चाष्टौ  
 रघुर्वातात्पित्तात्कफात्त्रिधा ५३ रास्त्रिपाताच्चतुर्थः स्यान्मू

गुल्म, पित्तगुल्म, कफगुल्म, वातपित्तगुल्म, कफवातगुल्म, त्रिदोषगुल्म, रक्तगुल्म,  
 वातादि कोष करि पेट में गाढि सा गुल्म याच तरहके उत्पन्न करता है दो दोनों  
 पार्श्व में एक नाभियें एक हृदय में एक, पेड़में होता है वभी चलकें और ठौर पीड़ा  
 करै कभी कभी कहीं अटकै पीडाकरै मूत्रगत तेरह प्रकार का होता है वातकुण्डलि-  
 का, वाताष्ठीला ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ वातवस्ति, मूत्रातीत, मूत्रजठर, मूत्रक्षय ॥ ५० ॥  
 मूत्रोत्सर्ग, मूत्रग्रन्थि, मूत्रशुक्र, विड्घात ॥ ५१ ॥ मूत्रासाद, उष्णवात, वस्तिकुण्ड-  
 लिका इस में से तीन मूत्रगत, उष्णवात, वस्तिकुण्डलिका ये प्राणसकट उपद्रव  
 करतेहैं ( लक्षणं ) चिनगडोकें थोडा ० मूत्रसाव हो तो वातकुण्डलिका है अति  
 पीडाहो मलमूत्र रुन्द रहै तो वाताष्ठीला जानो पेड़, कण्ठमें प्रतिक पीडाहो और  
 मल मूत्र रुन्द रहै तो वातवस्तिहै जो मूत्र शका धनी रहै उत्तरै नहीं तो मूत्रातीत  
 है पेड़ फूलै पीडाकरै मूत्र न द्रवै तो मूत्रजठरहै शूलदाह हो मूत्र न गिरे तो मूत्रक्षय  
 है चिनगडो काखनेसे रक्त समें थोडा २ मूत्रद्रवहो नौ मूत्रोत्सर्ग है मूत्राशयके ऊँह  
 पर गाढिपर पीडाकरै तो मूत्रग्रन्थिहै जो मूत्रत्यागके आदि वा अन्त मूत्र रालधोवन  
 सागिरै तो मूत्रशुक्र जानो मूत्रमें मलकी गंधहो तो विड्घात जानो जो दाइयुक्त  
 गोरोचन शंखचूर्ण के रंग मूत्रहोके सूखनेपर जित दोषवी रगत होजाय तो उसी  
 दोषको मूत्रसाद जानो जो मूत्र पीलाया शुद्धया रक्त या सारकष्टसे थोडा गिरै तो  
 उष्ण वात जानो जो मूत्रकी बेली के मुखपर सूजनहो, धीरे धीला या लालमूत्र  
 गिरै ये वस्तिकुण्डलिका के लक्षणह ॥ ५२ ॥ मूत्रकृच्छ्रे अठभेद हे सप्तमूत्रकृच्छ्र  
 पित्तकृच्छ्र कफकृच्छ्र ॥ ५३ ॥ सनिहृन्द्भुजहृन्द्भुजविड्घातश्च अन्तरीकृच्छ्र ये आठ

त्रकृच्छ्रश्चपञ्चमम् । विट्कृच्छ्रं षष्ठमाख्यातं घातकृच्छ्रं च  
 सप्तमम् ५४ अष्टमं चाश्मरीकृच्छ्रं चतुर्धा चाश्मरीमता ।  
 चातात्पित्तात्कफाच्छुक्रात्तथामेहाश्चविंशतिः ५५ इ  
 क्षुमेहस्सुरामेहः पिष्टमेहश्चसान्द्रकः ५६ शुक्रमेहोदका  
 ख्यौचलालमेहश्चशीतकः । सिकताख्यः शनिर्मेहोदशैते  
 कफसम्भवाः ५७ मञ्जिष्ठाख्यो हरिद्राख्यो नीलमेहश्चर  
 क्तकः । कृष्णमेहः क्षारमेहः षडेते पित्तसम्भवाः ॥ इस्तिमे  
 होवसामेहो मज्जामेहो मधुप्रभः । चत्वारो घातजामेहा इ  
 तिमेहाश्चविंशतिः ५८ सोमरोगस्तथाचैकः प्रमेहपिट

है (अथैषां लक्षणम्) पेड़ नाभि पीड़ा अधिक कांसरंधांदा २ मूत्रहो तो वातकृच्छ्र  
 है दाह चिनगहो लाल मूत्र द्रव्यं तो पित्तकृच्छ्र है पेड़ भारी मूत्रस्वेद चिकना हो तो  
 कफकृच्छ्र है तीनों के लक्षण हैं तो सन्निपातकृच्छ्र है सो असाध्य जानो मूत्र  
 धानु मिश्रित क्रेशसे उतरै तो शुक्रकृच्छ्र है जो कांसने से मूत्रद्रव्यं तो विट्कृच्छ्र  
 है घान्की तरह अंत निरचय हो और दरदरापके मूत्रद्रावकै मूत्रद्रावहोय तो घान-  
 कृच्छ्र है पेड़ या डंडीमें पीड़ा और गूलहो तो अश्मरी कहिये ॥ ५४ ॥ अश्मरी कहे  
 पथरीके चारभेद हैं घातश्मरी, पित्तश्मरी, कफश्मरी शुक्रश्मरी (अथास्थाल-  
 क्षणम्) घात पित्त कोपकरि मूत्रकी थंली के मुँहपर रसको सुखाय पथरीसी स्थिर  
 करते हैं वही पथरी है पेड़ और डंडीको फाड़ने लगती है मूत्र नहीं उतरता जब  
 कांसने से पथरी कुछ हटती है तब दश बीस बूँद मूत्रगिरता है तो घातपथरी है जो  
 उष्णमलसा या गले दाड़के कनके से या काली पथरीहो तो पित्तश्मरी है पेड़  
 भारी मूत्र स्वेत ठंडा कष्टसे हो तो कफश्मरी जानौ जब धानु मूलके पथरी परती  
 है तब पेड़में पीर अंडकोश में सूजन ये शुक्रश्मरी के लक्षण हैं प्रमेहरोग बीस  
 प्रकारका है ॥ ५५ ॥ इन्नुमेह, सुरामेह, पिष्टमेह, सांद्रमेह ॥ ५६ ॥ वा शुक्रमेह,  
 उदकमेह, लालमेह, सिकतामेह, शनिमेह ये दश भेद कफसंभर हैं ॥ ५७ ॥  
 मंजिष्ठांमेह हरिद्रा० नील० रक्त० कृष्ण० क्षारमेह ये छः पित्तसंभर हैं इस्तिमेह,  
 वसामेह, मज्जामेह, मधुमेह ये चारि घातसंभर हैं सब मिलि के बीस प्रकार के  
 हैं (अथास्थालक्षणम्) जो मूत्रमार्ग से ऊसरससा शुक्रगिरि तो इन्नुमेह जानौ  
 जिसमें मद गेय आवै वह सुरामेह जानौ पीठीसा गिरे तो पिष्टमेह जानौ जो



कादशः । शराधिकाकच्छपिका पुत्रिणीविनतालजी ५६  
 मसूरिकासर्षपिकाजालिनीचविदारिका । विद्रधिश्चदशै  
 ताःस्युःपिटकामेहसम्भवाः ६० मेदोदोषस्तथाचैकः शो  
 थरोगानवस्मृताः । दोषैःपृथग्द्रवैस्सर्वैरभिघाताद्विषाद

पि ६१ वृद्धयस्सप्तगद्विताचातात्पित्तात्कफेनच । रक्तेन  
 मेदसासूत्रादन्त्रवृद्धिश्चसप्तमः ६२ अण्डवृद्धिस्तथाचै  
 कात्तथैकागण्डमालिका । गण्डापचीतिचैकास्याद्ग्रंथ  
 हो, अन्त्रिश्चानिमन्त्र रंतिमें विराय ये कफशोथ हैं दातपित्त लक्षण होय तो वात  
 पित्त पित्तकफ लक्षण हो तो पित्त कफ जो कफवातलक्षण हो तो कफवातशोथ  
 जो त्रिदोष लक्षण हो तो सन्निगत शोथ किसीभाति क्षतलगे सूजनहो तो  
 अभिगत शोथ जानौ विषधर जीनके दांत, डंक, पूंड्र, पंजा, नख व दंष्ट्रा से  
 जतहो सूझै तो विषयोय जानौ ॥ ६१ ॥ अंडवृद्धि वृषणफूलना उसे वृद्धकहते  
 हैं तिसके सात भेद है वातवृद्ध, पित्तवृद्ध, कफवृद्ध, रक्तवृद्ध, मूत्रवृद्ध, आंतवृद्ध ये  
 सातप्रकार है (अस्थानक्षणम्) जब वायु अंडकोशमें भरिकै पीड़ा उताप  
 करतीहै और रुवाई छायालेवी है तो वातवृद्धि जो पके गूलरके रंग दाहयुक्त  
 पके फोड़े की नाई उष्ण हो तो पित्तवृद्ध जानौ ठरबा भारी पिरुना कठोर  
 गुनजलाय दुष्ण पीडाहो तो कफ अंडवृद्धि जानौ जो कालेरंगकी फुडिया सहित  
 पित्त लक्षण हों तो रक्तांडवृद्ध जानौ जो तालफल मे नीलगोल हों तो मेदवृद्ध  
 है और एक मन्योक्त अंडवृद्ध को मांसवृद्ध कहते हैं उसका निदान यह है कि  
 मूत्ररोगके रोके से दोनों ओरकी गोली फूलजाती है जब सूज रुजजाता है  
 तब धीरे २ दोनों कौड़ीन में दलाइ २ पचता फिर शायुकोप से उतरिकै पीड़ा  
 करताहै फूलताहै उसे मूत्रवृद्धि कहते हैं जो वायुके कोपसे नस अंडकोश में  
 लटक आती है जब वह नस फिर शायुकोप पाइके फूलती है उसमें आंत उतर  
 आती है उसे अंत्रवृद्धि कहते हैं वह दवाने से फिर ऊपर चरिजाती है ॥ ६२ ॥  
 अंडवृद्धि कहे गलांड गलेकी सन्निभ में अंडेसी गांठें फूलके वाडी होरहें पीड़ा  
 से अंडवृद्ध एक प्रकारके हैं गंदमा नू एकही प्रकारकी है गले में माला की नाई  
 फोड़े होके पके फूटें उसे गण्डमाला कहे है गण्डगंड एक प्रकार का है जिसे  
 घेरा कहते हैं अपची एक प्रकारकी है गण्डमाला की नाई गांठें पके फूटें वहे  
 एक अन्ध्रा होने न पावै दूसरा और हो उसे अपची कहते हैं और चरक में  
 गलेके द्वासी तरह के रोग और कहे हैं ग्रन्थि कहे गांठिकी तरह नरभांति की  
 होती है जिसे बनोरी कहते हैं वातग्रन्थि, पित्तग्रन्थि, रक्तग्रन्थि, शिरग्रन्थि, मूत्रग्रन्थि,  
 अस्थिग्रन्थि, मांसग्रन्थि ये नव प्रकार के अंधिरोग हैं (अथास्थ्य लक्षणम्) जो  
 गांठि ज्वा के आकार हो चित्तकि चित्तकि उठे छूने से कठोर विराय और  
 मरन हो सरल के आकार हो रक्त वहे तो दातग्रन्थि जानौ जो ग्रन्थि दाह

योनवधामताः ६३ त्रिभिर्दोषैस्त्रयो रक्ताच्छिराभिर्मेदसोव्र  
णात् । अस्थनामासेननवमः पङ्क्तिधंस्या तथावृद्धम् ६४ वा  
तात्पित्तात्कफाद्रक्तान्मांसादपिचमेदसः । श्लीपदं च त्रि  
धा प्रोक्तं वातात्पित्तात्कफादपि ६५ विद्रधिपङ्क्तिधः स्या  
तो वातपित्तकफैस्त्रयः । रक्तात्क्षतात्त्रिदोषैश्च त्रयाः पञ्चद

करे फफोलेकीनाई भङ्गाय और पकै नहीं कालातह रहै तौ पित्तग्रथिजानै जो  
गाठि डंडीहो कुद्ध पीडाकरै खुजली होय कठोर रहत होय दिन में वदै पकेसे पीरयेइ  
तौ कफग्रथिजानौ जिसमें पित्तग्रथि के लक्षणहों रक्त्तवर्ण दिशेपदोय रक्तग्रन्थिजानौ  
वृटियासीहो-तो शिराजग्रन्थि जानौ दानने ले इवर उवर धीरे उंचीहो और मर्म  
स्थानमें हो तौ असाध्य वेदग्रन्थिजानौ जो हाड वदके हाडमें सट आय और ग्रन्थि  
निकलआरै व पत्तरसी पीडाहो तौ हाडग्रथिजानौ सो भी प्रसाध्य है जो गड  
का तो अच्छी हो जो मास से होती है उसे मासग्रथि कहते है जो घात्रपरिवै ऊपर  
मासवदिके गाठिउभरै उसे प्रणग्रन्थि कहते हैं वरै मासवृद्ध कहते है ॥ ६२ ॥ प्रभुट  
रोग बभ्रकारकाहै वातार्धुट, पित्तार्धुट, कफार्धुट, मासार्धुट, वेदार्धुट, रक्तार्धुट जो  
प्रथमग्रथिके लक्षण लिखआये हैं वैसेही हैं रक्तार्धुट और मासार्धुट ये कठिन हैं इन  
के लक्षण भिन्न २ कहताहू जो मास पिंडसाहो लालरगपत्फूटके अतिदुःखदेताहै  
उसे रक्तार्धुट कहते हैं मास दुष्टहोके मास पीतुआर रादकी नाईहो अचकना लाल  
अतिकठिनता से पकै फूटके हमेशह वहाकरै जन्दी अच्छा न हो जो मर्मस्थानमें हो  
तौ असाध्यहै और जगह साध्यहै यह मासार्धुटहै ॥ ६४ ॥ श्लीपद कहे फीलपात्र  
सो तीनि भातिके ई वातसे पित्तसे कफसे ( अस्य लक्षणम् ) जात्र के जोडनी  
सन्धिमें प्रथम छोटी गिलटी उभरके पीडा करती है फिर कुछ दिना में सब जोड  
की नसे तनजाती हैं चलनेसे समझ पडताहै फिर धीरे धीरे रुधिर सहित पीडा  
उतरिके पैरसे गाठितफूलता है उसे फीलपात्र कहते हैं और हाथमें तथा थंग में  
भी होताहै तराईकी भूमिमें अधिक होताहै वातजमें पीडा पित्तज में दाह कफजम  
चिकनी शोथ मद धीर ॥ ६५ ॥ विद्रधी बभ्रकारकी है वातज, पित्तज, कफज,  
रक्तज, क्षतज, त्रिदोषज ये बः विद्रधा है ( अथास्य लक्षणम् ) जो लाल वा  
पीली व नुकीली अतिपिटका युक्तहो तौ वातविद्रधी है वा दाहयुक्त लालहो  
तौ पित्तविद्रधी जो दीपकसी पाहुवर्ण पकै काली परजाय तौ कफविद्रधी रक्त  
विद्रधी के पित्तमम लक्षणहैं जो किसी भाति जाव संजयीहो तौ पित्तविद्रधी है

शोदिताः ६६ तेषांचतुर्द्धामेदस्स्यादागन्तुर्देहजस्तथा ।  
 शुद्धोदुष्टश्चविज्ञेयस्तत्सङ्ख्याकथ्यतेपृथक् । वातत्रणः  
 पित्तजश्चकफजोरक्तजोत्रणः ६७ वातपित्तभवश्चान्योवा  
 तश्लेष्मभवस्तथा । तथापित्तकफाभ्यांचसन्निपातेनचाष्ट  
 मः । नवमोवातरक्तेनदशमोरक्तपित्ततः ६८ श्लेष्मरक्त  
 भवश्चान्योवातपित्तासृगुद्भवः । वातश्लेष्मासृगुत्पन्नःपि  
 त्तश्लेष्मास्रसम्भवः । सन्निपातासृगुद्भूतइतिपञ्चदशत्र  
 णाः ६९ सद्योत्रणस्त्वष्ट्यास्यादवकलसविलम्बिनौ । छिन्न  
 भिन्नप्रचलिताघृष्टविद्धनिपातितः ७० कोष्ठमेदोद्विधाप्रो  
 क्तश्छिन्नान्त्रोनिःसृतान्त्रिकः । अस्थिभङ्गोष्ट्याप्रोक्तोभग्न

जिसमें टाढ़, प्वर, खुजली और विविध उपद्रवहों ती त्रिदोषविद्रथी जानौ घृण  
 कहे पिठका फोडा सो पंद्रह प्रकारके हैं ॥ ६६ ॥ तिनमें भी चारभेदहैं आगंतुक,  
 देहज, शुद्ध, दुष्ट तिसकी संख्या वातज, पित्तज, कफज, रक्तज ॥ ६७ ॥ वातज  
 पित्तज, वातकफज, पित्तकफज, सन्निपातज, वातरक्तज, रक्तपित्तज ॥ ६८ ॥ कफ  
 रक्तज, वातपित्तकफज, वातकफरक्तज, पित्तकफरक्तज, सन्निपातरक्तज ( अथास्य  
 लक्षणम् ) जो चोट चपेट लगने से पकै फूटे उसे आगंतुक घृण कहते हैं वाता  
 दिकके कोपसे हो उसे देहज कहते हैं जो जीभके रंगहो छोटा या बड़ा चिकना  
 पीड़ा न करै न पकै फूटे न कड़ाहो वह शुद्धवृणहै जो दुर्गंध युक्त हमेशाह ऊपर  
 कठोर भीतर पुलपुला उसे दुष्टवृण कहते हैं ॥ ६९ ॥ सद्योत्रण कहे आगंतुकघृण  
 सो आठ प्रकारकाहै अवकलस, विलंबिन, छिन्न, भिन्न, प्रचलित, घृष्ट, विद्ध, निपातित  
 ( अथास्य सामान्यलक्षणम् ) नानामकारके जो अस्त्रहैं तिनकी धारसे कटे  
 या मुद्गरादिकी चोटसे पावहो या जुटहल रक्त जमके पकै फूटे उसे आगंतुकघृण  
 करते हैं ॥ ७० ॥ कोष्ठमेद कहे उदरक्षत लगना दो भांतिका है एक छिन्नांत्रक  
 दूसरा निःशृतांत्रकपेटमें द्रव लगने से यांत कटिवो वाहज निकरै सो छिन्नांत्रक  
 है और जो बाहर निकरिपरै वा बिना दूटे बाहर निकरै तिसे निःशृतांत्रक कहते  
 हैं अस्थिमंग कहे हाड टूटना सो आठ भांतिका है भग्नपृष्ठ, विदारित, विचर्तित,  
 चिरिलष्ट, तिर्थेः, अयोगत, ऊर्ध्वगत, संधिमंग ( अथास्य लक्षणम् ) जो  
 हाड से हाड रगड़ खाए संधि पर सूजनहो पीड़ा करै तो भग्नपृष्ठ है जो संधि

पृष्ठविदारिते । विवर्तिश्चविश्लिष्टश्चतिर्यक्क्षिप्तस्त्व  
 धोगतः । ऊर्ध्वगसन्धिभङ्गश्चवह्निदग्धश्चतुर्विधः ७१ लु  
 प्तोतिदग्धोदुर्दग्धःसम्यग्दग्धःप्रकीर्तितः ७२ नाड्यःप  
 ञ्चसमाख्यातावातपित्तकफोस्त्रिधा । त्रिदोषैरपिशल्येनत  
 थाष्टौस्युर्भगन्दराः ७३ शतपोनरतुपवनाद्दुष्टूग्रीवश्चपि  
 त्ततः । परिस्त्रावीकफाग्नेयऋजुर्वातकफोद्भवः ७४ परि  
 क्षेपीमरुत्पित्तादशोऽजःकफपित्ततः । आगन्तुजातश्चोन्मा  
 र्गीशङ्खावर्त्तस्त्रिदोषतः ७५ मेढ्रेपञ्चोपदंशास्स्युर्वातपित्त  
 चर्म फटिके हाड निकरै तो विदारित हे जो हाड बैठने में यथा स्थान न बैठे  
 ऊपर नीचे होजाय उसे विवर्तित कहते हैं जो हाड हटनेसे सन्धि धीली पै सूजन  
 परिके पीड़ाकरै तौ विश्लिष्ट जानौ हाड सरकना कहे हाडकी ठौर पलट जाना  
 उसे तिर्यक् कहते हैं जो हाड अपने ठौरसे नीचेको सरक जाय तौ अधोगत कहि-  
 ये जो ऊपर को सरकै तो ऊर्ध्वगत कहते हैं जो हाड टूटजाय उसे संधिभंग क-  
 हते हैं ॥ ७१ ॥ अतिदग्ध चार प्रकार का है पुष्ट, अतिदग्ध, दुर्दग्ध, सम्यग्दग्ध  
 ४ ( अस्यलक्षणम् ) जो अग्नि स्पर्श से त्वचा का रंग पलट जाय उसे  
 पुष्ट कहते हैं जो चर्मजरिके मांस, नस व हाड टेरिपरै तो अतिदग्ध है जो  
 देह जरि ताल उलट जाय दाह युक्त पीडाकरै तो दुर्दग्ध है जो सब देह  
 जरि लुथाठ समान होजाइ उसे सम्यग्दग्ध कहते हैं ॥ ७२ ॥ नाडीत्रय, पांच  
 प्रकारका है वातनाडी, पित्तनाडी, कफनाडी, त्रिदोषनाडी, सन्निपातनाडी,  
 ( अधास्य लक्षणम् ) हातसंघर्षी सूजन पफी वा कधी को धीरे और  
 शुद्ध न होइ वा हातके अंततक याती न जाइ तौ बहुत पीडा करै और, बिल  
 समान चमड़ेपर टीसै और भीतर नाडी कहे पुंगली सा सीया या टेढ़ा हा  
 लंका हो और पीर देतारहै उसे नाडीत्रय नासूर कहते हैं शल्य एक प्रकार का है  
 शल्य कटे शाल जो कील कांटा कांच चुभिके रहिजाय तौ यांस पकाता मडार है  
 उसे शल्य नाडीत्रय कहते हैं ॥ ७३ ॥ भगंदर आठ प्रकारका है हाडु ने शल्येन  
 पित्तसे उष्ट्रग्रीव कफसे परिस्त्रावी वातकफ से अशु ॥ ७४ ॥ त्रिदोषे से परि-  
 क्षेपी कफपित्त से अशोत्र आगंतु से उन्मार्गी त्रिदोषमे शंखान्द्रे ( अशान्द्रे-  
 क्षणम् ) गुदाके चारोंओर टो अंगुलतक जो फोडा दहा मडके ओर फिके फुट्टे  
 के भीतर ताई छिद्र पर जाइ उसे भगंदर कहते हैं एक तरहका मडार है उष्ट्रग्रीव

कफैस्त्रिधा । सन्निपातेनरक्ताच्चमेदुशूकामयास्तथा ७६ च  
 तुर्विंशतिराख्यातालिङ्गार्शोऽग्रथितंतथा । निवृत्तमवमन्थ  
 इचमृदितंशतपोनकः ७६ अष्टौलिकासर्पपिकात्वक्पाक  
 श्चावपाटिका । मांसपाकःस्पर्शहानिर्निरुद्धमणिरुद्धतः  
 ७८ मांसार्वुदंपुष्करिकासम्मूढैःपिटकालजी । रक्तार्वुदंवि  
 द्रधिश्चकुम्भिकातिलकालकः । निरुद्धःप्रकशःप्रोक्तस्तथै  
 वपरिवर्तिका ७९ कुष्ठान्यष्टदशोक्तानि वांतात्कापालिकंभ  
 वेत् । पित्तेनौदुम्वरंप्रोक्तं कफान्मण्डलचर्चिके ८० मरुत्पि  
 मलमाताहै भगंदर एक भातिहो अनेरुभाति पकिफुटिके रहाकरताहै ॥ ७५ ॥  
 इन्द्रिय में पंच प्रकार का उपदेश होता है जिसे गरमी कहते हैं वातसे, पित्तसे,  
 कफसे, विदोषसे, रक्त से ( अथास्य लक्षणम् ) डंडी में क्षतलगे या बड़ेहाथ  
 से या रोम डूटने से व रजस्वला प्रसंगसे होता है यह निदानका मतहै बुद्धि से  
 यह समझपड़ता है कि यह रोग दुष्टयानि के संयोगसे प्रथम डंडीमें याव परिके  
 धरे २ सत्र शरीर में घाय परजाते हैं ॥ ७६ ॥ इन्द्रियमें शूकजरोग चौबीस  
 भातिकार भी होता है यह अतिविषयाकांची पुरुष स्थूलकरने को विषादि तीव्र  
 औषध लगाते हैं तौ बालसमान सूक्ष्म समान सफेद किरानासा होता है उसे  
 शूक कहते हैं इसीके ये चौबीस भेद हैं लिगार्श १ ग्रथित २ निवृत्त ३ अत्रमय ४  
 मृदित ५ शतपोनक ६ ॥ ७७ ॥ अष्टौलिका ७ सर्पपिका = त्वक्पाक ८ अच-  
 पाटिका ९ मांसपाक १० स्पर्शहानि ११ निरुद्धमणि १२ ॥ ७८ ॥ मांसार्वुद  
 १४ पुष्करिका १५ संपूटपिटका १६ अलजी १७ रक्तार्वुद १८ विद्रवि १९ कुम्भिका  
 २० तिलकालक २१ निरुद्ध २२ प्रकश २३ परिवर्तिका २४ ( अथास्यलक्ष-  
 णम् ) ये सयरोग इन्द्रिय पर होते हैं सो क्षुद्ररोग गिनेजाते हैं और और नि-  
 दानमें कहते हैं कि ये रोग इन्द्रिय के मुखपर होते हैं मांसवदिके कुंदरुकी तरह हो  
 जाता है उस में फुंसी होती है और और भी अनेकरुप्रकारके उपद्रव संयुक्त होते  
 हैं ॥ ७९ ॥ कुष्ठरोग अठारह प्रकारकाहै प्रथम वातजन्य कापालिक ( लक्षणम् )  
 कृष्णरंग वा रक्तरंग माटी के खपरेकीनाई रूचा खर्चरा चमडा पतला हो तौ का-  
 पालिक कहते हैं दूसरा औदुम्बर मूलरतुल्य दाहपीडा गुजलीयुक्तहो वह औदुम्बर  
 कुष्ठ कहाताहै जो कुष्ठ सफेद चिकना चक्रुचासाहो वह तीसरा कफजन्य मंडल-  
 कुष्ठहै जो पाहु में काली कालीसी पिटकाहोके फटफटके वह गुमली करे वह चौथी

साहस्रजिह्वंश्लेष्मवाताद्विपादिका । तथासिध्मेककुष्ठं च कि  
 टिभंचालसंतथा ८१ कफपित्तात्पुनर्दद्रुः पामाविस्फोटकं त  
 था । महाकुष्ठं च चर्मदलं पुण्डरीकं शतारुकम् ८२ त्रिदोषैः  
 काकणं ज्ञेयं तथान्यच्छिन्नसंज्ञकम् । तत्रवातेन पित्तेन श्ले  
 ष्मणा च त्रिधा भवेत् ८३ क्षुद्ररोगाः षष्टिसंख्यास्तेष्वामोश  
 र्करार्बुदम् । इन्द्रवृद्धापनसिका विवृतान्धालजीतथा ८४

विचर्चिका है ॥ ८० ॥ जो लालहो बीचमें काला पीड़ायुक्त व रीढ़कीसी जीभ  
 सो घातपित्तजन्य घृत्तजिह्वकुष्ठ पांचवां है जो गोड़के चन्द्र में पकिके घाव परै या  
 हाथकी हथेली में हो वह विपादिका छठवां कुष्ठ है जो सफेद ललाई लिये हो  
 चमड़ा पतलाहो और उसमें फूटसा भरै बंद सातवां सिध्मकुष्ठ है या छाती में  
 होता है उसे सिह्वा कहते हैं कफ पित्तसे उत्पन्न है जो घाव होके काला परजाय  
 वह कफघात जन्य है आठवां फिटिकुष्ठ है और जो लाल लाल पिटका होके  
 खुजमाय वह अलसकुष्ठ नववां है ॥ ८१ ॥ जो श्याम चमड़ा होके चिकना और  
 नहीं पिटका संयुक्तहो और खुजलाय वह दशवां दटकुष्ठ है उसे दाद भी कहते  
 हैं जो देह में छोटी बड़ी पिटका पकिके फूटं सतुआय एक अच्छी न हो और  
 निकलै वह ग्यारहवां पामाकुष्ठ है और खुजली भी कहते हैं टेंटमें हो टेंटी कहते  
 है कफ पित्तके जोर से सब देह लाल होके छोटी बड़ी पिटका सब देह फोरिके  
 छालेकी नाई निकलै उसे विस्फोटक बारहवां कुष्ठ कहते हैं उसीको शीतला भी  
 कहते हैं जो कुष्ठ शरीरकी त्वचा को हाथी की खाल समान करदे और पसीना  
 न निकरै वह तेरहवां महाकुष्ठ है उसे चर्मकुष्ठ और गजचर्म भी कहते हैं जो कुष्ठ  
 लाल होके पिराय सजुवायके पिटकासा होजाय उसे चौदहवां कुष्ठ चर्मदल कहते  
 हैं जो कुष्ठ कमलत्र सम ऊंचा शरीरपर देख परै वह पुण्डरीक पन्द्रहवां कुष्ठ है  
 जो कुष्ठ छोटा फोटा होके बहुत छेद परजायै वह शतारुक सैलानां कुष्ठ है ॥  
 ८२ ॥ जो पकिके घाव काला होजाय अतिपीड़ा करे उसे ककत्ता कुष्ठ कहते हैं  
 यह सत्रहवां त्रिदोषजनित असांध्य है अठारहवां शिवत्रकुष्ठ सो कुष्ठ न फूटै सो  
 त्रिदोष से तीनिमरकरका शिवत्रकुष्ठ होता है जिसके हो उमे छोटी बहते हैं वायु  
 से रुता और लाल चर्चुसा होता है पित्तमे ताम्रवर्ण दाहसाहित चिकना  
 होता है कफसे सफेद चकत्ता सघन कठोर होता है यह श्वेत कुष्ठ है ॥ ८३ ॥  
 वा इन्द्ररोग साठि मजारके हैं शर्करार्बुद ? इन्द्रवृद्धा २ पनसिका ३ विवृता ४

वाराहदंष्ट्रोवल्मीककच्छपीतिलकालकः । गर्दभीरकस-  
 चैवयवप्रख्याविदारिका ८५ कन्दरोमसकश्चैवनीलिका  
 जालगर्दभः । ईरिवेत्तीजन्तुमणिर्गुदभ्रंशोग्निरोहिणी  
 ८६ सन्निरुद्धगुदःकोठःकुनखोनुशयीतथा । पद्मिनी  
 कण्टकाश्रिप्यमलसोमुखदूषिका ८७ कक्षावृषणकच्छुश्च  
 गन्धाःपाषाणगर्दभः । राजिकाचतथाव्यङ्गश्चतुर्धापरि-  
 कीर्तितः ८८ वातात्पित्तादरुफाद्रक्तादित्युक्तं व्यङ्गलक्षण-  
 म् । विस्फोटाःक्षुद्ररोगेषुनेष्टधापरिकीर्तिताः ८९ पृथग्दो-  
 षैस्त्रयोद्वन्द्वैस्त्रिविधस्तप्तमोसृजः । अष्टमःसन्निपातेनक्षु-  
 द्ररुक्षुमसूरिका ९० चतुर्दशप्रकारेणत्रिभिर्दोषैस्त्रिधाच-  
 सा । द्वन्द्वजात्रिविधाप्रोक्तासन्निपातेनमप्तमो ९१ अष्ट-  
 मीत्वग्गताज्ञेयानवमीरक्तजामता । दशमीमांसजाख्या

अंजालजी ५ ॥ ८४ ॥ वाराहदंष्ट ६ वल्मीक ७ कच्छपी ८ तिलकालक ९  
 गर्दभी १० रकसा ११ यवप्रख्या १२ विदारिका १३ ॥ ८५ ॥ कन्दर १४  
 मसक १५ नीलिका १६ जालगर्दभ १७ ईरिवेत्ती १८ जन्तुमणि १९ गुदभ्रंश २०  
 अग्निरोहिणी २१ ॥ ८६ ॥ सन्निरुद्धगुद २२ कोठ २३ कुनख २४ अनुशयी २५  
 पद्मिनीकण्टक २६ चिप्य २७ अलम २८ मुखदूषिका २९ ॥ ८७ ॥ कक्षा ३०  
 वृषणकच्छु ३१ गंध ३२ पाषाणगर्दभ ३३ राजिका ३४ व्यंग कहे प्रागके चारि-  
 भेद हैं ॥ ८८ ॥ वातज पित्तज कफज रक्तज ३५ विस्फोटक आठप्रकारका है परन्तु क्षुद्र  
 रखाकी गिनती में है वातविस्फोटक, पित्तविस्फोटक, कफविस्फोटक, वातपित्त  
 विस्फोटक, कफपित्तविस्फोटक, वातकफविस्फोटक, रक्तविस्फोटक, सन्निपात  
 विस्फोटक ॥ ८९ ॥ मगूरिदारोगी क्षुद्रमंशुरु है तिस के चौदहभेद हैं ॥ ९० ॥ वातम-  
 सूरिका, पित्तमसूरिका, कफमसूरिका, वातपित्तमसूरिका, कफपित्तमसूरिका, वातक-  
 फमसूरिका, त्रिदोषमसूरिका ॥ ९१ ॥ त्वचामसूरिका, मांसमसूरिका इस से परे  
 चार अतिकठिन हैं भेदमसूरिका, मन्नामसूरिका, अस्थिमसूरिका, धातुमसूरिका  
 ( अथास्य लक्षणम् ) जो पिटका पकिके गाढ़ा या पतला पानीसी वही फिरि मूत्रि-  
 के न्यचा कठोरहो फटिके रुधिर वही उसे शर्करार्जुद कहते हैं जो एक फुसी उठै उस



ताचतस्त्रोन्व्याश्चतुस्तराः। भेदोस्थिमज्जाशुक्रस्थाःक्षुद्रो  
गाइतीरिताः ९२ विसर्परोगानवधावातपित्तकफैस्त्रिधा ।

के नीचे और छोटी २ बहुत फुंसी हों वह इन्द्रजट्टे जो पिटका कान के भीतर हों उसे पनसिक्य कहते हैं जो गूलरसदृश हो घेरा अधिक बढ़ावै दाह विशेष करै उसे चिट्टा कहते हैं जिस फोड़ेका मुँह न देख परै अति ऊँचा अधिक घेर पाये वह शंघालजी है जो शरीर में गांठि सी कठिन उभरै बूढ़े दांतके रंगपीरहो ख-  
जुआप वह बराहदंष्ट्रा है जो पिटका गुलासी होके बीच में खाली हो किनारे मुँह करिके बड़े वह बरमीक है जो पिटका बहुत कड़ी कटोरी की पेंदी समानहो उस पिटकाको कच्छपिका कहते हैं जो देह में तिल समान हो देह से ऊँचा न हो पीड़ा न करै उसे तिलकालरु कहते हैं जो बटिया सम ऊँचीहो लालरंग उसमें और पिटका निकलै पीड़ा करै वह गर्दभिका है जो फूल के पकै फूटै नहीं खजुरी हो वह रकसाई जो यत्र समान हो तौ यत्रप्रख्या है जो काँख या छाती या अंड-  
सन्धि में पताल में कोटा सी हो वह चिदारिका है जो हाथ पाय में काँटा लगिके उसी ठौर गांठि परिरहिजाय उसे कदर कहते हैं गुडरुई जो देहमें बरद सदृश नि-  
कलिके रहिजाय पीड़ा न करै उसे मसक कठिये मस्साहै जो देहमें अनायास खाल काली पड़जाय उभरै नहीं और काँई प्रकार न करै उसे नालिका कहते हैं लह-  
सुनहै जो देह में सूजन फोड़ेके देही मेदी लम्बी सर्पकार फूलिके नसजाल परि जाइ और स्त्राजट्टो अज्ञाय उसे जालगर्दभ कहते हैं जो बटियासी होतही अति पीड़ा उत्पन्नकरै उसे बल्लिका कहते हैं जो देहमें देहके रंग ऊँचाहो पीड़ा न करै और जन्मतेहो उसे जन्नुमणि कहते हैं और आचार्य चिह्न कहते हैं जिसके मलत्याग स-  
मय काँच निकल आवै उसे गुदभ्रंश कहते हैं काँख कहे बगल में मांस में जाला समान होके फोड़ा होताहै अन्तर्दाह होके ज्वर आताहै सो दश पाँच दिनमें म-  
नुष्यको मारडालताहै वह अग्निरोहिणी है जिस रोग में मलमार्ग की धाँस रक्तको कोपकरिके मोटी परिके मलमार्गको संकीर्ण करै तो मल गादा और मोटा बहुत क्रेश में गिरं वह सन्निरुद्ध गुद है कफ पित्त और रक्त के कोपकरिके लाल लाल चकत्ता शरीर में पड़ते हैं बहुत खजुरी करते हैं क्षण में होइ क्षण में भिटे इसे रक्तपिच्छी कहते हैं नख लगिके देहमें नकोटोजाइ उसे कुनख कहते हैं जो पाँय में छोटी पिटका होके पकै फूटै सूजन हो सो अदुशयी है जो पीली बटियां हो खजुआइ उसमें काँटा समान हो वह पथिनोकरणटकहै जो अग्निवायके भलको परै अथवा न क्षतपकै फूटै उसके चेपलगे से उत्पन्न होयां आम्रादिक की चेप

त्रिधाचद्वन्द्वभेदेन सन्निपातेनसप्तमः । अष्टमोवह्निदाहेन  
नवमश्चाभिघातजः ९३ तथैकःश्लेष्मपित्ताभ्यामुदहःप  
रिकीर्तितः । वातपित्तेनचैकस्तुशीतपित्ताभयःस्मृतः ९४  
अम्लपित्तत्रिधाप्रोक्तं वातेनश्लेष्मणातथा । तृतीयंश्ले

लगे पकजाय उसे चिष्य कहते हैं जो पैर या हाथके गावाते पानी या खराब की-  
चढ़ या कोई विष या कोई विषमिश्रित माटी या विषज र कीट जन्तुके स्थानकी  
माटी या भ्रूतादि दृष्टतरेकी माटी सड़िके स्पर्श से सड़िजाय और बहुत खजुरों  
करै उसे अलस कहते हैं खरवाहें और जो जगनीमें मुसपर काटे काटेसे बहुत  
होजाते हैं दोबने से खरखराते हैं और गड़ते हैं वह मुखदूषिकाहें लोग उसे मु-  
हासा कहते हैं जो बगल में छोटी २ फुन्सिया परजाती है उसे कक्षा करतेह जो  
गण्डकोराकी जड़पर छोटी २ पिटका हों वह गर्दभ है जो शरीर में राईके समान  
फुन्सियां परजायें उसे राजिका कहते हैं कुंदया कहते हैं वायु पित्त क्षुपितहो मुंह  
परजाइ चमड़ा कालाकरै थोरपतलाकरै उसे व्यगकहे भाई है और भाठ रिस्फो-  
टक शीतला के भेदमें हैं सो जुद्रोग की गनती में हैं और चौदह मसूरिकाये भी  
शीतला के भेद हैं जुद्रोगी हैं ॥ ९३ ॥ विसर्पारोगके नवभेद हैं वातविसर्प, पित्त  
विसर्प, कफविसर्प, वातपित्तवि०, कफवातवि०, कफपित्तवि०, सन्निपातवि०, अ-  
ग्निदग्धवि०, ताड़नावि० (अथास्थ लक्षणम्) जिसमें वातज्वरके लक्षण कूप  
विषम वेगादिक होके सृजनहो और चमकशूल कोचनहो फूरे सो वातविसर्प है  
जिसमें कफज्वरके लक्षणहों और सृजन दाहयुक्त लाल रंगहो वह पित्त विसर्प है  
जिसमें कफज्वरके लक्षणहों और चिकनीहो सनुआय सो कफविसर्प है और द्वंद्वजमें  
जिन दो दोषोंके लक्षण मिलैं सोई द्वंद्वजविसर्प जातौ जिसमें तीनों दोषके लक्षण  
हों वह सन्निपातविसर्प है जो विसर्प आगिले जलनेसे हों उसके पित्तविसर्प के  
लक्षण होते हैं वह वह्निदाहविसर्प है जो पाचलगे से हो वह अभिघात विसर्प  
है ॥ ९३ ॥ श्लेष्मगायु करिके उदररोग होताहै और वातपित्त करिके शीतपित्त  
रोग होताहै कफगायुके कोपकरिके शरीरमें लाल २ छोटे षडे चकते पड़ते हैं और  
बहुत सजुआतेहें उसे बदरद कहतेहैं जो वातपित्तके कोपकरिके होता तो पीड़ा अधिक  
राज कम करताहै उसे शीतपित्त कहते हैं और ज्वर उबकाई और दाहलक्षणआदि  
युक्तहोते हैं यह दोनों एकही भेदमें हैं ॥ ९४ ॥ अम्लपित्तारोगके तीन भेदहैं  
पित्तम कफज अम्ल पित्त और कफवातज अम्लपित्त ये विरुद्ध भोजन २१९३

ष्मवाताभ्यांवातरक्तं तथाष्टधा ६५ वाताधिक्येनपित्ताच्च  
 कफादोषत्रयेणचारक्ताधिक्येनदोषाणां द्वन्द्वेनत्रिविधः स्मृ-  
 तः ६६ अशीतिर्वातंजारोगाः कथ्यन्ते मुनिभाषिताः । आक्षे-  
 पकोहनुस्तम्भऊरुस्तम्भशिशरोग्रहः ९७ वाह्यायामोन्तरा-  
 यामः पार्श्वशूलङ्कटिग्रहः । दण्डापतानकः खल्लीजिह्वा-  
 स्तम्भस्तथादितः ९८ पक्षाघातः क्रोष्टुशीर्षामन्यास्तम्भ-  
 श्चपङ्गुता । कलायखञ्जतातूनीप्रतितूनीचखञ्जता ६६  
 पादहर्षो गृध्रशीच विश्वाचीचापवाहुकः । अपतानोव्रणा-  
 यामो वातकण्ठोपतन्त्रकः १०० अङ्गभेदोङ्गशोषश्च  
 मिन्मिनत्वञ्चगद्गदः । प्रत्यष्टीलाऽष्टीलिकाचवामनत्व-  
 ञ्चकुञ्जता १ अङ्गपीडाङ्गशूलञ्च सङ्कोचस्तम्भरु-  
 क्षताः । अङ्गभङ्गोङ्गविभ्रंशो विद्ग्रहोवद्धविट्कता २  
 मुक्तत्वमतिजृम्भास्यादत्युद्गारोन्त्रकूजनम् । वातप्रवृ-  
 त्तमोजन करने से होते हैं या चासी और जल अन्नके भोजन करनेसे पित्तफुपित्त-  
 होके खट्टीहकार लाता है और आठारका परिपाक अच्छीतरह नहीं होता उसे  
 अम्लपित्त कहते हैं ॥ ६५ ॥ और वात पित्त आठ प्रकारका है जिस वात रक्तमें  
 घायु निशेष है वह वातजवातरक्त है जिसमें पित्त अधिक है वह पित्तज वातरक्त है  
 और जिसमें कफ अधिक है वह कफज वातरक्त है जो तीनों दोषके लक्षणहीं तौ  
 निदोषज वातरक्त है जिसमें रक्त अधिक हो वह रक्तजवातरक्त है और तीनि द्वन्द्व  
 में जो दोष मिश्रितहो सो जानिये वातपित्तज वातकफज कफपित्तज ये आठप्र-  
 कारके वातरक्त हैं ॥ ६६ ॥ वातरोग अस्सीप्रकारके ऋषिलोग कहिये हैं आक्षे-  
 पक, हनुस्तम्भ, शिशोग्रह ॥ ६७ ॥ वायाम, अन्तरायाम, पार्श्वशूल, कटिग्रह-  
 दण्डापतानक, सली, जिह्वास्तम्भ, अदित ॥ ६८ ॥ पक्षाघात, क्रोष्टुशिरस, मन्या-  
 स्तम्भ, पंगुता, कलायखञ्जता, तूनी, प्रतितूनी, खञ्जता ॥ ६६ ॥ पादहर्ष, गृध्रशी,  
 विश्वाची, अपवाहुक, अपतान, मणायाम, वातकण्ठ, अपतन्त्र ॥ १०० ॥ अंग-  
 भेद, अंगशोष, मिन्मिन, कृष्णता, प्रत्यष्टीला, अष्टीलिका, वामनत्व, कूयड ॥ १ ॥  
 अंगपीडा, अंगशूल, सकोच, स्तम्भ, रुक्षता, अङ्गभङ्ग, अङ्गविभ्रंश, विद्ग्रह, वद्ध-

तिःस्फुरणं शिराणाम्पूरणन्तथा ३ कम्पःकार्श्यंश्यावता  
 च प्रलापःक्षिप्रमूत्रता । निद्रानाशः स्वेदनागो दुर्बलत्वं  
 वलक्षयः ४ अतिप्रवृत्तिःशुक्रस्य कार्श्यंनाशश्चरेतसः ।  
 अनवस्थितचित्तत्वं काठिन्यंविरसास्यता । कषायवक्तृ  
 ताध्मानं प्रत्याध्मानंचशीतता ५ रोमहर्षश्चभीरुत्वं  
 तोदकण्डूरसाज्ञता । शब्दाज्ञताप्रसुप्तिश्चगन्धाज्ञत्वं  
 दृशःक्षयः ६ ॥ इति वातजरोरोगगणना ॥ अथ पित्तभ  
 वारोगाश्चत्वारिंशदिहोदिताः । धूमोद्गारोविदाहःस्या  
 दुष्णाङ्गत्वंमतिभ्रमम् ७ कान्तिहानिःकण्ठशोषोमुख

विडकता ॥ २ ॥ सूक्त्य, अतिजुंभा, अत्युद्गार, अत्रकृजन, वातप्रवृत्तिस्फुरण,  
 शिरापूरण ॥ ३ ॥ कंप, कार्श्य, श्यावता, मलाप, क्षिप्रमूत्र, निद्रानाश, स्वेदनाश, दुर्ब-  
 लत्व, वलक्षय ॥ ४ ॥ शुक्रातिप्रवृत्ति शुक्रकार्श्य, शुक्रनाश, अनवस्थित, चित्तकाठिन्य,  
 विरसास्यता, कषायवक्तृत, आध्मान, प्रत्याध्मान, शीतता ॥ ५ ॥ रोमहर्ष, भीरु-  
 त्व, तोद, कंडू, रसाज्ञता, शब्दाज्ञता, प्रसुप्ति, गंधाज्ञत्व, दृशःक्षय ॥ ६ ॥ ( अस्य  
 लक्षणम् ) जिस वायुमें दायीके सवारकीनाई बारवार भूमै वह आक्षेपकहै १  
 जिसमें दोहीअकडके मुख खुलारहै वह हनुस्तंभ है २ जिसमें कूलेकी नसैं जकड  
 के निर्धलहैं चल न सकैं वह ऊरुस्तंभ है ३ जो माथेकी शिराकहे नसैं निस्तेज  
 होके मस्तक में पीड़ाहै वह शिरोग्रह है असाध्य है ४ पीठ उभरके जो मनुष्य  
 घन्वाकार होजाय वह बाष्पायाम है ५ जो छाती ऊची होके घन्वाकार होजाय  
 वह अन्तरायाम है ६ जो पसुरीमें पीड़ाकरै वह पारवशूल है ७ जो कमर जकड़  
 जाय वह कटिग्रहहै ८ जो देह दंढाकार होजाय वह दंढापतानकहै ९ जिस वायु  
 में पाव या गाय घुटना निवृत्त से और कमर में अधिक पीड़ाहो वह खली है  
 १० जो वायु जीभकी नस्ता न ले भोजन मुंह में कठिनता से लियाजावे वह  
 निहास्तभ है ११ जो वायु आघा मुँहको फेरदे माया कम्पै जीभ से बोला न  
 जाय दृष्टि तिरछी होजाय वह अर्दित है १२ जो आघाअङ्ग निर्बल होजाय उसे  
 पक्षायत ( अर्थांग ) कहते हैं १३ जो गोड वी टिहुनी सूजजाय स्यार वैसा  
 मूड़हो उसे क्रोमुशीर्ष सियार मुँड कहते हैं १४ जिसमें घींच तन जाइ मस्तकइत  
 उस न हुलै यह गन्यास्तंभ है १५ जो वायुकूलेकी मोटीनसोंको मानिले पाव को

फैलने सिकुड़ने न दे वह पंगु है १६ जो वायु यनुष्य के शरीर की चाल खंजरीट  
 की नाई करदे चलने में कां पांव इधर उधर पर वह कलयाखंज है १७ जो वायु  
 गुद और इन्द्रि में चिलक उत्पन्नकर वह तुनी है १८ जो गुद लिंग में चिलक उत्पन्न  
 करिके मूत्र मला श्यताई चुभे सो प्रतितुनी है १९ जिसमें पंगुवायुके लक्षण हों पर  
 एकपांव लंगड़ा करे वह खंज है २० जो पैर में भुंभनी करे वह पादहर्ष है २१  
 जिसमें पीठ, कपूर, कूला, चूतर, जाय, पैर इन में बठने बठनेमें क्रेशहो तो घृधसी है  
 जो वायु हाथ और कानकी नसे तानके हाथ ऊपर न चठने दे वह घिरवाधी है २३  
 जिसमें बांह तनिजाइ वह बाहुक है २४ जो वायु हृदय में प्रवेशकरि ज्ञानको नष्ट  
 करे दृष्टिरोके कण्ठ शब्द विलक्षणकरे कभी सावधान कभी अचेतर है स्थिरचित्त  
 न रहै वह अपतानक है २५ जो वायु चाट जागिके धाव और पीड़ा करे वह वृणा-  
 याम है २६ जिसमें चलने के अम से या ऊंचे नीचे पैर परे या टेढ़ापरने से वायु  
 गुदनों में उतरिके सूजन और पीड़ा उत्पन्न करे वह घातकटक है २७ जो वायु ऊर्ध्व  
 गतिहोके हृदय, मस्तक, कन्धवा देह में पीड़ा करे और धनुषके आकार करिके दृष्टिको  
 रोकै कवृत्त की नाई बोलै मोह में पड़े वह अपतन्त्र है २८ जो सब शरीर में पीड़ा  
 करे तो अंगभेद है २९ सब शरीर को शोषे सो अंगशोष है ३० जो मिनिमिनायके बोलै  
 वह मिनिमत्व है ३१ जिसमें कण्ठ से स्पष्टशब्द न कहे वह कृष्णता है ३२ जो  
 नाभिके नीचे ऊंचा पत्थरसा करदे और मल मूत्र विरोध करि पेट में गांठि गांठिसी  
 परिके भेद २ पीड़ा करे वह अप्ठीलिका है ३३ जो अप्ठीलिका की नाई गांठि  
 टेढ़ी सूधी लंबीहो अधिक पीड़ादे उसे प्रत्यप्ठीलिका जानो जो पेटमें गांठि गांठिसी  
 सरिके भेद २ पीड़ाकरे वह अप्ठीलिका है ३४ जो वायु गर्भाशय में प्रवेशकरि गर्भ  
 को संकुचित करे तो बालक छोटा उत्पन्नहो वह धावन है ३५ जो वायु दुष्टहो  
 छाती पीठको संकुचित करे वह कुब्ज है ३६ जिसमें सब अंग में पीड़ाहो वह अंग-  
 पीड़ा है ३७ जिसमें शरीर बिपे सूजासा गड़े वह अंगशूल है ३८ जो सर्वांग को  
 संकुचित करे वह संकोच है ३९ जो देहको तीणकरे वह स्तब्ध है ४० जो देह  
 में सलाई करे वह रुक्त है ४१ जिसे कभी कोई अंग शिथिलहो कभी कोई वह  
 अंगभंग है ४२ जो देह को काष्ठवत् अचेतकरे वह अंगविभ्रंश है ४३ जो मल निरोध  
 करि अच्छी तरह न गिरने दे है विद्रवह है ४४ जो पकाशयमें मलसिद्ध और भिन्न  
 भिन्न पिडिसेकरे वह घटविद्रकताहै ४५ जो वायु शब्द निरोधकरे वह मूक कहे गुंग  
 है ४६ जो अतिजंघुभाई लावै वह अतिहृम्भहै ४७ जिसमें अधिक डकारें अर्ध  
 वह अत्युद्गार है ४८ जो वायु थांतमें प्रवेशकरि बोलै वह अंत्रकूजनहै ४९ जो  
 अतिहृत्सर्गकरे अर्थात् गुदासे अधिक निकरे वह वातप्रवृत्तिहै ५० जो शरीर नहां २

शोषोलपशुक्रता = तित्तास्यताम्लवक्तत्वंस्वेदस्त्रावो  
 झपाकता । छमोहरितवर्णत्वमृत्सिः पीतकायता ९  
 रक्तस्त्रावोद्गदरणलोहगन्धास्यतातथा । दौर्गन्ध्यंपीतमूत्र  
 त्वमरतिःपीतविट्कता १० पीतावज्जोकनंपीतनेत्रता  
 पीतदन्तता । शीतेच्छापीतनखता तेजोद्वेषोलपनिद्रता  
 ११ कोपेश्चगात्रसादश्चभिन्नविट्कत्वमन्धता । उष्णो  
 फुरकै वह स्फुरणहै ५१ जो जरा तहा नसोंको फुलानै वह शिरापूरण्य है ५२  
 जो सब देह कैंपावै वह कंवायुहै ५३ जो शरीरको दुर्बल करै वह कार्श्य है ५४  
 जो शरीरको कृष्णकरै वह श्यावताहै ५५ जिसे मानुष असंभवबोलै वह मत्तापहै  
 ५६ जो मूत्र धारवार आतुरतासे हो तो क्षिप्रमूत्रहै ५७ जिसमें नींद न आवै वह नि-  
 द्रानाशहै ५८ जो पसीना निकरै वह स्वेदनाश ५९ जो शरीरको दुबलाकरै वह  
 दुर्बलत्वहै ६० जो वायु शुक्र में प्रवेशकरि कारिकै उदावै वह शुक्रातिप्रवृत्ति है  
 ६१ जो बलको यटावै वह बलक्षय है ६२ जो घातुको किंचित्क्षीणकरै वह शुक्र-  
 क्षार्य है जो चिचको स्वस्थ न रखै वह अनस्थितचिचत्व है ६३ जो घातुको  
 अतिक्षीण करै तो शुक्रनाशहै ६४ जो देहको कठोरकरै वह काठिन्यहै ६५ जि-  
 समें जीमका स्वाद न मिलै वह विरसास्यहै ६६ जो जीम ऐठन्यम चचन न कहि  
 सकै वह वायुकपाय वक्रताहै ६७ जो वायु पकाशयमें जाय पेटफुलाय गुहगुडकरै  
 वह आभान है ६८ जो वायु आशयमें जाइ कफ से मिलि पेटफुलाय पीड़ाकरै  
 वह मृत्पाभान है ६९ जो शरीरको ढंढारागै वह शीतताहै ७० जिसमें बारवार  
 रोमाचहो वह रोमहर्षणहै ७१ जो भय उत्पत्ति करै वह भीहसहै ७२ जो देह में  
 सुईसी चुभै वह तोदहै ७३ जो राज उत्पन्नकरै वह कंदूहै ७४ जिससे पशुरादिक  
 रसका स्वाद न मिलै वह रसज्ञता है ७५ जिससे वान से सुन न परै वह शब्दा-  
 ज्ञता है ७६ जिसमें त्वचार पर हाथपरे समुभरै सो प्रसुप्ति है ७७ जिसमें गन्ध  
 ज्ञान न हो वह गन्धाज्ञता है ७८ जिसमें दृष्टि से सूक्ष्म नहीं वह दृश क्षय है  
 ७९ और पिचजनित चालीसरोग हैं धूमोद्गार, विदाह, उष्णाम, यतिभ्रम ॥  
 ७ ॥ कातिहानि, कंठशोष, मुखशोष, अल्पशुक्रत्व ॥ ८ ॥ तित्तास्यता, अम्लवक्र,  
 स्वेदस्त्राय, अंशपाकत्व, श्म, हरितवर्णत्व, अहृत्ति, पीतकाय ॥ ९ ॥ रक्तस्त्राव, अंग-  
 दरण, लोहगंधास्य, दौर्गन्ध्य, पीतमूत्रता, अरति, पीतविट्कता ॥ १० ॥ पीतावज्जो-  
 कन, पीतनेत्रता, पीतदन्तता, शीतेच्छा, पीतनखता, तेजोद्वेष, अल्पनिद्रता ॥ ११ ॥

च्छ्वासत्वमुष्णत्वमूत्रस्यचमलस्यच १२ तमसोदर्श  
 नपीतमण्डलानांचदर्शनम् । निःसंरत्वेञ्चपित्तस्यच  
 त्वारिशङ्कुजैःरमृताः १३ ॥ इति पित्तजरोरगणना ॥ क  
 फस्यविंशतिःप्रोक्ता रोगास्तन्द्रातिनिद्रता । गौरवमु  
 कोप, गात्रसाद, भिन्ननिद्रता, श्रंघता, उष्णोच्छ्वासत्व, उष्णमूत्रता, उष्णम-  
 लता ॥ १२ ॥ तमोदर्शन, पीतमण्डलदर्शन, निःसंरत्यर्थं चालीसरोग पित्तसंभवैः ॥  
 १३ ॥ (अस्य लक्षणम्) जिसे पित्तकोपसे भुआंसी डकारथावै वह धूमोद्गारहै  
 १ जो यतिद्राह करै यह विद्राह २ जो देह गरम रहै वह उष्णता है ३ जो बुद्धि  
 स्थिर न रहै कभी कुञ्ज समझै कभी कुञ्ज न समझै वह मतिभ्रम है, ४ जो अष्टा  
 मलिन करै वह कान्तिहानि है ५ जो कण्ठ च मुख गुखावै वह कण्ठशोष च मुख-  
 शोष है ६ जो शुक्रनीय करै स्त्रीप्रसंग में बिना शुक्रपाते शिथिल होजाय वह  
 अल्पशुक्र है ७ जो मुख कडुवारहै वह तिक्तास्त है ८ जो मुख खटारहै तो अम्ल-  
 वक्र है ९ जो पसीना अधिक थावै वह स्वेदसाव है १० जो पित्त से अंग पकाता  
 है वह अंगपाक है ११ जो ग्लानिसे अनेकपदार्थ ग्रहणकरते भ्रमकै वह क्रमहै १२  
 जिसमें देह हरितहो वह हरितवर्णत्व है १३ देह पीली परजाय वह पीतकापता  
 है १४ जिसे पित्त के कोपसे भोजन करनेसे तृप्ति न होइ वह अवृत्ति है १५ जिस  
 में गुखादि मार्ग से रक्त गिरै वह रक्तसाव है १६ जो शरीर में त्वचा चटकेजाय  
 वह अंगदरण है १७ जो लोहा तिसने से वा लोहा सहाय कसीस घने तिन  
 कीसी वास थावै वह लोहगंधास्य है १८ जो देह में दुर्गंधि थावै वह दौर्गंधी  
 है १९ जिसमें मूत्र पीला थावै सो मूत्रहै २० जिस से सर्व पदार्थ में चिच न  
 चले वह अरति है २१ जिसके मल पीला थावै वह पीतविद्रकत्वहै २२ जिसमें  
 सत्र पदार्थ पीले देय पड़ें वह पीताग्लोरु है २३ जिससे आंखि पीली भइनाय  
 वह पीतनेत्रहै २४ जो दांत पीले होजायें वह पीतदन्त है २५ जो ठंडी चीजपर  
 इच्छा चले यह शीतेच्छा है २६ जो पीले नलहोजायें तो पीतनस २७ जो ते-  
 जोमय चीज देखि अच्छी न लगे वह तेमोद्रेप है २८ जो निद्रा कम थावै वह  
 अल्पनिद्रा है २९ जो क्रोध अधिकहो वह कोप है ३० जो देह पीडित करै वह  
 गात्रसाद है ३१ जो मल फटकै फुटकीसा हो वह भिन्नचिक्क है ३२ जो दृष्टि-  
 नाराकरै वह अन्धता है ३३ जो उष्णश्वास थावै सो उष्णोच्छ्वास है ३४ जो  
 मूत्र अत्युष्ण हो वह उष्णमूत्र है ३५ जो मल अत्युष्ण गिरै तो उष्णमल

खमाधुर्य्य मुखलेपःप्रसेकता १४ श्वेतावलोकनंश्वेत  
विट्कत्वंश्वेतमूत्रता । श्वेताङ्गवर्णताशैत्यमुष्णेच्छाति  
क्लकामिता १५ मलाधिक्यञ्चशुक्रस्य बाहुल्यं बहुमूत्रता ।  
आलस्यंमन्दबुद्धित्वं तृप्तिर्घुर्घरवाक्यता । अचैतन्यञ्च  
गदिताविशतिःश्लेष्मजागदाः १६ ॥ इति कफजरोगगण  
ना ॥ रक्तस्य च दश प्रोक्ता व्याधयस्तस्य गौरवम् । रक्तमण्ड  
लतारक्तनेत्रत्वं रक्तमूत्रता १७ रक्तनिष्ठावनारक्तपिट  
कानाञ्च दर्शनम् । औष्ण्यञ्च पूतिगन्धित्वं पीडापा  
कञ्च जायते १८ चतुस्सप्ततिसङ्ख्याता मुखरोगास्तथो  
दितः । तेष्वोष्ठरोगा गणिता एकादशमिता बुधैः । वात  
त्व है १६ जो उजरे में अंधेरा जानपरे वह तमोदर्शन है १७ जो देहमें पीलेरङ्ग  
और और देख परे वह पीतमण्डल है १८ जो देखनेमें पृष्ठीपर कहीं कहीं पीले  
धूपे से-देखपरै यह पीतमण्डलदर्शन है १९ जो पित्त मुख से वा मलमार्ग से  
गिरै वह निस्सरत्त्व है ४० और बीसरोग कफमंभव है तन्द्रा, अतिनिद्रा, गौरव,  
मुखमाधुर्य्य, मुखलेप, प्रसेक ॥ १४ ॥ श्वेतावलोकन, श्वेतविट्कत्व, श्वेतांगव-  
र्णता, उष्णेच्छा, तिक्लकामिता ॥ १५ ॥ मलाधिक्य, शुक्रबाहुल्य, बहुमूत्रता,  
आलस्य, मंदबुद्धित्व, तृप्ति, घुर्घरवाक्यता, अचैतन्य ये बीस प्रकार के कफरोग हैं  
(अस्पलक्षणम्) जिसमें आखें भभीरहें निद्रा न परै वह तन्द्रा है जो निद्रा  
बिरोपहो तो अतिनिद्रा है जो शरीर भारीरहै वह गौरवहै जो मुख में गुड़कास्वाद  
घनारहै वह मुखमाधुर्य्य जो मुखमें लसलसाहटहो तो मुखलेप जो लार गिराकरै  
तो प्रसेक है जो सर्वत्र श्वेत देखपरै तो श्वेतावलोकनहै जो श्वेत मलगिरै तो श्वेत-  
विट्कत्व है जो घून श्वेतहो तो श्वेतमूत्र है जो शरीर श्वेतहो तो श्वेत मार्गवर्णत्व  
है जो देह ठंडी बनीरहै तो शैत्यताहै जो उष्णपदार्थपर इच्छारहै तो उष्णेच्छा है  
जो कटुपदार्थपर चित्तचलै तो आलस्य है मंदबुद्धि होजाय तो मन्दबुद्धिहै सूक्ष्माहार  
से तृप्तिहै तो तृप्तिहै जो बोलने में गला बरसाय तो घुर्घरवाक्यहै मंद चेतनाहो तो  
अचैतन्यहै ॥ १६ ॥ रक्तविकारसे दशभक्ति के रोगहैं गौरव, रक्तमंडल, रक्तनेत्रत्व,  
रक्तमूत्रता ॥ १७ ॥ रक्तपीन, रक्तपिटकादर्शन, उष्णत्व, पूतिगन्धित्व, पीडा,  
पाक ये दशरोग रक्तजन्य हैं इनके नामही सरण लक्षण हैं ॥ १८ ॥ अब मुखके जो



पित्तकफैस्त्रेधात्रिदोषैरसृजस्तथा १६ क्षतं मांसार्वुदञ्चै  
 च खण्डौष्ठश्च गलार्बुदम् । मेदोर्बुदञ्चार्बुदञ्च रोगाण  
 कादशोष्ठजाः २० दन्तरोगादशाख्याता दालनः कृमिद  
 न्तकः । दन्तहर्षः करालश्च दन्तचालश्च शर्करा २१ अ  
 धिदन्तः श्यावदन्तो दन्तभेदः कपालिका । तथात्रयोद  
 शमितादन्तमूलामयाः स्मृताः २२ शीतादोपकुशौद्रौ तु  
 दन्तविद्रधिपुष्पुटौ । अधिमांसो विदर्भश्च महासौषिर  
 चौहत्तर रोग हैं सो कहता हूँ तिसमें ग्यारह ओष्ठरोग पण्डित करते हैं वात से,  
 पित्तसे, कफसे, त्रिदोषसे, रक्तसे ॥ १६ ॥ क्षतज मांसार्वुद, खण्डौष्ठ, जला-  
 र्बुद, मेदोर्बुद, अर्बुद ये ग्यारह ओष्ठरोग हैं जो ओष्ठ कठोर हो काला परजाइ  
 गांठि परै पीड़ा करै तन फूटै फूटै वा राल उसइ तौ वातज है जो छोटी कु-  
 न्दियां परै पीड़ा दाहहो पीली परै पकजायें तो पित्तज है जो ओष्ठ श्वेत कछुक  
 गीढायुक्त पिटका हो उगड़े रहें तौ कफज है जो आठ पिटका पीड़ा सहित हों  
 रुभी श्वेत कभी काला पीलाहो सो त्रिदोषज है जो ओष्ठ रज्जुर फलके रंग  
 हों फुन्सीयुक्त रक्त यहै मासकी गुथी निकसै ओष्ठ में छुमि उत्पन्न हों यह  
 क्तज ओष्ठ है जन ओष्ठ में क्षत लगे से रज्जुआय पकै घाय परै वह क्षत है  
 मांस दुष्टहोके ओष्ठ मोटाहो व मांसपिण्डसा हो सो मांसार्वुद है जिस में ओष्ठ  
 फटके यहै वह खण्डौष्ठ है जो मांसपिण्ड सा मोटाहो पानीसा यहै सो जला-  
 र्बुद है जो ओष्ठ श्वेतरहै श्वेत पानी यहै सो मेदोर्बुद है ओष्ठ में फकत गांठि  
 परिजाय वह अर्बुद है ॥ २० ॥ अथ दश दन्तरोग कहते हैं दालन, कृमिदन्त,  
 दन्तहर्ष, कराल, दन्तचाल, शर्करा ॥ २१ ॥ अधिदन्त, श्यावदन्त, दन्तभेद और  
 कपालिका ये दश दन्तरोग हैं (अस्य लक्षणम्) जो दन्तदीसैं सो दालन है जो  
 दांत कृमि परनेसे काले होजायें पीड़ा करै सो कृमिदन्त है जो उगड़ा पानीदांत  
 में लगे सो दन्तहर्ष है जो दांत टेढ़े बसुरे होजायें तो कराल है जो दांत हलैं सो  
 दन्तचाल है जो दांत में मैल जमके खरसराहट हो सो शर्करा है जो दन्त के  
 तरे दूसरा दांत जमके पीड़ा करै वह अधिदन्त है पित्तकॉष से दांत काला  
 नीला होजाय वह श्यावदन्त है जो दांत हलके पीड़ा करै और हटके बाहर  
 बटिया सी पडजाय वह दांत भेद है जो दांतसे परत उराड़ें वह कपालिका है  
 दंतमूलरोग दांतकी जड़में तेरह तरह का होता है ॥ २२ ॥ तिन तेरह के

स्वमाधुर्यं मुखलेपःप्रसेकता १४ श्वेतावलोकनंश्वेत  
 विट्कत्वंश्वेतमूत्रता । श्वेताङ्गवर्णताशैत्यमुष्णोच्छ्र्वाति  
 क्लृकामिता १५ मलाधिक्यञ्चशुकस्य बाहुल्यं बहुमूत्रता ।  
 श्वालस्यंमन्दबुद्धित्वंत्वृत्तिर्घुर्घरवाक्यता । अचैतन्यञ्च  
 गदिताविशतिःश्लेष्मजागदाः १६ ॥ इति कफजरोगगण  
 ना ॥ रक्तस्यचदशप्रोक्ताव्याधयस्तस्यगौरवम् । रक्तमण्ड  
 लतारक्तेत्रत्वंरक्तमूत्रता १७ रक्तनिष्ठीवनारक्तपिट  
 कानाञ्चदर्शनम् । औष्ण्यञ्चपूतिगन्धित्वं पीडापा  
 कश्चजायते १८ चतुस्सप्ततिसङ्ख्यातामुखरोगास्तथो  
 दितः । तेष्वोष्ठरोगागणिता एकादशमित्ताबुधैः । वात  
 त्य है ३६ जो उजरे में अंधेरा जानपरे वह तमादर्शन है ३७ जो देहमें पीलेरक्त  
 और और देख परे वह पीतमण्डल है ३८ जो देखने में पृथ्वीपर कहीं कहीं पीले  
 ध्वसे से देखपरै वह पीतमण्डलदर्शन है ३९ जो पित्त मुख से वा मलमार्ग से  
 गिरे वह निस्सरत्य है ४० और बीसरोग कफसंभव है तन्द्रा, अतिनिद्रा, गौरव,  
 मुखमाधुर्य, मुखलेप, मसेक ॥ १४ ॥ श्वेतावलोकन, श्वेतविट्कत्व, श्वेतांगव-  
 र्णता, उष्णोच्छ्रा, तिक्लकामिता ॥ १५ ॥ मलाधिक्य, शुकबाहुल्य, बहुमूत्रता,  
 श्वालस्य, मंदबुद्धित्व, तृत्ति, घुर्घरवाक्यता, अचैतन्य ये बीस प्रकार के कफरोग हैं  
 (अस्पलक्षणम्) जिसमें आँसू भरीरहै निद्रा न परै वहतन्द्रा है जो निद्रा  
 विशेषही तौ अतिनिद्रा है जो शरीर भारीरहै वह गौरव है जो मुख में गुडकास्वाद  
 घनारहै वह मुखमाधुर्य जो मुखमें लसलसाहटहो तौ मुखलेप जो लार गिराकरै  
 तौ प्रसेक है जो सर्वत्र श्वेत देसपरै तौ श्वेतावलोकनहै जो श्वेत मलगिरै तौ श्वेत-  
 विट्कत्व है जो मूत्र श्वेतहो तौ श्वेतमूत्र है जो शरीर श्वेतहो तौ श्वेत मार्गवर्णत्व  
 है जो देह उंठी बनीरहै तौ शैत्यताहै जो उष्णपदार्थपर इच्छाहै तौ उष्णोच्छ्रा है  
 जो कटुपदार्थपर चिचपलै तौ श्वालस्य है मंदबुद्धि होनाय तौ मंदबुद्धिहै सूक्ष्माहार  
 से तृप्तिहो तौ तृप्तिहै जो बोलने में गला चर्चराय तौ घुर्घरवाक्यहै मंद चेतनाहो तौ  
 अचैतन्यहै ॥ १६ ॥ रक्तत्रिकारसे दशभांति के रोगहै गौरव, रक्तमंडल, रक्तेत्रत्व,  
 रक्तमूत्रता ॥ १७ ॥ रक्तनिष्ठीवन, रक्तपिटकादर्शन, उष्णत्व, पूतिगन्धित्व, पीडा,  
 पाक ये दशरोग रक्तजन्य हैं इनके नामही सदृश लक्षण हैं ॥ १८ ॥ अथ मुखके जो

पित्तकफैस्त्रेधात्रिदोषैरसृजस्तथा १६ क्षतं मांसार्बुदञ्च  
 व खण्डौष्ठश्च गलार्बुदम् । मेदोर्बुदञ्चार्बुदञ्च रोगाण  
 कादशोष्ठजाः २० दन्तरोगादशाख्याता दालनः कृमिद  
 न्तकः । दन्तहर्षः करालश्च दन्तचालश्च शर्करा २१ अ  
 धिदन्तः श्यावदन्तो दन्तभेदः कपालिका । तथात्रयोद  
 शमितादन्तमूलामयाः स्मृताः २२ शीतादोपकुशौद्रौ तु  
 दन्तविद्रधिपुष्पुटौ । अधिमांसो विदर्भश्च महासौधिर  
 चौहत्तर रोग हैं सो कहता हूं तिसमें ग्यारह ओष्ठरोग पण्डित करते हैं वात से,  
 पित्तसे, कफसे, त्रिदोषसे, रक्तसे ॥ १६ ॥ क्षतज मांसार्बुद, खण्डौष्ठ, जला-  
 र्बुद, मेदोर्बुद, अर्बुद ये ग्यारह ओष्ठरोग हैं जो ओष्ठ कठोर हो काला परजाइ  
 गांठि परै पीड़ा करै सन फूटै फटे या साल उरड़ै तो वातज है जो छोटी फु-  
 न्सीयां परै पीड़ा दाहदो धीली परै पकजाय तो पित्तज है जो ओष्ठ श्वेत कलुक  
 पीड़ा युक्त पिटका हो ठण्डे रहें तो कफज है जो आठ पिटका पीडा सहित हों  
 कमी श्वेत कमी काला पीलाहो सो त्रिदोषज है जो ओष्ठ खरूर फलके रंग  
 हों फुन्सीयुक्त रक्त यह मांसकी गुथी निकसै ओष्ठ में कृमि उत्पन्न हों यह  
 रक्तज ओष्ठ है जन ओष्ठ में क्षत लगे से खजुआय पकै घात्र परै वह क्षत है  
 मांस दुष्टहोके ओष्ठ मोटाहो च मांसपिडसा हो सो मांसार्बुद है जिस में ओष्ठ  
 फटके वड़े वह खण्डौष्ठ है जो मांसपिण्ड सा मोटाहो पानीसा यह सो जला-  
 र्बुद है जो ओष्ठ श्वेतरहै श्वेत पानी यह सो मेदोर्बुद है ओष्ठ में फकत गांठि  
 परिजाय वह अर्बुद है ॥ २० ॥ अथ दश दन्तरोग कहते हैं दालन, कृमिदन्त,  
 दन्तहर्ष, कराल, दन्तचाल, शर्करा ॥ २१ ॥ अधिदन्त, श्यावदन्त, दन्तभेद और  
 कपालिका ये दश दन्तरोग हैं (अस्य लक्षणम्) जो दन्तटीसैं सो दालन है जो  
 दांत कृमि परनेसे काले होजाय पीड़ा करै सो कृमिदन्त है जो ठण्डा पानीदांत  
 में लगे सो दन्तहर्ष है जो दांत टेढ़े बकुरे होजाय तो कराल है जो दांत हलैं तो  
 दंतचाल है जो दांत में मैल जमके खरखराहट हो सो शर्करा है जो दन्त के  
 तरे दूसरा दांत जमके पीड़ा करै वह अधिदन्त है पित्तकोप से दांत काला  
 नीला होजाय वह श्यावदंत है जो दांत हलके पीड़ा करै और हटके बाहर  
 बटिया सी पड़जाय वह दांत भेद है जो दांतसे परत उराड़ै वह कपालिका है  
 दंतमूलरोग दांतकी जड़में तेरह तरह का होता है ॥ २२ ॥ तिन तेरह के

सौषिरो २३ तथैवगतयःपञ्च वातापित्तात्कफाद्रपि ।  
 सन्निपाताद्गतिश्चान्यारक्तनाडीचपञ्चमी २४ तथाजि  
 ह्नामयाःषट्स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा । अलसश्चचतुर्थःस्या  
 दधिजिह्वश्चपञ्चमः । षष्ठश्चैवोपजिह्वःस्यात्तथाष्टौता  
 लुजागदाः २५ श्रुदन्तालुपिटकाकच्छपीतालुसंह  
 तिः । गलशुण्डीतालुशोषस्तालुपाकश्चपुष्पुटः २६ गल  
 नाम शीताद, उपकुश, दंतचिद्रधि, पुष्पुट, अधिमांस, विदर्भ, महासौषिर, सौषिर ॥  
 २३ ॥ इतमे वातादि दोषे दंतनाडीरोग पांच प्रकारकाहै वात नाडी, पित्तनाडी,  
 कफनाडी, सन्निपातनाडी, रक्तनाडी ये तेरह दंतमूल रोगहै (अथास्यलक्षणम्)  
 जो मसूदा फटि जाय रक्तदे तो शीतादहै जो मसूदा में दाहहोय पके दांत हलै  
 पीड़ा कमहो रक्त वहै फूलै मुखमें दुर्गन्ध आवै वह उपकुश है जो मसूदा बाहर  
 वा भीतर सूजे पिराय रुधिर पीयदेइ सो दंतचिद्रधि है जो दो तीनदांत का म-  
 सूदा विशेष फूलै वह पुष्पुट है जो चौहटके मसूदा में पीड़ा अधिकहो वह अ-  
 धिमांस है जो मसूदा दांत गिराने के लिये दांत रगड़ाकरै वा ग्रण उत्पन्नकरै  
 वा सूजन विशेष उत्पन्नकरै दांत हिलावै वह विदर्भहै जिस मसूदा में दांत हिलै  
 और तालु फटिजाय और मसूदा गलिजाय वह महासौषिर है जो मसूदा  
 पिराय के सूजे लार गहावै वह सौषिर है जो मसूदा में फोड़ाहोके पके फूटे  
 और पोलापर दुर्गन्ध आवै लांबी नाडीसी दावने में समुभपरै वह नाडीहै इस  
 नाडीमें जिसदोपका अधिकार जानिपड़े वह वही नाडी जानिये ॥ २४ ॥ अब  
 जिहारोग कहते हैं जीभ में छःप्रकारके रोगहैं वातजन्य, पित्तज, कफज, अलस,  
 अधिजिह्व, उपजिह्व ये छःनाम हैं (अथास्य लक्षणम्) जो जीभ फटिके मधुरादि  
 पदरस का स्वादु परिज्ञान न होय जैसे भारवाङ्देश में जिह्वा वृत्त सरस्तराय तो  
 वातजहै जो जीभ लाल वा पीली परजाय दाहकरै फाटेपरै सो पित्तजहै जो जीभ  
 में फारेकांटेसे उठै और मोटेहो और रवेतजीभहो तो कफजहै जो जीभ अपनीजड़  
 की शोरखिचिजाइ और सूजन अधिकहो और अड़नकिजाइतो अलसहै जो जीभकी  
 नाकसम सूजन जीभ होइ पकिकै वहै तो अधिजिह्व असाध्यहै जो जीभकी नोकसी  
 सूजन नरहो और लालहो खलुआय उसे उपजिह्व जानो ॥ २५ ॥ (अथाष्ट प्रकार  
 तालुरोग ) श्रुदन्तालुपिटका, कच्छमी, तालुसंहति, गलशुण्डी, तालुशोष, तालु-  
 पाक, पुष्पुट (अस्यलक्षणम्) तालुके मध्यमें कमलाकुरसमान उत्पन्नहो और

रोगास्तथाख्याताअष्टादशमिताबुधैः । वातरोहिणिकां  
 पूर्वद्वितीयापित्तरोहिणी २७ कफरोहिणिकाप्रोक्तात्रिदो  
 वैरपिरोहिणी । मेदोरोहिणिकाचन्दोग्लौघोगलविद्रधिः ।  
 स्वरहातुण्डिकेरीचशतघ्नीतालुकोर्बुदम् २८ गिलायुर्वल  
 यश्चापि वाताद्गण्डःकफात्तथा । मेदोगण्डस्तथैवस्यादि  
 त्यष्टादशकण्ठजाः २९ मुखान्तःसम्भवारोगाह्यष्टौख्या  
 तामहर्षिभिःमुखपाकोभवेद्वातात्पित्तात्तद्वत्कफादपि ३०  
 रक्ताच्चसन्निपाताच्चपूत्यास्योर्ध्वगुदावपि । अर्बुदं चेतिमुख  
 जाश्चतुस्सप्ततिरामयाः ३१ कर्णरोगास्समाख्याताअष्टा  
 क्तार्बुदके लक्षण मिलें सो तालुअर्बुदहै जो तनिके मूजें रक्तविकार सम पीडादाह  
 हो सो पिटफहै जो कल्लुवा कीसी पीठ मूजआवै पीडा थोड़ीहो सो कच्छपिफा  
 है जो तालुके बीचमें लंगी मूजनहो पीडाकरै सो तालुसंहतिहै जो तालुकी जड़  
 लम्बी मोटी मूजजाय वह गलशुंठीहै जो तालु फूटै फटै सो तालु शोष है जो  
 पकिजाइ सो तालुपावहै जो भरवेरी के समान प्रांये परिजाइ और मेदकेबाधित  
 हो सो पुष्पुटहै ॥ २६ ॥ ( अथाष्टप्रकार कण्ठरोग ) वातरोहिणी, पित्तरो-  
 हिणी ॥ २७ ॥ कफरोहिणी, त्रिदोषरोहिणी, वृन्द, ग्लौघ, गलविद्रधी, स्वरहा,  
 तुण्डिकेरी, शतघ्नी, तालुक, अर्बुद ॥ २८ ॥ गिलायु वलय, वातगण्ड, कफगण्ड  
 और मेदोगण्ड ये अठारह प्रकारके कण्ठज रोगहैं ( अथास्य लक्षणम् ) जीभ  
 की जड़के पास चनेके सम छोटीहो गलेके मार्गको रोपकरै इसमें त्रिदोष वा मेद  
 जिसका विशेष लक्षण मिलै वही रोहिणी जानौ पांच रोहिणी तेरह औरहैं सो  
 बहुतभाति गलेके भीतर जत गाठि मूजन होकै कंठरोज करि पीडा करतेहैं और  
 तीनि गण्ड ऊपर होतेहैं जिसे घेया कहते हैं सो तीनों टोप मे होतेहैं जिनका  
 लक्षण मिलै वही प्रधान जानौ ग्रंथगौरव होनेके कारण इस ग्रंथमें नहीं लिखत ॥  
 २६ ॥ मुखके अन्त में आठ प्रकारके रोगहैं ये सब मिलिके मुखके भीतर चोइ-  
 चर भांतिके रोगहैं वातमुखपाक, पित्तमुखपाक, कफमुखपाक, ॥ ३० ॥ रक्तमु-  
 पाक, सन्निपातमुखपाक, दुर्गन्ध, उर्ध्वगुद और अर्बुद ये आठ मुखके रोग ॥  
 ( अथास्य लक्षणम् ) मुखके भीतर चारों ओर फुन्सी होयें फिडाकरै उन में  
 जिस दोषके लक्षण पाये जायें वही मुखपाक जानौ मुखमें फोडा होके दुर्ब  
 आयें सो दुर्गंधास्यहै मुखके भीतर फोडा होके स्थिर जब तो उर्ध्वगुद मं

दशमितावुधैः । वातात्पित्तात्कफाद्भक्तात्सन्निपाताच्चवि  
 द्राधिः । शोथोर्बुदंपूतिकर्णः कर्णार्शःकर्णहल्लिका ३२ वा  
 धिर्यंतन्त्रिकाकण्डूःशङ्कुलीकृमिकर्णकः । कर्णनादःप्रती  
 नाहृत्त्यष्टादशकर्णजाः ३३ कर्णपालीसमुद्भूतारोगाःस  
 त्तद्दहोदिताः । उत्पातःपालिशोषश्चविदारीदुःखवर्द्धनः॥  
 की गाठि उत्पन्न होके पीड़ाकरै वह अर्बुद है ॥ ३१ ॥ वा कर्णरोग अठारह  
 प्रकारके हैं वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, विद्रधि ॥ ३२ ॥ कर्णशोष, अर्बुद, पूति  
 कर्ण, कर्णार्श, कर्णहल्लिका, वाधिर्य, तंत्रिका, कण्डू, शङ्कुली, कृमिकर्णक, कर्ण-  
 नाद, प्रतीत हैं ये अठारह नाम कानरोग के हैं ( अथास्य लक्षणम् ) कान में  
 शब्द उठै पीड़ाहो और मल मूत्रिके पानी बहै तो वातहै जो लाल सूजनहोके  
 फटै दुर्गन्ध आवै और बहै वह पित्तजकर्णरोग है जो सूजनहो गुजाय और मद  
 विकनासा बहै कमसुने पीड़ाकरैसो कफज कर्णरोगहै जिसमें कुछ पित्तके लक्षण  
 मिले वह रक्तज कर्णरोग है जो तीनों दोषके लक्षण पाये जाय वह सन्निपात  
 कर्णरोगहै कानमें घाव या विद्रधि होके वा फोटा होके पीय वा रक्त बहै सो क-  
 र्णविद्रधि है जो कानमें सूजनहो तो कर्णशोष है जो कानमें गिलटी सी होके  
 पिराय तो कर्णबुद है जो दुर्गन्धित पीय बहै तो पूतिकर्ण है जो चनेकी चेंटी  
 सीहो खजुआइ दाह पीड़ाकरै तो कर्णार्श है जो कानमें कोई जंतु प्रवेशकरै उसके  
 चलने से विकल होती है स्थिर रहनेसे स्वस्थ रहती है इसे कर्णहल्लिका कहते हैं  
 जो सुनि न परै तो वाधिर्य है जो कानमें धीन शब्दसा भनभनाहटहो तो तन्त्रिक  
 जो कान खजुआइ और कर्णमल सूबनाइ सो गुथी है पिटकाहो बहै सो श-  
 ष्कुली है ग्रंथान्तर में कर्णघ्रात्र कहते हैं जो कानमें कीड़ा परजाइ सोकृमिकर्ण  
 है जो भेरे मृदंगादि फासा शब्द पूरित रहै तो कर्णनाद है जो कर्णमल  
 गलिके बहै तो प्रतिनाद है उसे अथाशीशी भी कहते हैं ॥ ३३ ॥ कर्णपाली रोग  
 सातप्रकार का है अत्यातयाती, शोषपाली, विदारी, दुःखवर्द्धन, परिपोट, सेही,  
 पिप्पली ( अथास्य लक्षणम् ) कर्णरोगके ऊपर जो शूर्पाकार परदा है उसे  
 पाली कहते हैं उसे भारी आभूषण पहिरने से वा खजुआने से वा दूजाने से  
 कालपर पके दाह पीड़ाकरै फिर सूजके लाल होजाइ सो अत्यातयै जो पाली  
 मूत्रिके छोटी परिजाइ तो शोषपाली है जो पाली फटिके खजुआइ सो विदारी  
 है जो कान की नस छिदजाइ वा विदारीत छेद हो तो विद्र चदनमें सूजे जलन  
 हो पके सो दुःखवर्द्धन है जो गहना पहिरने छतारने से सूजे कालापर पके

परिपोटश्चलेहीचपिप्पलीचेतिसंस्मृताः ३४ कर्णमूला  
मयाःपञ्चवातात्पित्तात्कफादपि।सन्निपाताच्चरक्ताच्चतथा  
नासाभवागदाः ३५ अष्टादशैवसङ्ख्याताःप्रतिश्याया  
स्तुतेष्वपिवातात्पित्तात्कफाद्रक्तात्सन्निपातेनपञ्चमः।आ  
पीनसःपूतिनासोनासार्शोभ्रंशथुःक्षवः।नासानाहःपूतिर  
क्तमर्बुदंद्दुष्टपीनसम्।नासाशोषोघ्राणपाकःपुटस्त्रावश्च  
दीप्तकः ३६ तथादशशिरोरोगावातेनार्द्धावभेदकः॥ शिर  
सो परिपोट है जो पाली में नन्हीं २ फुंसी हो खजुआय जलन हो सो लेही है  
जो पाली में वेदनारहित सूजनहो स्तब्धहो सो पिप्पली है ग्रंथांतर में उन्मय  
नाम है ॥ ३४ ॥ कर्णमूल पंचमकार के है वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज,  
रक्तज ( अथास्य लक्षणम् ) कानकी जड़के नीचे सूजनको कर्णमूल कहते हैं  
वातसेपीड़ा पित्तसेदाह कफसे खाज त्रिदोष से तीनों लक्षण रक्तसे लालदाह  
संयुक्त ॥ ३५ ॥ नाकमें अठारह प्रकार के रोग हैं उनमें पांच प्रतिश्याय हैं  
वातप्रतिश्याय, पित्तप्रतिश्याय, कफप्रतिश्याय, रक्तप्रतिश्याय, सन्निपातप्रति-  
श्याय, पीनस, पूतिनास, नासार्श, भ्रंशथु क्षव नासानाह, पूतिरक्त, अर्बुद, दुष्ट  
पीनस, नासाशोष, घ्राणपाक, पुणस्त्राव, दीप्तक ये अठारह प्रकार हैं ( अथास्य  
लक्षणम् ) प्रतिश्याय कहे नाक बहना नाकमन्द होके फिर कुछ पानी वही कण्ठ  
तालु ओठ सूखजाइ कनपटी में पीड़ाहो सो वातप्रतिश्याय है जो काला पीला  
पानी वही सो पित्तप्रतिश्यायवही जो कफसा श्वेतपानी वही माथा जकड़ारहै सो कफ  
प्रतिश्याय है जो रक्त वही नेत्रलाल हो तो वायुपद्मी रक्तप्रतिश्यायवही जो तीनों  
दोष मिलै तो सन्निपातप्रतिश्यायवही जो नाक सूखिके चैली उखरै सुगंध दुर्गंधजान  
पर श्वासधूरिसी आवै तो पीनसहै जो नाक वा मुँहसे दुर्गंध आवै तो पूतिनास  
है जो मांसकी फुटकी उठआवै तो नासार्श है नाकड़ा भी कहते हैं जो प्रथम कफ  
सूर्यास्त से अनापास गिरै तो भ्रंशथु है जो ढींक अधिक आवै तो क्षव है जो  
श्वासासरोध हो तो नासानाह है जो अभिवात से रक्त वा पीप वही तो पूतिरक्त  
है जो नाकके भीतर खुटियासी परिजाय तो अर्बुदहै जो पीनस से अधिक कण्ठ  
देह तो दुष्ट पीनस है इसे पीनस भी कहते हैं जो कण्ठ करि रसिचने से श्वासआवै  
जाय तो नासाश्वास है जो नाक फुटिके ऊपर से पीप वही तो घ्राणपाक है जो  
नाक से पीप वा कनकी वही सो पुटस्त्रावहै जो नाक में दाहहोके देह संतप्तहै

स्तापश्चवातेनपित्तात्पीडात्तृतीयका ३७ चतुर्थीकफजा  
पीडारक्तजासन्निपातजा । सूर्यावर्ताच्चिन्नरःपाकात्कृमिभिः  
शङ्खकेनच ३८ तथाकपालरोगाःस्युर्नवतेषूपशीर्षकम् ।  
अरुंधिकाविद्रधिश्चदारुणंपिटकार्बुदम् । इन्द्रलुप्तञ्च  
खालित्यंपलितंचैतितेनव ३९ तथानेत्रभवाः ख्याता

तौ दीप्तकृद्वै ॥ ३६ ॥ माथेके दश प्रकारके रोगहैं अर्द्धावभेद, वातजशिरोभिताप,  
पित्तजशिरोभिताप ॥ ३७ ॥ कफजशिरोभिताप, रक्तजशिरोभिताप, सन्निजशिरो-  
भिताप, सूर्यावर्तशिरोभिताप, शिरःगक, कृमिजशिरोभिताप, शङ्खक ये दश रोग  
हैं जो बायु निज कोप वा कफकी सहायतासे अर्द्धमस्तकमें निरोधकरै वचिलक  
कुदारके प्रहार सम उत्पन्न होतीहो व उसी कनपटीमें कान नेत्र ललाटमें अधिक  
पीडा करती है व आंख भी लाल होती है सो अर्द्धावभेदक है उसे आयाशीशी  
भी कहते हैं जो रातिको व्यथा बढ़े वह वातजशिरोभिताप है जो मस्तक आरासा  
धिरै नाकसे श्वास घुआंसीकहै रातिको ठंडकरहै सो पित्तजहै जो माया भारी  
हो रंध जाय मुँहपर भरमराहट हो सो कफजहै जो पित्तलक्षणयुक्त माया अति  
उष्ण रहै हाथ से छुआ न जाय सो रक्तजशिरोभिताप है जो तीनों दोष पाये  
जायँ जो सन्निपात शिरोभिताप है जो सूर्योदय से भौह और आंखि में पीडा  
बढ़ती जाय और दुपहर से दिन उतरते उतरतीजाय सो सूर्यावर्त है जो माथे का  
रुधिर वा चरबी क्षय होजाय व छींक बहुत आवै पीडाकरै सो शिरपाक है जो  
मस्तक में कृमिपर व भालासा कोंचै व माथेकी मज्जा चरलेमे व कनपटी में अति  
पीडा व सूजन हो ती पित्तवायु रक्तकोप से शङ्कक होताहै सो विपसदश माया  
गलानिरोधकरि तीनदिनमें प्राण्य हरलेतहै इसमें वैद्य तीन दिन वीतजाने पर  
धिक्रिस्ता करते हैं ॥ ३८ ॥ (अथ कपालरोग) नवमकारहै उपशीर्षक, अरुंधिका,  
विद्रुषी, दारुण, पिटका, अर्बुद, इन्द्रलुप्त, खालित्य, पलित ये नवरोग हैं ( अ-  
धास्यलक्षणम् ) वातादि दोष कोपकरि कपालमें सूजन उत्पन्नकरै जो दोष अ-  
धिकहो वही उपशीर्षकहै जो कृमि करिके बहुत छिद्रहो वह सो अरुंधिकाहै जो  
मस्तक में ग्रन्थि परिकै पिराय सो विद्रुषिहै जो माया रूपाहो भूसी जमें और खनु-  
आय सो दारुणहै इसे रूसी भी कहते हैं जो माथे में बटिया सट्टण ऊंचीहोय वह  
पिटकाहै जो पीडा संशुक्तहो व मस्तक में गांठिसी होके पीडा करै ती अर्बुदहै कफ  
रक्त कापकरि रोकै छेदोंको खंधिके गिराय देते हैं सोई इन्द्रलुप्तहै और वह भी होनाहै



इचतुर्नवतिरामयाः । तेषुवर्त्मगदाः प्रोक्ताश्चतुर्विंशति  
 सङ्ख्यकाः ४० कृच्छ्रोन्मीलः पक्ष्मशातः कफोत्क्लिष्टश्च  
 लोहितः । अरुग्निमेषः कथितो रक्तोत्क्लिष्टः कुकूणकम्  
 ४१ पक्ष्मार्शः पक्ष्मरोधश्च पित्तोत्क्लिष्टश्च पोथकी । शिल  
 ष्टवर्त्मा च वहलः पक्ष्मोत्सङ्गस्तदावुद्दम् ४२ कुम्भिकांसि  
 कतावर्त्मा लगणोज्जननामिका । कर्दमः श्याववर्त्मा च  
 विषवर्त्मा तथा लजी ४३ उत्क्लिष्टवर्त्मेति गदाः प्रोक्ता  
 वर्त्मसमुद्भवाः । नेत्रसन्धिसमुद्भूतानवरोगाः प्रकीर्ति  
 ताः ४४ जलस्रावः कफस्रावो रक्तस्रावश्च पर्वणी । पूय  
 स्रावः कृमिग्रन्थिरुपनाहस्तथालजी ४५ पूयालस इति  
 प्रोक्ता रोगानयनसन्धिजाः । तथा शुक्लगतारोगावुधैः  
 प्रोक्तास्त्रयोदश ४६ शिरोत्पातः शिरार्हर्षः शिराजालश्च  
 शुक्लिका । शुक्लार्मचाधिमांसार्म प्रस्तार्मचपिष्टकः  
 ४७ शिराजापिटका चैव कफग्रथितकोर्जुनः । स्नाय्व  
 र्मचाधिमांसः स्यादिति शुक्लगतागदाः । तथा कृष्णसमु  
 द्भूताः पञ्चरोगाः प्रकीर्तिताः ४८ शुद्धशुक्रं शिराशुक्रं क्षत  
 तसे वादरोरा भी कहते हैं जो माथेके वार गिरके चिकना होजाय सो खालित्य  
 कोई बंदुवा है जो काल या अकालमें केश श्वेत होजाई सो पलित है ॥ ३६ ॥ नेत्र  
 मण्डल में ६४ रोग हैं उनमें वर्त्मगद २४ हैं ॥ ४० ॥ कृच्छ्रोन्मील, पक्ष्मशात, कफो-  
 त्क्लिष्ट, लोहित, अरुग्निमेष, रक्तोत्क्लिष्ट, कुकूणक ॥ ४१ ॥ पक्ष्मार्श, पक्ष्मरोध,  
 पित्तोत्क्लिष्ट, पोथकी, शिलष्टवर्त्मा, वहल, पक्ष्मोत्संग, अर्बुद ॥ ४२ ॥ कुम्भिका,  
 सिकतावर्त्म, लगण, अज्जननामिका, कर्दम, श्याववर्त्मा, विषवर्त्मा, अलजी ॥ ४३ ॥  
 उत्क्लिष्टवर्त्मा यह रोग वर्त्मसमुद्भूत हैं नेत्रकी संधिमें ६ रोग हैं ॥ ४४ ॥ जलस्राव,  
 कफस्राव, रक्तस्राव, पर्वणी, पूयस्राव, कृमिग्रंथि, उपनाह, अलजी ॥ ४५ ॥ पूया-  
 लस ये नयनसंधिनरोग हैं तथा नेत्रके सफेद भागमें तेरह रोग हैं ॥ ४६ ॥ शिरो-  
 त्पात, शिरार्हर्ष, शिराजाल, शुक्लिक, शुक्लार्म, अधिमांसार्म, प्रस्तार्मचपिष्टक ॥ ४७ ॥  
 शिराजापिटका, कफग्रथितक, थुन, स्नाय्वर्म, अधिमांस ये शुक्लगत रोग हैं नेत्रकी

शुक्रं तथाजकः । त्रिरासङ्गश्चसर्वेपिप्रोक्ताःकृष्णगता  
 गदाः ४९ काञ्चतुषड्विधंज्ञेयं वातात्पित्तात्कफादपि । स  
 त्रिपाताच्चरक्ताच्चपटुसंसर्गसम्भवम् ५० तिमिराणिपडे  
 वस्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा । संसर्गेणचरक्तेन षट्स्यात्स  
 त्रिपाततः ५१ लिङ्गनाशः सप्तधास्याद्वातात्पित्तात्क  
 फेनच । त्रिदोषैरुपसर्गेणरक्तात्संसर्गजस्तथा ५२ अ  
 ष्टधादृष्टिरोगाः स्युस्तेषुपित्तविदग्धकम् । अम्लपित्तं वि  
 दग्धञ्च तथैवोष्णविदग्धकम् ५३ नकुलान्ध्यधूसरान्ध्यं  
 रात्र्यान्ध्यंहृस्पदृष्टिकः । गम्भीरदृष्टिरित्येते रोगादृष्टिग  
 ता स्मृताः ५४ चत्वारश्चाधिमन्थाःस्युर्वातपित्तकफास्त  
 तः । अभिष्यन्दाश्चचत्वारो रक्ताद्दोषैस्त्रिभिस्तथा ५५  
 सर्वाक्षिरोगाश्चाष्टौस्युस्तेषुवातविपर्ययः । अम्लशोफो  
 न्यतोवातस्तथापाकात्ययःस्मृतः ५६ शुष्काक्षिपाकश्च  
 तथा शोफोध्युषितएवच । हताधिमन्थइत्येतेरोगाः  
 सर्वाक्षिसम्भवाः ५७ पुंस्त्वदोषास्तुपञ्चैव प्रोक्तास्तत्रे  
 ष्यकःस्मृतः । आसेक्यश्चैवकुम्भीकस्सुगन्धिःषण्ढसञ्ज  
 कः ५८ शुक्रदोषास्तथाष्टौस्युर्वातपित्तकफेनच । कुणपंश्ले  
 काली जगह मे ७ रोग हैं ॥ ४८ ॥ शुद्धशुक्र, शिराशुक्र, क्षतशुक्र, अजक,  
 शिरासंग ये काली पुतलीके रोगहैं ॥ ४९ ॥ कांच ६ तरहकाहै वात, पित्त,  
 कफ, संसर्ग, रक्त, सत्रिपात ॥ ५० ॥ तिमिर ङः प्रकारकाहै वात, पित्त, कफ,  
 संसर्ग, रक्त व सत्रिपात से ॥ ५१ ॥ लिङ्गनाश ७ प्रकारकाहै वात, पित्त कफ,  
 विदोष, उपसर्ग रक्त, संसर्ग से ॥ ५२ ॥ नेत्ररोग ८ प्रकारके हैं उसमें पित्त-  
 विदग्धक, अम्लपित्त, विदग्ध, उष्णविदग्धक ॥ ५३ ॥ नकुलान्ध्य, धूसराध्य,  
 रात्र्यान्धः य, हृस्पदृष्टिक, गम्भीरदृष्टि ये दृष्टिगतरोगहैं ॥ ५४ ॥ चार अधिमन्थ हैं  
 वात, पित्त, कफ, अभिष्यन्द् ४ रक्तसे दाह से ॥ ५५ ॥ सप्त नेत्ररोग ८  
 हैं उसमें वातविपर्यय, अम्लशोफ वात, पाकात्यया ५६ ॥ शुष्काक्षिपाक, शोफ,  
 अम्लोपित्त ये अधिमन्थरोग नेत्र में उत्पन्नहोते हैं ॥ ५७ ॥ पुंस्त्वदोष पाचही

ष्मर्वाताभ्यां पूयाभंश्लेष्मपित्ततः ६१ क्षीणञ्चवात  
 पित्ताभ्यां ग्रन्थिलंश्लेष्मरक्ततः ६० मलानांसन्निपाताच्च  
 शुक्रदोषाद्वितीरिताः ६० अथस्त्रीरोगनामानि प्रोच्यन्तेपूर्व  
 शास्त्रतः । अष्टावैतवदोषास्स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा । पूया  
 भंकुणपंग्रन्थिक्षीणमलसमन्तथा ६१ तथाचरक्तप्रदरं  
 चतुर्विधमुदाहृतम् । वातपित्तकफैस्त्रिधाचतुर्थसन्निपात  
 तः ६२ विंशतिर्योनिरोगाः स्युर्वातात्पित्तात्कफादपि । स  
 न्निपाताच्चरक्ताच्चलोहितक्षयतस्तथा ६३ शुष्काचवामि  
 नीचैवषण्ठीचान्तर्मुखीतथा । सूचीमुखीविप्लुताचजात  
 ध्नीचपरिप्लुता ६४ उपप्लुताप्राक्चरणामहायोनिश्चकणि  
 का । स्यान्नन्दाचातिचरणायोनिरोगाद्वितीरिताः ६५ चतु  
 र्विधंयोनिकन्दं वातपित्तकफैस्त्रिधा । चतुर्थसन्निपातेन  
 तथाष्टौगर्भजागदाः ६६ उपविष्टकगर्भः स्यात्तथानागो  
 दरःस्मृतः । मक्कल्लोमूढगर्भश्च विष्टम्भोमूढगर्भजः ।  
 जरायुदोषोगर्भस्य पातश्चाष्टमकःस्मृतः ६७पञ्चैवस्त  
 ६ ईर्ष्यक, आसेत्रय, कुम्भीक, मुग्गनि, पण्ड ॥ ५८ ॥ और शुक्रदोष = है  
 वात पित्त कफसे कुणप श्लेष्म और वातसे पूयाभ, श्लेष्म और पित्तसे ॥ ५९ ॥  
 क्षीणवात पित्तसे ग्रन्थिल, श्लेष्म और रक्तसे मलों के सन्निपात से ये शुक्रदोष  
 कहे ॥ ६० ॥ अथ स्त्रियों के रोग कहते हैं = अतु से वात, पित्त, कफ से ३  
 प्रकारके पूयाभ, कुणप, ग्रन्थि, क्षीण तथा मलसम ॥ ६१ ॥ रक्तप्रदर ४ प्रकार  
 का है वात, पित्त, कफ से तीन प्रकार का चौथा सन्निपात से ॥ ६२ ॥ बीस  
 योनिरोग हैं वात, पित्त, कफ, सन्निपात, लोहित क्षय से ॥ ६३ ॥ शुष्का,  
 वामिनी, पण्ठी, अंतर्मुखी, सूचीमुखी, विप्लुता, जातत्री, परिप्लुता ॥ ६४ ॥  
 उपप्लुता, प्राक्चरण, महायोनि, कणिना, नन्दा और अतिचरणा ये बीस योनि  
 रोग हैं ॥ ६५ ॥ चार प्रकार का योनिकन्द है वात पित्त कफ से ३ प्रकारका  
 चौथा सन्निपात से = आठ रोग गर्भज हैं ॥ ६६ ॥ उपविष्टक, नागोदर,  
 मक्कल्ल, मूढगर्भ, निष्टम्भ, मूढगर्भज, जरायुदोष, पात ये आठ हैं ॥ ६७ ॥ अथ पाच

नरोगाःस्युर्वातात्पित्तात्कफादपि । सन्निपातात्क्षताञ्चैव  
 तथास्तन्योद्भवागदाः६८ बालरोगेषुकथिताःस्त्रीदोषाश्च  
 त्रयःस्मृताः । अदक्षपुरुषोत्पन्नःसपत्नीविहितस्तथा ६९  
 दैवाज्जातस्तृतीयस्तु । तथायैसूतिकागदाः । ज्वरादय  
 शिचकित्स्यास्तेयथादोषयथावलम् ७० द्वाविंशतिर्बाल  
 रोगास्तेषुक्षीरभवाश्चयः । वातात्पित्तात्कफाञ्चैवदन्तो  
 द्वेदश्चतुर्थकः । दन्तघातोदन्तशब्दो कालदन्तोहिपूतन  
 म् ७१ मुखपाकोमुखस्त्रावोगदपाकोपशीर्षिक । पाश्वारु  
 णस्तालुकण्ठोविच्छिन्नपारिगम्भिकः ७२ दौर्बल्यगात्रशो

प्रकार स्तनरोग वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, क्षतज जैसे ये पांच स्तन  
 रोग हैं ऐसे ही वातादि पांच रोग दूध उतरने में स्तनरोग बालरोग में करे हैं दूध  
 पाली या बिना दूधवाली स्त्रीके स्तनमें वातादि दोष कोपकरि मांस जो रक्त दूषित  
 करे तो पांच प्रकार के रोग हों वे रक्तज विद्रोष के सब लक्षण युक्त होते हैं  
 दातजमें बाँपुके ऐसे दोष प्रति जानना ॥ ६८ ॥ स्त्रीके दोष उत्पन्न करनेवाले तीन  
 दोष हैं अदक्षपुरुष कहे स्त्रीके व्यवहारमें चतुरन होय उसके संताप करिके जो रोग  
 उत्पन्न होय वह अदक्ष पुरुषोत्पन्न कहिये जो सवति की ईर्ष्या संताप कारण करके  
 रोग होय वह पत्नी विहित है जो निजस्त्रीसे पुरुष प्रसन्नतासे मत न देय औरही  
 स्त्रीसे स्नेह रखता होय इस चिन्तासे कुराहोवे शरीरमें जो रोग उत्पन्न होताह वह  
 दैहिक है ॥ ६९ ॥ अथ बालांत रोग जो बालक होने के अन्तमें रोग उत्पन्नहोय  
 वह बालांत है उसीको प्रभृति भी कहते हैं इसमें ज्वरादिरु दोष देखिके औररोग  
 का बलापल विचारिके चिकित्सा करना जिसमें देह मोटे ज्वर, प्यास, सूजन,  
 शूल, अतीसारहो सो असाध्य है जो केवल खाने पीनेसे हुआह वह ज्वरादिक  
 विशेष भयङ्कर है जो मकलरोग करिके शूल उत्पन्न करे और रक्त अनरोधनकरि  
 संदेहमें शूल उत्पन्न करे वह बहुत दुःखदायी है वह शूलनामसे मकलह ॥ ७० ॥  
 अथ चाँस प्रकारके बालरोग हैं तिनमें तीन रोग माताके स्तनसम्बन्धी हैं वातज,  
 पित्तज, कफज ये दूधसम्बन्धी हैं चार रोग दातन के हैं दतोद्भेद, दंतघात,  
 दंतशब्द, अकालदंत ये ४ दंतरोग हैं एक पूतना ॥ ७१ ॥ मुखपाक, मुखस्त्राव,  
 मुद्रपाक, उपशीर्षिक, पारवारुण, तालुकण्ठ, विच्छिन्न, पारिगम्भिक ॥ ७२ ॥

विंशतिःस्मृताः ७३ तथावालग्रहाःख्याताद्वादशैत्रमुनी  
 श्वरैः । स्कन्दग्रहोविशाखःस्यात्खग्रहरचपितृग्रहः ७४ नै  
 गमेयग्रहस्तद्वच्छकुनिःशीतपूतनामुखमण्डितिकातद्वत्प  
 पारिगधिकके लक्षणं । जो शरीर बहुत दृश होजाय सो गात्रशोष और मुख  
 दीपी कहते है इसमें उबकाई और अतीसार भी होताहै जो बालक अमानहकी  
 राति व दिनेकी विज्ञाना में मृत सो शय्यामंत्र है दुग्धपसे बालक को आख  
 की पलकपर खाजहोके आखिसे पानी बहतारहै और बालक आखि नाक म  
 स्त न पसतारहै उजारेमें आखि नहीं खोले तो उसे कुकणक कहतेहै जो बालक  
 विशेषरौं उसका क्रम वह रोवना देखिके अनुमान करिके रोग जानना वह  
 रोदनहै कक कोपसे बालक के शरीर में भूगाली विडकी है शरीरके रंगमें मिल  
 रहती है पीडा नहीं करती एकस एक मिलके रहती है वह अजगती है सो वा  
 लकके शोषके होताहै जवानके क्रम होताहै ॥ ७३ ॥ और बारह प्रकारके बाल  
 ग्रह रोगहै स्कन्दग्रह, विशाखाग्रह, खग्रह, पितृग्रह ॥ ७४ ॥ नैगमेय, शकुनि, शीत  
 पूतना, मुखमण्डितिका, पूतना, अधपूतना, रवती और शुक्ररपती ये बारह प्रकारहै  
 ( अथ सामान्यलक्षणम् ) स्कन्दादि द्वादशग्रहग्रस्त बालक अनायास धौ  
 फता है उठि न बैठता है ओठ दांत चचाता है मुगसे फेन गिरता है सोता नहीं  
 हाथ पाँव सूज जातेहै मल पतला अर्द्धांतरह धोलता नहीं देहमें मडलीके रक्त  
 कीसी गंध आतीहै दूध नहीं पीता सब ग्रहोंके सामान्य लक्षण जो बालक कुछ  
 कापे आखि देहसे पानी वह वां पूके अंग कापे ऊपरको देखै दांत चचाय मुह देडा  
 बनाये दूध न पिथे कुछ रोवे वह स्कन्दग्रह है जिस ग्रहमें बालकको एवर और  
 ऊर्ध्वदृष्टिहै वह विशाखाग्रह है इसके विशेष लक्षण बालकमें है जिस ग्रहमें  
 बालक वैरोश होजाय मुहसे पानगिरे ज्वरादिक उपद्रवहो रोवे अधिक देहमें रक्त  
 पीवकी गंध आने उसे खग्रह कहते है ग्रयांतर में स्कन्दावस्मार कहतेहै अग्निष्वा  
 चादि पितरो करि पीडित बालकको ज्वरादिक उपद्रव होत है यह पितृग्रहहै नैग  
 मेयग्रह पीडित बालक तिसे उबकाई, कुलकप, कम्बुस्वशोष, पच्छी, देहमें दुग्ध, ऊ  
 र्ध्वदृष्टि, दांत चचाना वह नैगमेयहै जो बालक अंगमालतहो व भयङ्कररूप लक्षण  
 उचकताहो देहमें पत्तीकीसी गंधआने औस विराय उबकाई व अतीसार देहमें दुग्ध  
 यह शीतपूतना है जिस बालक का मुख भतजहो शरीरकी नसें देखिपर अधिक  
 स्थाय देहमें और भ्रममें दुग्ध आये वह मुखमण्डितिका है जिस बालकको ज्वर अ  
 तीसार, पियास, ऊर्ध्वदृष्टि, रोना, निद्राहीन, विहलता वह पूतनाहै जो बालक खांस

तनाचन्धिपूतना ७५ रेवती चैत्रसङ्ख्यातातिर्यास्याच्छु  
 ष्करेवती । तथाचरणभेदास्तुवातरक्तादिकाश्चये । द्विच  
 स्वारिशदुक्तास्ते रोगेष्वेवमुनीश्वरैः ७६ द्विपष्टिर्दोषभे  
 दास्स्युस्सन्निपातादिकाश्चये । तेषिरोगेषुगणिताः पृथ  
 क्प्रोक्तान्तेकचित् ७७ हीनमिथ्यातियोगानां भेदैः प  
 ञ्चदशोदिताः । पञ्चकर्मभधारोगास्तेषुरोगेषुसञ्ज्ञिताः  
 ७८ स्नेहस्वेदोत्प्राधमोगाण्डुषोज्जनतर्पणे । अष्टादशैत  
 ज्ञाः पीडास्ताश्चरोगेषुलजिताः ७९ शीतोपद्रवएकः स्या  
 ज्वरपियास देहमें मेदगन्धरुदन विशेष दूधनयि मल अधिकगिरै बह्मंधपूतना  
 जो बालक की देहमें पिडकी घाव घावसे रुधिर बहै देहमें दुर्गन्ध मल पतला  
 ज्वर वह रेवती है जो बालक को ज्वर शूल अनीर्ण माथमें पीडा मुखशोष सो  
 शुष्करेवती है ॥ ७५ ॥ वातरक्त करिके पांचके रोग सुप्तिपाद, स्तंभपाद, स्फुटन  
 इत्यादिक पांचरोग मुनिलोग बयालीस कहिये हैं सो ये रोग स्तंभपादिक  
 रोगन में प्रथम कहिये हैं सो जानना ॥ ७६ ॥ सन्निपातादिक दोष करिके  
 बासठ ६२ प्रकार के रोग हैं सो वातादिक दोष में भिन्न भिन्न रोग कहियेके  
 हैं परन्तु इन्हें भिन्न करि कोई नहीं कहता ऐसा समझना ॥ ७७ ॥ पंचकर्म  
 चमन, विरेचन, निरुहणवस्ती, अनुवासनवस्ती, नस्य ये पांचों कर्म उत्तरर-  
 षडमें कहेंगे और हीनयोग, मिथ्यायोग, अतियोग इन तीनों प्रकारके भेद हैं सो  
 भी उत्तर में कहेंगे चमन कहे ओषधि देके उबकावना विरेचन कहे ओषधि कं-  
 रके मल गिराना निरुहणवस्ती अनुवासनवस्ती ओषधि की पिचकारी खुदा  
 मार्ग से देनी नस्य कहे नाकमें ओषधि देनेका यत्न इस भांति पांचों कर्म जा-  
 नना हीनयोग, मिथ्यायोग, अतियोग इन से नाना भांति के दुःख उत्पन्न होते  
 हैं ॥ ७८ ॥ स्नेहादि संग्रह भी उत्तरपण्ड में हैं स्नेहपान, स्वेदन, धूमपान,  
 गंडूप, अंजन, तर्पण इन छठों में हीनयोग, मिथ्यायोग, अतियोग ये तीनों भेद  
 करिके अठारह भेद हैं उससे उत्पन्न जो रोग सो उक्त रोगमें संग्रह करि आये  
 हैं ऐसे जानना स्नेहपान, स्वेद, धूमपान, गंडूपता, अंजन यह प्रथम परिभाषा में  
 लिखिये हैं औषधादिक करिके घातुको वृद्ध करनेका प्रयोग उसे तर्पण कहते  
 हैं अथवा नेत्रवृत्तकरने के प्रयोग उसे भी तर्पण कहते हैं ॥ ७९ ॥ शीतादि चारि  
 उपद्रव बहुत ठंडा योग करसे मनुष्यकी ठंडा उपद्रव उत्पन्न होता है बहुत उष्ण

देकश्चोष्णोपतापकः । शल्योपद्रवएकश्चक्षीरश्चैकः  
 स्मृतस्तथाः ८० स्थावरंजङ्गमंचेव कृत्रिमंच त्रिधाविष  
 म् । तेषांच कालकूटाद्यैर्नबंधास्थावरंविषम् । जङ्गमंबहु  
 धाप्रोक्तंत्रलुनाभुजङ्गमाः ८१ वृद्धिचकारूपकाःकीटाः  
 प्रत्येकंतेचतुर्विधाः । दंष्ट्राविषंनखविषंवालशृङ्गास्थिभि  
 स्तथा ८२ सूत्रात्पुरीषाच्छुक्राच्चदृष्टेर्निश्वासतस्तथा । ला  
 लायाःस्पर्शतस्तद्वत्तथाशङ्काविषंमतम् ८३ कृत्रिमंद्विवि  
 धं प्रोक्तं गरदूषीविभेदतः । सप्तधातुविषंज्ञेयंतथासप्तोपधा

उपद्रव उत्पन्न होताहै शल्य कहे नय, क्यू, कांटा, हाड़, सींग, जाड़ा इनके  
 लगनेसे वा इनमें से कोई वस्तु पेटमें जाय उससे जो रोगहोय वह शल्योपद्रव  
 है सूक्ष्म जो संभलपात्र बनातेहैं मरुद्, कषा रहिजाताहै, यह खिलाने से जो  
 रोग उत्पन्न होतो विष, अग्नि, शय वा दम इन्होंकी तरहसे मरताहै, ऐसे चार  
 भेदहैं ॥ ८० ॥ (अथ विषरोग) स्थानर, जंगम, कृत्रिमये तीनप्रकारके विषहैं  
 जिसमें स्थानर विषके नय भेदहैं और जंगम विष बहुत, अथारकाहै तिसमें लता,  
 सांप ॥ ८१ ॥ विच्छ्र, मूषा, क्रीड इसमें वात विच कफ सन्निपात करिके एक  
 एकके चारचार भेद होजते हैं किसीके दांत में विषहै किसीके नखमें किसीके  
 चारमें किसीके सींगमें किसीके हृत्तमें ॥ ८२ ॥ सूत्र, मलमें भातमें दृष्टिमें श्वास  
 में लारमें स्पर्शमें ऐसे भिन्न भिन्न ज्ञाति प्रति विषहैं मन में विषकी शङ्का आने से  
 वायु कुपितहै, ज्वरादि-उपद्रव शरीरमें प्रकट करे सो शङ्काविषहै, ॥ ८३ ॥  
 कृत्रिम विषके दो भेदहैं एक अच्युनागादि एरुदूषी संवत संपत्तिके निमित्त शत्रुता  
 करिके वा स्त्रीलोग नाना प्रकारकी बीजा प्रसीना रज गिनाई, मेल सूत्रइत्यादि  
 अन्न के संग गिला देती है तो प्रांडुत्तर ज्वरादि उपद्रव होता है वा मधुतृप्तयुक्त  
 भयेते विरहोपहै नौचू कपूर मिश्रित भयेते विष, होय यह कृत्रिम विषहै और  
 अच्युनागादि कृत्रिम विष एरुदूरी वार, देहवो नीर्यनरि प्राणलेताहै जिसमें कम  
 पराक्रम है सो प्राण नहीं नाश करसका परन्तु ज्वरादि उपद्रव करिके देशकाल  
 अन्न वा दिवादि निद्रा, करिके धीवित करता है और सतरसादि धःगुनको दू-  
 पित करता है इसी कारण दूषित विष कहने हैं ये दो प्रकारके कृत्रिम विष हैं  
 विषको भेद सुवर्णादिक अगूद सप्तधातुकी मत्रम राने से वा हस्तालादि सप्तत्र-

तुजम् ८४ तथैवोपविषेभ्यश्चजातंसप्तविधंविषम् ।  
 दुष्टनीरंविषं चैकं तथैकं दिग्घजंविषम् ८५ कपिकच्छुभ  
 वाकण्डूदुष्टनीरभवात्तथा । तथासूरणकण्डूश्चशोथोभल्ला  
 तजस्तथा ८६ मदश्चतुर्विधश्चान्यःपूगभङ्गाक्षकोद्र  
 वैः । चतुर्विधोऽन्योद्रव्याणांफलत्वद्भूमूलपत्रजम् ८७ इ  
 तिप्रसिद्धागणिता येकिलोपद्रवाभुवि । असहख्याश्चाप  
 रेधातुमूलजीवादिसम्भवाः ८८ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसंहि  
 तोयारोगगणनायांसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति शार्ङ्गधरस्यप्रथमखण्डस्समाप्तः ॥

आतुकी भस्म खाने से सप्त मदादिक अशुद्ध उपविष खाने से विपसमान पीड़ा हो  
 ती है उसकी विपसंज्ञा है ( अथ दुष्टनीर ) जिस पानी में कीचड़ से बाल पत्ता  
 दिक जन्तु वा बेटकके मल मूत्रसे पानी धिगड़ जाता है उसे दुष्टनीर कहते हैं  
 उसके नहाने से पीने से विपसमान पीड़ित होता है शस्त्रादिक में विष के पानी को  
 चढाते हैं उस शस्त्रके घातका घाव नहीं अच्छा होता और विष सह्य उपद्रव होता  
 है सो दिग्घजविष है ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ अथ चारिप्रकार आगंतुक उपद्रव यनकिमाच  
 दुष्ट पानी सूरन अक्षके छनेसे देह खनुयाय भिन्नावासे देह मूत्रआव इसप्रकार  
 से चारिभेद है और यो चारि प्रकार हैं सुखरी भांग बहेड़ा की मीमी की कोदच  
 धान्य इन चारों के खाने से चारि प्रकारके मूत्र होते हैं इसी प्रकार और भी जानना  
 ८६ ॥ ८७ ॥ ओषधि यनस्पति फूल डार पात मूल इनके खाने से चार प्रकारके  
 मूत्र होते हैं इस प्रकार जो पृथ्वी में मसिद्ध रोगोपद्रव हैं तिनकी संख्या निश्चय  
 करिगये है इससे वा सुवर्णादि आतु हरतालादि उपधातु नानाप्रकारकी वनस्पति  
 वा ओषधि वा जीवादिक करिके अनेक उपद्रव उत्पन्न होते हैं सो उपद्रव असंख्य  
 है अनुमान से जानना ॥ ८८ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरव्याख्यापानिमित्तशार्ङ्गधरमुपाकर  
 नामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति शार्ङ्गधरस्यप्रथमखण्डस्समाप्तः ॥



# शार्ङ्गधरसंहिता ॥

## मध्यखण्डवार्तिकतिलकसंहिता ॥

अथातः स्वरसः १ कल्कः २ काथश्च ३ हिम ४  
फाण्ट ५ को । ज्ञेयाः कषायाः षड्चैते लघवः स्युर्यथोत्तर  
म् १ आहतात्तल्लक्ष्णोत्कृष्टाद्द्रव्यात्क्षुण्णात्समुद्रत्रः । वल्ल  
निष्पीडतोयः स्यात्स्वरसोरसउच्यते २ कुडवंचूर्णितद्रव्यं  
क्षिप्तंचद्विगुणेजले । अहोरात्रातिस्थितं तस्माद्भवद्वा रसउ  
त्तमः ३ आदायशुष्कद्रव्यञ्चस्वरसानामसम्भवे । जलेष्ट  
गुणितेसाध्यपादशेषञ्चगृह्यते ४ स्वरसस्यगुरुत्वाच्चप  
लमर्द्धप्रयोजयेत् । निशशोषितंचाग्निशिद्धंपलमात्रंरसंपि  
वेत् ५ मधुश्चेतागुडक्षाराञ्जीरकंलवणंतथा । घृतंतैलंचूर्  
णादीन्कोलमात्रान्रसेक्षिपेत् ६ अमृतायारसः क्षौद्रयुक्तः स

अथ मध्यखण्डः प्रारभ्यते ॥ अथ काथ गिते काडा करते हैं सो पांच प्रकारका  
स्वरसकहे अद्भरस १ कल्क २ काथ ३ हिम ४ फाण्ट ५ एक से एक गुणमें न्यून  
हे यथा स्वरससे लघु कल्क ॥ १ ॥ उच्यते भूमिसे तुरतकी उतरारी ओषधि जल  
धिन कूटिके बल्लमें डारि निचोरि लेय उस रसको स्वरस कहते हैं ॥ २ ॥ सोई  
द्रव्य फुटव कहे सोलह तोले कूटिके दुगुने पानी में दिनराति भिजोईराखे उसके  
रसको भी स्वरस कहते हैं ॥ ३ ॥ जो द्रव्यहरी नमिले तौ सूखीद्रव्य अठगुणे पानी  
में ओटै जब चौथाई रहै तब लैलेइ ॥ ४ ॥ ओदी द्रव्यका रस गरुआहै इसकारण  
कार्य में आधापल लेना और सूखी द्रव्य रातकी भोजिका रस हलकाहै इससे पल  
भर लेना ॥ ५ ॥ स्वरस व काडा व यन्त्रका निकाला रस इनमें शहद, शकर, गुड,  
खार, जीरा, लोन, घृत, तेल और चूर्ण ये सब आठमाशे युक्त करना ॥ ६ ॥

पूर्वप्रमेहजित् । हरिद्राचूर्णयुक्तो वारसो धात्र्याः समाक्षिकः ७  
 लासं रुस्वरसः पेयो मधुनोरक्तपित्तजित् । ज्वरकासकृद्गह  
 रः कामलाश्लेष्मपित्तहा ८ त्रिफलाधारसः क्षौद्रयुक्तो दा  
 र्दीरसो थवा । निम्बस्यत्रागुडूच्यानापीतो जयतिकामलाम्  
 ९ पीतो मरिचचूर्णेन तुलसीपत्रजोरसः । द्रोणपुष्पीरसो  
 प्येवं निहन्ति विषमज्वरान् १० जम्बवाद्यामलकीनाञ्च  
 पल्लवोऽथोरसो जयेत् । मध्वाज्यक्षरिसंयुक्तोरक्तातीसारमु  
 ल्यणम् ११ स्थूलबन्धूलिकापत्ररसः पानाद् व्यपोहति ।  
 सर्वातिसाराञ्छयोनाककुटजस्वग्रसो थवा १२ आर्द्रकरत्र  
 रसः क्षौद्रयुक्तो वृषणवातनुत् । श्वामकामारुचीर्हन्ति प्रति  
 श्यायं व्यपाहति १३ ब्रीजपूररसः पानान्मधुक्षारयुतो ज  
 गुर्ध का रस शब्द युक्त ताने, से, से, मपेह नाश होय है आंबरे का रस हल्दी वा  
 चूर्ण शब्द मिथित करि रिलाने से भी मपेह नाश होता है ॥ ७ ॥ ( अथ चा-  
 स्त्रास्वरस रक्तपित्तादि पर ) रुतेका स्वरस शब्द भिलायके पियेसे रक्तपित्त  
 नाशहोय और ज्वर, खांसी, क्षयो, कमल, कफ और पित्त इनरोगों को भी नाश  
 करै ॥ ८ ॥ ( अथ त्रिफलादिस्वरस कमलपर ) त्रिफले का रस गूढ  
 वा बड़ी हल्दी का रस शब्द व नींबका रस शब्द वा गुर्ध वा रस शब्द युक्त  
 पिये तौ कमल रोगको नाश करै ॥ ९ ॥ ( अथ तुलसी आदि रस विषम  
 ज्वर पर ) तुलसी का रस मरिचका चूर्ण वा गुमाका रस मरिच साथ पिये  
 तौ विषमज्वर नाशहोय ॥ १० ॥ ( अथ जम्बवादि रस रक्तातीसार पर )  
 जाष्टन, आंब, आंबरा इन तीनों की पत्ती का रस शब्द घृत व दूध सहित पिये  
 तौ दिनी रक्तातीसार दूरहोय ॥ ११ ॥ ( अथ चनूरादिस्वरस अतीनार  
 पर ) चनूरी बालका रस शब्द युक्त भिलायै तौ सात मातिका अतीनार जाय वा  
 कुरैया का रस वा केरीलका रस शब्द सद् पिये तौ अतीनार जाय ॥ १२ ॥  
 ( अथ आर्द्ररुस्वरस अण्डकोश और श्यासपर ) अदरुका रस शब्द  
 संग पिये तौ वाताहृद्धि पचै श्वास, खांसी, अरुचि, नाक रुना ये सबरोग  
 मुक्त होय ॥ १३ ॥ ( अथ ब्रीजपूररस पाश्र्वादि शूलपर ) विनीरा नींबू  
 का रस शब्द और जमाखार सहित पिये तौ पसुरी की शूल, हृदयकी शूल, पेड़

येत् । पार्श्वहृद्वस्तिशूलानिकोष्ठवायुञ्चदारुणम् १४  
 शतावर्याश्चमधुना पित्तशूलहरोरसः । निशाचूर्णयुतः  
 कन्यारसःश्रीहाऽपचीहरः १५ अलम्बुषायाःस्वरसःपीतो  
 द्विपलमात्रया । अपचीगण्डमालानां कामलायाश्चनाश  
 नः १६ रसोमुण्ड्याःसकोष्णोवा मरिचैरवधूलितः । जये  
 त्सप्तदिनाभ्यासात्सूर्यावर्तार्द्धभेदकौ १७ ब्राह्मीकूष्माण्ड  
 पङ्ग्रन्थाशङ्खिनीस्वरसःपृथक् । मधुकुष्ठयुतःपीतःसर्वो  
 न्मादापहारकः १८ कूष्माण्डकस्यस्वरसोगुडेनसहयोजि  
 तः । दुष्टकोद्रवसञ्जातं मदंपानाद्द्व्यपोहति १९ खड्गा  
 दिच्छिन्नगात्रस्यतत्कालपूरितोत्रणः । गाङ्गेरुकीमूलरसे  
 र्जायतेगतवेदनः २० पुटपाकस्यकल्कस्य स्वरसोगृह्य  
 तेयतः । अतस्तुपुटपाकानां युक्तिरत्रोच्यतेमया २१ पु  
 टपाकस्यमात्रेयं लेपस्याद्भारवर्णता । लेपञ्चद्वयङ्गुलं

शूल व कोष्ठबद्ध इन सब रोगनसे निर्मुक्तहोय ॥ १४ ॥ ( अथ शतावरीरस  
 पित्तशूलपर ) शतावरि रस शहद पिये तौ पित्तशूल हरै ( अथ धीकुवार  
 रस श्रीहा पर ) धीकुवाररस हल्दी चूर्ण पिये तौ पित्त, अपची, पेटकी गाठि  
 दूरहोय ॥ १५ ॥ ( अथ मुण्डीरसगण्डमाला अपचीपर ) मुंठीरस आठ  
 तोले पिये तौ गंडमाला, अपची, कावररोग मिटै ॥ १६ ॥ ( अथ मुंठीरस  
 सूर्यावर्तादि पर ) मुंठीस्वरस उष्णकारे मरिच चूर्णयुत सात दिन पिये तौ  
 सूर्यावर्त आघाशोशी अच्छीहोय ॥ १७ ॥ ( अथ ब्राह्मवादिस्वरस उन्मा  
 दपर ) ब्राह्मी, श्वेत कुम्हड़ा, कचूर व धन कौब्याला इनका स्वरस भिन्न भिन्न  
 शहद और कूटके सङ्ग पिये तौ सब उन्मादजायै ॥ १८ ॥ ( श्वेतकुम्हड़ाका रस  
 उन्माद पर ) सफेद कुम्हड़े का रस पुशने गुडसंयुत पिये तौ दुष्ट कोदकका  
 उन्माद नाशहोय ॥ १९ ॥ ( अथ परियारारस घाघ पर ) शस्त्रके लगेके  
 घाव में तुरन्त परियारे का रस लगावै तौ घाव अच्छा होय ॥ २० ॥ ( अथ  
 पुटपाक के रसकी विधि ) पुटपाक का रस लेते हैं इससे उसका यत्र करते  
 हैं ॥ २१ ॥ कोई ओदी द्रव्यहो उसे पीसिके गोली धारै तिस पर रंड वा

स्थूलंकुर्याद्वाङ्गुष्ठमात्रकम् । काश्मरीवटजम्बवादिपत्रैर्वे  
 ष्ठनमुत्तमम् । पलमात्ररसोग्राह्यः कर्षमात्रं मधुक्षिपेत् । क  
 ल्कचूर्णाद्रवाद्यास्तु देयाः स्वरसवद्बुधैः २२ तत्कालाकृष्ट  
 कुटजत्वचंतण्डुलचारिणा । पिष्टांचतुष्पलमितां जम्बूप  
 ल्लववेष्टिताम् २३ सूत्रेण बद्धाङ्गाधूमपिष्टेन परिवेष्टिताम् ।  
 लिप्तांचघनपङ्केन गोमयैर्वन्दिनादहेत् २४ अङ्गारवर्णा  
 चमृदं हृष्ट्वा बन्हेः समुद्धरेत् । ततोरसंगृहीत्वा च शीतं  
 क्षौद्रयुतं पिबेत् २५ जयेत्सर्वानतीसारान्दुस्तरान्सुचि  
 शोस्थान् । कण्डितंतण्डुलपलं जलेष्टगुणितेक्षिपेत् । भा  
 वयित्वा जलग्राह्यं देयं सर्वत्रकर्मसु २६ अरलुत्वकृतश्चै  
 वपुटपाकोग्निदीपनः । मधुमोचरसाभ्यां च युक्त्स्सर्वाति  
 सारजित् २७ न्यग्रोधादेश्च कल्केन पूरयेद्गौरतित्तिरेः ।  
 निरन्त्रमुदरं सम्यक्पुटपाकेन तत्पचेत् । तत्कल्करस्वरसः

बरगद वा जामुनका पत्ता लपेटै फिर कपरौटी करि दो अंगुल मोटी माटी  
 लेसै तव अग्नि में धरै जब लालहो तव निकारिके उसका रस निचोरि ले  
 उसे पुटपाकरस कहते हैं तव चार रुपया भर रस रुपयाभर शहद संयुक्त पिये  
 और जो कल्क चूर्ण पतली द्रव्य मिश्रित करनीहो ती पुटरसको यथायोग्य देना ॥  
 २२ ॥ ( अथ कुरैयापुटपाक सर्वातीसारपर ) चार तोले कुरैयाकी छाल  
 ताजी चावल के धोवन में पीसिके गोला बांध जामुन के पत्ते लपेटै ॥ २३ ॥ फिर  
 सूत से बांधि मोठ के आटा सों लेपकरि माटी लगावै तव गौरा के गोदामें टूँकि  
 के अंगार होजाय तव आगिसे निकाल निचोरि उगढाकरि शहद डारि त्रियै दो  
 बहुत दिनका कठिन अतीसार जाय २४ ॥ २५ ॥ ( चावल धोवनकी क्रिया )  
 चार रुपयाभर शुद्धचावल अठगुने पानी में धोवै चही धोवन सर्वत्र देय ॥ २६ ॥

धौद्रयुक्तः सर्वातिसारनुत् २८ पुटपाकेन विपचेत्सुपकंदा  
 द्वितीफलम् । तद्रसो मधुमंयुक्तः सर्वातीसारनाशनः २९  
 बीजपूगस्रजम्बूनां पल्लवाभिजटाः पृथक् । विपचेत्पुटपा  
 केन धौद्रयुक्तश्चतस्रसः ३० । हृदिनिवारयेद्घोरां सर्वदोष  
 ममुद्गवाम् ३० पिष्टानां वृषपत्राणां पुटपाकरसो हिमः ।  
 मधुयुक्तो जयेद्भक्तपित्तकामज्वरक्षयान् ३१ पचेत्क्षुद्रांस  
 पञ्चङ्गां पुटपाकेन तद्वसः । पिप्पलीचूर्णसंयुक्तः कासश्वास  
 कफापहः ३२ विभीतकं फलं विडिचद्घृतेनाभ्यज्यलेपयेत् ।  
 गोधूमपिष्टेनाङ्गारैर्विपचेत्पुटपाकं च ३३ ततः पकंसमुद्धू  
 त्यत्वचंतस्य मुखेक्षिपेत् । कासश्वासप्रतिश्याचंस्वरभङ्गा  
 जयेत्ततः ३४ चूर्णं किञ्चिद्घृताभ्यक्तं शुण्ठ्या एरण्डजैर्दलेः  
 वेष्टितं पुटपाकेन विपचेन्मन्दबह्विना ३५ तत उद्धृत्य तच्चू  
 र्णं ग्राह्यं प्रातःसितान्वितम् । तेन यान्तिशमं पीडा आमाती  
 सारसंभवाः ३६ शुण्ठीकल्कं त्रिनिक्षिप्य रसेरेण्डमूलजैः ।

गोला निकाल रसनिचोरने सा रस शब्द संयुक्तदेय तौ तत्र अती नारजाय ॥ २८ ॥  
 पुगः चार पके अनारका पुटपाक बनाइ तिसका रस शब्द मिलाय कै देय तौ सत्र  
 अतीसार नारा होय ॥ २९ ॥ ( अथ विजौरा पुटपाक उवाची पर ) वि-  
 जौरा बीजू जामुन की पाती रा जडके पुटपाक का रस शब्द पुन देइ तौ तत्र दोष  
 की छवि जाय ॥ ३० ॥ ( अथ यासापुटपाक रक्तपित्त कासज्वर पर )  
 रुमे क पुटपाक का रस अरु शब्द पिथे से रक्तपित्त कास हृदि व ज्वरजाय ॥  
 ३१ ॥ ( अथ भटकटैया का पुटपाक कासश्वास पर ) भटक  
 टैया के पंचाग का पुटपाक रस पीपरिका चूर्ण टारि कै दे तो कापरस स कफ  
 जाय ॥ ३२ ॥ ( अथ विभीतकपुटपाक कासश्वास पर ) बहरे पर पी  
 लगाइ तिसान से लेप अंगार पर पुटपाक करै ॥ ३३ ॥ उमरा त्रिलका गुणमें  
 सारने से कफ, आस, पतिश्याय, स्वग्भा ये रोग जाय ॥ ३४ ( अथ मोंडि  
 पुराने आमातीसार पर ) सेंड र्ण त्रिनिक्षिप्य से बडी बनाय एण्डाज में  
 सट मन्नाते में पुटपाक करै ॥ ३५ ॥ उम रूणो सेरे रेण्ड रस राय सो

विपचेत्पुटपाकेनतेद्रसःकौद्रसंयुतः । आमवातसमुद्भूतां  
पीडांजयतिदुरतराम् ३७ सौरणंकन्दमादायपुटपाकेनपा  
येत् । सतैललवणस्तस्वरसश्चाशौविकारनुत् ३८ श  
रावसम्पुटेदग्धंशृङ्गहरिणजंपिवेत् । गव्येनसर्पिषापिष्टंह  
च्छूलंनश्यतिध्रुवम् ३९ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डे  
चिकित्सास्थाने स्वरसादिकल्पनाऽध्यायः ॥ १ ॥

पानीचंपोडशगुणक्षुण्णोद्रव्यपलेक्षिपेत् । मृत्पात्रेकाथ  
येद्ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम् १ तज्जलंपाययेद्धीमान्को  
पणंमृद्वग्निस्नाधितम् । शृतःकाथःकषायश्चनिर्यूहःसनि  
गद्यतेरआहाररसपाकेचसञ्जातेद्विपलोन्मितम् । वृद्धवैद्यो  
पदेशेनपिवेत्काथंसुपाचितम् ३ काथेक्षिपेत्सितामंशैश्च  
तुर्थाष्टमषोडशैः । वातपित्तकफातङ्केविपरीतंमधुस्मृतम् ४  
जीरकंगुग्गुलुक्षारंलवणंचशिलाजतुम् । हिङ्गुत्रिकटुकंचै  
वकाथेशाणोन्मितंक्षिपेत् ५ कीरंघृतंगुडंतैलंमूत्रंचान्य  
ग्रामातीसारकी पीडा मिटे ॥ ३६ ॥ पुनः सौंठ चूर्ण परंढही जड़ के रस में  
साणि पुटपाक करि रस निकारि शहद रंग खाइ तौ आमवात की पीडा  
जाय ॥ ३७ ॥ ( अथ मूरन पुराना थवाभीर पर ) पुटपाक करि पवा  
जमीरंद, लोन, तेल साथ खाइ तौ अरिनाश होय ॥ ३८ ॥ ( हरिण शृंग  
पुराना हृदयशूल पर ) हरिणसींग शराय संएट में शराइ गौ के पीमें डारि  
पिये तौ हृदय की शूल जाय ॥ ३९ ॥ इति शार्ङ्गधरेमध्यखण्डोऽध्यायः ॥ १ ॥

( अथ काथ ) चार रूपया भर द्रव्य चौसठ रूपया भर पानी माटीके पात्रमें  
भरि मंदाग्निमें आँटे ज्व आठ रूपये गरिरहै तत्र उतारि लेय ॥ १ ॥ कुछ उष्ण  
रहै तत्र पिये काथके चार नाम हैं शृत, काथ, कषाय, निर्घूह ॥ २ ॥ आहार का  
रस पमें पर छद्म ग्रंथ के उपदेश से दोपल काढा पिये ॥ ३ ॥ काथमें मधु मिश्री  
टारनेका प्रमाण प्रधान हो तौ मिश्री थोड़ी देना पित्तमें अष्टमांश कफमें पोटशांश  
शहद चागुगे पोटशांश पित्तमें अष्टमांश कफमें चौथा अंश देना ॥ ४ ॥ जीरकादि  
अनेक उरुतु डालनेका प्रमाण जीरा, गुग्गुलु, क्षार, संघ, शिलाजीत, हिंग व त्रिकटु  
काठे में चाग्निमें दे त्र बल संभव देखि ॥ ५ ॥ दूध, घी, गुड़, घेला, मोगून,

दूद्रवंतथा । कल्कंचूर्णादिकंकाथेनिक्षिपेत्कर्षसम्मितम् ६  
 गुडूचीधान्यकारिष्टपद्मकरक्तचन्दनम् । गुडूच्यादिगणका  
 थः सर्वज्वरहरः परः । दीपनोदाहहल्लासतृष्णाछर्द्यरुचीर्ज  
 येत् ७ गुडूचीपिप्पलीमूलं नागरैः पाचनं स्मृतम् । दद्या  
 द्वातज्वरे पूर्णैलिङ्गैः सप्तमवासरै ८ शालपर्णीवलारास्नागु  
 डूचीशारिवातथा । आसांकाथंपिवेत्कोष्णं तीव्रवातज्व  
 रच्छिदम् ९ काश्मरीशारिवारस्नात्रायमाणामृताभवः ।  
 कषायः सगुडः पीतो वातज्वरविनाशनः १० कट्फले  
 न्द्रयवाम्बुष्ठातित्कामुस्तैः शृतं जलम् । पाचनं दशमेऽह्नि  
 स्यात्तीव्रपित्तज्वरे नृणाम् ११ पर्पटोवासकस्तित्का किरा  
 तोधन्वयासकः । प्रियङ्गुरचकृतः काथएषांशर्करयायुतः ।  
 पिपासादाहपित्तास्रयुक्तं पित्तज्वरं जयेत् १२ द्राक्षाहरीत  
 कीमुस्तकटुकाकृतमालकः । पर्पटश्चकृतः काथएषांपित्त  
 और श्यासादि लुगदी चूर्णादि ये सब दश मासे षल समय देखिकै देना ॥ ६ ॥  
 ( गुर्चादिकादा सब ज्वरपर ) गुर्च, थनिया, नीवकी छाल, पद्मास, रक्त  
 चन्दन इस गुर्चादि फायसे सब ज्वर नाश होय है यह दीपन है दाह, तृष्णा, लार,  
 उबकाई ये रोग दूर होयें ॥ ७ ॥ ( गुर्चादि पाचन वातज्वरपर ) गुर्च, पी  
 परामूल व सौठ इनका कादा वातज्वर में सतयें दिन देय यह पाचन है ॥ ८ ॥  
 ( वातज्वर पर ) शालपर्णी कहे वनडदी, बरिधारा, रासन, गुर्च, सरिवन  
 इनका कादा जिये से तीव्र वातज्वर जाय ॥ ९ ॥ ( दूसरा कादा वातज्वर  
 पर ) संभारी सरिवन, रामन, त्रायमाण, गुर्च इनका कादा गुड टारिके पिये तौ  
 वातज्वर जाय ॥ १० ॥ ( कटफलादि पाचनपित्तज्वरपर ) कायफर, इन्द्र-  
 यव, पादा, घुटकी और नागरमोथा इन पाचोका कादा तीव्र पित्तज्वरमें मनुष्यों  
 को दशयें दिन देइ ॥ ११ ॥ ( पित्तपापरादि काथ पित्तज्वरपर ) पित्त  
 पापरा, रसा कुटकी, चिरोयता, जवासा, मिर्यंगुदाना पीतसरसों सा होता है यह  
 कादा चीनी के संग जिये तौ तृषा दाह व रक्तपित्तज्वर ये मुक्त होयें ॥ १२ ॥  
 ( दूसरा ) दास, हट, मोथा, घुटकी, अमनतास और पित्तपापडा इनका काथ  
 पित्तज्वर नाश करे है और तृष्णा, मूर्च्छा, दाह व रक्तपित्त इन्हें शमन और

ज्वरापहः । तृणमूर्च्छादाहपित्तासृक्छमनोभेदनः स्मृतः १३  
 वीजपूरशिवापथ्यानागरग्रन्थिकैः शृतम् । सक्षारंपाचनं  
 श्लेष्मज्वरेद्वादशवासरे १४ भूनिम्बनिम्बपिप्पल्यः शटी  
 शुण्ठीशतावरी । गुडूचीबृहतीचेति काथोहन्यात्कफज्वर  
 म् १५ पटोलत्रिफलातित्ताशटीवासांमृताभवः काथोमधु  
 युतः पीतोहन्यात्कफकृतंज्वरम् १६ पर्पटाब्दामृताविश्व  
 किरातैः साधितंजलम् । पञ्चभद्रमिदंज्ञेयं वातपित्तज्वराप  
 हम् १७ क्षुद्राशुण्ठीगुडूचीनांकषायः पौष्करस्यच । कफ  
 वाताधिकेपेयोज्वरेवापित्रिदोषजे । कासश्वासारुचिकरेपा  
 र्श्वशूलविधायिनि १८ आरंभवधकणामूलंमुस्तातित्ताभ  
 याकृतः । काथःशमयतिक्षिप्रंज्वरंवातकफोद्धवम् । आम  
 शूलप्रशमनोभेदीदीपनपाचनः १९ अमृत्तारिष्टकटुकामु  
 स्तेन्द्रयवनागरैः । पटोलचन्दनाभ्यांचपिप्पलीचूर्णयुक्  
 छतम् । अमृताष्टकमेतच्च पित्तश्लेष्मज्वरापहम् । छद्य

भेदन करै ॥ १३ ॥ ( विजौरा पाचक कफ ज्वर पर ) विजौरा की जड़,  
 इड़, सोंठ, पिपरामूल, जवात्तार डारिकै कफ ज्वर के वारहें दिन काड़ा पिये  
 तौ जल्दी पाचन करै ॥ १४ ॥ ( पुनःकाथ ) चिरायता नीमकोशला, पीपरि,  
 कचूर, सोंठ, शनावरि, गुर्च व भटकटैया यह काड़ा कफज्वरको विनाशनाहै ॥ १५ ॥  
 ( पुनःकाथ ) पटोलपत्र, त्रिफला, कुटकी, कचूर, रुसा व गुर्च इनका काड़ा  
 मधुयुक्त पीने से कफज्वर का नाश होता है ॥ १६ ॥ ( पित्तपापरा काथ  
 वातज्वर पर ) पित्तपापरा, नागरमोया, गुर्च, सोंठ व चिरायता इसपञ्चभद्र  
 काड़े से वातपित्तज्वर जाता है ॥ १७ ॥ ( छोटी भटकटैया काथ कफ वात  
 ज्वर पर ) भटकटैया, सोंठ, गुर्च, पुष्करमूल यह काड़ा कफ वातज्वर नाश  
 करै और संनिपात ज्वर में पिये तौ कास, श्वास, श्रुचि और पसुडों की पीड़ा  
 हरै ॥ १८ ॥ ( अमलतासगदि काथ वातकफज्वर पर ) अमलतास का  
 गूदा, पिपरामूल, मोया, कुटकी और बड़ीइड़ इन हाकाड़ा वातकफज्वर बेगही नाश  
 करै आमशूल शमन करै और गोटा गिरावै व अग्निदीपन पाचन करै ॥ १९ ॥



शोचकहल्लासदाहृतृष्णानिवारणम् २० कण्टकारीद्वयंशु  
 ष्ठीधान्यकंसुरदारुच । एभिःशृतंपाचनंस्यात्सर्वज्वरविना  
 शनम् २१ शालपर्णीपृष्ठपर्णीवृहतीद्वयगोधुरैः । त्रिव्या  
 ग्निमन्थश्यानाककाशमरीपाटलायुतैः २२ दशमलमिति  
 ख्यातंक्वथितंतज्जलंपिवेत् । पिप्पलीचूर्णसंयुक्तंवातश्ले  
 ष्मज्वरापहम् २३ सन्निपातज्वरहरंसूतिकादोपनाशनम्  
 शोषशैत्यभ्रमस्वेदकासश्वासविकारनुत् । हृत्कम्पग्रहपा  
 र्श्वार्तितन्द्रामस्तकूलानुत् २४ अभयामुस्तधान्याहरक्त  
 चन्दनपद्मैः । वासकेन्द्रयत्रोशीरगुडूचीकृतमालकैः २५  
 पाठानागरतिक्ताभिःपिप्पलीचूर्णयुक्छतम् । पिवेत्त्रि  
 दोषज्वरजित्पिपासादाहकासनुत् २६ प्रलापश्वासतन्द्रा  
 श्मंटीपनंपाचनंपरम् । विण्मूत्रानिलविष्टम्भवमीशोषारु  
 चिञ्जयेत् २७ किरातकटुकीमुस्ताधान्येन्द्रयवनागरैः । दश

( अथ अनृताष्टक काथ ) गुर्वि, नीमरीघाल, कुटकी मोथा, इन्द्रपव, सोंठ,  
 पटोल और रक्तचन्दन इनका काथ पीपरिका चूर्णकारिकै पीने से पित्तकफज्वर  
 नाशहोय तथा उपचाई, अरवि, हज्रास, दाह और लृषा इनको निगरे ॥ २० ॥  
 ( भटकटैयादि काथ सचज्वरन पर ) दोनों भटकटैया, सोंठ, धनियाँ, टेर-  
 दारु यह पाचनकाथ सच ज्वर हरे ॥ २१ ॥ ( दशमूलकाथ वातरुफ पर )  
 धनवर्दी धनभूंग, दोनों भटकटैया, गुखुरु, जेलरी जठ, अग्निमंथ, सोहनरचा,  
 संभारी. पादा ॥ २२ ॥ इन दशोंकी जटका काड़ा पीपरि के चूर्ण के संग पिये  
 तौ वातकफज्वर नाशहोय ॥ २३ ॥ सन्निपातज्वर, सूतिवादोप, घुस सुयना,  
 शोतल अन्न, भ्रम, पत्ताना वास, श्वास नाश करे हृदयशूल, पार्श्वशीङ्गा, तन्द्रा,  
 मस्तकशूल ये सबमुक्त होयें ॥ २४ ॥ ( हरिनीकोकाथ सन्निपात ज्वर पर )  
 बड़ीहठ, नागरमोथा, धनियाँ, रक्तचन्दन पद्मास, रस्ता. इन्द्रयव, खल, गुर्वि,  
 अमलवास ॥ २५ ॥ पादे की जड़, सोंठ, कुटकी, पीपरिका चूर्ण समेत काड़ा पिये  
 तौ सन्निपातज्वर, लृष्णा, दाह, कास हरे ॥ २६ ॥ भ्रम, श्वास, तन्द्राहरे टीपन  
 पाचन करे वायु से मनमूत्रागोष, यमन, कंठशोष, अरवि इन उपद्रवों को नाश

मूलमहादारुगजपिप्पलिकायुतैः २८ कृतः कषायः पाश्चा  
 तिसन्निपातज्वरं जयेत् । कासश्वासवमीहिंकातन्द्राहृद्ग्रह  
 नाशनः २९ कट्फलाम्बुदभार्गीभिर्धान्यरोहिषपंपटैः ।  
 वचाहरीतकीशृङ्गादेवदारुमहौषधैः ३० काथः कासंज्वरं ह  
 न्तिश्वासश्लेष्मगलग्रहान् । काथोजीर्णज्वरंहरं गुडूच्यापि  
 प्पलीयुतः । तथापर्पटजः काथः पित्तज्वरंहरः परः ३१  
 निदिग्धिका मृताशुण्ठी कषायं पाययेद्भिषकं । पिप्पलीचूर्ण  
 संयुक्तंश्वासकासादितापहम् । पीनसारुचिवैस्वर्यशूलाजी  
 र्णज्वरापहम् ३२ क्षुद्राधान्यकशुण्ठीभिर्गुडूचीमुस्तपद्म  
 कैः । रक्तचन्दनभनिम्बपटोलवृषपौष्करैः ३३ कटुकेन्द्रयवा  
 रिष्टाभार्गीपर्पटकैः समैः । काथंप्रातर्निषेवेतसर्वशीतज्वर  
 च्छिदम् ३४ मुस्ताक्षुद्रामृताशुण्ठीधात्रीकाथः समाक्षिकः ।  
 पिप्पलीचूर्णसंयुक्तो विषमज्वरनाशनः ३५ पटोलत्रिफला

करैः ॥ २७ ॥ ( पुनरेष्टांगदशमूलकाथ ) चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, धनियां,  
 इन्द्रयव, सोंठ, दशमूल, देवदारु, गजपीपरि समेत काथपिये तौ पसुरीपीड़ा, सन्नि-  
 पातज्वर, कास, श्वास, वमन, हिवकी, तन्द्रा, हृदय रोगये नाशहोयें ॥ २८ ॥ २६ ॥  
 ( कायकर कासज्वर पर ) कायकर, नागरमोथा, भारंगी, धनियां, खस, पित्त-  
 पापड़ा, घब, इड, काकड़ासींगी, देवदारु, सोंठ इस काथे से कासज्वर नाशहोय  
 श्वास कफ कंठरोग मिटै गुर्चेका काडा पीपरि युक्त पीनेसे जीर्णज्वर छूटै पित्तपा-  
 पड़ेका काथ पीपरियुक्त पीनेसे पित्तज्वर जाइ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ पुनः भटकटैया में  
 मिलोय, सोंठ व पीपरि टारि पिये तौ श्वास, कास, अर्द्धितत्रायु, पीनस, अरुचि,  
 गला वैठय, शूल, जीर्णज्वर ये रोग दूरहोयें ॥ ३२ ॥ ( सर्व शीतज्वर पर  
 भटकटैया काथ ) भटकटैया, धनियां, सोंठ, गुर्च, नागरमोथा, पद्माल, रक्तचन्दन,  
 चिरायता, पटोल, रूसा, मोचरस, कटुकी, इन्द्रयव, नींब, भारंगी  
 और पित्तपापड़ा इनका काथ प्रातःकाल पिये तौ सत्र शीतज्वर नाशहोयें ॥ ३३ ॥  
 ३४ ॥ ( विषमज्वर पर मोथाकाथ ) नागरमोथा, भटकटैया, गुर्च, सोंठ,  
 आवला इनका काडा शहद पीपरियुक्त पिये तौ विषमज्वरं मुक्तहोय ॥ ३५ ॥

निम्बद्राक्षाशम्याकवासकैः । काथःसितामधुयुतोजयेदेका  
 हिकंज्वरम् ३६ गुडूचीधान्यमुस्ताभिश्चन्दनोशीरनाग  
 रैः कृतंकाथंपिवेत्क्षौद्रंसितायुक्तंज्वरातुरः ३७ तृतीयज्वर  
 नाशायतृष्णादाहनिवारणम् । देवदारुशिवावासाशाल  
 पर्णीमहौषधैः ३८ चात्रीयुक्तंशृतंशीतंदयान्मधुसितायुत  
 म् । चातुर्थिकज्वरेश्वासेकासेमन्दानलेतथा ३९ गुडूची  
 धान्यकोशीरशुण्ठीवालकपर्पटैः । विल्वप्रतिविषापाठारक्क  
 चन्दनवत्सकैः ४० किरातमुस्तेन्द्रयवैः कथितंशिशिरंपिवे  
 त् । सक्षौद्रंरक्कपित्तघ्नंज्वरातीसारनाशनम् ४१ नागरंकूट  
 जोमुस्तममृतातिविषातथा । एभिः कृतंपिवेत्काथंज्वरा  
 तीसारनाशनम् ४२ धान्यनागरविल्वाब्दवालकैः साधि  
 तंजलम् । आमशूलहूरंग्राह्यं दीपनंपाचनंपरम् ४३ धान्य  
 नागरजःकाथःपाचनोदीपनस्तथा । एरण्डमूलयुक्तश्चज

( नित्य आत्मे ज्वरपर पटोलकाथ ) पटोल, त्रिफला, नींबकीडाल, दास,  
 अमलतास और रुसाइनका काथ शब्द व खाइ युक्त पिये तो एकाहिकज्वर  
 छूटै ॥ ३६ ॥ ( तृतीयक ज्वरपर गुडूचपादिकाथ ) गुर्बे, धनियां, नागरमोया,  
 रक्तमन्दन, सस और सोंठ इनका काका शकर शब्द युक्त पिये तो तृतीयक  
 ज्वर, प्यास, दाह ये उपद्रव निम्नेक्तहोयें ॥ ३७ ॥ ( चातुर्थिकज्वरपर देवदारु  
 काथ ) देवदारु, नडी हड, रुसा, शालपर्णी सोंठ और आवना इनका काका  
 शब्द व मिथीशुक्त पिये तो चातुर्थिक ज्वर जाय और श्वास, कास, मंदान्नि  
 ये सब दूरहोयें ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ( ज्वरातीसार पर गुडूचपादिकाथ )  
 गुर्बे, धनिया, सस, सोंठ, मुग्धवाला, पित्तपाषाण, बेल, अतीस, पादा, रक्त  
 चन्दन, कुरैया, चिरायता, मोया, इन्द्रयव यह काका ठंडाकरि शब्द मिश्रतकर  
 पिये तो ज्वरातीसार व रक्तपित्तका नाशहोय ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ( पुन- ) सोंठ,  
 कुरैया, मोया, गुर्बे, अतीस इस कादेसे ज्वरातीसार जाय ॥ ४२ ॥ ( आम-  
 शूलपर धान्यपञ्चककाथ ) धनियां, सोंठ, बेल, मोया, नेत्रवाला इनके  
 काथ से आमशूलजाय व ग्राही, दीपन, पाचनहै ॥ ४३ ॥ सहित धनियां सोंठ

वेदामानिलव्यथाम् ४४ वत्सकातिविषाविल्वमुस्तैवाल  
 क्कमाशतम् । अतीसारंजयेत्सामंचिरजरक्तशूलजित् ४५  
 कुटजातिविषापाठाघातकीलोध्रमुस्तकैः । हीवेरदाडिमं  
 युतैःकृतःकाथःसमाक्षिकः ४६ पेयामोचरसेनवकुटजाष्ट  
 कसञ्जकाः।अतीसाराञ्जयेद्वातरक्तशूलामदुस्तरान् ४७  
 हीवेरघातकीलोध्रपाठालञ्जालुवत्सकैः । धान्याकाति  
 विषामुस्तागुडूचीविल्वनागरैः ४८ कृतःकषायःशमयेद्  
 तीसारंविरोत्थितम् । अरोचकामशूलास्रज्वरघ्नःपाचन  
 स्मृतः ४९ घातकीविल्वलोधाणिवालकंगजपिप्पली । ए  
 भिःकृतंशृतंशीतंशिशुभ्यःक्षौद्रंसंयुतम् । प्रदद्याद्वलेहंवा  
 सर्वातीसारशान्तये ५० शालपर्णीबलाविल्वधान्यशुण्ठी  
 कृतंशृतम् । आध्मानशूलसहितांवातजाग्रहणींजयेत् ५१  
 गुडूच्यतिविषाशुण्ठीमुस्तैःकाथःकृतोजयेत् । आमामनुषकां

ग्रहणीग्राहीपाचनदीपनः ५२ यवधान्यपटोलानांकाथः  
 सक्षौद्रशर्करः । योज्यस्सर्वातिसारेपुषिल्वाघारिथभवस्त  
 था ५३ त्रिफलादेवदारुश्चमुस्तामूपककर्णिका । शिशु  
 रेतैःकृतःकाथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः । विडङ्गचूर्णयुक्तश्च  
 कृमिघ्नःकृमिरोगहा ५४ फलत्रिकामृतातिका निम्बकैरात  
 वासकैः । जयेन्मधुयुतःकाथः कामलांपाण्डुतांतथा ५५  
 पुनर्नवाभयानिम्बदावीनिक्तापटोलकैः । गुडूचीनागरयुतैः  
 काथोगोमूत्रसंयुतः । पाण्डुकासोदरश्वासशूलसर्वाङ्गशो  
 थहा ५६ वासाद्राक्षभयकाथःपीतः सक्षौद्रशर्करः । निह  
 न्तिरक्तपित्तातिश्वासकासान्सुदारुणान् ५७ रक्तपित्तक्षयं  
 कासं श्लेष्मपित्तज्वरंतथा । केवलोवासककाथःपीतःक्षौद्रे  
 णनाशयेत् ५८ वासाक्षुद्रामृताकाथःक्षौद्रेणज्वरकासहा ।

ग्रहणी दूर करे व ग्राहीहो दीपन पाचन करै ॥ ५२ ॥ ( सर्वातीसार पर )  
 इन्द्रयव, धनिया और पटोल इनका काढ़ा खाइ शहद संग खाइ तो छर्दि, अती-  
 सार जाय व आमझी गुडली भेजका काढ़ा शहद मिश्रीयुक्त पिये से सब अती-  
 सार जायै ॥ ५३ ॥ ( कृमिघ्न त्रिफलाकाथ ) त्रिफला, देवदारु, मोथा,  
 मुस्ताकरणी, सहिजनकीबाल, पीपरि, विडंगयुक्त पियेसे कृमि और कृमिज घपद्रव  
 सब जायै ॥ ५४ ॥ ( कामलापर त्रिफलादि काथ ) त्रिफला, गुर्च, कटुकी  
 नीप, चिरायता और रुसा इनमे-काथको शहद समेत पिये तो कामला व पाण्डु  
 रोग नाशहोय ॥ ५५ ॥ ( पाण्डुपर गदापुरैनाकाथ, शोथादिक कासपर )  
 गदापुरैना, इट, नीवकी बाल, दाण्डिलदी, कटुकी, पटोल, गुर्च और सोंठ इनका  
 काढ़ा पिये तो पाण्डु, कास, उदररोग, रसास, उदरशूल और सर्वांग मूजन अच्छी  
 हो ॥ ५६ ॥ ( रक्तपित्तपर रुसाकाथ ) रुसा, दास, इड इसका काढ़ा शहद  
 वा मिश्री युक्त पिये तो रक्तपित्त पीडा दाहण कास रसास जाय ॥ ५७ ॥  
 ( पुनः ) रुमे का काढ़ा शहद संग पियेसे रक्तपित्त, क्षयी, कास, कफ रिसज्वर  
 नाश होयै ॥ ५८ ॥ ( कासज्वर पर वासाकाढ़ा ) रुसा, भठइटैया और  
 गुर्च इनका काथ शहदयुक्त पीनेसे ज्वर कास मिटै जो भटकटैया का काढ़ा पीपल

कासघ्नःपिप्पलीचूर्णयुक्तःक्षुद्राशृतस्तथा ५६ क्षुद्राकुलि  
 त्यावासाभिर्नागरेणचसाधितः । काथःपौष्करचूर्णाढ्यः  
 श्वासकासौनिवारयेत् ६० रेणुकापिप्पलीकाथोहिङ्गुक  
 ल्केनसंयुतः । पानादेवहिपठचापि हिकात्राशयतिक्षणार्त्  
 ६१ बिल्वत्वचोगुडूच्यावाकाथःक्षौद्रेणसंयुतः । जयेत्रिदो  
 षजांछर्दिर्पपटःपित्तजांतथा ६२ हिङ्गुपौष्करचूर्णाढ्य  
 दशमूलशृतंजयेत् । गृद्धसीकेवलःकाथशैफालीपत्रज  
 स्तथा ६३ रास्नामृतामहादारुनागरैरण्डजंशृतम् । सप्त  
 धातुगतेवाते सामेसर्वाङ्गोपित्रेत् ६४ रास्नागोक्षुरकै  
 रण्डदेवदारुपुनर्नवाः।गुडूच्यारग्वधौधैवकाथएवाविपाच  
 येत् ६५ शुण्ठीचूर्णेनसंयुक्तंपिबेज्जङ्घाकटीग्रहे।पार्श्वपृष्ठौ  
 रुपीडायामामवातेसुदुस्तरे ६६ रास्नाद्विगुणभागास्यादे  
 कभागास्तथापरे।धन्वयासबलैरण्डदेवदारुशटीवचाः६७

चूर्ण संयुक्त दे तौ सांसी मिटै ॥ ५६ ॥ (कासश्वासपर क्षुद्रादिकाड़ा)  
 भटकटैपा, कुलथी, रुसा व सोंठ इनका कादा पुष्करचूर्ण का चूर्णयुक्त पिये से  
 कास, रवास जाय ॥ ६० ॥ ( हिचकीपर मेवड़ीकाड़ा ) मेवड़ीकाधीन,  
 पीपरि, हींगभुनी युक्त पिये से पाचों प्रकारकी दिवड़ी जाय ॥ ६१ ॥ ( उय-  
 काई पर बिल्वादि काड़ा ) बेलकी छालवा गुर्च का काड़ा शहदयुक्त पिये  
 तो त्रिदोषजन्य छर्दि मिटै जो निचरापटा शहदयुक्त पियेसे पित्तछर्दि जाय ॥  
 ६२ ॥ ( गृद्धसी वायुपर दशमूलकाथ ) हींग, पुष्करयून का चूर्ण प्रथम  
 कहे दशमूल काथ में युक्तकरिपिये तो गृद्धसी वायुजाय जो मेवड़ीकायमें हींग व  
 रंडमूल चूर्णयुक्त पिये तो तुरंत गृद्धसीवायुमिटै ॥ ६३ ॥ ( वायुपर रासनपं-  
 चककाड़ा ) रासन, गुर्च, देवदारु, सोंठ, रंडमून यह काड़ापिये से मत्स्यतुगत  
 घात सब भ्रमराय दूरहो ॥ ६४ ॥ ( वायुपर रास्ना सप्त ) रासन, गुटुरु,  
 रंड, देवदारु, गटापुत्रैना, गुर्च और अमलतास इनका कादा सोंठ चूर्ण डारिकै  
 पिये से जांच, कटि, पसुरी, पीठ, छाती और भारी भ्रमरांत मिटै ॥ ६५ ॥ ६६ ॥  
 ( सम्पूर्ण वायुपर महारास्नादि काड़ा ) दो भाग रासन और सप्त एक

वासकोनागरंपथ्याचव्यामुस्तापुनर्नवा । गुडूचीवृद्धदारु  
 इचशतपुष्पाचगोक्षुरः ६८ अश्वगन्धाप्रतिविषाकृतमाल  
 इशतावरी । कृष्णासहचरश्चैवधान्वकंवृहतीद्वयम् ६९ ए  
 भिःकृतंपिवेत्कात्थंशुण्ठीचूर्णेनसंयुतम् । कृष्णाचूर्णेनवायो  
 गराजगुग्गुलनाथवा ७० अजमोदादिनावापितैलेनैरण्ड  
 जेनवा।सर्वाङ्गकम्पेकुब्जत्वेषक्षाघातेपवाहुके ७१ गृह्णस्या  
 मामवातेचश्लीपदेचापतानके । अण्डवृद्धौतथाध्मानेजङ्घा  
 जानुगतेर्द्विते ७२ शुक्रामयेमेदरोगेवन्ध्यायोन्याशयेषुचा  
 महारास्नादिराख्यातोब्रह्मणागर्भकारणम् ७३ एरण्डोवी  
 जपूरश्चगोक्षुरोवृहतीद्वयम् । अश्मभेदस्तथाविल्वएतन्मू  
 लैःकृतःशृतः ७४ एरण्डतैलहिङ्गवाढ्योयवक्षारःससैधवः  
 स्तनस्कन्धकटीमेढ्रहृदयोत्थव्यथाजयेत् ७५ नागरैरण्ड  
 योःकाथःकाथइन्द्रयवस्यवा।हिङ्गुसौवर्चलोपेतोवालशू  
 लनिवारणः ७६ त्रिफलारग्वधकाथःशर्कराक्षौद्रसंयुतः ।

भागमें जत्रासा, वरियारा, रंद, देवदार, कसूर, वच, रूसा, सोंठ, इड़, चान, मोथा  
 गदापुरैनां, गुर्भ, धिधारा, सौंफ, गुगुलु, असगन्ध, अतीस, अमलतास, शतावरि  
 पीपरि, इन्द्रपव, धनिया और दोनों भटकटैया इनका कादा सोंठि चूर्ण डारि  
 पाक वा पीपरिका नूर्ण वा योगराजगुग्गुलुसाथ अजमोदादि चूर्णकेसंग वा रेंडी  
 के तैलके संग ती सर्वांग कंफ, फूरड़, पक्षापात, अपवाहुक गृह्णी, आमवात,  
 धीलपावै, अपतान, अन्नवृद्धि, पेट फूलना, जंघापीडा, पातुरोग, बंध्याकी योनि  
 दुष्टता यह महारास्नादि कादा प्रहाने कहाहे इसमें बहुत मनुष्य एक औपधिका  
 दूना रासन लेते हैं सो अनुचितहै ॥६७। ७३ ॥ (छाती की वायुपर अरण्ड  
 का ससक) रंद, धिजौरा की जड़, गुगुलु, दोनों भटकटैया, पापाणभेद और  
 वेलकीगिरी इन सब जइनका कादा रेंडीका तैल, हांग, पंजार, सेंधर'युक्त पिये  
 ती स्तनपीडा, कण्ठ भेद व हृदय की सत्र पीडामिटै ॥७४। ७५ ॥ (वातशूल  
 पर शूठीकादा ) सोंठ, रंदमूल व इन्द्रपत्र का कादा, सुनीर्हांग, कालानोन  
 युक्त पिये से वातशूलजाय ॥ ७६ ॥ ( पित्तशूल पर त्रिफलाकादा )

रक्तपित्तहरोदाहृपित्तशूलनिवारणः ७७ एरण्डमूलं द्विपलं  
जलेष्टगुणितेपचेत् । तत्काथोयावशूकाढ्यः पार्श्वहृत्कफशू  
लहा ७८ दशमूलकृतः काथोयवक्षारः ससैन्धवः । हृद्रोगगु  
ल्मशूलार्त्तिकासंश्वासंचनाशयेत् ७९ हरीतकीदुरालम्भा  
कृतमालकगोक्षुरैः । पाषाणभेदसहितैः काथोमाक्षिकसंयु  
तः । विबन्धे मूत्रकृच्छ्रे च सदा हे सरुजेहितः ८० वीरतरुर्दक्षवं  
दाकाशस्सहचरत्रयम् । कुशद्वयं नलोगुन्द्रावकपुष्पोग्नि  
मन्थकः ८१ मूर्वापाषाणभेदश्च श्योनाको गोक्षुरस्तथा । अ  
पामार्गश्च कमलं ब्राह्मीचेति गणो वरः ८२ वीरतर्वादिरित्यु  
क्तः शर्कराश्मरि कृच्छ्रहा । मूत्राघातं वायुरोगान्नाशयेन्निति  
लानपि ८३ एलामधूकगोकण्टरेणु कैरण्डवासकाः । कृष्णा  
श्मभेदसहिताः काथेषांसुसाधितः । शिलाजतुयुतः प्रेयः  
शर्कराश्मरि कृच्छ्रहा ८४ समूलगोक्षुरकाथः सितामाक्षिक

त्रिफला, अमलतास इस कादे में शर्करा शहद युक्त करि पिये से रक्तपित्त दाह  
पित्त शूलनाश ॥ ७७ ॥ (कफ शूलपर रंडमूल काढा ) रंडकी जड़ दोपल  
सोलह पल पानी में काढा करि जवात्वार डारि पियेसे कफजन्य पार्वपीडा  
हृदयपीडाका नाश होय ॥ ७८ ॥ (हृदयरोगपर दशमूलकाढा ) दशमूल  
का काढा जवात्वार संधव युक्त पिये से हृद्रोग, वायुगोला, कास और श्वासका  
नाशहोय ॥ ७९ ॥ (मूत्रकृच्छ्रपर हरीतकी काढा ) इड, जवासा, अमलतास,  
पाषाणभेद और गुगुलु इनका काढा शहदसंयुक्त पिये से मलमूत्रारोध दाहसहित  
सब रोग भ्रच्छेहोय ( मूत्रकृच्छ्रपर अर्जुनकाथ ) त्राकाशवरि काशमूल तीनों  
कटसरैया मूल दोनों कुश, नरकटमूल, गोंदी, शिबलिगी, अरणीकीजड़, मूर्वा,  
पाषाणभेद वा करील, गुग्गुलु, चिचिरा, कमलपत्र यह वीरतरु श्रेष्ठ गण है इस  
काढाके पियेसे शर्करा, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात और सम्पूर्ण वायुरोग नाशहो-  
यें ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ( अश्मरीशर्करादिपर एलाकाढा ) इलायची, मुलहठी,  
गुग्गुलु, मेरहीबीज, रंड, रुसा, पीपारि और पाषाणभेद इनका काढा शिलाजीत  
संयुक्त पिये से शर्करा, प्रगेह, मूत्रकृच्छ्र ये रोग नारा होयें ॥ ८४ ॥ ( सूत्र



संयुतः । नाशयेन्मूत्रकृच्छ्राणि तथाचोष्णसमीरणम् ८५  
 वरादाव्यब्ददारुणां काथः चौद्रेणमेहहा । वत्सकस्त्रिफला  
 दार्वी मुस्तकोवीजकस्तथा ८६ फलत्रिकाब्ददार्वीणा वि  
 शालायाः शृतं पिबेत् । निशाकल्कयुतं सर्वप्रमेहं विनिवर्त्त  
 येत् ८७ दार्वीरसाञ्जनं मुस्तं भल्लातः श्रीफलं वृषः । कैरा  
 तश्चपिवेदेषां काथं शीतं समाक्षिकम् ८८ जयेत्स शूलं प्रद  
 रं पीतश्वेतासितारुणम् । न्यग्रोधप्लक्षकोशाश्वेतसौवद  
 रीतुणिः ८९ मधुचण्डिः प्रियालुश्च लोध्रद्वयमुदुम्बरः । पि  
 प्लयश्च मधूकरश्च तथापालाशपिप्लवः ९० सल्लकीर्ति  
 न्दुकीजम्बूद्वयमाक्षतरुः शिवा । कदम्बककुभौ चैव भल्लात  
 कफलानि च ९१ न्यग्रोधादिगणकाथं यथालाभं च कार  
 येत् । अयं काथो महाग्राही व्रणभग्नं च साधयेत् । योनि

कृच्छ्र पर गोखरुकाडा ) गोखरु के पंचांगका कादा, मिथ्री, शहद संयुक्त  
 पिलावे तो मूत्रकृच्छ्र, उष्णवायु मच्छी होय ॥ ८५ ॥ ( मूत्रकृच्छ्र पर त्रिफला  
 काडा ) त्रिफला, दारुहल्दी, नागरमोथा और देवदाह इनका कादा शहद  
 संयुक्त पिये तो प्रमेह नाश होय ( पुनः ) तैसेही कुरैया, त्रिफला, दारुहल्दी, नागर  
 मोथा और ककही इनका कादा शहद सहित पिये तो प्रमेह नाश होय ॥ ८६ ॥

✓ ( प्रमेह पर त्रिफलाकाडा ) त्रिफला, नागरमोथा, दारुहल्दी, इन्द्रायण की  
 जड़ इनका कादा हल्दी सूर्ययुक्त पिये तो सकल प्रमेह नाश होय ॥ ८७ ॥  
 ( प्रदर पर दारुहल्दीकाडा ) दारुहल्दी, रत्तास, नागरमोथा, भिल्लाया, जैल-  
 गिरी, रूपा और विरायता इनका कादा ठण्डा करि शहद संयुक्त पिये तो पीत  
 श्वेत कृष्ण म्लाल सहित शूल स्त्री का प्रदररोग अच्छा होय ॥ ८८ ॥ ( क्षतत्र  
 षादि पर चटादिकंकाडा ) घड़, पाकर, अम्बाड़, वेतस, रेर और तत्तटर्तकी  
 छाल, मधुमेठी, चिरोनी, लोध, गुलरी, पीपरि, मधूक, जगन्नाथी पीपरि, पलाश,  
 तिन्दुक, दोनों, जामुन, आम, छोटो हड़, कदम्ब, अर्जुनतरु, भिल्लावेका फल जो  
 द्रव्य इनमें न मिले उसे त्यागि दे यह न्यग्रोधादिगण कादा बहुतग्राही है जो  
 घाब खराब दोगयाहो तो अच्छाहो योनिदोष, दाह, पेद, प्रमेह, विष ये सब नाश

दोषहरोदाहमेदोमेहविपापहम् ९२ त्रिल्वोग्निमन्धश्यो  
 नाकःकाश्मरीपाटलातथा । काथमेवांजयेन्मेदोदोषक्षौद्रे  
 णसंयुतः ९३ क्षौद्रेणत्रिफलाकाथःपीतोमेदोहरःस्मृतः ।  
 शीतीभूतंतथोष्णाम्बुमेदोहृत्क्षौद्रसंयुतः ९४ चर्च्यचित्र  
 कविश्वानां साधितोदेवदारुणा । काथस्त्रिवृच्चूर्णयुतो  
 गोमूत्रेणोदराञ्जयेत् ९५ पुनर्नवामृतादारुपथ्यानागर  
 साधितः । गोमूत्रगुग्गुलुयुतःकाथःशोथोदरापहः ९६ प  
 थ्यारोहितककाथंयवक्षारकणायुतम् । पिबेत्प्रातर्धकृत्स्नी  
 हगुल्मोदरनिवृत्तये ९७ पुनर्नवादारुनिशानिशाशुण्ठी  
 हरीतकी । गुडूचीचित्रकोभार्गीदेवदारुकृतःशृतः ९८  
 पाणिपादोदरमुरःप्राप्तशोफनिवारयेत् । फलत्रिकोद्भवंका  
 थंगोमूत्रेणैवपाययेत् ९९ वातश्लेष्मकृतंहन्तिशोथंरुषण

होयें वेतसको कहीं जगन्नाथी पीपरि कहते हैं ॥ ८६ । ६२ ॥ ( मेदरोगपर  
 चेलकाड़ा ) चेल, अरखी, सोहनपात, खंभारी और पादल इनका काड़ा शहद  
 संग पिये तो मेददोष मिटै ॥ ६३ ॥ ( पुनः त्रिफलादिकाथ ) त्रिफले का  
 काड़ा शहद संग-पिये तो मेददोष जाय उष्ण जल ठण्डाकरि शहदसंयुक्तपिये  
 तो मेददोष जाय ॥ ६४ ॥ ( उदररोगपर चावकाड़ा ) चाव, चीता, सोंठ  
 और देवदारु इनका काड़ा निशोतचूर्ण गोमूत्र के साथ पिये तो उदररोग दूर  
 होय ॥ ६५ ॥ ( पेटफूलने पर गदापुरैनाकाड़ा ) गदापुरैना, गुर्च, देवदारु  
 और सोंठ इनका काड़ा गोमूत्र गुग्गुलुयुक्त पिये से पेटकी सूजन मिटै ॥ ६६ ॥  
 ( पिलही पर हरीतकीकाड़ा ) जंगीहड, अगियाखर इनका काड़ा जग-  
 सार व पीपरियुक्त प्रातःकाल पिये से झीहा, वायुगोला, यकृत, अच्छी हो  
 रोहित नाम करिके खर लेना ॥ ६७ ॥ ( शोथपर गदापूर्णकाड़ा ) गदा-  
 पुरैना, दाखहल्दी, सोंठ, बड़ीहड, गुर्च, चीता, भार्गी, देवदारु इनके काड़ा से  
 हाय पाच उदर छाती मुसकी सूजन जाय ॥ ६८ ॥ ( अंडवृद्धि सूजनपर  
 त्रिफलाकाड़ा ) त्रिफला के काड़ेमें गोमूत्र संयुक्त करि पिये से वात कफ जन्य

ठाखदिरचन्दनैः। त्रिवृद्धरुणकैरातवाकुचीकृतमालकैः १६  
 शाखोटकमहानिम्बकरञ्जातिविपाजलैः। इन्द्रवारुणिकान  
 न्ताशारिवापर्पटैःसमैः १७ एभिः कृतंपिवेत्काथंकणागुग्गु  
 लुसंयुतम्। अष्टादशेषुकुप्रेषवातरक्तादितेतथा १८ उपदं  
 शैरलीपदेचप्रसुतेपक्षघातके। मेदोदोषेनेत्ररोगमञ्जिष्ठा  
 दिःप्रशस्यते १९ पथ्याक्षघात्रीभूनिम्बैर्निशानिम्बामृतायु  
 तैः। काथःकृतःषडङ्गोयंसगुणःशोर्षिशूलहा २० भ्रूशङ्खक  
 र्णशूलानितथाचार्द्धशिरोरुजम्। सूर्यावर्तेशङ्खकञ्चदन्त  
 पातंचदद्भुजम्। नक्तान्ध्यंपटलंशुक्रं चक्षुःपीडां व्यपोहति  
 २१ वासाविश्वामृतादाधीरक्तचन्दनचित्रकैः। भूनिम्बनि  
 म्बकट्टुकापटोलत्रिफलास्त्रुदैः २२ यवकालिङ्गकुटजैःकाथः  
 सर्वाक्षिरोगहा। वैस्वर्यपीनसंश्वासनाशयेदुरसःक्षतम् २३  
 अमृतात्रिफलाकाथः पिप्पलितूर्णसंयुतः। सक्षौद्रःशीत

अमलतास का शूदा, सहोरा, बकायन, करंग, अतीस, नेत्रवाला, इंद्रायनकी  
 जड़, जवाता, शारिवा और पित्तपापड़ा ये सब द्रव्य समान लेके काढ़ा करि  
 पीपरि व गुग्गुलु मिश्रित करि पिये से अठारहों कोड़ और वातरक्तपीडा, उप  
 दंश, फीलपाव, प्रसुप्त कहे शून्यवायु, पक्षाघात, मेदोदोष और नेत्ररोग इन  
 रोगन के दूर करने को यह छद्भिर्भंजिष्ठादे काढ़ा इतहै ( शिरशूल नेत्रपर  
 हरीतकीकाड़ा ) हड़, घड़ेडा, आवरा, चिरायता, हल्दी, नीरकीडाल और  
 गुर्च इन सात औषधों के पड्ड काढ़े में गुडमिश्रित करि पिये से शिरशूल,  
 भौंह व कानकीशूल, आघाशीशी, सूर्यावर्त, शैलशूल, डंतपात, दंतरोग, रत्तां-  
 पी, पटल, फूली, नेत्ररोग और नेत्रपीडा ये सब दूर होयें ॥ १५ । २१ ॥  
 ( नेत्ररोग पर चासादिकाड़ा ) रुसा, सोंठ, गुर्च, हल्दी, रक्तचन्दन, चीता,  
 चिरायता, नीर, कुटकी, परंवल, त्रिफला, गोया, यव, इन्द्रयव और बुरैया इस  
 काढ़ेसे सब नेत्ररोग नाशहोयें स्वरभद्रसे कण्ठ खुल जाय पीनस श्वास कलेजे  
 का घाव जातारहै ॥ २२ । २३ ॥ ( दूसरा काढ़ा पूर्व यथा ) गुर्च, त्रिफले  
 का काढ़ा, शहड पीपरि संयुक्त ठण्डाकरि सदैव पीने से सर्व नेत्ररोग विनाश

लोहित्यंसर्वत्रैत्रव्यथांजयेत् २४ अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षवट  
 वेतसजं शृतम् २५ व्रणःशोथोपदंशानानाशनःक्षालना  
 त्स्मृतम् । प्रमथ्याप्रोच्यतेद्रव्यक्षुण्णात्कल्कीकृताच्छ्रुतात् ।  
 तोयेष्टगुणितेतस्याःपानमाहुःपलद्वयम् २६ मुस्तकेन्द्रय  
 वैःसिद्धा प्रमथ्याद्विपलोन्मिता । सुशीतामधुसंयुक्तारक्ता  
 तीसारनाशिनी २७ साध्यंचतुष्पलंद्रव्यं चतुष्पष्टिपले  
 म्बुनितत्काथेनार्द्धशिष्टेनयवागूंसाधयेद्बुधः २८ आद्या  
 चातकजम्बूत्थकपायेविपचेद्बुधः । यवागूंशालिभिर्युक्तां  
 तांभुक्त्वाग्रहणींजयेत् २९ कल्कद्रव्यंपलंशुण्ठीपिप्पली  
 चार्द्धिकार्धिकी । वारिप्रस्थेनविपचेत्सद्रव्योयूषउच्यते ३०  
 कुलित्थयत्रकोलैश्चमुद्गैर्मूलकशुष्ककैः । शुण्ठीधान्यकयुक्तै  
 श्चयूषःश्लेष्मानिलापहः ३१ सप्तमुष्टिकइत्येपसन्निपात  
 होषं ॥ २४ ॥ ( क्षतपर पिप्पल्यादिकाडा ) पीपरि, गूलर, पकरिया, बड़  
 और वेतस इनकी छालका काढाकरि घाव घोरै तौ उपदंशकहे गर्मी और घाव  
 सूजन ये सत्र अच्छे होय ॥ २५ ॥ ( काढ़े की दूसरी विधि ) ओपधी  
 पीसके गोली बनारै तत्र अठगुणा पानी में डारि काढा करै जब चौथाई पानी  
 रहै तत्र उतारिले उसे प्रमथ्या कहते हैं इसके पानकी मात्रा दोपल है ॥ २६ ॥  
 ( रक्तातीसार पर मोवादि प्रमथ्या ) नागरमोथा और इंद्रयवकी प्रमथ्या  
 दोपल ढंढाकरि शहद मिश्रीयुक्त पिये से रक्तातीसार नाशहोय ॥२७॥ ( यवा  
 गूविधान ) षोडश तोले द्रव्य में उसका सोलहगुणा पानी २५६ तोले  
 भरदेय आधा जरिजाय तब द्रव्य खानिकी फेंकदेइ जो पानी रहजाय उसे  
 यत्रगू कहते हैं व आम, अंबाढा और जामुन इन तीनों वृत्तों की चारपल छाल  
 को फूटकर चौंसठगुने पानी में डाल के औटावे जब आधा पानी रहजावे  
 तब उतारके इस जलको खानले उसमें चारपल चावल डाल औटाके उतारे  
 इसे आम्रादि यवागू कहते हैं इसको खाकर संग्रहणीको नीतताहै ॥ २८॥२९ ॥  
 ( यूपविधान ) सौठका कल्क औपत्र एकपल तिस्र में पीपरि पात्र भांशु मू  
 स्यभर पानी में पचाइ तिसमें अथ खून गलाइके देइ उसे यूप कहते हैं ॥ ३० ॥  
 ( सन्निपात पर सप्तमुष्टियूप ) कुलथी, यव, वेर, भूग, मूरीको पेंदी जो

ज्वरञ्जयेत् । आमवातहरः कण्ठद्वक्त्राणां विशोधनः ३२ क्षु  
 ष्णोद्रव्यंपलेसाध्यंचतुष्पष्टिपलेजले । अर्द्धशिष्टंचतद्वयं  
 पानेभक्तादिसंधिधौ ३३ उशीरपर्पटोदीच्यमुरतनागरचंद  
 नैः । जलंशृतं हिमं देयं पिपासाज्वरनाशनम् ३४ अष्टमेनांश  
 शेषेणचतुर्थेनार्द्धकेनवा । अथवाकृधनेनैवसिद्धसुष्णोदकं  
 देत् ३५ श्लेष्मामेवातभेदोऽत्रवस्तिशोधनदीपनम् । कासं  
 श्वासज्वरंहन्तिपीतमुष्णोदकंनिशि ३६ क्षीरमष्टगुणं  
 व्यात्क्षीराज्ञीरंचतुर्गुणम् । क्षीरावशेषंतत्पीतं शूलमामोह  
 वंजयेत् ३७ अथान्नप्रक्रियाचैव प्रोच्यतेनातिविस्तरात् ।  
 यत्रागूःषड्गुणजलेसिद्धास्यात्कृसरघना ३८ तण्डुलैर्मुद्ग  
 माषैश्चतिलैर्वासाधिताहिता । यवागूर्त्राहिणीवल्यातर्प्य  
 पत्ताके पास होती है ये सब सूखी द्रव्य इन सबका घूप सोंठ, धनियायुक्त प्यारै  
 तो कफनाश नाशहोय इस सप्तमुष्टिक घूप से सन्धिपात ज्वर जाय आमवात  
 जाय कण्ठ दृश्य न मुख शुद्धरहै ॥ २१ । ३० ॥ ( पानादि कल्पना )  
 कुटी द्रव्य पलभर ले चौंसठि पल पानी में आठै जन आधा रहिजाय उस  
 पानी को भस्म कहते हैं इसे भोजन समय जोडा थोडा करिदिना, चाहिये ॥ ३३ ॥  
 ( ज्वर तृपापर उशीरादिपान ) खस, पित्तपापडा, सुगन्धमाला, नागर  
 मोथा, सोंठ और रक्तचन्दन इन्हें पकाय पानी टण्डा करदेय तो पियास य  
 ज्वर नाशहोय ॥ ३४ ॥ ( उष्णोदक ) त्रिक आठरु ग्रह वं चौ पा अंश  
 अर्द्ध शेष अथवा अतिवक्त्ररे उसे उष्णोदक कहते हैं “ अथ सुश्रुतोक्तलोक  
 सार्द्धद्रव्यम् ” तत्पादहीनंवातघ्नमर्द्धहीनं तु पित्तघ्नम् । यस्मिन्पादशेषश्चपानेर्धिदीप  
 नंश्चतुर्गुणम् ॥ शारदचार्द्धपादघ्नं पादहीनं तु ह्येनम् ॥ शिशिरेचरन्तेचगीष्मेनादान  
 शेषिणम् ॥ विपरीतशृतं दृष्ट्वा दापिक्रमार्गिकंश्चतुर्गुणम् ॥ २२ ॥ कफ, आमवात,  
 मेदा, वस्तिशोधन, दीपन, श्वास, वात, ज्वर ये रोग रतिको उष्णोदक पीने  
 से जाते हैं ॥ २६ ॥ ( क्षीरपाकविधि ) द्रव्यका आठगुणा दूध दूधका चौ  
 धागुणा पानी एकप्रकर आठै जन पानी जरजाय तर दूध भिये तो आठगुण दूर  
 होय ॥ ३७ ॥ ( अन्नप्रकार ) अन्न संघेप से अन्नविधि कहते हैं अन्न यत्रागूः  
 री छ गुना जल देके प्यारै उसे कृसरा और पना कहते हैं ॥ ३८ ॥ चावल, मूग,

षीव्रातनाशिनी ३९ विलेपीचघनासिद्ध्यासिद्धानीरेचतु  
 गुणे। वृंहणीतर्पणीहृद्य। मधुरापित्तनाशिनी ४० द्रवाधिक्रा  
 स्वल्पसिद्ध्याचतुर्दशगुणेजलो। सिद्धोपयानुर्ध्वेर्जेयायूषःकि  
 ङ्चिद्घनःरमृतः। पेयालघुतराज्ञेयाग्राहिणीधातुपुष्टिदा।  
 यूषोवलकरःकण्ठ्योलघुपाकःकफापहः। जलेचतुर्दशगुणे  
 तण्डुलानांचतुष्पलम् ४१ विपचेत्स्वाप्नयेन्मण्डसमक्लोमधु  
 रोलघुः। नीरेचतुर्दशगुणेसिद्धोमण्डस्त्वसिद्धयकः ४२ शु  
 ष्ठीसैन्धवसंयुक्तःपाचनोदीपनःरमृतः ४३ धान्यत्रिकटुसि  
 न्धूत्थनुहृतण्डुलयोजितः। मृष्टश्चहिङ्गुतैलाभ्यांसंमण्डो  
 ष्टगुणःस्मृतः। दीपनःप्राणदोवस्तिशोधनोरक्तवर्द्धनः ४४  
 ज्वरजित्सर्वदोषघ्नोमण्डोष्टगुणउच्यते। सुकण्डितैरतथासृ  
 ष्टैर्वाद्यमण्डोयवैर्भवेत् ४५ कफपित्तहरः कण्ठ्योरक्तपित्त  
 भाप और तिल इनकी यथागुणै यह ग्रहणीको बल देनी है वृष्टिको करतीहई  
 च'तको नाशती है ॥ ३९ ॥ ( विलेपीप्रकार ) अन्नमें चाँगुना जलदे पकाने  
 सो विलेपी है सो धातुओं को पोत्रै वृष्टकरै मन प्रसन्न करै मिय व मधुर होकर  
 पिचनाशक है ॥ ४० ॥ ( अथ पेया ) अन्नको चाँटह गुणे पानी में सिद्ध करै  
 पतला मात्रा न हो जो पियाजाय उसे पेया कहते हैं उससे कुदही गाढ़को यूष  
 कहते हैं यह पेया अतीव हलकी होकर मलादिकों को स्तम्भन करती व धातु  
 पुष्ट करती है और यूष हलका है ग्रहणी को शुद्धकरताहै धातुपुष्ट करै बल  
 करै कण्ठ शुद्धकरै लघुपाक है कफहारक है ( भातविधि ) 'चायलसे चाँ-  
 टहगुणा पानी लेकै चुरावे उसका मांड निचोरै सो पीठाहै हलकाहै उसे भक्त-  
 मण्ड कहतेहै ( शुद्धमण्ड ) उसी मांडमें सोठ व सेंधन डारिकै पिये तो दीपन  
 पाचन करै ॥ ४१ ॥ ४३ ॥ ( अष्टगुण मण्ड ) धनियाँ, त्रिदुडा, सेंधन, हींग,  
 चावल, हींग तेलकी भूनी पययुक्त माँटका अष्टगुणा मांड दीपनहै भाग्यदाताहै  
 पस्तिशोधन रक्तवर्द्धन ज्वरघ्न सप्तदोषहरखट्टै ॥ ४४ ॥ ( यचमण्ड पित्तादि  
 पर ) यच कूट भूतिकै चुरनै सो यादयमण्डहै कफ पित्त हरै कंठ शुद्धकरै रक्त-  
 पित्तहरै ॥ ४५ ॥ ( लाजमंड ) धानका लाजा कुटी द्रव्य वा भूने धानका  
 वनावै सो लाजमंडहै यह कफपित्तहारी व आहो होकरै वृष्ण व ज्वर को

प्रसादनः । लाजैर्वातण्डुलैर्मृष्टैर्लाजमण्डः प्रकीर्तितः । श्लेष्मपित्तहरो ग्राहीपिपासाज्वरजिन्मतः १४६ इति श्री शार्ङ्गधरे मध्यखण्डे काथकल्पनाद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

क्षुण्णेद्रव्यपले सम्यग्जलमुष्णं विनिक्षिपेत् । मृत्पात्रे कुडवोन्मानंततस्तुखावयेत्पटात् १ तरयचूर्णद्रवः फाण्टस्तन्मानं द्विपलोन्मितम् । सितामधुगुडादींस्तुकाथवत्तत्र निक्षिपेत् २ मधूकपुष्पं मधुकंचन्दनं सपरुषकम् । मृणालं कमलं लोध्रं खम्भारीनागकेशरम् ३ त्रिफलांशारिवांद्राक्षां लाजांकोष्णे जलोक्षिपेत् । सितामधुचुतेपेयः फाण्टो वासौ हि मोथवा ४ वातपित्तज्वरं दाहं तृष्णामूर्च्छा रतिभ्रमान् । रक्तपित्तमदं हन्यान्नात्र कार्या विचारणा ५ आस्रजम्बूकि सलयैर्वटशुद्धप्ररोहकैः । उशीरेण कृतः फाण्टः सक्षौद्रोज्वरनाशनः ६ पिपासाच्छर्द्यतीसारान्मूर्च्छां जयति दुर्जयाम् । म

विनाशताहै ॥ १४६ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुपाकरे मध्यखण्डे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

फाट करक वा कुटीद्रव्य पलभर एक कुटव पानी माटीके पात्रमें अच्छीभांति तप्तकरि उतारिले उस कुटीहुई द्रव्यको उष्णोदक में डारि देकदे जन ठंडाहो तब छानिलेय इसे फाट कहते हैं आठ रुपये भर फांटकी मात्राहै मिश्री शहद पुराना गुड़ मिस्रभाति कादे में डारना कहाहै उसी भाति फांट में पढ़ताहै ॥ १ । २ ॥ ( पित्तज्वर पै मधूकफांट ) महुआके फूल, मूलइदी, लालचंदन, फालसा, कमल, लोत्र, खंभारी, नागकेशर, त्रिफला, सरिजन, दास्य और लावा के तप्तसारि में डारि मिश्री शहद संयुक्त पिलावै इस फांट वा हिमसे चात, पित्त, ज्वर, दाह, प्यास, मूर्च्छा, गतिभ्रम, रक्तपित्त और मुद ये सन दूरहोयें इस में कुछ विचार नहीं करना चाहिये ॥ ३ । ५ ॥ ( पियासपर आआदि फांट ) आम व जामुन की कौपल चढ़की कली भोतरी पत्ते और जटा खस इनका फांट करि पिये ने ज्वर, प्यास, छादि, अतीसार और मूर्च्छा ये सन दूरहोये ॥ ६ ॥ ( पित्ततृष्णापर मधूकफांट ) महुआके फूल, खंभारी, चन्दन, खस, धनियां, नेत्रमाला वा दाख इनका फाट शकारयुक्त पिये तो तृष्णा, पित्त, दाह,

ध्रुवष्टीचकाकोटुम्बरपल्लवैः । नीलोत्पलं हिमस्तेषां तृष्णा  
 छर्दिनिवारणः ३ नीलोत्पलं वलाद्राक्षामधूकं मधुकंतथा ।  
 उशीरं पद्मकंचैव काश्मरीचपरूपकम् ४ एतच्छीतकषाय  
 श्चवातपित्तज्वरं जयेत् । सप्रलापभ्रमच्छर्दिमोहत्ृष्णानि  
 वारणः ५ अमृतायो हिमः पेयो जीर्णज्वरहरस्मृतः । वासा  
 याश्च हिमः कासरक्तपित्तज्वराञ्जयेत् ६ प्रातः सशकरः पे  
 यो हिमो धान्याकसम्भवः । अन्तर्दाहं तथा तृष्णां जयेत्त्रोतो  
 विशोधनः ७ धान्याकधात्रिवासानां द्राक्षापर्पटयोर्हिमः ।  
 रक्तपित्तज्वरं दाहं तृष्णाशोषञ्चनागयेत् ८ ॥ इति श्रीशा  
 र्ङ्गधरे मध्यखण्डे हिमकल्पनाचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

द्रव्यमाद्रं शिलापिष्टं शुष्कं वासजलं भवेत् । प्रक्षेपाएव  
 कल्कास्ते तन्मानं कर्षसम्मितम् १ कल्के मधुघृतं तैलं देयं हि  
 गुणसात्रया । सितागुडौ समौ दद्याद्द्रवादेयाश्चतुर्गुणः २

हिम ) मरिच, गुलहठी, कठगुलरुकी कोंपल नील कमल के हिमसे तृष्णा व  
 छर्दि का नाशहोय ॥ ३ ॥ ( पित्तज्वर पर नील कमलादि हिम ) नील  
 कमल, धरियारा, दास, महुआ, मुलहठी, नेत्रवाला, पवाल, खंभारी और फा  
 लसा इनका शीतकषाय वातपित्तज्वर, प्रलाप, भ्रम, छर्दि, मोह और तृष्णा  
 को हरता है ॥ ४ । ५ ॥ ( जीर्णज्वर पर गुहूच्यादि हिम ) गुर्ध के  
 हिमसे जीर्णज्वर जाता है वासा कहे रूसाके हिमसे कास और रक्तपित्तज्वर  
 जाता है ॥ ६ ॥ धनियाका हिम शकर डारि मातःकालापियेसे अन्तर्दाह, तृष्णा,  
 और द्यारोपये तब रोगनाशहोते है ॥ ७ ॥ ( रक्तपित्तपर ) धनिया, आवरा, रूसा,  
 दास और विनाषापड़ा इनका हिम रक्त पित्तज्वर, दाह, तृष्णा और कंठशोषको  
 विनाशता है ॥ ८ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरे मध्यखण्डे हिमकल्पनाचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

( अथ कल्काविधिः ) गीली औपषवो शिलापै वारिक चटनी के स-  
 मान पीसे यदि सूखीहोय तो उसमें जलडालके पीसे तिसे कल्क और मक्षेप  
 करते हैं इसकी मात्रा दशमाशे कही है ॥ १ ॥ कल्क में मधु, घृत, तैलमात्रा  
 से द्वा देना मिथी गुड़ समान मात्रा व अति थोदी पतली चूर्णागुनी देना



त्रिवृद्धापिञ्चवृद्ध्यावासप्तवृद्ध्याथंवाकणाः । पिवेत्पि  
 द्वादशदिनंतास्तथैवापकर्षयेत् ३ एवंविंशदिनैः सिद्धंपि  
 प्पंलीवर्द्धमानकम् । अनेनपाण्डुवातास्रकासश्वासारुचि  
 ज्वराः । उदरार्शःक्षयश्लेष्मवातानश्यन्त्युरोग्रहाः ४ लेपा  
 निम्बदलैःकल्कोत्रणशोधनरोपणः । भक्षणान्त्रदिक्कुष्ठानि  
 पित्तश्लेष्मकृमीञ्जयेत् ५ महानिम्बजटाकल्कोगृध्रसीना  
 शनःस्मृतः ॥ शुद्धं कल्कोरसोनस्यतिलतैलेनमिश्रितः वात  
 रोगोऽजयेत्तीव्रान्पिषमज्वरनाशनः ६ पक्के कन्दरसोनस्य  
 गुटिकानिस्तुषीकृताः । पाटयित्वा चतन्मध्यं दूरीकुर्व्यात्त  
 दद्दुरम् ७ तदुग्रगन्धनाशायरात्रौतक्रेविनिक्षिपेत् । अपनी  
 यचतन्मध्याच्छिलायांपिषयेत्ततः । तन्मध्येपठचमांशोनचू  
 र्णमेपांविनिक्षिपेत् ८ सौवर्चलयवानीचभर्जितंहिडुसैन्धव

चाहिये ॥ २ ॥ ( पाण्डुपर वर्द्धमान पीपरि ) पीपरि तीन व पांच व  
 सात बदायै और जै पीपरि से आरम्भकरै तै प्रतिदिन बदायै दशदिन ताई  
 फिर उतनी प्रतिदिन घटावै बीसवैदिन श्यम दिनकी मात्रा पूरी करै यो वर्द्ध-  
 मानपीपरि सिद्ध करनेसे पाण्डुरोग, वातरक्त, कास, श्वास, अरुचि, ज्वर, उदरवि-  
 कार, क्षयी, कफ, वात, छाती जकड़ना ये सब दूरहो और जो पानी व दूध  
 संग पिया चाहै तो तीन दिनतक दो व तीन तोले दूधले फिर कल्क से चो-  
 गुनाले ॥ ३ । ४ ॥ ( घायपर निम्बकल्क ) नीवपत्र की लुगदी चाकर

पहः । नवनीततिलैःकल्कोजेतारक्काशीसांस्मृतः २५ न  
वनीतसितानागकेसरैश्चापितद्विधः । पीतोमसूरयूषेण  
कल्कशुष्ठीशलाटुजः । जयेत्सङ्ग्रहणीतद्वत्तकेणवृहतीभ  
वः २६ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेपञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

अत्यन्तशुष्कंयद्द्रव्यंसुपिष्टंवल्लगालितम् । तत्स्याच्चू  
र्णरजःक्षौद्रस्तन्मात्राकर्षसम्भिता १ चूर्णेगडस्समोदेयः  
शर्कराद्विगुणाभवेत् । चूर्णेषुभर्जितं हिङ्गुदेयंनोत्केदकृद्भवे  
त् २ लिहेच्चूर्णैर्द्रवै सर्वघृताद्यैर्विगुणोन्मितैः । पिबेच्चतुर्गुणै  
रेवंचूर्णमालोडितंद्रवै ३ चूर्णावलेहगुटिकाकल्कानाम  
नुपानकम् । वातपित्तकफातंकेत्रिद्वयैकपलमाहरेत् ४  
यथातैलंजलं प्राप्यक्षणेनैवप्रसर्पति । अनुपानवलादङ्गेत  
थासर्पतिभेषजम् ५ द्रवेणयावतासम्यक्चूर्णैसर्वप्लुतं  
भवेत् । भावनायाःप्रमाणन्तुचूर्णैप्रोक्तंभिषग्वरैः ६ आ  
मलंश्चित्रकःपथ्यापिप्पलीसैन्धवस्तथा । चूर्णितोद्यंगणोद्दे

पीनेसे ग्रहणी नाशहोय भटकटैया के फलका कल्क मट्टाके साथ पीनेसे संग्रहणी  
रोगको जीतताहै ॥ २५ ॥ २६ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

( अथ चूर्णविधि ) अतीर सूतीद्रव्य कूटिके कपडे में छानिले उसे चूर्ण  
रज और क्षौद्र कहते हैं इसके राने की मात्रा कर्षभर कही है ॥ १ ॥ चूर्ण में  
गुड़ समान लेना याद भूनी हींग भूनी हुई देना ॥ २ ॥ घृत शहद आदि  
तथा द्रव्यस्तु दूनी दे चाँट और पीनेकी द्रव्य चूर्ण के साथ चौगुनी देना ॥ ३ ॥  
चूर्ण, अवलेह, गुटिका और कल्क इनका अनुपान वात में तीन पल पित्त में  
दो पल कफमें एक पल देवै ॥ ४ ॥ अनुपान देनेका कारण यहहै कि जैसे तेल  
पानी में डाले से फैल जाताहै वैसेही अनुपान के वल से अरौपथ अवेश करती  
है ॥ ५ ॥ अरौपथ में किसीकी घुट देनाहो तो पित्तने में चूर्ण घुटकी मुवाफिकहो  
तिनना देना भासना देनाहो तो चूर्णस्नान में भावप्रशार में देख लेना ॥ ६ ॥  
( सर्वज्वरपर आमलकादि चूर्ण ) आवरा, धीना, हड़, पीपलि, सेंपय इन  
पाचोंका चूर्ण सर्वज्वर नाशकरै व रेचय,रोचक,कफहर्ता होकर दीपन पाचनहै ॥

यः सर्वज्वरविनाशनः ७ भेदीरुचिकरःश्लेष्मजेतादीप  
 नपाचनः । मधुनापिप्पलीचूर्णलिहेत्कासज्वरापहम् ८ हि  
 क्काश्वासहरंकण्ठ्यंहीहृद्गन्त्रालकोचितम् । एकाहरीतकी  
 योज्याद्वौतुयोज्यौविभीतकौ ९ चत्वार्यामलकान्येवत्रिफ  
 लैषाप्रकीर्तिता । त्रिफलामेहशोथघ्नीनाशत्रेद्विपमज्वरा  
 न् १० दीपनीश्लेष्मपित्तघ्नीकुष्ठहन्त्रीरसायनी । सर्पिर्मधु  
 भ्यांसंयुक्तासैवनेत्रामयाञ्जयेत् ११ पिप्पलीमरिचंशुण्ठी  
 त्रिभिस्त्र्यंशुषण्मुच्यते । दीपनंश्लेष्मदोषघ्नंकुष्ठपीनसना  
 शनम् १२ जयेदरोचकंसामंमेहगुल्मगलामयान् । पिप्प  
 लीचविकांविश्वापिप्पलीमूलचित्रकैः १३ पञ्चकोलमि  
 तिख्यातरुच्यंपाचनदीपनम् । आनाहृद्हीहृगुल्मघ्नंशूल  
 श्लेष्मोदरापहम् १४ त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैश्चातुर्जातिस  
 केसरम् । त्रिगन्धंसचतुर्जातरुक्षोष्णालघुपित्तकृत् १५ व

( ज्वरपर पीपरिचूर्ण ) पीपरि, शहद युक्त चाटै तो ज्वर, कास, हिचकी,  
 रसास, कण्ठरुज, पिलडी ये सकल रोग नाश होयें तथा बालकों के लिये यो-  
 ग्यहै ( प्रमेहपै त्रिफलाचूर्ण ) हृद् एकभाग बहेड़ा दो भाग आंवरा चारभाग  
 इसप्रकार त्रिफला है सो त्रिफला प्रमेह शोथ और विपमज्वर को नाशकरती  
 है और दीपन कफ पित्त नाशन व कुष्ठहरण इंकर रसायन है वही त्रिफला  
 शहद व घृतयुक्त खाने से नेत्ररोग दूरकरै है ॥ ७ १-११-॥ पीपरि, मरिच  
 और सोंठ इसे त्र्यंशु और त्रिकुटा कहते हैं यह दीपन होकर कफ, कुष्ठ, व  
 पीनस को नाशकरताहै तथा आंव, अरुचि, मेह, गुल्म, कण्ठरोग ये सब दूरहोयें  
 ( कफादिपर पञ्चकोलचूर्ण ) पीपरि, चाव, सोंठ, पीपरापूल और चीता  
 इसे पञ्चकोल कहते हैं यह रोचन, पाचन और दीपन होकर, आनाह, पिलडी,  
 गुल्म, शूल, कफ, उदररोग इनसबों को नाशताहै ॥ ( त्रिगन्ध चूर्ण ) इला-  
 यची, दालचीनी और तज ये त्रिगन्धहै ( चातुर्जात ) इलायची, दालचीनी,  
 पत्रज और केसर ये चातुर्जात हैं ये दोनों रुखे हैं उष्ण हैं कुष्ठ पित्तकारक हैं  
 कांतिरुचि, कर्चा तीक्ष्णहैं और विष व कफको नाशते हैं ॥ ( जीवनीयगण )

एयैरुचिकरंतीक्ष्णविषश्लेष्मामयाञ्जयेत् । काकोलीक्षी  
 रंकाकोलीजीवकर्पमकौतथा १६ मेदाचान्यामहामेदाजी  
 वन्तीमधुकन्तथा । मुद्गपर्णीमामपर्णीजीवनीयोगणस्त्व  
 यम् १७जीवनीयोगणःस्वादुर्गर्भसन्धानकृद्गुरुः । स्तन्यकृ  
 द्दृहणोदृष्यःस्निग्धश्शीतस्तृषापहः । रक्तपित्तक्षयशोषं  
 ज्वरदाहानिलाञ्जयेत् १८ द्वेमेदेद्वेचकाकोल्यौजीवकर्पम  
 कौतथा । ऋद्धिवृद्धीचनैःसर्वैरष्टवर्गउदाहृतः । अष्टवर्गो  
 बुधैःप्रोक्तोजीवनीयसमोगुणैः १९ सिन्धुसौवर्चलंचैववि  
 ङ्गसामुद्रिकंगडमाएकाद्वित्रिचतुष्पञ्चलवणानिक्रमाद्विदुः  
 २० तेषुमुख्यंसैन्धवंस्यादनुक्तैतत्प्रयोजयेत् । सैन्धवाद्यं  
 रोमकान्तंज्ञेयंलवणपञ्चकम् २१मधुरंमृष्टविण्मूत्रंस्निग्धं  
 सूक्ष्मंबलापहम् । वीर्योष्णदीपनंतीक्ष्णकफपित्तविवर्द्ध  
 नम् २२ स्वर्जिकायावशूकश्चक्षारयुग्ममुदाहृतम् । ज्ञे

काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, अष्टपत्रक, पेदा, महामेदा, जीवन्ती " दूधिया  
 लताकी क्षीनीकी क्षीमीकीसी तरकारी होतीहै" गुलहठी, मूंगफली और उर्दफली  
 इनकी जीवनीयगण संज्ञाहै सो स्वादिष्ठ, गर्भस्थितिकारक, भारी, दुग्धवृद्धिनी,  
 धातुपोषक, धातुशोधक, स्निग्ध व टण्डी होकर तृष्णा, रक्तपित्त, क्षयी, शोष,  
 क्वर, दाह और वायुको हरताहै ॥ १२ ॥ १८ ॥ मेदा. दोनों काकोली, जीवक,  
 अष्टपत्रक. अद्वि और वृद्धि यह अष्टवर्ग है परन्तु आठमें कोई मिलती है 'अष्टवर्ग  
 को बैचलोग जीवनीयगणके तुल्य कहते हैं ॥ १९ ॥ (चिण्मूत्र पर लवण  
 पंचकचूर्ण ) सेंधा, सोंचर, विटवोन, खारी और सांभर इन पांचों में पहिला  
 एक लवण, पहिले व दूसरे को द्विलवण, पहिले, दूसरे व तीसरेको त्रिलवण,  
 पहिले, दूसरे, तीसरे व चौथे को चतुर्लवण और पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे  
 व पांचवें को पञ्चलवण कहते हैं ॥ २० ॥ इनमें सेंधा मुख्य है जहां नाम न  
 लिखें तहां सेंधा लेना सेंधे से सांभरि तक पांच लोन जानो ॥ २१ ॥ पाक  
 मधुर है मल मूत्र पकायके गिराता है चिकना अवेश करता चलहरता धातु को  
 गरम करताहुआ दीपन व तीक्ष्णहो कफ व पित्तको वशता है ॥ २२ ॥ (गुल्मा-

यौवह्लिममौक्षारौस्वर्जिकायावशूकजौ २३ क्षाराश्चान्त्रेदि-  
 गुल्मार्शोग्रहणीरुक्छिदःभराः । प्रात्रनाःकृमिपुंस्त्वघ्नाः  
 शर्कराश्मरिनाशनाः २४ त्रिफलारजनीयुग्मंकण्टकारीयु-  
 गेशठी । त्रिकटुग्रन्थिकंमूर्वागुडूचीघ्नन्वयासकाः २५ क-  
 टुकापर्वटोसुस्तंत्रायमाणाचवालकः । तिक्तःपुष्करमूलंच-  
 मधुयष्टीचवत्कम् २६ यवानीन्द्रयवोभार्गीशिष्टुबीर्जसु-  
 राष्ट्रजा । वचात्वक्पद्मकोशीरंचन्द्रनातिविषाबलाः २७  
 शालपेणीपृष्ठपर्णीविडङ्गंतगरंतथा । त्रित्रकोदेवकाष्ठञ्च,  
 चव्यंपत्रंपटोलजम् २८ जीवर्कषभकोचैवलवङ्गवंशलो-  
 चनम् । पुण्डरीकंचकाकोलीपत्रजंजातिपत्रकम् २९ ता-  
 लीसपत्रंचतथासमभागानिचूर्णयेत् । सर्वचूर्णस्यसार्द्धी  
 शर्करातंप्रक्षिपेत्सुर्धाः ३० एतत्सुदर्शनं नामचूर्णदोषत्रया-  
 पहम् । ज्वरांश्चनिखिलान्हन्यात्त्रकार्याविचारणा ३१

दिपर खार ) सञ्जीवार और जवाखार ये दो खारों को कहें सो दोनों अग्नि  
 समान देदीप्पमान हैं ॥ २३ ॥ और क्षार सहिनवक्षार ३ गदापूर्णक्षार भी-  
 गुल्म, अर्श, ग्रहणी इन रोगों को नाश करता है तथा पाचन कृतिनाशक पुं-  
 स्त्वहन्ताहो शर्करा व पयरी को हरता है ॥ २४ ॥ ( सर्वज्वरपर सुदर्शन  
 चूर्ण ) त्रिफला, दोनों हल्दी, दोनों भटकटैया, कजूर, त्रिहुटा, पीपरासूर  
 मूर्वा, गुर्च, धमासा ॥ २५ ॥ कडुकी, पित्तपापदा, नामरसोधा, तामिमाणा नेत्र-  
 घाला, नीपकी बाल, पुष्करमूल, मुलहठी, कुरैया ॥ २६ ॥ अजवाइन, इन्द्र  
 यव, भार्गी, सहिजन के त्रिया, भुजी फटकारी, वच, तज, पश्वाल, रस, श्वेत  
 चन्दन, अतीस, त्रियारा ॥ २७ ॥ वनउर्दी, वनमूंग, वायनिहंग, तगर, चीता,  
 देवदारु, चाव, पटोल ॥ २८ ॥ “ जीवरु, ऋषभक इन दोनोंके अभासमें विदारी  
 कन्द लेना” लीग, वंशलोचन क्रमलपत्र, काकोली के अभाव में गुलहठी लेना  
 दुइ में दूना तेजपात, आदिबी ॥ २९ ॥ तालीसपत्र ये सब समाजने चूर्णकरे  
 सब चूर्णका आधा चिरायता डारै ॥ ३० ॥ यह सुदर्शन चूर्ण मिटोपनाशकहो  
 निश्चय सर्वज्वर को हरता है इसमें विचार नहीं करना चाहिये ॥ ३१ ॥

पृथग्द्वन्द्वागन्तुजाश्चघातुस्थान्विषमज्वरान् । मन्निषा  
 तोद्गवांश्चापिमानसानपिनाशयेत् ३२ शीतज्वरैका  
 हिकादीन्मोहंतन्द्रांभ्रमंतृषाम् । श्वासंकासंचपाण्डुत्वंह  
 द्रोगंहन्तिकामलाम् ३३ त्रिकपृष्ठकटीजानुपार्श्वशूलनि  
 धारणम् । शीताम्बुनापिवेद्धीमान्सर्वज्वरनिवृत्तये ३४ सु-  
 दर्शनंयथाचक्रंदानवानांविनाशनम् । तद्वज्वराणांसर्वे  
 धामेतच्चूर्णनिवारणम् ३५ कासश्वासज्वरहरात्रिफला  
 पिप्पलीयुता । चूर्णितामधुनालीढाभेदिनीचाग्निबोधिनी  
 ३६ कटफलंमुस्तकंतिक्ताशुण्ठीशृङ्गीचपौष्करम् । चूर्णमेपां  
 चमधुनाशुद्धवेरसेनच ३७ लिहेज्वरहंरंकण्ठ्यंकासश्वा  
 सारुचीर्जयेत् । वातशूलंतथाल्छिर्दिक्षयंचैवव्यपोहति ३८  
 शृङ्गीप्रतिविषाकृष्णाचूर्णितामधुनालिहेत् । शिशोःका-  
 सज्वरच्छिर्दिशान्त्यैवाकेवलाविषाम् ३९ शुण्ठीप्रतिविषा

थ एकाहिक,द्वन्द्वज,सन्निपातज और मानस ऐसे सत्र ज्वरों को त्रिनाशताहै ॥३२॥  
 शीतज्वर, झूठी, अंतरीया, हृत्पीक, घातुधिक, मोह, तंद्रा, भ्रम, तृषा, श्वास,  
 कास, पाण्डु और हृदयरोग को हरे ॥ ३३ ॥ रीड़, पीठ, करिहावें, जाय, पसुरी  
 इन अंगों की पीड़ा नाश होइ जो शीत जल के संग पिये तौ सर्वज्वर हरेन ॥ ३४ ॥  
 जैसे सुदर्शनचक्र सब दानवों को नाशनाहै वैसेही सुदर्शन चूर्ण सब ज्वरों को  
 नाश करता है ॥ ३५ ॥ ( त्रिफलादि चूर्ण कास श्वास ज्वर पर )  
 त्रिफला पीपरिचूर्ण शहद संग चाटे तो कास, श्वास, ज्वर हरे तथा जेदी हो  
 अग्निको प्रबल करताहै ॥ ३६ ॥ ( कफज्वरपर कायफलादिचूर्ण ) काय-  
 फल, नागरमोधा, फुटकी, सोंठ, काकडासिंगी और पुष्करमूल इन द्रव्यन का  
 चूर्ण शहद अदरक रससंग चाटे तो ज्वरहरे कंठशुद्ध होय कास, श्वास, अलवि,  
 घातशूल, धर्दि और झपी ये सब जाय ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ( बालककी सांसी  
 ज्वरपर काकडासिंगी आदि चूर्ण ) काकडासिंगी, अतीस और पीपरि  
 का चूर्ण मधुयुक्त चटावै तौ बालककी सांसी, ज्वर, धर्दि ये दूरहोयें वैसेही  
 वेबल अतीस से भी उक्तरोग जाय ॥ ३९ ॥ (आमातीसार पर शुंठ्यादि-

हिङ्गुमुस्ताकुट्टजचित्रकैः । चूर्णमुष्णांम्वुनापीतंवाताती  
 सारनाशनम् ४० हरीतकीप्रतिविपासिन्धुसौवर्चलंबचा ।  
 हिङ्गुचेतिकृतंचूर्णपिवेदुष्णेनवारिणा ४१ आमातीसार  
 शमनंघ्राहिचाग्निप्रबोधनम् । मुस्तमिन्द्रयवंविल्वलोध्रंमो  
 चरसंतथा ४२ धातकींचूर्णयेत्तर्कुंडाभ्यांपाययेत्सुधीः ।  
 सर्वातीसारशमनंनिरुणाद्विप्रवाहिकाम् ४३ लघुगङ्गाधरं  
 नामचूर्णसङ्ग्राहकंपरम् । मुस्तारलूकशुण्ठीभिर्धातकीलो  
 ध्रंवाल्कैः ४४ विल्वमोचरसाभ्यांचपाठेन्द्रयववत्सकैः । आ  
 म्रवीजंप्रतिविपालंजालुरितिचूर्णितम् ४५ चौद्रतण्डुल  
 पानीयपीतैर्यातिप्रवाहिका । सर्वातीसारग्रहणीप्रशमंया  
 तिवेगतः । वृद्धगङ्गाधरंनामसरिद्वेगविवन्धकम् ४६ तत्रेण  
 यःपिवेन्नित्यंचूर्णमरिचसम्भवम् । चित्रसौवर्चलोपेतंग्रह  
 णीतस्यनश्यति । उदरह्नीहमन्दाग्निगुल्मार्शोनाशनम्भवे  
 चूर्ण ) सोंठ, अतीस, हींग, नागरमोथा, कुरैया और चीता इनका चूर्ण उष्णपानी  
 के साथ पियेसे आच व अतीसार दूरहोये ॥ ४० ॥ ( आमवात पर हरीत-  
 कयादि चूर्ण ) बड़ी हड, अतीस, सेंधालोन, कालालोन, वच और भुनी हींग  
 इनका चूर्ण उष्णोदक सों पिये तो आमवातातीसार जाय तथा आही हो अम्बिको  
 जगाता है ( सर्वातीसार पर लघुगंगाधर चूर्ण ) नागरमोथा, इन्द्रयव,

त् ४७ अष्टौभागाः कपित्थस्य पट्टभागांशकैरामता । दाडि  
 मंतिन्ति डीकंच श्रीफलं घातकी तथा ४८ अजमोदाचपिप्प  
 ल्यः प्रत्येकं स्युस्त्रिभागाः । मरिचं जीरकं धान्यं ग्रन्थिकं चो  
 लकंतथा ४९ सौवर्चलं यद्वानी चर्चातुर्जातं सचित्रकम् । ना  
 गरं चैकभागाः स्युः प्रत्येकं सूक्ष्मचूर्णितम् ५० कपित्थाष्टक  
 सञ्ज्ञं स्याच्चूर्णमितद्गलामयान् । अतीसारं क्षयं गुल्मं ग्रहणीं  
 चैव्यपोहति ५१ दाडिमा द्विपलाग्राह्या खण्डाचाष्टपलानि  
 च । त्रिगन्धस्य पलं चैकं त्रिकटुस्यात्पलत्रयम् ५२ एतदेकी  
 कृतं सर्वचूर्णं स्याद्दाडिमाष्टकमासिचिहृद्दीपनं कण्ठ्यं ग्राहिका  
 मज्वरापट्टम् ५३ दाडिमस्य पलान्यष्टौ शर्करायाः पलाष्टकं  
 पिप्पलीपिप्पलीमूलं यदानीमरिचं तथा ५४ धान्यकं जीरकं  
 शुण्ठीप्रत्येकं पलसंमितम् । कर्षमात्रातुगाचीरीत्वक्पत्रैला  
 इचकेसरम् ५५ प्रत्येकं कोलमात्राः स्युरतच्चूर्णं दाडिमाष्टकं  
 अतीसारं क्षयं गुल्मं ग्रहणीं च गलग्रहम् । मन्द्राग्निपीनमं  
 पार्श्वे ये सव अच्छेदोर्थे ॥ ४७ ॥ ( संग्रहणी पर कपित्थाष्टक चूर्ण ) आठ  
 भाग पक्षा कैषा छःभाग स्वष्ट, अनार, अमली, बेलगिरी, धनफूल, अजमोद  
 और पीपरि ये सव तीन तीन भाग मरिच, जीरा, श्वेत धनिया, पीपरामूल,  
 शुगन्धाला, अजगान, तज, मज इलायची, नागकेसर, चीता और सोंठि  
 ये सव एक एक भाग इन सबको महीन चूर्ण करे यह कपित्थाष्टक नाम चूर्ण गले  
 कि रोग, अतीसार, क्षयी, गुन्म, ग्रहणी इन सबको छच्छी करताहै । ४८ ॥ १॥  
 ( संग्रहणी पर दाडिमाष्टक ) अनारदाना आठ रपगाम, शरयधीसभर तज,  
 पत्रज, इल यनी तीनों मिला के चार भर त्रिमुटा घरह भर इन्हें एककरि चूर्ण  
 करे यह दाडिमाष्टक नाम चूर्ण रोचक, दीपन व ग्राहीहोकर बंध शुद्ध करताहुआ  
 व । सप्रकी नास्ताहै ॥ ४९ ॥ ५३ ॥ ( अतीसार पर चूर्ण दाडिमाष्टक )  
 अनारदाना आठपल, पीपरि पीपरामूल, अजगान, विषे धनियां श्वेत जीरा,  
 सोंठ ये सव पल पाभर वंशतोषा दशमंशे तज, मजज, पला, नागकेसर ये  
 पाच पाचमास यह दूसरा दाडिमाष्टक क्षयी, अतीसार, गुन्म, ग्रहणी, मलग्रह,



कासंचूर्णमेतद्वधपोहति ५६ लवङ्गशुद्धकर्पूरमेलीत्वङ्ना  
गकेसरम् । जातीफलमुशीरंचनागरकृष्णजीरकम् ५७ कृ  
ष्णागुरुरतुगाक्षीरीमांसीनीलोत्पलंकणाचन्दनंतगरंबालं  
कङ्कोलंवेतिचूर्णयेत् ५८ समभागानिसर्वाणिसर्वाह्वचसि  
त्ताभवेत् । लवङ्गाद्यमिदंचूर्णंराजाहंवह्निदीपनम् ५९ रो  
चन्तर्प्येपांशुष्यंत्रिदोषघ्नंवलप्रदम् । हृद्रोगंकण्ठरोगंचका  
संहिकांचपीनसम् ६० यक्ष्माणंतमकंश्वासमतीसारमुरः  
क्षतम् । प्रमेहारुचिगुल्मादीन्ग्रहणीमपिनाशयेत् ६१ जा  
तीफलंलवङ्गलापत्रैस्त्वङ्नागकेसरैः । कर्पूरंचन्दनतिलै  
स्त्ववक्षीरीतगरामलैः ६२ तालीसपिप्पलीपथ्याचित्रक  
रथूलजीरकैः । शुठीविडङ्गमरिचानूसमभागान्चिचूर्णयेत् ।  
६३ यावन्त्येतानिसर्वाणिकुर्याद्भङ्गांचतावतीम् । सर्वचूर्णस  
मादेयाशर्कराचमिषग्वरैः ६४ कर्षमात्रंतथाखादेन्मधुना  
ह्लावितंसुधीः । अस्यप्रभावाद्ग्रहणीकासश्वासा रुचिक्षयाः ।  
वातश्लेष्मप्रतिशयायाः प्रशमयान्तिवेगतः ६५ मरिचंना

मंटाग्नि, पीनस और कास इन रोगों को नाश करे ॥ ५४ ॥ ५६ ॥ ( क्षयी पर  
लवंगादि चूर्ण ) लवंग, शुद्ध कपूर, इलायची दालचीनी, नागकेसर जायफल,  
खस सोंठ, कृष्णजीरा, कृष्णअगर, बंशलोचन जटामांती, नीलकमल पीपरि, चन्दन  
तगर, सुगंधबाला आर कंकोल इनका चूर्ण करि चूर्णकी आँची मिश्री मिलावै  
यह लवंगादिचूर्णराज, दीपन, सेचक, तृप्तिकारक होकर धातुपुष्ट करै त्रिदोषहरे  
षलप्रद, कंठ हृदयरोग, कास, हिचकी, पीनस, क्षयी, तमक, श्वास अतीसार, उरः-  
क्षत, प्रमेह, अरुचि, गुल्म और ग्रहणी इन सबको दूरकरे ॥ ५७ ॥ ६१ ॥ ( जाती-  
फलादि चूर्ण ) जायफल, लवंग, इलायची, तजो पत्रंज, नागकेसर, कपूर,  
चंदन, तिल, बंशलोचन, तगर, आंशुरा, तालीसपत्र पीपरि, हड़, पीता, काला  
जीरा, सोंठ, वायविहंग और मरिच इन सबके समान भाग लेना तिसका चूर्ण  
करि चूर्ण के धरावर साड़ दे कर्ष भर शब्द मिलायके साथ इसके प्रभाव से  
ग्रहणी, कास, श्वास, अरुचि, क्षयी, वात, कफ और नोक टपकना ये रोग बेगही

शपुष्पाणितालीसंलवणानिच । प्रत्येकमेकभागाःस्युःपि  
 प्पलीमूलत्रिन्नकैः ६६ त्वक्कणातिन्तिडीकंचजीरकंचद्वि  
 भागिकाः । धान्याम्लवेतसौविश्वंभद्रेलावदराणिच ६७  
 अजमोदाजलधरःप्रत्येकंस्युस्त्रिभागिकाः । सर्वौषधचतु  
 र्थीशंदाडिमस्यफलंभवेत् ६८ द्रव्येभ्योनिखिलेभ्यश्चसि  
 तादेयांर्द्धमात्रयांमहाखाण्डवसंज्ञंस्याच्चूर्णमेतत्सुरोत्तम  
 म् ६९ अग्निदीप्तिकरंहृद्यंकासातीसारनाशनम्राहद्रोगकं  
 ठजठरमुखरोगप्रणाशनम् ७० त्रिसूचिकांतथाध्मानमर्शो  
 गुल्मकृमीनपि । हृदिपञ्चविधांश्वासंचूर्णमेतद्व्यपोहति  
 ७१ चित्रकस्त्रिफलाव्योषंजीरकंहवुषावचा । यवानीपिप्प  
 लीमूलंशतपुष्पाजगन्धिका ७२ अजमोदाशटीधान्यंवि  
 डङ्गस्थूलजीरकम् । हेमाह्लापौष्करंमूलंक्षारौलवणपञ्च  
 कम् ७३ कुष्ठंवेतिसमांशानिविशालास्याद्विभागिका ।  
 तृचित्रिभागात्रिज्ञेयादन्त्याभागत्रयंभवेत् ७४ चतुर्भागा  
 शातंलास्यात्सर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् । पाचनंस्नेहनाव्यैश्च  
 दूरहोयं ॥ ६२ । ६५ ॥ (अरुचि पर महाखाण्डवचूर्ण ) परिच, नामकेसर,  
 तालीसपत्र, पांचौ लोन ये सब समान भाग लेना पीपरापूल, चित्रक, तज, पीपरि,  
 अमलीकीदाल और जीरा ये सब दो २ भाग लेना धनियां, अम्लवेतस, सोंठ  
 घड़ी इलायची, येर, अजमोद और मोथा से तीन तीन भाग सब द्रव्यकी चौथाई  
 अन्तर सबकी आधी-मिश्रीटे यह महाखाण्डव संज्ञक चूर्ण रोचक दीपन हो हृदय  
 को बलदायकहै, तथा अतीसार हृदयरोग, कंठ जलना, मुसरोग, हैजा, पेट फूलना  
 यवासीर, गुल्म, दृमिरीग, पंचविधद्वैद और रवास इन्हाको नाशकरै ॥ ६६ ॥  
 ७१ ॥ ( खदररोगपर नारायण चूर्ण ) चीता, त्रिफला, सोंठ, पीपरि,  
 परिच, जीरा, हाऊबेर, वच, अजवाइन, पीपरापूल, सौंफ, अजमोद, कडूर, धनि  
 गा, चापविंडग, कालीजीरी, चोक, पुष्करमूल, दोनोला, पौंचौलोन और कूट  
 ये सब समान ले इन्द्रायणकीजइ दो भाग, निशोष तीन भाग, जमालगोटा तीन  
 भाग, पीतपुष्पी, सेहुएढमूल, चारि भाग इन् सषोंको एकत्रकरि चूर्णकरै कठिन

स्निग्धकौष्ठस्यरोगिणः ७६ दद्याच्चूर्णत्रिरिकार्येसर्वरोगप्र  
 णाशनम् । हृद्रोगेपाण्डुरोगेचकासेश्वासेभगन्दरे ७६ मन्दे  
 र्ग्नौचज्वरेकुष्ठेग्रहण्यांचगलग्रहे । दद्याद्युक्तानुपानेनतथा  
 ध्मानेसुरादिभिः ७७ गुल्मेवदरंनारेणघिडभेदेदधिमस्तु  
 ना । उष्णाम्बुभिरजीर्णेच वृक्षाम्लैःपरिकर्तिसु ७८ उष्णीदु  
 र्गधेनोदरेपुतथातक्रेणवागवाम् । प्रसन्नयावातरोगेदाडिमै  
 र्शसांतथा ७९ द्विविधेचविषेदद्याद्घृतेनत्रिप्रनाशनम् ।  
 चूर्णनारायणंनामदुष्टरोगगणापहम् ८० हवुषात्रिफलाचै  
 वत्रायमाणौचपिप्पली । हेमक्षीरस्तृचैव शतलाक  
 टुकावचा ८१ नीलनीसैन्धवंकृष्णालवणंचेतिचूर्णयेत् ।  
 उष्णोदकेनमूत्रेणदाडिमास्त्रिफलारसैः ८२ तथामांसर  
 सेनापियथायोग्यंपिवेन्नरः । अजीर्णेष्ठीहगुल्मेषुशोफा  
 शौविषमाग्निषु ८३ हलीमकामलापाण्डुकुष्ठाध्मानो  
 दरेष्वपि । शुण्ठीहरीतकीकृष्णातृवृत्सौवर्चलंतथा ।

कम् । शण्ठीहरीतकीचेतिक्रमं वृद्ध्या विचूर्णयेत् । वडवानलनाभैतच्चूर्णसंस्थादग्निदीपनम् १ अजमोदाविडङ्गा  
 निसेन्धवेदेवदारुव ॥ चित्रकः पिप्पली मूलं शतपुष्पाचपि  
 प्पली २ मरिचचेतिकर्षाशंप्रत्येकं कारयेद्बुधः । कर्षा  
 स्तुपश्चपथ्यायाः दशस्युष्टृद्धदारुकात् ३ नागराच्चदशैव  
 स्युः सर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् । पिवेत्कोष्णजलेनैवचूर्णचगुड  
 सम्मितम् ४ भक्षयेदथवासम्यक्परश्वयथुनाशनम् । आ  
 मवातरुजंहन्ति सन्धिपीडांचगृध्रसीम् ५ कटिपृष्ठगुदा  
 स्थनाऽचजङ्घयोश्चरुजंजयेत् । तूर्णांप्रतूर्णां विश्वार्चाक  
 फवातामयाज्जयेत् ६ हिङ्गुपाठाभयाधान्यं दाडिमंचित्रकः  
 शटी १ अजमोदात्रिकटुकहवुषाचाम्लवेतसम् ७ अजग  
 न्धातिन्तिडीकंजीरं कर्षां कर्षं च ८ चक्षुरंध्रयंपञ्चचलं व  
 णानिविचूर्णयेत् ९ प्राग्भोजनस्य मध्येवाचूर्णमेतत्प्रयो

अग्निदीपनं च रुचिको उपजाताद्ब्रूयात् कफको नाशताहै ॥ १०० ॥ ( मन्दाग्नि  
 पर वडवानलचूर्ण ) सेंधा पीपरामूल, पीपरि, चाव, चीता, सोंठ और बड़ी  
 इड़ क्रमसे बढ़ाय चूर्ण करै जैसे सेंधा १ माशा तौ पीपरामूल २ माशा पीपरि ३  
 माशाभर लेना यह वडवानल नाम अग्नि हो जगाताहै ॥ ११ ॥ ( चात्तादि पर  
 अजमोदादिचूर्ण ) अजमोद, वायविडंग, सेंधव, देवदारु, चीता, पीपरामूल,  
 सोंफ, पीपरि ॥ २ ॥ और मिर्च ये द्रव्य कर्ष कर्ष भर इड़ पांच कर्ष विधारा  
 दशकर्ष ॥ ३ ॥ सोंठ दशकर्ष इन सबको चूर्ण कर गुडमिश्रित करि खण्डोदक  
 से पिये ॥ ४ ॥ अच्छीतरह खाय तौ सूजन दूरहोय और श्वाभवात, गाढि पीडा,  
 श्मसी वायु ॥ ५ ॥ कटिपीडा, पीठ, गुदा, जायपीठ, सूनीवायु, मत्स्यी व यु,  
 विश्वाची, कफरोग और वायुके रोग ये सब नाशहोयें ॥ ६ ॥ ( शूलादिपर  
 हिङ्गवादिचूर्ण ) गुनी हांग, पादा, बड़ी इड़, धनियां, अनारदाना, चीता,  
 कचूर, अजमोद, त्रिकुटा, हाठवेर अम्लवेतस ॥ ७ ॥ वनतुलसी, इमली की  
 छाल, जीरा, पुष्करभूल, वच, चाव, दोनोंभार और पांचौलोन इन सबको  
 चर्षकरै ॥ ८ ॥ भोजनादिक के प्रथम भयवा पुराने मद्यके संग या गरम

जयेत् । पित्तेद्वाजीर्णमध्येनतक्रेणोष्णोदकेनवा ६ गुल्मे  
 वातकफोद्धूतेविडम्ब्रहेऽष्टीलिकासुच । हृद्वस्तिपार्श्वशूलेषु  
 शूलेचगुदयोनिजे १० मूत्रकृच्छ्रेतथानाहेपाण्डुरोगेऽरुचौ  
 तथा । द्विकायायकृतिष्ठीह्रिश्वासेकासेगलग्रहे ११ ग्रह  
 पथशोविकारेषुचूर्णमेतत्प्रशस्यते । भावितंमातुलुङ्गस्यव  
 हुशःस्वरसेनवा । कुर्याच्चगुटिकाःपथ्यावातश्लेष्मामया  
 पहाः १२ यवानीदाडिमंशुण्ठी तिनित्डीकाम्लवेतसौ ।  
 बदराम्लं चकुर्वीतचतुःशाणमितानिच १३ सार्द्धद्विशा  
 णमरिचं पिप्पली दशशाणिका । त्वक्सौवर्चलधान्याकं  
 जीरकं द्विद्विशाणिकम् १४ चतुःषष्टिमितैःशाणैःशर्करा  
 मूत्रयोजयेत् । चूर्णितं सर्वमेकत्रयवानीखाण्डवाभिधम् ।  
 १५ नाशयेत्पाण्डुरोगं च हृद्रोगं ग्रहणीज्वरम् । छद्दिशोषा  
 तिसारांश्चप्रीहानाहविवन्धता । अरुचिंशूलमन्दाग्नीचा  
 शो जिह्वागलामयान् १६ तालीमंमरिचंशुण्ठीपिप्पलीवं  
 शलोचना । एकद्वित्रिचतुष्पञ्चकर्षेर्भागान्प्रकल्पयेत् १७

जलके साय ज्ञाय ॥ ६ ॥ वात कफ का गुल्म, कोष्ठवन्ध, अष्टीलिका, हृदय,  
 पेह, पसुरा, गुदा और योनिके सब शूल ॥ १० ॥ मूत्रकृच्छ्र, पेट फूलना, पाण्डु,  
 अरुचि, हिचकी, यकृत, प्लीहा, रवास, कास, गलरोग ॥ ११ ॥ ग्रहणी और  
 अर्शे इनपर यह चूर्ण है विजौरा के रस में सात भागना दे गोली बांध ले  
 इस से वात कफ रोग नाशहोय ॥ १२ ॥ ( अरुचिपर यवानीखाण्डव  
 चूर्ण ) अजवाइन, अनारदाना, सोंठ, इमली की दाल, अम्लवेतस और  
 भरवेर ये सब चार चार शाण ॥ १३ ॥ मरिच दार्द शाण, पीपरि दशशा  
 ण, तेज, कालानोन, घनियां, जीरा ये दो दो शाण ॥ १४ ॥ शर्करा चौंसठि  
 शाण "शाण चारिभांशे का होताहै" इन सबों का चूर्ण कर इसे यवानी  
 खाण्डव कहते हैं ॥ १५ ॥ यह पाण्डु, हृद्रोग, ग्रहणी, छर्दि, शोष, अर्तासार,  
 प्लीहा, पेट फूलना, कोष्ठवद्ध, अरुचि, शूल, मन्दाग्नि, अर्शे, जीपरोग और  
 गलारोग इन सबोंको विनाशतहै ॥ १६ ॥ ( अरुचिपर तालीसादिचूर्ण )

हभस्महरीतक्यौचक्रमर्दकचित्रको । भृष्टातकविडङ्गानि-  
 शर्करामलकंनिशा ३४ पिप्पलीमरिचशुण्ठीवाकुचीकृत  
 मालकः । गोक्षुरश्चपलोन्मानमेकैकंकारयेद्वुधः-३५ सर्व  
 मेकीकृतं चूर्णं भृङ्गराजेन भावयेत् । अष्टभागावशिष्टेन खदि  
 रासनवारिणा ३६ भावयित्वा च संशुष्कं कर्षमात्रं ततः पिबे  
 त् । खदिरासनतोयेन सर्पिषापयसाथवा ३७ मासेन सर्वकु  
 ष्ठा निवृत्तिहन्ति रसायनम् । पञ्चयनिम्बमिदं चूर्णं सर्वरोगप्र  
 णाशनम् ३८ - शतावरीगोक्षुरकंजीजं चकपिकञ्जम् ।  
 गाङ्गेरुकीचातिबलाचीजमिक्षुरकोद्भवम् ३९ चूर्णितं सर्व  
 मेकत्रगोदुग्धेन पिबेन्नृशि । नृत्तियातिनारीभिर्नरश्चूर्ण  
 प्रभावतः ४० अश्वगन्धादशपलातन्मात्रोत्पदारुकः ।  
 चूर्णीकृत्योभयं विद्वान् घृतभाण्डे निधापयेत्- ४१ कर्षेकंप  
 यसापीत्वानारीभिर्नैव तृप्यति- । अगत्या प्रमदांभूयोवली  
 पलितवर्जितः ४२ चित्रकं त्रिफलामुस्ताविडङ्गं च्युषणा  
 निच । समभागानिकार्याणि नवभागाहतायसः ४३ एतदे  
 कीकृतं चूर्णं मधुसर्पिर्युतं लिहेत् । गोमूत्रमथवा तक्रमनुपा  
 नं प्रशस्यते ४४ पाण्डुरोगं जयत्युग्रहृद्रोगं च भगन्दरम् ।

निम्ब चूर्णं करते हैं जोकि सत्र रोगों को नाश करता है ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ( शता-  
 वरिचूर्ण पुष्टिपर ) शतावरी, गुडरू, कर्षेवाक्ये जीज, गुलसपरी बरियारा,  
 तालमखाना ॥ २६ ॥ इनका चूर्ण गोदुग्ध में पिये इस के प्रभाव से स्त्री से वृष  
 न होय और जो स्त्रीसंग न करे तो चली होय वार रनेत न होय ॥ ४० ॥  
 ( पुष्टि पर अश्वगन्धादि चूर्ण ) नागौरी असगंध चालीस तोले भर,  
 दिपारा चालीसभर इन दोनों को महीन चूर्ण कर घृतके भाजनमें धरे ॥ ४१ ॥  
 दशमारोद्ध में पिये तो स्त्रीसे वृषन होय ( धालुकुट्टिपर नवाचसादि चूर्ण )  
 चीता, निफला, नागरमोय, धायविडग और त्रिकुटा ये सब समान नव अंश पोलाद्  
 ४२ ॥ ४१ ॥ इनका चूर्ण शब्द और घृतके संगचाटैया गोमूत्र च मद्ध

शोथकुष्ठोदराशांमिमन्दाग्निमरुचिकृमीन् ४५ अकार  
 करभःशुण्ठीकङ्कोलंकुङ्कुमंकणा । जातीफलंलवङ्गंचचन्द  
 नंचेतिकार्षिकान् ४६ चूर्णानीमांस्ततःकुर्यादहिफेनंपलो  
 न्मितम् । सर्वमेकीकृतंचूर्णसूक्ष्मंतद्वस्त्रगालितम् ४७ सि  
 तासर्वसमादेयामाषैकमधुनालिहेत् । शुक्रस्तम्भंकरंचूर्णं  
 पुंसामानन्दकारकम् । नारीणांश्रीतिजननंसेवेतनिशिकामु  
 कः ४८ त्रकुलत्वग्भवंचूर्णघर्षयेदन्तपंक्तिषु । वज्रादपिदृढी  
 भूतादन्तारस्यश्चपलाध्रुवम् ४९ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्य  
 खण्डेचूर्णकल्पनापष्टोऽध्यायः ॥ ६ ॥

वटिकाश्चाथकध्यन्तेतन्नामगुटिकावटी । मोदकोवटि  
 कापिण्डीगुण्डीवर्तिस्तथोच्यते १ लेहवत्साध्यतेवह्नौगुडो  
 वाशर्करायथा । गुग्गुलुंवाक्षिपेत्त्रचूर्णंतन्निर्मितावटी २  
 कुर्याद्वह्निसिद्धेनकाञ्चिद्गुग्गुलुनावटी । द्रव्येणमधुना  
 चापिगुटिकाकारयेत्सुधीः ३ सिताचतुर्गुणादेयावटीषु  
 द्विगुणोगुडः । - चूर्णाञ्चूर्णसमःकार्योगुग्गुलुमधुतत्सम

केसाय ॥ ४४ ॥ तौ पांडु, हृद्रोग, भगंदर, सूजन, कोढ़, बदररोग अर्श मन्दाग्नि,  
 अरुचि और तृमि नाशकार्ये ॥ ४५ ( स्तंभन प्रर अकरकरादि चूर्ण ) अ-  
 कारकरहा, सौंठ, कंकाल, केसर मापारि, जायफल, लौंग और श्वेतचन्दन इन्हें  
 कर्षकर्ष भरले ॥ ४६ ॥ चूर्ण करि पलाभर अफीमदे पीसिं कपड्डानले ॥ ४७ ॥  
 और सब के समान खांड देय भाशाभर शहदमें चाटे यह चूर्ण शीथस्तंभन कर स्त्री  
 पुरुषों को सुख देता है इसलिये कामी पुरुष इसे रातिहो सेवन करे ॥ ४८ ॥  
 ( मंजन ) मालसिरीकी छालके चूर्ण को दांतों में घिसाकरै तो हिलते हुये भी दांत  
 वज्र समान होजाते हैं ॥ ४९ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेचूर्णकल्पनापष्टोऽध्यायः ६ ॥

( अथ वटी कल्पना ) वटिका गुटिका वटी मोदक पिण्डी गुण्डी और वर्ति  
 ये गोली के नाम हैं ॥ १ ॥ गुड़ और खाट दे आगि में पकावै जैसे अंबलेह त्रन गु-  
 गुलु व चूर्ण उसी पाक में डारि गोली बापैता ॥ २ ॥ विना आगि के योगगुग्गुलु  
 से भी गोली बंधती है और गोली बन्धु तथा शहद से भी बंधती है ॥ ३ ॥ मिश्री

५४ द्रवंचद्विगुणं देयं मोदकैः पुंभिः पत्रैः । कर्पुप्रमाणं त  
 न्मानं बलं दृष्ट्वा प्रयुज्यताम् ॥ इन्द्रवारुणिकामुस्तात्रुण्ठीद  
 न्तीहरीतकी । तृचच्छटीविडङ्गानिगोक्षुरश्चित्रकस्तथा ६  
 तेजोह्लाचद्विकर्षाणि पृथग्द्रव्याणिकारयेत् । शूरणस्यपला  
 न्यष्टौ वृद्धदारुचतुष्पलम् ७ चतुष्पलं रयाद्रह्लातः काथये  
 त्सर्वमेकतः । जलद्रोणे चतुर्थी शंशुर्ह्यात्काथमुत्तमम् ८  
 काथयद्रव्यात्रिगुणितं गुडं क्षिप्त्वा पुनः प्रचेत् । सम्यक्पक्व  
 ष्वज्ञात्वा वैचूर्णमेतत्प्रदापयेत् ९ चित्रकस्त्रिवृतादन्तीते  
 जोह्लापलिकाः पृथक् । पृथक्त्रिपलिकाभागाव्योषैलाम  
 रिचत्वचम् १० । निक्षिपेन्मधुर्गते च तस्मिन् प्रस्थप्रमाण  
 क्रम् । एवं सिद्धो भवेच्छ्रीमान् बाहुशालगुडाभिधः ११ जये  
 दशासिसर्वाणि गुलं वातोदरं तथा । आमवातं प्रतिश्यायं  
 ग्रहणीक्षयपीनसान् । हलीमकंप्रांडुरोगं प्रमेहंच विनाश  
 येत् १२ मरिचं कर्षमात्रं स्यात्स्त्रिपलीकर्षसम्भिता । अर्द्ध

। चौगुनीं गुडं दूना चूर्णं लिखेत् प्रमाणं देना गुग्गुलु शहद धरात्र देना ॥ ४ ॥ द्र  
 वस्तु दनी देना सद्रव्यं यही रीति करे कर्षभर गोली खाने का ममाण है व वेह  
 पल दोष देति सिलायै ॥ ० ॥ ( इन्द्रारुकी शुटिका अर्शपर ) इन्द्राण  
 की जड़, नागरमोषा, सौंठ, जमालगोटा के जड़की झाल, हड़, निशोध, कचूर,  
 घायविहंग, शुक्रु, चीता ॥ ६ ॥ और, यच ये सत्र दो दो कर्ष, जमोपन्ठ आठ  
 पल, विद्यारा चारपल ॥ ७ ॥ भिलाग्रां चारपल द्रोण भर, पानीमें, औंठ, जव  
 चौपाईरहै तत्र खतारलेय ॥ ८ ॥ खान क्रि घसका तिगुना, गुडदे प्राककरै जव प  
 कनितार उटै तत्र ग्रह चूर्णडालै ॥ ९ ॥ चीता, निशोध, जमालगोटाकी जड़ और  
 त्रिचये पल पल भर त्रिकुटा, इलायची, परिच और नत्र तीन तीनपल इनको पीस  
 । खानके मस्थभर शहद में पूर्वोक्त यह चूर्णयुक्त चैयने मुवाफिकहो मिलावै तब बाहु  
 शाल गुड सिद्धहोता है ॥ १० ॥ ११ ॥ यह सब अर्श, गुल्म, वातोदर, आमवात,  
 नाकटपकना, सप्रोहणी, क्षयो, पीनस, हलीमक, पाहु और प्रमेह इन सबको जीतता  
 है ॥ १२ ॥ ( कासपर मरिचादि शुटिका ) मरिच, मीपरि, कर्ष कर्ष भर ।



कर्षोयवक्षारः कर्षयुग्मं त्रदाडिमम् १३ एतच्चूर्णीकृतं यु  
 ज्यादष्टकर्षगुडेन हिशाणप्रमाणां वटिकां कृत्वा वक्त्रे विधा  
 रयेत् । अस्याः प्रभावात्सर्वपिकासायान्त्येव संक्षयम् १४ गु  
 डगुण्ठीशिवामुस्तैर्धारयेद्गुटिकां मुखे । श्वासकासेषु सर्वे  
 षुकेवलं वा विभीतकम् १५ आमलकमलंकुष्ठं लाजाश्च वटः  
 रोहकम् । एतच्चूर्णस्य मधुना गुटिकां धारयेत्मुखे । तृष्णां  
 वृद्धां हरत्येषामुखशोषं त्रदारुणम् १६ विडङ्गनागरक  
 षणापथ्यासलविभीतकौ । वज्रागुडूचीभिलातंसविषचा  
 त्रयोजयेत् १७ एतानिसमभागानि गोमूत्रेणैव प्रेषयेत् ।  
 गुल्माभा गुटिकाकार्या दद्याद्दार्द्रकजैरसैः १८ एकामजीषां  
 गुल्मे पुद्गे विसृज्यां प्रदापयेत् । तिस्रस्तु सर्पदष्टे तु चतस्र  
 सन्निपातके । वटीसञ्जीवनीनाम्ना संजीवयति मानवम्  
 १९ व्योषाम्लवेतसंचवपं तालीसंचित्रकंतथा । जीरकं  
 तिनित्डीकंच प्रत्येकं कर्षभागिकम् २० त्रिसुगन्धं त्रिशाणं

जवाहार ५ माशे, अनारदाना दो कर्ष ॥ १३ ॥ गुड आठकर्ष में चारि चारि माशे  
 की गोली बांधे सो मुख में धरे राखे इस के प्रभावे से सब खांसी जाय ॥ १४ ॥  
 ( श्वासपर गुडादि गुटिका ) गुड, सांठ, इड नामरमोषा इन की गोली  
 नितने गुड से धैये गाशे भरकी मुहमें राखे वो सब श्वास कास हरें वसे केवल व  
 डेरा रखने से ॥ १५ ॥ ( श्वासपर आंत्ररादिवटी ) धांवला, कमल, कूट,  
 लाजा, वटजटा इन्हें पीसि शब्द में गोली बांधि मुखमें राखे तो महातृषा व मुख  
 सूखना दूर हो ॥ १६ ॥ ( सन्निपातपर संजीवनीगुटिका ) वायविडंग,  
 सांठ, पीपरि, इड, आंवरा, बहेरा, वच, गुर्ब, भिलावां शुद्धकियाहुआ वृद्धताग ॥  
 १७ ॥ इन सबको समान ले गोषत्र में सरल करे धुंधी समान गोली बांधे व  
 अदरक के रसमें धिलावे ॥ १८ ॥ अजीर्ण में गोली एक विमूत्रिका ( इजा ) में  
 दो सांप के दसे की तीत सन्निपात में चार इसका संजीवनी वटी नाम है मनुष्य को  
 भिजाती है ॥ १९ ॥ ( पीनसादि पर त्रिकुटादिवटी ) त्रिकुटा, अम्ल-

रयाद्गुडः स्यात्कर्षविंशतिः । व्योपादिगुटिकासामपी  
 नसंश्वासकामजित् । रुचिस्वरकराख्याताप्रतिश्यायप्र  
 णाशिनी २१ आभेपुसगुडांशुएठीमजीर्णैंगुडपिप्पलीम्ना  
 कृच्छ्रेजीरगुडंदद्यादर्शस्सु सगुडाभयाम् २२ वृद्धदारुक  
 भङ्गांतशुण्ठीचूर्णेनयोजितः । मोदकःसगुडाहन्यात्ष  
 ड्द्विधाशःकृतांरुजम् २३ शुष्कशूरणचूर्णस्यभागान्द्वात्रिं  
 शदाहरेत् । भागान्योडशचित्रस्यशुण्ठ्याभागचतुष्टयम्  
 २४ द्वौभागौमरिचस्यापिसर्वमेकत्रचूर्णयेत् । गुडेनपि  
 ण्डिकांकुर्यादर्शसांनाशिनीपराम् २५ शूरणोद्वेद्धदारुश्च  
 भागैःपोडशभिःपृथक्मुसलीचित्रकौज्ञेयावष्टभागमितौ  
 पृथक् २६ शिवाधिभीतकौधात्रीविडङ्गनागरंकणा । भ  
 ल्लात्पिप्पलीमूलं तालीसंचपृथक्पृथक् २७ चतुर्भाग  
 प्रमाणानित्वगेलामरिचंतथा । द्विभागमात्राणिपृथक्स  
 र्वास्त्वेकत्रचूर्णयेत् २८ द्विगुणेनगुडेनाथवटिकांकारये

वेतस, चाप, तालीसदल, चीता, जीरा और इमली की छाल ये सब कर्ष कर्षभर ॥  
 २० ॥ और तज, पत्रज व इलायची चारि चारि माशे गुड बीस कर्ष यह व्योपादिनाम  
 गुटिका पीनस, रवास व कासको नाशकरै रुचिकरै कंठस्वर शुद्धकरै व नाकका  
 टपकना बंद करती है ॥ २१ ॥ आंबदोषमें गुड सोंठकी गोली देना, अजीर्ण में  
 गुड पीपरि, कृच्छ्र में गुड जीरा, बवासीर में गुड हड़की गोली देना ॥ २२ ॥  
 ( अर्शपर पृष्ठदारुमोदक ) विषारा, भिलावां और सोंठ पीसि गुडमें  
 गोली बांधिदेइतौ अर्शभातिके अर्शदूरकरै ॥ २३ ॥ ( अर्शपर धूरनचटिका )  
 सूखे मूरनका चूर्ण घचीसभाग, चीता सोलहभाग, सोंठ चारभाग ॥ २४ ॥  
 मरिच दोभाग सब चूर्णकरि गुडमें गोली बाधिस्थिलावै तौ सब अर्श नाशहोयै ॥  
 २५ ॥ ( पुनः ) मूरन विषारा सोलह सोलह भाग लेय मुसली आठभाग और  
 चीता भी आठभाग लेय ॥ २६ ॥ त्रिफला, विटंग, सोंठ, पीपरि, भिलावां, पिपरा-  
 यल और ताजीम भिन्नभिन्ना २७ ॥ चार चार भाग, तन, इलायची व मरिच दो २

द्वुधः । प्रवलाग्नित्रकुस्तेतथार्शोनाशनापरा २९ ग्रह  
 णीवातकफजांश्वासंकासंक्षयामयम् । ङ्गीहानंश्लीपदंशो  
 थंप्रमेहंचमगदरम् । निहन्तिपलितंवृष्यातथामेध्या  
 रसायनी ३० त्रिफलात्र्यूषणंचव्यंपिप्पलीमूलचित्रक  
 म् । दारुमाक्षिकधातुश्चदार्धीमुस्तंविडङ्गकम् ३१ प्र  
 त्येकं कर्षमात्राणिसर्वद्विगुणितंतथा । मण्डूरंचूर्णयेच्छुद्धं  
 गोमूत्रेष्टगुणेक्षिपेत् ३२ पक्काचवटकान्कृत्वादद्यात्  
 क्रानुपानतः । कामलापाण्डुमेहार्शःशोथकुष्ठकफामयान् ।  
 ऊरुस्तम्भमर्जीर्णंचङ्गीहानंनाशयेदपि ३३ चन्द्रप्रभाव  
 चामुस्तंभनिम्बामरदारुच । हरिद्रातिविषादार्धीपिप्पली  
 मूलचित्रकान् ३४ धान्यकंत्रिफलाचव्यंविडङ्गजपिप्प  
 ली । व्योषंमाक्षिकधातुश्चद्वीक्षारौलवणत्रयम् ३५ ए  
 तानिशाणमात्राणिप्रत्येकंकारयेद्वुधः । त्वृद्धन्तीपत्र  
 कंचत्वगेलावंशरोचना ३६ प्रत्येकं कर्षमात्राणिकुर्यादेता

भाग इनसबोंका चूर्णकरि ॥ २८ ॥ दूने गुठमें गोलीवाधि खिलावेँ तौ अग्निप्रबल  
 होय और अर्श जाय ॥ २९ ॥ तथा चालकफमन्य ग्रहणी, श्वास, कास, क्षयी, प्लीहा,  
 फीलपाय, शोथ, प्रमेह, भगदर, बार रचेत होना ये सबमिदें पातुष्टादि मरलकरै यह  
 रसायनीहै ॥ ३० ॥ ( कामलादि पर मंडूरचटक ) त्रिफला, त्रिकुटा, चाव,  
 पिपपामूल, चीता, टेवदारु, सोनामास्ती, इल्दी, जामरमोथा, विडंग ॥ ३१ ॥ ये कर्ष  
 कर्ष भर मंडूर शोषकै सवसे दूनाले फिर अष्टगुने गोमूत्रमें ॥ ३२ ॥ पदाय गोलीवां-  
 धि मट्टेके साथ साथ तौ कामला, पाण्डु, प्रमेह, अर्श, शोथ, मुष्ट, कफरोग, गठिया,  
 अजीर्ण और प्लीहा इनको नाशकरै ॥ ३३ ॥ कपूर, वष, जामरमोथा, चिरामता,  
 टेवदारु, इल्दी, अतीस, दारुइल्दी, पिपलामूल, चीता ॥ ३४ ॥ घनिसां, त्रिफला,  
 चाव, वापविडंग, गजपीपरि, त्रिकुटा, सोनामास्ती की भग्म, सज्जीदार, जवालार  
 तीनोंलोने संधा, काला, पांगा ॥ ३५ ॥ ये सत्रव्य चारचार मासे निशोघ, जमाल-  
 गोटा, पत्रज, तम, इलायची और वंशलोचन ॥ ३६ ॥ इनको कर्ष कर्षकर बुद्धिमान्

निवृद्धिमान् । द्विकर्षहतलोहस्यचतुष्कर्षासितामधेत् ३७  
 शिलाजत्वष्टकर्षाःस्युरष्टौकर्षाश्चगुग्गुलोः । एभिरेकत्र  
 संक्षणैःकर्त्तव्यागुटिकाशुभा ३८ चन्द्रप्रभेतिविख्याता  
 सर्वरोगप्रणाशिनी । प्रमेहान्विशतिकृच्छ्रम्मुत्राघातंत  
 थाश्मरीम् ३९ विवन्धानाहशूलानिमेहनग्रन्थिमर्षुदम् ।  
 अण्डवृद्धिकटीशूलश्वासकासविचंचिकाम् ४० अत्रवृ  
 द्धितथापाण्डुकामलाचहलीमकम् । कुष्ठान्यशांसिकण्डूच  
 छीहोदरगगन्दरम् ४१ दन्तरोगनेत्ररोगस्त्रीणामार्त्तवजारु  
 जम् । पुसाशुक्रगतानोगान्मन्दाग्निमरुचितथा ४२ वा  
 तपित्तकफहृन्त्याद्वल्पावृष्यारसायनी । चन्द्रप्रभायाः  
 कर्षस्तुचतुःशाणोविधीयते ४३ यवानीजीरकंधान्यमरि  
 च्चिगिरिकणिका । अजमोदोपकुञ्चीचचतुःशाणाःपृथक्  
 पृथक् ४४ हिङ्गुषट्शाणिककार्यचारौलवणपञ्चकम् । तृ  
 द्वाष्टिमितैःशाणैःप्रत्येकङ्कल्पयेत्सुधीः ४५ दन्तीशटीपौ  
 ष्करंचविडङ्गदाडिमंशिवा । चित्रोम्लवेतसःशुण्ठीशाणैः

लेय लोहभस्म दो कर्ष इत सयका चूर्णकरि मिश्री चारुर्ष ॥ ३७ ॥ शुद्धशिला-  
 जीत आठकर्ष गुग्गुल आठकर्ष ये सव एकत्रकरि कूटिके गुटिका सुदर बनाव ॥ ३८ ॥  
 पर चन्द्रप्रभगुटिका मग्गोग नाशकै नाप्यषण्ड मूत्रकृन्द मग्गयात, पदरे ॥ ३९ ॥  
 विह्वंग, पेटफूलना, शूल, इद्रिय फूलना, शीवे, अर्बुद, अण्डवृद्धि, कटिशूल, र्वास,  
 कास, कुष्ठभेद ॥ ४० ॥ अत्रवृद्धि, पाण्डु, धामला, हलीमक, सक्कुष्ठ, सर्वाश, खजुरी,  
 प्लीहा, उदररोग, भगदर ॥ ४१ ॥ दन्तरोग, नेत्ररोग, स्त्री का अन्तरोग, पुरुषको धा-  
 तुरोग, मन्दाग्नि, यरुचि ॥ ४२ ॥ वात, पित्त, कफ सर्व नाशकर यलकर धातुवकावै  
 धे रसायन हे दशमाशे वा सोलहमाशे वा दीपवेल विचारिके रसाय ॥ ४३ ॥  
 ( शुल्नपर अजवायनगुटिका ) अजवायन, जीरा, घनियां, मिर्च, विष्णु-  
 फाता, अजमोद, मनरेला भिन्नभिन्न चारशाण ॥ ४४ ॥ भूमीहनि धह शाण, दूनी  
 चार, पाचो लोन और मिशोच ये पाठ आठशाण ॥ ४५ ॥ जमालगोटी, कचूर

घोडशंभिः पृथक् ४६ व्रीजपररसेनैव गुटिकांकारयेद्बुधः ।  
घृतेनपयसामधैरुम्लैरुष्णोदकेनवा ४७ पिवेत्काङ्कायन  
प्रोक्तांगुटिकांगुल्मनाशिनीम् । मद्येनवातकेगुल्मेगोक्षी  
रेणचपैत्तिके ४८ सूत्रेणकफगुल्मंचदशमूलैस्त्रिदोषजम् ।  
उप्रीदुग्धेननारीणारंक्तगुल्मंविनाशयेत् ४९ हृद्रोगग्रह  
णीशूलकृमीनशांसिनाशयेत् । नागरंपिप्पलीचव्यंपिप्प  
लीमलचित्रकौ । मृष्टहिङ्ग्वज्रमोदाचसर्षपाजीरकहयम्  
५० रेणुकेन्द्रयवापाठाविडङ्गजपिप्पली । कटुकातिवि  
षाभार्गीवंधामुर्वेतिभागतः ५१ प्रत्येकंशाणिकानिस्युर्द्र  
व्याणीमानिविंशतिः । द्रव्येभ्यस्सकलेभ्यश्चत्रिफला  
द्विगुणांभवेत् । एभिश्चूर्णीकृतैः सर्वैः समोदेयश्चगुग्गु  
लुः ५२ वङ्गरौप्यंचनागंचलोहसारंतथाभ्रकम् । मण्डूरं  
रससिन्दूरंप्रत्येकंपलसंमितम् ५३ गुडपाकसमंकृत्वाचेमं  
दद्याद्यथाचितम् । एकपिण्डंततःकृत्वाधारयेद्घृतभाज

गुग्गुलुमूल, धातुविडंग, अनारदाना, बड़ीहड, चीता, अम्लवेतस और सोंठ इन सबको सोलह शाखले चूर्ण करे ॥ ४६ ॥ फिर निमौराके रसमें बटी चांधै घृत, दूध मद्य, नींबूरस और उष्णोदक ॥ ४७ ॥ इनके संग काकायनकी फदीदुई गोली बंध खिलाने यह गोली गुल्मको व वातगुल्मको नाशकरे तथा मद्यमें पित्तगुल्मको गोदुग्ध के संग ॥ ४८ ॥ कफगुल्मको गोमूत्र संग त्रिदोषज गुल्मको दशमूलके कायसाथ खी के रक्तगुल्मको उप्रीदुग्ध संगदेय तो ॥ ४९ ॥ हृद्रोग, ग्रहणी, शूल, कृमिरोग और बवासीरों को नाशकरे ( वातदिरोगपर योगराजगुग्गुलु ) सोंठ, धीपरि, चाव, पिपलामूल, चीता, मुनीईंग, अजमोद, सरसों, दोनों जीरे ॥ ५० ॥ मेव-कीबीज, इद्रधव, पादा, धातुविडंग, गंजपीपरि, कुटकी, अतीस, भारंदी, बच, सुर्वा और गुग्गुलु ॥ ५१ ॥ ये सब शाखशाख भर सका दूना त्रिफलेका चूर्ण सब चूर्ण के समान शुद्ध गुग्गुलु ॥ ५२ ॥ रंग, लपरस, नागेश्वर, लोहा, अभ्रक, मं-दूर और रससिंदूर इनको पल पल भरडे ॥ ५३ ॥ गुडपाक करि रस और सब

मजीर्णं च व्यवयं श्रममातपम् । मधरोषंत्यजेत्सम्यग्गु  
णार्थीपुरसेवकः ७३ त्रिपलं त्रिफलाचूर्णकृष्णाचूर्णपला  
न्मितम् । गुग्गुलुः पञ्चपलिकः क्षौद्रयेत्सर्वमेकतः ७४  
ततस्तु वटिकां कृत्वा प्रयुञ्ज्याद्ब्रह्मचर्यपेक्षया । भगन्दरं गुल्म  
शोथावशीसि च विनाशयेत् ७५ अष्टाविंशतिसङ्ख्या  
न्निपलान्यानीयगोक्षुरात् । विपचेत्पङ्गुणे नीरे काथोग्रा  
ह्योऽर्द्धशेपतः ७६ ततः पुनः प्रचेत्तत्रपुरं सप्तपलं क्षिपे  
त् । गुडपाकसमाकारं ज्ञात्वा तत्र विनिक्षिपेत् ७७ त्रिक  
टुत्रिफलां सुस्तं चूर्णितं पलसप्तकम् । ततः प्रिण्डीकृतस्यां  
स्यगुटिकामुपघोजयेत् ७८ हृत्प्रात्प्रमेहं कृच्छ्रं च प्रद  
रं मूत्रघातकम् । वातास्रं वातरोगांश्च शुक्रदोषं तथाश्म  
रीम् ७९ त्रिकला त्रिपलाकार्यमल्लातानां चतुष्पलम् । वा  
कुचीपञ्चपलिका विडङ्गानां चतुष्पलम् ८० हतलोहं तृ  
च्चैव गुग्गुलुश्च शिलाजतु । एकैकं पलमात्रं स्यात्पलाद्धै

कायसंग गुल्म दूरकरे ॥ ७२ ॥ वत्सदिरादिकाय संग व्रण व कुष्ठ दूरकरे व खट्वी,  
कीर्ण, मैथुन, श्रम, घाम, मद्य और क्रोध इन सबोंको रूपागकर जो गुण स्याह तो  
संयम से रहे ॥ ७३ ॥ भगन्दर पर त्रिफला गुग्गुलु (त्रिफलाचूर्ण तीन पल,  
पिप्पली चूर्ण) पल भर और शुद्ध गुग्गुलु पांचपल इनको पीसिके एकत्र करे ॥ ७४ ॥  
गोली घांघि रोगीकी अग्नि विचारिके देय तो भगन्दर, गुल्म, शोथ और खट्वी अर्श  
दूरहोये ॥ ७५ ॥ (प्रमेह गोक्षुरादिगुग्गुलु) गोक्षुर अर्द्धशेपत ४: गुणे पानी  
में कांदाकरि अर्द्ध शेपले ॥ ७६ ॥ किरि सातपल गुग्गुलुदे-पकाये जब गुड पाकसाहो  
तब जो अर्थ कहताहूँ सो प्रीसकटारे ॥ ७७ ॥ त्रिकुटा, त्रिफला और नागरमोथाये  
सातो पलपल भरमिलाय पीडीकरि गोलीघांघे तो ॥ ७८ ॥ प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मदर, मू  
त्राघात, वातरक्त, वातरोग, शुक्रदोष और मपरी ये सब नसहो ॥ ७९ ॥ (कुष्ठ  
परं त्रिफला मोदक) त्रिफला तीनपल, गिलायां चार, प्रकुची पांच, विडंग  
चार ॥ ८० ॥ लोहप्रसा, निशोध, गुग्गुलु और शिलाजीत इन सबोंको एक एकपल,

पौष्करं भवेत् ८१ चित्रकंस्यपलांश्वस्यात्रिशणं मरिचं भवेत् । नागरं पिप्पलीं मुस्तां त्वगेलापत्रकुङ्कुमम् ८२ शाणोन्मितं स्यादेकैकं चूर्णयेत्सर्वमेकतः । ततस्तत्प्रक्षिपेच्चूर्णं स्पृक्ष्वण्डे च तत्समै ८३ मोदकान्पलिकान्कृत्वा प्रयुञ्जीत यथोचितान् । हन्युः सर्वाणिकुण्ठानि त्रिदोषप्रभवा मयान् ८४ भगन्दरं प्लीहं गुल्माग्निह्नीता लुगलामयान् । शिरोक्षिभ्रूगतान्नेगानन्यान्पृष्ठगतानपि ८५ प्राग्भोजनस्य देयं स्यादधःकोयस्थिते गदे । भेषजं भुक्तमध्ये च रोगे जठरसंस्थिते । भोजनस्योपरिग्राह्यमध्वजन्तुगदेषु च ८६ काञ्चनारत्वचोग्राह्यं पलानां दशकं बुधैः । त्रिफलापट्टपलाग्राह्यात्रिकटुः स्यात्पलत्रयम् ८७ पलैकं वरुणं कुर्यादलात्वक्पत्रजंतथा । एकैकं कर्षमात्रं स्यात्सर्वाण्येकत्र चूर्णयेत् ८८ यावच्चूर्णमिदं सर्वं तावन्मात्रस्तु गुग्गुलुः । सङ्कुट्य सर्वमेकत्र पिण्डं कृत्वा चंधारयेत् ८९ गुटिकाः शायमात्रेण प्रातर्ग्राह्या यथोचिताः । राण्डनालांजयत्युग्राम

पुष्करमूल अर्द्धपल ॥ ८१ ॥ चीता अर्द्धपल, मिर्च दो शण, सोंठि, पीपरि, मोथा, तज, इलायची, पत्रज, केशर ॥ ८२ ॥ इनसबों को शण शण भर ले चूर्णकरि सबचूर्ण समान सांडले पाककरि चूर्णकरि गोली बनावे ॥ ८३ ॥ पलपलमित मोदकवनाय रोग बलदेसि रोगीको खिलावे तो सबकुष्ठ नाशहोयै च-त्रिदोषजन्य रोग ॥ ८४ ॥ अन्दर, प्लीहा, गुल्म, जिह्वा, तालुररोग, ग्रीव, शिर, नेत्र, भौंह और पीठ इन सबोंके रोग नाशहोयै ॥ ८५ ॥ शरीरके नीचेके रोगनमें भोजनादि औपधि देना भंडाग्निजनित में भोजन के मध्यदेय शिरःसंवेर्नी रोगन में भोजनांत समयमें देना ॥ ८६ ॥ ( भंडमालापर कश्चनार गुग्गुलु ) कश्चनारखाल दशपल त्रिफला छःपल, त्रिकुट्टा तीनपल ॥ ८७ ॥ वरुण एकपल, इलायची तज, पत्रज, कर्ष कर्षपर इनसबों को एकत्रकरि चूर्णकरै ॥ ८८ ॥ सर्व चूर्णके समान गुग्गुन पीसि चूर्णमें मिलाय पिंड बनावे ॥ ८९ ॥ चारिमाशेकी गोली बनाय

पचीमधुदानि च । ग्रन्थीन्त्रणांश्चगुल्मांश्चकुष्ठानि च म-  
 गन्दरम् ९० प्रदेयश्चानुमानार्थं काश्रोमुण्डितिका भवः ।  
 काथः खदिरसारस्यपथ्याक्रोथोदकोष्णकम् ९१ निस्तुपं-  
 मापचूर्णस्यात्तथागोधूमसम्भवम् । निस्तुष्यवचूर्णं चशा-  
 लितण्डुलजंतथा ९२ सूक्ष्मंचपिप्पलीचूर्णं पलकान्युपक-  
 लपयेत् । एतदेकीकृतं सर्वभर्जयेद्गोधूतेन च ९३ अर्द्धमात्रे-  
 ण सर्वेभ्यस्ततः खण्डसमाक्षिपेत् । जलंचद्विगुणंदत्त्वापाच-  
 येत्तंशनैःशनैः ९४ ततःपक्वंसमुद्धृत्यमोदकंचपलोन्मित-  
 म् । कुर्यात्सायंचतभुक्त्वापिवर्क्षीरंचतुर्गुणम् ९५ वर्जनी-  
 योविशेषणक्षारम्लोद्धारसावपि । कृत्वैवंरमयेन्नारीवह्नीर्न-  
 क्षीयतेनरः ९६ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेवटककल्पना-  
 सप्तमोऽध्यायः ७ ॥

काथादीनांपुनः प्राकाद्वचनत्वंसारसक्रिया । सोवलेह-  
 श्चलेहः स्यात्तन्मात्रास्यात्पलोन्मिता १ सितांचतुर्गुणाः

रोगपल व ओपधिवल देसि रोगीको भावस्तमय देय तो गढमोला, अपची, अ-  
 र्हुद, मीथि, घाव, कुष्ठ, भगंदर ये नाशहोयें ॥ ९० ॥ ( अस्पानुपानं ) गुण्डीका  
 काथ वा खैरसारका-काथ वा हडको काथ उष्णोदक में देय ॥ ९१ ॥ ( घातु  
 मुष्टिपर सापादि मोदकं ) माप कहे उरददालि घोय चूर्णकरिलेय गेहूचूर्ण,  
 यचकी गूदीकाचूर्ण, साठी चावरका चूर्ण ॥ ९२ ॥ और पीपरि चूर्ण इनसबों को  
 पलपल भरले सब चूर्णों का आधा गोघृत दे भूजें ॥ ९३ ॥ चूर्णोंके समान खांड  
 लें तब सबका दूना जलदारी मन्द मन्द आंचदे घोटें ॥ ९४ ॥ जब सिद्धहोजाय  
 तब पलपलभरके लड्डू खांधि सांभको खाय उसपर चारिपल दूधपिये ॥ ९५ ॥ फिर  
 सार और खटाई दो रस न खाय स्त्री असंग करै तो वीर्य न द्रव देह पुष्टरहे ९६ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरमुपाकरसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

( अथाचलेह कल्पना ) द्रव्यको काथसदृश आटावे फिर विशेष आंच देय  
 जब गाढ़ाहोय तब अणुलेह कहे लेहभी कहते हैं मात्रा चारिमुद्रा भर ॥ १ ॥ चूर्ण से



कर्ण्यचूर्णाच्चद्विगुणोगुडः ॥ १ ॥ द्रवंचतुर्गुणंदद्यादितिसर्वत्र  
 निश्चयः ॥ २ ॥ सुपक्वेतंतुमत्वंस्यादवलेहोप्सुमञ्जति । ख  
 रत्वंपीडितेमुद्रागन्धवर्णरसोद्भवम् ॥ ३ ॥ दुग्धमिक्षुरसंयुषं  
 पञ्चमूलकषाघर्जम् ॥ ४ ॥ वासाक्राथंयथायोग्यमनुपानंप्रश-  
 स्यते ॥ ५ ॥ कण्टकारीतुलानीरंद्रोणपक्त्वाकषायकम् । पाद  
 शेषंगृहीत्वाचतस्मिश्चूर्णानिदापयेत् ६ ॥ पृथक्पलानिचै-  
 तानि गुडूचीत्रिव्यचित्रकाः ॥ ७ ॥ मुस्ताकर्कटशृङ्गीचत्र्युषणं  
 धन्वयासकः ६ भांगीरासनाशटीचैवशर्करापलविंशतिः ।  
 प्रत्येकंचपलान्यष्टौ प्रदद्याद्घृततैलयोः ७ पक्त्वालेहत्व  
 मानीयशीतेमधुपलांष्टकम् । चतुष्पलंतुंगाक्षीर्याःपिप्प  
 लीनांचतुष्पलम् ८ क्षिप्त्वानिदध्यात्तुद्वेष्टेष्टमयेभाजनेशु-  
 भे । लेहोयंहन्तिहिकार्तिश्वासकासानशेषतः ९ पाटलार  
 णिकाश्मर्यत्रिल्वारलुकंगोक्षुराः । पाण्यौबृहत्स्यौपिप्पल्यः  
 शृङ्गीद्राक्षामृताभयाः १० वलाभूम्यामलीवासा ऋद्धि

मिथी चौगुनीदेना गुडूदना द्रव्यादि चौगुने यह सर्षप रीतिहै ॥ २ ॥ जब आंचदेने  
 पर तारबधे आ पानीमें पाककी बूंद न बूड़े न गुले तब सिद्ध जानै और अंगुरीके  
 दधाने स कुडूदने तब मुग्ध रसादि डारै ॥ ३ ॥ और दूध से ऊखले उत्पदि दस्तु  
 युषत पंचमूल कायसे रुसा कायसे इन अनोपानसे देना अथवा और जो रोगोचित  
 अनोपानसे सो देना ॥ ४ ॥ ( हिचकी और कास इवासपर भटकटैया-  
 चलेह ) भटकटैया चारिसरले द्रोणभरनेलमें औटै जब चौथाईरहै तब उसमें चूर्ण  
 डारै ॥ ५ ॥ गुर्च, चान, चीता, नागरमोयां, काकड़ासिंगी, यिकुटा, जवासा ॥ ६ ॥ भांगी  
 रासना और कचूर ये सब पलपल भरले शर्करै शकर धीसपल घृत आवपल तेल  
 आवपल ॥ ७ ॥ ये सब कादे में औटै अबलेह सिद्धहो उंढाकरि आवपल शहद,  
 बंशलात्वन चारिपल, पिप्पली चूर्ण चारिपल मिलाय ॥ ८ ॥ उत्पय पानमें राखै  
 इसे अबनेह से हिचकी, श्वास, वे कास, को अशेषतासे नाशकरै ॥ ९ ॥ ( क्ष-  
 पादि पर चयवन प्राशाचलेह ) सिरस, अग्निमय, सगरी, पाटल, तेल, स्यो-

प्योर्ध्वहणोर्बलकृन्मतः २८ युक्त्याकूष्माण्डखण्डखण्डशर-  
 णंविपचेत्सुधीः । अर्शिसामूढवातानामन्दाग्नीनांचयुज्यते  
 २९ हरीतकीशतंभद्रयंत्रानीमाढकंतथा । प्लानिदशमू-  
 लस्यधिशतिश्चनियोजयेत् ३० चित्रकःपिप्पलीमूलम-  
 पामार्गःशटीतथाः । कपिकच्छूःशङ्खपुष्पीभाङ्गीचगजपि-  
 प्पली ३१ बलापुष्करमूलचपथग्विप्लमात्रया । पचेत्  
 त्पञ्चाढकेनरिथवैःस्विन्नैःशतंनयेत् ३२ तच्चामयाशतंद्र-  
 व्यात्काथेनास्मिन्विचक्षणः । सर्पिस्तैलाष्टपलकक्षिपेद्गु-  
 डतुलांतथा ३३ पक्त्वालेहत्वमानीतेसिद्धशितेपृथक्पृथक्  
 क्षौद्रञ्चपिप्पलीचूर्णदद्यात्कुडवमात्रया ३४ हरीतकीद्वयं  
 खादेत्तेनलेहेतनित्यशः । चक्रंकासंज्वरश्वासंहिक्काशौरु-  
 चिपीनसान् ३५ ग्रहणीनाशयेदपत्रलीपलितनाशनः ।  
 बलवर्णकरःपुंसामवलेहोरसायनः । विहितोगस्त्यमुनि-  
 नासर्वरोगप्रणाशनः ३६ कुटजत्वक्तुलाद्रोणेजलस्यवि-

कूष्माण्ड अथलेह बाल एढकी देना छांती पुष्कर बीर्य बढ़ावे व पलको करे ॥  
 २८ ॥ (अर्शपर खंड कूष्माण्डावलेह) जैसे कुम्हड़ा की विधि है सोई शरन  
 की भी है पेदा शर जमीकन्द की छोटी कचै करि दोनोंको एकत्र करि उसी रीतिसे  
 अथलेह बनाय गिलावे तो अर्श, मूढवात और मन्दाग्नि ये सब अच्छेहोयें ॥२९॥  
 (क्षयीपर अगस्त्य हरीतकी) बड़ीहई सौ, अत्रचापन एकआढक, दशमूल  
 बीसपल ॥३०॥ चीता, पीपरामूल, त्रिदिरा, कचूर, क्रेचोच, कौड़ला, भारद्वा, गज-  
 पीपरि ॥३१॥ परिपारा और पुष्करमूल सब दूई पल पांच आढक जलमें पंचा-  
 गलाय उतारि छानलेय ॥३२॥ तिसमें सौ हड़, तैल, घी, आठ पल, गुडतुलाभरे  
 देकर ॥३३॥ पकावे ठंडाकरि शहद चमीपरिका चूर्ण ये सब एकएक कुडवडारै ॥  
 ३४॥ इस अथलेह के संग दो हड़ नित्यखाये तो क्षयी का रोग, कास, ज्वरे, रसास,  
 हिचकी, अर्श, अरुचि, पीनस ॥ ३५ ॥ और ग्रहणी ये रोग नाशहोयें चलयन्त हो  
 श्वेतबालकूष्माण्ड रूबानहो पुरुषको यह अथलेह रसायनहै यह अगस्त्यमुनिकी बड़ी  
 हरीतकी सब रोगोंको नाश करती है ॥ ३६ ॥ (अथाशपर कुरैया अथलेह)

पत्रैस्सुधीः । कर्पायंपादशेषंचगृह्णीयाद्वह्नगालितम् ॥ ३७ ॥  
 त्रिंशत्पलंगुडस्यात्रदत्त्वाचविपचेत्पुनः ॥ सान्द्रत्वमाग  
 तं दृष्ट्वैचूर्णानीमानिदापयेत् ॥ ३८ ॥ रसाञ्जनमोचरसंत्रि-  
 कटुत्रिफलांतथा । लज्जालुचित्रकंपाठांभिल्वमिन्द्रयवंब  
 चाम् ॥ ३९ ॥ भल्लातकंप्रतिविषांविडङ्गानिचूवाकम् । प्र  
 त्येकंपलसंगानघृतस्यकुडवंतथा ॥ ४० ॥ सिद्धशीतेततोद्  
 र्यान्मधुनःकुडवंतथा । जयेदेषोवलेहरतुसर्वाण्यशीसि  
 वेगतैः ॥ ४१ ॥ दुर्नामप्रभावानोगानतीसारमरोचकम् । ग्रह  
 र्णीपाण्डुरोगंचरक्तपित्तंचकामलाम् । अम्लपित्तंतथाशोथं  
 कासंचैवप्रवाहिकाम् ॥ ४२ ॥ अनुपानेप्रयोक्तव्यमाजंतक्रंप  
 योद्बधि । घृतंजलंवाजीर्णंचपथ्यभोजीभवेन्नरः ॥ ४३ ॥ कुट  
 जत्वक्तुलामाद्रीद्रोणनीरेविपाचयेत् । पादशेषंशुतंनीत्वा  
 चूर्णान्येतानिदापयेत् ॥ ४४ ॥ लज्जालुर्धातकीविल्वपाठामो  
 चरसस्तथा । मुस्तंप्रतिविषाचैवप्रत्येकंस्यात्पलंपलम् ॥ ४५ ॥  
 ततस्तुविपचेद्ग्नोयावहार्वांप्रलेपनम् । जलेनच्छागदु

कुरैयाकी छाल तुलाभर एकद्रोण पानीमें पचावै जब चौपाई शेष रहै तब दत्तारि  
 यक्षसै दानलेप ॥ ३७ ॥ फिर तीसपल गुडदे मवायै गादाभयै यह चूर्ण दारि ॥  
 ३८ ॥ रसाव, मोचरस, त्रिकुटा, त्रिफला, लज्जालु, चीता, पादा, वेल, रन्द्रजर,  
 लवच ॥ ३९ ॥ भिलावां, अनीस, पिच्छ, और सुगन्धमाला ये पलपल भर घी  
 कुडभर ॥ ४० ॥ उंटापरे कुडवभर; खद-दे, यह अवलेह सर्वाशीसो वेगदी दूर-  
 करतहै ॥ ४१ ॥ दुर्गमरोग, अतीसार, अरधि, अइली, पाहु, रक्त, पित्त, कामला,  
 अम्लपित्त, शोथ, सांमी और प्रवाहिका ये सब दूरहोयें ॥ ४२ ॥ ( तस्पाजु-  
 पानम् ) इगरीका दूध नामदडा दही घी खसीका या पानी भोजन के पारत  
 समय ओषधिलाय ॥ ४३ ॥ (सर्वातीसारपर कुरैयाष्टरु) गीलीएरुतुलानुरैया  
 की छाल द्रोण भर पानीमें पचावै जब चौपाई शेष रहै तब यह चूर्ण दारि ॥ ४४ ॥  
 लज्जालु, धवकनु, वेल, पादा, मोचरस, नागरमोथा और अनीस ये पलपल भर

पयोवृंहणोवलेकृन्मतः २८ युक्त्यांकूष्माण्डखण्डखण्डचशर-  
 णंविपचेत्सुधीः । अर्शसांभूढवातानामन्दाग्नीनांचयुज्यते  
 २९ हरीतकीशतंमद्रयवानीमाढकंतथा । पलातिदशमू-  
 लस्यधिशतिश्चनियोजयेत् ३० चित्रकःपिप्पलीमूलम-  
 पामार्गःशटीतथाः । कपिकच्छूःशङ्खपुष्पीभाङ्गीचगजपि-  
 प्पली ३१ घलापुष्करमूलत्रेपथगिद्विपलमात्रया । पचे-  
 त्पञ्चाढकेनीरेयवैःस्विन्नैःशतंनयेत् ३२ तच्चाभयाशतंद-  
 व्यात्काथेनास्मिन्विचक्षणः । सर्पिस्तैलाष्टपलकंक्षिपेद्गु-  
 डतुलांतथा ३३ पक्त्वालेहत्वमानीतेसिद्धशीतेपृथक्पृथक्  
 क्षौद्रञ्चपिप्पलीचूर्णंद्यात्कुडवमात्रया ३४ हरीतकीद्वयं  
 खादेत्तेनलेहेननित्यशः । चयंकासंज्वरंश्वासंहिक्काशौरु-  
 चिपीनसान् ३५ ग्रहणीनिशयेदपवलीपलितनाशनः ।  
 बलवर्णकरःपुंसामवलेहोरसाग्रनः । विहितोगस्त्यमुनि-  
 नासर्वरोगप्रणाशनः ३६ कुटजत्वक्तुलांद्रोणेजलस्यवि-

कूष्माण्ड अबलेह बाल हृदको देना छांती पुष्करै रीधे बहावे व पलको करे ॥  
 २८ ॥ (अर्श पर खंड कूष्माण्डाचलेह) जैसे कुम्हड़ा की विधिहै सोई गुरन  
 की भी है पैठा थार जमीकन्दकी छोटी कचें करि दोनोंको एकत्र करि उती रीतसे  
 अबलेह बनाय दिलावे तो अर्श, मूढवात और मन्दाग्नि ये सब अस्त्रेहोयें ॥२९॥  
 ( क्षपीपर अगस्त्य हरीतकी ) बड़ीहडें सौ, अजवायन एकमाइक, दशमूल  
 बीसपल ॥३०॥ चीता, पीपरा मूल, सिंदूर, कचूर, केवांचाकौ डाला, भारद्वा, गज-  
 पीपरि ॥३१॥ घरियारा और पुष्करमूल सब दूँदें पल पांच आढक जलमें पचय  
 गलाय उतारि छानलेय ॥३२॥ तिसमें सौ हड, तेल, गी, आठ पल, गुड़कुलाभर  
 देकर ॥३३॥ पकावे ठंडाकरि शहद चमीपरिदा चूर्ण ये सब एकएक कुद्वहारें ॥  
 ३४॥ इस अबलेह के संग दो हड नित्यरावे तो क्षयी का रोग, कास, ज्वर, रनास,  
 हिचकी, अर्श, अरुचि, पीनस ॥ ३५ ॥ और ग्रहणी ये रोग नाराहोयें चलंघनत हों  
 रंचेत नालेकूष्माण्डो रूचानहो पुंरुपको यह अबलेहरसायनहै यह अगस्त्यमुनिकी बही  
 हरीतकी सब रोगोंको नाश करती है ॥ ३६ ॥ (अर्थाशपर कुरैया अबलेह)

पचेत्सुधीः । कपायंपादशेषंचगृहीयाद्बलगोलितमे ॥ ७  
 त्रिंशत्पलंगडस्यात्रदत्त्वाचविपचेत्पुनः ॥ ८ ॥ सान्द्रत्वमाग  
 तं दृष्ट्वाचूर्णानीमानिदापयेत् ॥ ९ ॥ रसाञ्जनमोचरसत्रि-  
 कटुत्रिफलांतथा । लज्जालुडिचत्रकंपाठांबिल्वमिन्द्रयवंच  
 चाम् ॥ १० ॥ भल्लातकंप्रतिविपांबिडङ्गानिचवालकम् । प्र  
 त्येकंपलसमानंघृतस्यकुडवंतथा ॥ १० ॥ सिद्धशीतेततोद्  
 व्यान्मधुनःकुडवंतथा ॥ ११ ॥ जयेदेषोवलेहस्तुसर्वाण्यशांसि  
 वेगतः ॥ ११ ॥ दुर्नामप्रभावानोगानतीसारमरोचकम् । ग्रह  
 णीपाण्डुरोगंचरक्तपित्तंचकामलाम् । अम्लपित्तंतथाशोथं  
 कांसंचैवप्रवाहिकाम् ॥ १२ ॥ अनुशानेप्रयोक्त्वप्यमाजंतक्रंप  
 योदधि । घृतंजलंवांजिर्णंचपथ्यभोजीभवेत्तरः ॥ १३ ॥ कुट  
 जत्वक्तुलामाद्रीद्रोणनीरेविपाचयेत् । पादशेषंशतंनीत्वा  
 चूर्णान्येतानिदापयेत् ॥ १४ ॥ लज्जालुर्घातकीविल्वंपाठाभो  
 चरसस्तथा । मुस्तंप्रतिविपाचैवप्रत्येकस्यात्पलंपलम् ॥ १५ ॥  
 ततस्तुविपचेद्गन्धोयावहार्वांप्रलेपनम् । जलेनच्छागदु

धेनपीतोमण्डेनवाजयेत्-४६-घोरान्सर्वानतीसारान्ना  
नावर्णान्सवेदनान् । असृग्दरंसमस्तंचसर्वाशांसिप्रवाहि  
काम् ४७ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेऽवलेहकल्पना  
ष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

कल्काच्चतुर्गुणीकृत्यघृतंवातेलमेवच । चतुर्गुणेद्रवे  
साध्यंतस्यमात्रापलोन्मिता ऽ निक्षिप्यकाथयेत्तोयंकाथ्य  
द्रव्याच्चतुर्गुणम् । पादशिष्टं गृहीत्वाचरनेहस्तेनैवसाध  
येत् २ चतुर्गुणंमृदुद्रव्येकाठिन्येष्टगुणंजलम् । अत्यन्त  
कठिनेद्रव्येनीरंषोडशिकंमतम् ३ तथा च मध्यमेद्रव्ये  
दद्यादष्टगुणंपयः । कर्षादितःपलंयावद्दद्यात्षोडशिकंज  
लं ४ ततस्तुकुडवंयावत्तोयंचाष्टगुणंभवेत् । प्रस्थादि  
तःक्षिपेन्नीरेखारीयावच्चतुर्गुणम् ५ अम्बुकाथरसैर्यत्रपृथ  
क्स्नेहस्यसोधनम् । कल्कस्यांशंतत्रदद्याच्चतुर्थषष्ठम

ले ॥ ४५ ॥ फिर उसीवादे को आँटे जलजल करती मेंलिपटने लगे तत्र सिद्ध  
जानी सो इकरी पय या पानी वा मादके संगपिथे ॥४६॥ तो सर्व अतीसारकी घोर  
वेदना निटतहो व सवभाति रक्तवाह, सर्वांश और मवाहिकाको दूरकरताहै ४७ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरमुभाकरेणविरचितेवलेहकल्पनाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

(अथ घृत तेल साधना) कल्कसो चौगुना घृत वा तेल और कांथादि  
द्रव्यभी चौगुनी देना तिसकीमात्रा एकपलभरहै ॥१॥ इस द्रव्यका काथेदेनाहो तो  
चौगुने जल में आँटे जल चौगुनिरहै तत्र खतारिखानिले उसमें धी तेल सिद्ध करे ॥  
२ ॥ कोमलद्रव्य में चतुर्गुणा जल कठोर में आठगुणा और अत्यन्त कठोर में  
सोलहगुणा जल दे ॥ ३ ॥ मध्यमें आठगुणा जलदेवे ( घुनविधि) उपर्यभिरे  
से चाररुगया भरताई में सोलहगुणापानीदे कायकरे पलसे कुदरताई अठगुना  
अस्य से सारीपर्यंत चौगुनादे ॥४॥ और जो केवल कल्क पानी धी व तेलमें  
सिद्ध करे तो चतुर्गुण कल्कदे सेरभर तेल पायसेर पल्क और जो पल्क वादेके  
संग धी तेल पकावे तो घृत तेलका प्यारा कल्क देना तीनराव में आठपाव  
और जब कल्कसेके संग धी वा तेल में पकावे तो तेलका अष्टमांश कल्क देना

पृथग् । ६ ॥ दुग्धेदधिरसेतके कल्केदेयोष्टमांशकः । क  
 ल्कस्यमम्यकपाकार्थतोयमत्रचतुर्गुणम् ७ द्रव्याणियत्र  
 स्नेहेषुपञ्चादीनिभवन्तिहि । तत्रस्नेहसमान्याहुयथा  
 पूर्वचतुर्गुणम् ८ द्रव्येणकेवलैर्नैवस्नेहपाकोभवेद्यदि ।  
 तत्राम्बुपिष्टः कल्कः स्याज्जलंचात्रचतुर्गुणम् ९ काथेन  
 केवलैर्नैवपाकोयत्ररितःकचित् । काथ्यद्रव्यस्यकल्कोपि  
 तत्रस्नेहेप्रयुज्यते १० कल्कहानस्तुयः स्नेहःससाध्यःके  
 वलैर्द्रवे । पुष्पकल्कस्तुयत्स्नेहस्तत्रतोयंचतुर्गुणम् । स्ने  
 हात्स्नेहीष्टमांशश्चपुष्पकल्कःप्रयुज्यते ११ वस्तिवत्स्ने  
 हकल्कःस्याद्यदाङ्गुल्याविमर्दितः । शब्दहीनोऽग्निनिः  
 श्लिप्तःस्नेहसिद्धोभवेत्तदा १२ यदाफेनोद्गमस्तैलेफेनशा  
 न्तिश्चसर्पिषि।गन्धवर्णरसोत्पत्तिःस्नेहसिद्धिस्तथाभवेत्  
 १३ स्नेहपाकस्त्रिधाप्रोक्तोमृदुर्मध्यःखरस्तथा । ईषत्सरस

सैर में आधपात्र घृत तेल का प्रमाण यही है ॥ ६ ॥ दूध, दही, रस और मट्ठा  
 इनमें अप्रमाण कल्क देय और कल्क भलीभांति पकाने के कारण चौगुना जल  
 देना चाहिये ॥ ७ ॥ और जहाँ कल्क घी तेन काय पाय पांचों होयें तहाँ स्ने-  
 हादिक समान देना पानी चौगुना देइ ॥ ८ ॥ जब एकही द्रव्य घृत व तेलमें  
 पकानी होय तौ जलमें द्रव्य पीसि गला वा कल्ककरि चौगुने पानी में पचावै ॥  
 ९ ॥ जो केवल काठे में रुहाहो तहा उसी काथकी द्रव्यका कल्ककरि घृत वा  
 तेलयुक्त वह काठा और चौगुना पानीदे पकाना ॥ १० ॥ जहाँ कल्क रहित है  
 तो केवल द्रववस्तु में दूध पानी देके पकालेना जब फूलके कल्क में स्नेह सिद्ध  
 कहेंगे तब चौगुना पानी देंगे जब स्नेह से स्नेह सिद्ध कहेंगे तब स्नेहका अष्ट-  
 मांश दूसरा स्नेहले पुष्प कल्कयुक्त पकालेना ॥ ११ ॥ जब वह स्नेह पाक अं-  
 गुरीमें लेके मलसे गोलो बनजाय उसे आगपर डारै और जलसे शब्द चिंचिरा-  
 हट न करे तब सिद्धभया जानो ॥ १२ ॥ तेल फेनउठने से सिद्धजानिये घृत फेन  
 शान्तिसे सिद्ध जानिये जब गंध आवै और निर्मल होजाय औरसे उत्पत्तिकरै तब  
 घृत वा तेल सिद्धभया जानिये ॥ १३ ॥ स्नेहपाक तान प्रकारकाहै—मृदु मध्य और

कलकस्तुस्तेहपाकोमृदुर्भवेत् १४ मध्यर्पाकश्चसिद्धिश्च  
 कलकेनीरसकोमले । ईपत्काठिनकल्कश्चस्नेहपाकोभवे  
 त्स्वरः १५ तदूर्ध्वदग्धपाक, रयाद्वाहकृद्भिष्प्रयोजनम् ।  
 आमपाकश्चनिर्वीर्षोवह्निमान्द्रकरांगुरु, १६ नस्यार्थस्या  
 न्मृदुपाकोमध्यमःसर्वकर्मम् । अग्धर्धस्वरप्रोक्तोयु  
 ज्ञ्यादेव्यथोचितम् १७ घृततेलगुडादौश्चसाधयेन्नकना  
 म्भरे । प्रकुर्यन्त्युषिताह्येतेविशेषाद्गुणसञ्चयम् १८ पिप्प  
 लीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरै । ससैन्ध्रैश्चपलिकैर्घृ  
 तप्रस्यंविपाचयेत् १९ क्षीरंचतुर्गुणंदत्त्वात्तिसद्वर्णाहनाश  
 नम् । विषमज्वरमन्दाग्निहरंरुचिकरंपरम् २० पिप्पलीपि  
 प्पलीमूलंचित्रकोहरितपिप्पली । श्वदंघ्रानागरंधान्यपाठा  
 धिल्वंयवानिकी २१ द्रव्यैश्चपलिकैरेतैश्चतुषष्टिपलं  
 घृतम् । घृताच्चतुर्गुणंदेयंचाङ्गेरीरससंबुध्नो २२ तथाच  
 तुर्गुणंदत्त्वादधिसर्पिर्विपाचयेत् । शनैःशनैर्विपक्तव्यंचा  
 ङ्गेरीघृतमुत्तमम् २३ तद्घृतंकफवातघ्नंघृष्यशौधिकार  
 २४ जो कर्कश मोमवत् रहे तो मृदु जानिये ॥ १४ ॥ जो कल्क निरस हो कुछ को  
 मल रहै तो मध्य जानिये जो कल्क निरस और कठोर होजाय तो सरा जानिय ॥  
 १५ ॥ जो इस प्रमाण से अधिक तो रेतो जानो स्नेह विगड गया अकार्य गया  
 जो बचा रहै ता सेबलकरते से मन्दाग्निकरै और भारीहो ॥ १६ ॥ नास लेने को  
 नरम दितहै मध्यम सर्वे कार्यसापक है सरा मर्दनही है जहा जैमा चाहै रहा तैसा  
 धनावै ॥ १७ ॥ घृत, तेल और गुड एकदिन न सावै दिनाठरदे बरे तो अरिक्त  
 गुणकरे ॥ १८ ॥ ( पिप्पलीपर क्षीर पट्टपल ) पीपरि, पीपरा मूल, चार, चीता,  
 मॉति और मेषौ के सब पल पलभरल प्रस्थपर पी में पचावै ॥ १९ ॥ दूध चांगुना  
 जन्मिदहो तब यह पी प्लीहाको नाश करता हुआ विषमज्वर र मर्दाग्नि को दूर कर  
 रचिकोकर ( सग्रहणी अतोसारपर चा गरीवृत ॥ २० ॥ पीपरि, पीपरा मूल,  
 चीता, राजपीपरे, गुडुह स डि, घनिया, पीदा बेल और अजत्रायन ॥ २१ ॥ ये  
 पलप न भर औरै पी चासठिपल बोटी नुनिकाका रस २४६ पलदे ॥ २० ॥ मी २५६



नुत् । इन्त्यानाहंगुदभ्रशंभूमूत्रकृच्छ्रप्रवाहिकाम् २४ मसू  
 राणांपलशतंतीरद्रोणेविपाचयेत् । पादशंपशतंतीत्वा  
 दत्त्वाविल्वंपलाष्टकम् २५ घृतपस्यंपचेत्तेनसर्वातीसार  
 नाशनम् । ग्रहणीभिन्नविट्कोचनाशयेत्प्रवाहिकाम् २६  
 अश्वगन्धापलशतंतदद्वैगोक्षुरंमतम् । शतावरीविदागी  
 चशालिपर्णीवलीमृता २७ अश्वत्थस्यचशुङ्गानिपद्मवी  
 जंपुनर्नवा । काशमर्याश्चफलं वैवमांषवीजंतथैवच २८  
 पृथग्दशपलान्भागान्चतुर्द्रोणैश्चसःपचेत् । द्रोणेशेषरसे  
 तस्मिन्पचेच्चैवत्रलाढकम् २९ मृद्धीकापेद्मककुष्ठंपिप्पली  
 रक्तचन्दनम् । पत्रकंनान्गपुष्पं च आत्मगुप्ताफलंतथा ३०  
 नीलौत्पलंसारिवेहेजीवनीयगणस्तथा । पृथक्कषसमाभा  
 गाःशर्करायाःपलद्वयम् ३१ रसस्यपौण्ड्रवैक्षणामाढकैकं  
 समाहरेत् । रक्तपित्तक्षतक्षीणकामलांवातशोणितम् ३२

पले दहीके दे मंद भेद आंच से पचावे इसका नाम चैविरै घृत है ॥ २३ ॥ इस  
 से बाल, कफ, ग्रहणी, अर्श, दूरही, पेट फूलना, कांचनिस्तरण, मूत्रकृच्छ्र और  
 प्रवाहिका ये सब नाशहोयें ॥ २४ ॥ ( अतीसारपर मसूरघृत ) सौपल, मसू-  
 रीकी द्रोणभर जलमें कायकरै चौथाई रहै तब उस कादे में आठपल बेलकी  
 गूदीदे ॥ २५ ॥ और मसूरभर घृतदे पचावे उससे सध अतीसार, ग्रहणी और  
 विषरा मल गिरना तथा प्रवाहिका ये सब दूरहो ॥ २६ ॥ ( रक्तपित्तपर  
 कामदेव घृत ) असंगेध सौपल गुठुरु पचासपल शतावरी विलादिकंद धनउर्दी  
 चरियाराधुर्ध ॥ २७ ॥ पीपरका टिगुसा, रक्तकमलगटा, गदापुरना, गंधारी  
 पुष्प, काले उर्द ॥ २८ ॥ ये दशदश पल चार द्रोण पानी में पचाय चतुर्द्रोण रोष  
 रहै तब आठकमरं धी देकर पचावे ॥ २९ ॥ गिर, दास, प्यार, धीर, रक्त  
 चन्दन, पत्रज, नागेशरी, किवाचके धीजकी मींगी ॥ ३० ॥ नीलकमल का  
 फूल, पिना कमलगटा, सरिवेन, पिठवन, जीवनीयगण पुष्पके जो न मिले तो  
 केवल चरियारा देना ये सब द्रव्य कर्ष कर्ष मरले शर्कर दो पल युक्त करेता ॥  
 ३१ ॥ आठकमरं पौंड्रका रसे सब इरुटा उसमें पचावे जव दी शेषरहै कर्षेन

हलीमकंपाण्डुरोगवर्णभेदस्वरक्षयम् । मूत्रकृच्छ्रमुरोदाहं  
 पार्श्वशूलचनाशयेत् ३३ एतत्सर्पिःप्रयोक्तव्यवहन्तःपुर  
 चारिणाम् । स्त्रीणांचैवाप्रजातानांदुर्बलानांचदेहिनाम्  
 ३४ श्रेष्ठं धलकरं वप्यै हृद्यं पुष्टिरसायनम् । ओजस्तेजस्क  
 रंहृद्यमायुष्यं प्राणवर्द्धनम् ३५ संवर्द्धयतिशुक्रस्यपुरुषं  
 दुर्बलेन्द्रियम् । सर्वरोगविनिर्मुक्तोपयस्सिक्तोयथाद्रुमः ।  
 कामदेवइतिख्यातंसर्पिरुक्तमहागुणम् ३६ त्रिफलाद्वेनि  
 शेकौन्तीसारिवेद्वेप्रियङ्गुका । शालिपर्णीपृष्ठपर्णीदेवदा  
 व्यैलबालुकम् ३७ नतं विशालादन्तीचदाडिमं नागकेशर  
 म्नानीलोत्पलैलामञ्जिष्ठाविडङ्गपद्मकुष्ठकम् ३८ जातीपु  
 प्पचन्दनंचतालीसंवृहतीतथा । एतैः कर्षसमैः कल्कैर्जलै  
 दत्त्वाचतुर्गुणम् ३९ घृतप्रस्थंपपचेद्दीमानपस्मारिज्वरेक्ष  
 ये । उन्मादिवातरक्तेचकासेमन्दानलेतथा ४० प्रतिश्या

तव ध्यानिले रक्तापिच, जतनीय, कमल, वातरक्त ॥ ३२ ॥ हलीमक, पांडुरो  
 वर्णभेद, स्वरक्षय, मूत्रकृच्छ्र, उरोदाह और पसुरी पीड़ाको दूरकरे ॥ ३३ ॥ यह  
 घृत बहु रमणीयको देय, बांभू, पुत्रवती हो दुर्बलको दे तो मोदाहो ॥ ३४ ॥  
 श्रेष्ठहै धल करताहै शरीरकी रंगत अच्छीहो हृदयको मियव पुष्टता करताहुआ  
 रसायन होकर धल, तेज, आयु और प्राणोंको बढ़ाताहै ॥ ३५ ॥ वीर्य धरता है  
 दुर्बलेन्द्रिय पुरुषकी बलीहो सब रोगनाशहो जैसे सर्पिने से तृप्त तरुण होजावा  
 जैसेही मनुष्यका शरीर होताहै यह फाफदेव घृत बड़ा सुखदायी कहाताहै ॥ ३६ ॥  
 ( कल्याण घृत अपस्मारपर ) त्रिफला, दोनों, हल्दी, रेणुका, सरिचन,  
 पिठवन, मकरा, वनउदी, वनमंग, देवदारु, एलबालू, न मिली तो सुगन्धवाला  
 देय ॥ ३७ ॥ तगर, इन्द्रारुण, जामालगोटे का बीज, धनगर, नागकेशर, नीलक-  
 मल, इलायची, मैत्रीठ, विडंग, पद्मास, फूट ॥ ३८ ॥ मालतीपुष्प, श्वेतचन्दन,  
 तालीतपत्र और हृद्द भटकटया ये सब कर्ष भर पानी में पीसि कल्क करि चौ-  
 शुना पानी दे ॥ ३९ ॥ उस पानी में प्रस्थभर और वह कल्क देके पकाय चंद्रदेवे  
 इस धी से मिरगी, ज्वर, ज्वरी, चित्तभ्रम, वातरक्त, कास, मन्दाग्नि ॥ ४० ॥

येकटीशूलेत्तृतीयकचतुर्थके ।। सूत्रकृच्छ्रेविसर्पेत्तकपिडूमा  
 ण्डु।मयेतथा ४१ विषद्वयेप्रमेहेषु सर्वथैवप्रयुञ्जते ।। त्रि  
 न्ध्यानांपुत्रदंभूतयक्षरक्षोहरंस्मृन्म ॥ ४२ ॥ अमृताकोथ  
 कल्काभ्यांसक्षीरंविषचेद्घृतम् ।। वातरक्तंजयत्याशकुण्ठं  
 जयति हुस्तरम् ॥ ४३ ॥ सप्तच्छदैःप्रतिविषाशस्याकैःकठु  
 रोहिणी ।। पाठामुस्तंमुशीरं च ।। त्रिफलांप्रपृष्टस्तथा ॥ ४४ ॥  
 पटोलनिम्बमज्जिष्ठाःपिप्पलीपद्मकंशटी ।। चन्दनंधन्वयां  
 सहचविशालाद्वेनिशेतथा ॥ ४५ ॥ गुडूचीसारिवेद्वेचमूर्चावा  
 साशतावरी।त्रायन्तीन्द्रयवायष्टीभूनिम्बार्चाक्षमागिकाः  
 ४६ घृतंचतुर्गुणंद्रव्याद्घृतादामलकीरसः ।। द्विगुणंसर्पि  
 षश्चात्रजलमष्टगुणंभवेत् ४७ तस्मिद्धंपाययेत्सर्पिर्वातर  
 क्तेषुसर्वसु ।। कुष्ठानिरक्तपित्तंचरक्ताग्नीसिचपाण्डुताम् ४८  
 हृद्रोगगुल्मवीसर्पप्रदरान्गण्डमालिकाम् ।। क्षुद्ररोगंज्वरं  
 चैवमहात्तित्तिदंजयेत् ४९ कासीसंघेनिशेमुस्तंहरिताले

नाकटपकना, कटिगीडा, तिजारी, चातुर्भिक सूत्रकृच्छ्र, त्रिसर्पिका, खडुली  
 पाण्डु ॥ ४१ ॥ दोनों विषमें प्रमेहमें और रोग सब अच्छेहों, घाँस पुत्रे जने  
 और भूत व राक्षसों की आधा ये सब दूरहोयें इसका नाम कल्याणघृतहै ॥ ४२ ॥  
 ( वातरक्तपर, अस्त्रनादिवृत्त सुर्वका कल्क सुर्वका कार्य दूधके साथ घृत  
 पचवै इससे वातरक्त और कोढ़ दूरहोताहै ॥ ४३ ॥ ( वातरक्तपर ) महा  
 तित्त्तादि घृत, जिज्ञानी, अमलतास, अतीस, कडुवी, पादा, नागरमोथा,  
 खस, त्रिफला, पित्तपाण्डा ॥ ४४ ॥ पटोल, नीम, मेंजीठ, पिपरी, पञ्जोर, क-  
 चूर, चन्दन, जवासा, इन्दारन, दोनों हल्दी ॥ ४५ ॥ गुर्चे, सरिन्न, पिठवन,  
 सुरी, रूसा, शतावरी, त्रयमाषा मरिद्ध, है इन्द्रध्व, मुलेठी और चिगयता ये सब  
 कर्प कर्प भरले ॥ ४६ ॥ घी चौगुनादे व घीका दूना आँवरेकर उसदेकर अठगुणा  
 जलदे ॥ ४७ ॥ यह तिस्र ही संचु वातरक्तके विकारों में से अठारहों कुष्ठों में  
 से रक्तपित्त में व रक्तार्शोसखडुमें देना ॥ ४८ ॥ और हृद्रोग, गुल्म, विसर्प, प्रदर,  
 गण्डमाला, क्षुद्ररोग और ज्वरको दूरिकरै रसका महात्तित्त नामहै पहिले कहे रोग

मनःशिलाम् । कम्पिल्लकंगन्धकंचत्रिडङ्गुर्गुर्लुतथा ५०  
 सिक्थकंमरिचंशुण्ठीतुर्थकंगौरसर्पपमारसाञ्जनंचसिन्दूरं  
 श्रीवासंरक्तचन्दनम् ५१ इरिमेदंनिम्बपत्रंकरञ्जसारिवां  
 वंचाम् । मञ्जिष्ठांमधुकंमांसींशिरीषंलोध्रंशकम् ५२ हरी  
 तर्कप्रपुन्नागंचूर्णयेत्कार्षिकान्पृथक् । ततस्तच्चूर्णमालो  
 ड्यत्रिंशत्पलमितेघृते ५३ स्थापयेत्ताम्रपात्रेचघर्मेसप्त  
 दिनानिवै । अस्याभ्यङ्गेनकुष्ठानिदद्रूपामाविचर्चिकाः ५४  
 शूकदोषाविंसर्पार्चविस्फोटावातरक्तजाः । शिरःस्फोटो  
 पदंशाशचनाडीदुष्टव्रणानिच ५५ शोधोभगन्दरश्चैवलू  
 ताःशाम्यन्तिदेहिनाम् । शोधनरोपणंचैवंसुवर्णकरुणंघृत  
 म् ५६ जातीनिम्बपटोलंचहेनिशेकटुरोहिणी । मञ्जिष्ठांमं  
 धुकंसिक्थंकरञ्जोशीरसारिवाः ५७ तुर्थंचत्रिपंचेतसम्यक्  
 कल्कैरेभिर्घृतंबुधः । अस्यलेप्रात्प्ररोहन्तिसूक्ष्मनाडीव्रणा  
 अपि । मर्माश्रिताःछेदिनश्चगम्भीराःसरुजोत्रणाः ५८  
 चित्रकःशङ्खिनीपथ्याकम्पिल्लस्तृप्त्यायुगम् । वृद्धदारुश्च  
 सष मच्छे होयै ॥ ४६ ॥ ( कुष्ठ, दाह, खाजपरःकसीसादि घृत ) कसीस  
 दोनो हल्दी, नागरमोषा, हरवाल, पैनशिल, क्रीला, गन्धक, विडंग, गुग्गुलु ॥  
 ५० ॥ मोम, मिर्च,सोडि,तृतिया,पीत सरसो,रसोत, सिन्दूर, राल,जाल चन्दन ॥  
 ५१ ॥ रौर, नीलकापचा, करंज, सरिवन, वच, भंजीठ, बहुमाङ्गल, जटामासी,  
 सिरस, लोध, पद्माज ॥ ५२ ॥ हड्ड, गदापुरैना इन सवका एक एक कर्पे चूर्णकरै  
 तिसे तीसपल घृतमें सानि ॥ ५३ ॥ ताम्रपात्रमें भरि सातदिन घोममें घरे इस घी  
 के लगाने से कुष्ठ,दाद शंज,विचर्चिका ॥ ५४ ॥ शूकदोष, विसर्प, रातिरक्तजमिते  
 शीतला,मस्तकंधाव, गर्मी,नासूर ॥ ५५ ॥ शोध,भगन्दर,लूता ( मरुडी ) ये दूरहो  
 घाव अतिशुद्धहो घुटावै घाव त्रिद्वन रहे ॥ ५६ ॥ ( घावपर जातीघृत ) चमे  
 ली,नीच,परवल, तीनों पची, दोनो हल्दी, कटुकी,भंजीठ मुलेठी मोम,करंज, स्वस,  
 सरिवन ॥ ५७ ॥ श्रीर तृतिया इन सवको समानभागलेस्त्रुगदी करि घृतमें पकावै  
 इस घीके लगाने से घाव,नासूर,भर्मेस्थानका दुःखटापी गम्भीर घाव और पीडा

शस्याकोदन्तीचत्रिफलातथा ५९ कोशातकीदेवदालीनी  
 लनीगिरिकणिका । शातलापिप्पलीमूलविडङ्गकटुकीत  
 था ६० हेमक्षीरीचविपचैत्कलकैरेभिः पिचून्मितैः । घृतप्र  
 स्थंस्तुपीक्षीरंषड्पलतुपलद्वये ६१ अर्कक्षीरस्यमतिमास्त  
 रिसिद्धगुल्मकुण्ठनुत् । हन्तिगुल्ममुदावर्तशोथ्याधमानंभग  
 न्दरम् ६२ शमयत्युदराण्यष्टौनिपीतंविन्दुसङ्ख्यया । गो  
 दुग्धेनोष्टदुग्धेनकौलत्थेनशूतेनवा ६३ उष्णोदकेनवापी  
 त्वाविन्दुवैर्गविरिच्यते । एतद्विन्दुघृतनामनाभिलेपाद्विरे  
 चयेत् ६४ त्रिफलायारसप्रस्थंप्रस्थवासारसोद्भवम् ।  
 भृङ्गराजसप्रस्थंप्रस्थमाजंपयस्तथा ६५ दत्त्वातत्रघृतं  
 प्रस्थंकलकैः कर्षमितैः पृथक् । त्रिफलापिप्पलीद्राक्षाच  
 न्दनसंश्लेषवला ६६ काकोलीक्षीरकाकोलीमेदामरिचनो  
 गरम् । शर्करापुण्डरीकञ्चकमलचपुनर्नवा ६७ निशायुग्मं  
 चमधुकंसवैरेभिर्विपाचयेत् । नक्तान्ध्यंनकुलान्ध्यं चकण्डू

ये सच दूरहोय ॥ ५८ ॥ (उदररोगपर विन्दु घृत) चीते कीदाल, शंखाहूली,  
 हड, कवीला, दोनां निशोय, विषारा. अमलतासका गूदा, जमालंगोटा विफला ॥  
 ५९ ॥ कटुवीतोरई, देवदाली कहे ( धंदाल ) नीलकी पची, कोयल, सेंहुडकी  
 झीमी, पीनरामूल, विडंग, कटुकी ॥ ६० ॥ और चूक ये सब कर्ष कर्षमले कलक  
 करि प्रस्थपर पीमें पचायै छः पल सेंहुडका दूधडारै ॥ ६१ ॥ और दो पल  
 मदारिका दूधडारै बह सिद्ध शी देवे तो गुल्म, कुण्ठ अन्धाहो भून्, उदावर्त, शोथ,  
 पेटफूलना, भगंदर ॥ ६२ ॥ और आठो उदररोग ये दूरहो आठवूट पानी से वा  
 दूधसे वा ऊटके दूधसे कुलथी काथसे ॥ ६३ ॥ गरम पानीसे जो धूट दियेसे दस्तहो  
 यह विन्दुघृत नामिमें लेप करनेसे दस्तआतेहै ॥ ६४ ॥ ( नेत्र रोगपर त्रिफला  
 घृत ) त्रिफले का रस एकप्रस्थ, रुसेका एक प्रस्थ, भंगरेका एक प्रस्थ, चकरोका  
 दूध एकप्रस्थ ॥ ६५ ॥ एक प्रस्थ पी कर्ष कर्ष और द्रव्य त्रिफला, पीपरी, दास,  
 चन्दन, संप्रव, बरियारा ॥ ६६ ॥ दोनां काकोली, विना असगन्ध, भदा, विना  
 मुलेठी, मिर्च, सोंठि, खांड, श्वेतकमल, रक्तकमल, गदापुरना ॥ ६७ ॥ दोनां

पिल्लंतथैव च ६८ मेत्रस्त्रावंचपटलंतिमिरंजाजकंजयेत् ।  
 अन्येषु प्रशमंयान्तिनेत्ररोगा सुदारुणाः । त्रैफलंघृतमेत  
 द्विपानेनस्यादिसूत्रितम् ६९ द्वहृदिरेस्थिरामूर्वामारिवा  
 चंदनद्वयम् । मधुपर्णीचमधु कंपद्वकेसरपद्मकम् ७० उत्प  
 लोशीरमेदोभिस्त्रिफलापञ्चवल्कलैः । कल्कैः कर्पमितैरेतै  
 र्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ७१ विसर्पलूताविस्फोटत्रणकुण्ठवि  
 ष्णापहम् । गौर्यादिक्रमितिस्त्र्यान्सर्वत्रणहरंस्मृतम् ७२  
 बलामधुकरास्नाभिर्दशमूलफलत्रिकैः । पृथग्द्विद्विपलैरे  
 भिर्द्रोणनीरेणप्राचयेत् ७३ मयूरपक्षपित्तान्त्रयकृत्पादास्य  
 वर्जितम् । पादशेषंघृतंनीत्वाक्षरिंदर्याचतत्तमम् ७४ घृ  
 तंप्रस्थंपचेत्तम्यग्जीवनीयैः पित्तनिमित्तैः । तद्विसृष्टशिर  
 सःपीडांमन्यांपृष्ठग्रहंतथा ७५ अर्दितंकर्णनासाक्षिजिह्वा  
 गलरुजोजयेत् । पानेनस्येतथाभ्यङ्गेकर्णपूरेषुयुज्यते । हे  
 मन्तकालेशिशिरे वसन्तेषुचशस्यंते ७६ त्रिफलामधुकं

हृदी और गुलेटी, इनका कल्ककरि घी में पकावै तो नक्तान्य, नहुलान्य, ग्राज,  
 पित्ररोग ॥ ६८ ॥ नेमस्ता, पटल, तिमिर और नीलविन्दु ये सब अच्छेहोई इस  
 त्रिफलादिघृतको साथ वा नास लेकर यथोचित अनोपान करै ॥ ६९ ॥ (घाघपर  
 गौर्यादि घृत), दोनों हृदी, शालिपर्णी, मुरा सरिग्न चन्दन, दोनों गुलेटी,  
 कमल, केसर, कमल ॥ ७० ॥ नीलकमल, रस, मेदा, जिना गुलेटी त्रिफला, आम,  
 बट, पीपर, पाकर और मूलर इनकी छाल सब कर्प कर्पले कल्करि मस्थभर घी  
 में पचावै ॥ ७१ ॥ यह गौर्यादि घृत विसर्पिका, भगियासन, शीतला त्रि, कुण्ठ  
 और विष इन सबको अच्छेकरै ॥ ७२ ॥ (शिरोरोगपर मयूरघृत) चरियारा,  
 मुनेठा, रासन, दशमूल और त्रिफलाये दो दो पल देद्रोणभर जलमें पकावै ॥ ७३ ॥  
 मयूरमास विना श्यात धोभरी पिता पाय पानीमें गलारै चौधवाई रहै उत्तारि ले  
 यह रूप जिनाहो तितना दृष्टे ॥ ७४ ॥ मस्थभर घीमें कर्प कर्पभर जीवनीयगण  
 और, कादा सब पचावै शिररोग, मन्यान्यथा, पृष्ठग्रह ॥ ७५ ॥ लकवा, कर्ण, नाक,  
 नेत्र, जीभ, शला, जत्रके रोगनाशै साथ सूवै मलै कानमें डारै हेमन्त शिशिर वसन्त

ष्टमम् ६... दुग्धेदधिरसेतके कल्केदेयोष्टमांशकः । क  
 लकस्यसम्यक्पाकार्थतोयमत्रचतुर्गुणम् ७ द्रव्याणियत्र  
 स्नेहेषुपञ्चादीनिभवन्तिहि । तत्रस्नेहसमान्याहृद्यथा  
 पूर्वचतुर्गुणम् = द्रव्येणकेवलेनैवस्नेहपाकोभवेद्यदि ।  
 तत्राम्बुपिष्टः कल्कः स्याज्जलंचात्रचतुर्गुणम् ९ काथेन  
 केवलेनैवपाकोयत्रेरितःकचित् । काथ्यद्रव्यस्यकल्कोपि  
 तत्रस्नेहेप्रयुज्यते १० कल्कहानस्तुयः स्नेहःससाध्यःके  
 वलेद्रवे । पुष्पकल्कस्तुयस्नेहस्तत्रतोयंचतुर्गुणम् । स्ने  
 हात्स्नेहाष्टमांशश्चपुष्पकल्कःप्रयुज्यते ११ वर्तिवंत्स्ने  
 हकल्कःस्याद्यदाङ्गुल्याविमर्दितः । शब्दहीनोऽग्निनिः  
 क्षितःस्नेहसिद्धोभवेत्तदा १२ यदाफेनोद्गमस्तैलेफेनशा  
 न्तिश्चसर्पिषि।गन्धवर्णरसोत्पत्तिःस्नेहसिद्धिस्तथाभवेत्  
 १३ स्नेहपाकलिधाप्रोक्तोमृदुर्मध्यःखरस्तथा । ईषत्सरस

सेर में आधपात्र घृत तेलका प्रमाण यही है ॥ ६ ॥ दूध, दही, रस और मूँडा  
 इनमें अष्टमांश कल्क देय और कल्क भलीभाँति पकाने के कारण चौगुना जल  
 देना चाहिये ॥ ७ ॥ और जहाँ कल्क या तेज काथ पाय पाचों होयें तहाँ स्ने-  
 हादिक समान देना पानी चौगुना देइ ॥ ८ ॥ जब एरुही द्रव्य घृत व तेलमें  
 पकानी होय तौ जलमें द्रव्य पीसि गला या कल्ककरि चौगुने पानी में पचावै ॥  
 ९ ॥ जो केरज काष्ठ में कहाहो तहा उसी काथकी द्रव्यका कल्ककरि घृत वा  
 तेलयुक्त वह काड़ा और चौगुना पानीदे पकाना ॥ १० ॥ जहा कल्क रहित है  
 तौ केवल द्रववस्तु में दूध पानी देके पकालेना जब फूलके कल्क में स्नेह सिद्ध  
 कहेंगे तब चौगुना पानी देंगे जब स्नेह से स्नेह सिद्ध कहेंगे तब स्नेहका अष्ट-  
 मांश दूसरा स्नेहले पुष्प कल्कयुक्त पकालेना ॥ ११ ॥ जब वह स्नेह पाक अं-  
 गुरीमें लेके मलसे गोली बनजाय उसे आगपर डारै और जलसे शब्द चिंचि-  
 हट न करे तब सिद्धमया जानो ॥ १२ ॥ तेल फेनउठने से सिद्धजानिये घृत फेन  
 शांतिसे सिद्ध जानिये जब गंध आवै और निर्मल होजाय औरसे उताचिकरै तब  
 घृत वा तेल सिद्धमया जानिये ॥ १३ ॥ स्नेहपाक तान मकरकाहै—मृदु मध्य और

हलीमेकपाण्डुरोगवर्णभेदस्वरक्षयम् । मूत्रकृच्छ्रमुरोदाहं  
 पार्श्वशूलंचेनागयेत् ३३ एतत्सर्पिःप्रयोक्तव्यं बह्वन्तःपुर  
 चारिणाम् । स्त्रीणांचैवाप्रजातानां दुर्बलानांच देहिनाम्  
 ३४ श्रेष्ठं धलकरं वर्ष्यहृद्यं पुष्टिरसायनम् । ओजस्तेजस्कं  
 रंहृद्यमायुष्यं प्राणवर्द्धनम् ३५ संवर्द्धयति शुक्रस्य पुरुषं  
 दुर्बलेन्द्रियम् । सर्वरोगविनिर्मुक्तोपयसिस्तक्नो यथाद्रुमः ।  
 कामदेवइति ख्यातं सर्पिरुक्कं महागुणम् ३६ त्रिफलाद्वेनि  
 शेकौन्तीसारिवेद्वेप्रियङ्गुका । शालिपर्णीपृष्ठपर्णीदेवदा  
 व्येलवालुकम् ३७ नतं विशालादन्तीचदाडिमं नागकेशर  
 मानीलोत्पलैलामञ्जिष्ठाविडङ्गपद्मकुष्ठकम् ३८ जतीपु  
 ष्यं चन्दनं च तालीसंवृहंती तथा । एतैः कर्पसमैः कल्कैर्जलं  
 दत्त्वा चतुर्गुणम् ३९ घृतप्रस्थं पचेद्दीप्मानपस्मारेज्वरेक्ष  
 ये । उन्मादिवातरक्तेचकासिर्मन्दानले तथा ४० प्रतिश्या

सब छानैलै रक्तापिच, चतुर्गुण, कमेल, वातरक्त ॥ ३२ ॥ हलीमक, पाण्डुरो  
 वर्णभेद, स्वरक्षय, मूत्रकृच्छ्र, उरदाह और पसुरी पीढाको दूरकरे ॥ ३३ ॥ यह  
 घृत बहु रमणीयको देय वाफ पुत्रवती हो दुर्बलको दे तो मोटाहो ॥ ३४ ॥  
 श्रेष्ठ है धल करता है शरीरकी रंगत अच्छीहो हृदयको मिय व पुष्टता करताहुआ  
 रसायन होकर धल, तेज, आयु और माणोंको बढ़ाताहै ॥ ३५ ॥ वीर्य बढ़ाता है  
 दुर्बलेन्द्रिय पुरुषकी बलौहो सब रोगनाशहो जैसे सर्पिचने से वृक्ष तरुण होजाता  
 तैसेही मनुष्यका शरीर होताहै यह कामदेव घृत बढ़ा शुष्कदायी कहाताहै ॥ ३६ ॥  
 ( फरुषाण्य घृत अपस्मारपर ) त्रिफला, दोजो हल्दी, रेणुका, सरिचन,  
 पिठवन, मकरा, चनउर्दी, चनमूग, देवदारु, एलवालू न मिले तो सुगन्धवाला  
 देय ॥ ३७ ॥ तगर, इन्द्रारण, जमालगोटे का बीज, अनार, नागकेशर, नीलक-  
 मन्ना, हलायची, मनीठ, विडंग, पद्यास, फूट ॥ ३८ ॥ मालतीपुष्य, श्वेतचन्दन,  
 तालीसपत्र और वृद्ध भटकटैया ये सब कर्प भर पानी में पीसि कल्क करि चौ-  
 गुना पानी दे ॥ ३९ ॥ उस पानी में प्रथमर और वह बल्क देके पकाय चंघदेने  
 इस यी से पिरगी, ज्वर, क्षयी, विचक्षण, वातरक्त, कास, मन्दोग्नि ॥ ४० ॥



येकटीशूलेतृतीयकचतुर्थके । सूत्रकृच्छ्रेविसर्पेचकण्डूपा  
 षड्दामयेतथा ४१ विषद्वयेप्रमेहेषु सर्वथैवप्रयुज्यन्ते । व  
 न्ध्यानांपुत्रदंभूतयक्षरक्षोहरंस्मृतम् ४२ अमृताकाथं  
 कल्काभ्यांसक्षीरंविषचेद्घृणम् । वातरक्तजग्रत्याशकुष्ठं  
 जयतिद्वुस्तरम् ४३ सप्तच्छदःप्रतिविषांशम्याकैःकटु  
 रोहिणी । पाठामुस्तमुशीरंच त्रिफलापेर्षटस्तथा ४४  
 पटोलनिम्बमज्जिष्ठाःपिप्पलीपद्मकंशटी । चन्दनंधन्वया  
 सश्चविशालाह्नेनिशेतथा ४५ गुडूर्चासारिवेद्वेचमूर्वावा  
 साशतावरीत्रायन्तीन्द्रयवायष्टीभूनिम्बाश्चाश्लभागिकाः  
 ४६ घृतंचतुर्गुणंदद्याद्घृतादामलकीरसः । द्विगुणंमर्षि  
 षश्चात्रजलमष्टगुणंभवेत् ४७ तस्मिंश्चपाययेत्सर्पिर्नातिर  
 क्तेषुसर्वसु । कुष्ठानिरक्तपित्तंचरक्ताशांसिचपाण्डुताम् ४८  
 हृद्रोगगुल्मवीसर्पप्रदरान्गण्डमालिकाम् । क्षुद्ररोगंज्वरं  
 चैवमहातिक्रमिदंजयेत् ४९ क्रासीसंज्ञेनिशेमुस्तंहरितालं

नाकट्यकना, कटिगीडा तिजारी, चातुर्गिक सूत्रकृच्छ्र, विसर्पिका सडुली  
 पाण्डु ॥ ४१ ॥ दोनों विषमें प्रमेह में और रोग सब 'अच्छेहों' वाभ पुत्र गनै  
 और भूत र रक्तसों भी बाधा ये सब दूरहोयें इसका नाम कल्याणघृतह ॥ ४२ ॥  
 ( चातरक्तपर अमृतादिवृत गुर्चेका कटु, गुर्चरी काथ दूधके साथ घृत  
 पचारै इससे वातरक्त और शोथ दूरहोताह ॥ ४३ ॥ ( घातकुष्ठादिपर महा  
 तिक्तादि घृत छितौनी, अमलतासे, अतीम, कटुकी पांशु, नागरप्रोधा,  
 रस, त्रिफला, पित्तपाण्डु ॥ ४४ ॥ पटोल, नीम, यजीठ, पिपरौ, पद्मारत, क-  
 जूर, चन्दन, जवासा, इन्द्रासन, टोनों हल्दी ॥ ४५ ॥ गुर्चे, सरिसेन, पिठवन,  
 मुर्गी, रुसा, शतामरि, राधमाण मरिद्ध है इन्द्रयव, मुलेठी और चिगयिता ये सब  
 कर्प कर्प भरले ॥ ४६ ॥ घी चौगुनादे र घीका दूना आचरेका रसदेकर अठगुणा  
 जलदे ॥ ४७ ॥ यह सिद्ध घी सब चातरक्तके विकारों में व अथारहों कुष्ठों में  
 व रक्तपित्त में व रक्तारोगण्डु में देइ ॥ ४८ ॥ और हृद्रोग, गुल्म, विसर्प, मटर,  
 गण्डमालो, क्षुद्ररोग और ज्वरको दूरिकरै रसका महातिक्र नामहै पहिले कहे रोग

मनःशिलाम् । कम्पिल्लकंगन्धकंचविडङ्गगुग्गुलुतथा ५०  
 सिक्थकंमरिचंशुण्ठीतुत्यकंगौरिसर्षपमारसाञ्जनंचसिन्दूरं  
 श्रीवासंरक्तचन्दनम् ५१ इरिमेदंनिम्बपत्रंकरञ्जसारिवां  
 वचाम् । मञ्जिष्ठांमधुकंमांसींशिरीषंलोध्रंघ्नकम् ५२ हरी  
 तर्कंप्रपुत्रागंचूर्णयेत्कार्पिकान्पृथक् । ततस्तच्चूर्णमालो  
 ड्यत्रिंशत्पलमितेघृते ५३ स्थापयेत्ताम्रपात्रेचघर्मसप्त  
 दिनानिवै । अस्याभ्यङ्गेनकुष्ठानिदद्रूपामाविचर्चिकाः ५४  
 शुकदोषाविसर्पाश्चविस्फोटावातरक्तजाः । शिरःस्फोटा  
 पदेशाश्चनाडीदुष्टव्रणानिच ५५ शोथोभगन्दरश्चैत्रल  
 ताःशाम्यन्तिदेहिनाम् । शोधनरोपणंचैत्रसुवर्णकरणघृत  
 म् ५६ जातीनिम्बपटोलंचद्वेनिशंकटुरोहिणी । मञ्जिष्ठांम  
 धुकंसिक्थंकरञ्जोशीरसारिवाः ५७ तुत्यंचविपचेत्सम्यक्  
 कल्कैरेभिघृतंबुधः । अस्यलेपात्प्ररोहन्तिसूक्ष्मनाडीव्रणा  
 अपि । मर्माश्रिताःछेदिनश्चगम्भीराःसरुजोव्रणाः ५८  
 चित्रकःशङ्खिनीपथ्याकम्पिल्लस्तृचृतायुगम् । वृद्धदारुश्च  
 सब अच्चे होषे ॥ ४६ ॥ (- कुष्ठ, दाह, स्वाजपर कसीसादि, घृत ) कसीस  
 दोनो हल्दी, नागरमोथा, इरतालः, मैवशिल, कयीला, गन्धक, विडंग, गुग्गुलु ॥  
 ५० ॥ मोम, मिर्च, सोंडि, त्रिविधा, पीत सरसो, रसोत, सिन्दूर, रात, लाल चन्दन ॥  
 ५१ ॥ खैर, नींबकापचा, करंज, सरियन, वच, भंजीठ, महुआदाल, जटामांसी,  
 सिरस, लोष, पञ्चाव ॥ ५२ ॥ इड, गदापुरैना इन सबका एक एक कर्ष चूर्ण करै  
 तिसे तीसपल घृतमें सांनि ॥ ५३ ॥ ताम्रपात्रमें भरि सातदिन घाममें धरै इस घी  
 के लगाने से कुष्ठ, दाह, स्वाज, विचर्चिका ॥ ५४ ॥ शुकदोष, विसर्प, वातरक्तजनित  
 शीतला, मस्तकपात्र, गर्मी, नामूर ॥ ५५ ॥ शोथ, भगन्दर, लता ( मकड़ी ) ये दूरहो  
 याव अतिशुद्ध हो पुराये याव चिह्न न रहे ॥ ५६ ॥ ( घावपर जातीघृत ) चमे  
 ली, नींब, परवल, तीनों पत्ती, दोनो हल्दी, कटुकी, मञ्जीठ मुलेठी मोम, करंज, रास,  
 सरियन ॥ ५७ ॥ और त्रिविधा इन सबको समान भागले लुगदी करि घृतमें प्रकावे  
 इस घीके लगाने से घाव, नामूर, पर्मस्फानका दुःखदायी गम्भीर घाव और पीडा

शम्भ्याकोदन्तींचत्रिफलातथा ५९ कोशोतकीदेवदोलीनी  
लनीगिरिकर्णिका । शातलापिप्पलीमूलंविडङ्गकटुकीत्  
था ६० हेमक्षीरीचविपचेत्कल्कैरेभिः पिचून्मितैः । घृतप्र  
स्थंरत्नुपीक्षीरंषट्पलेतुपलद्वये ६१ अर्कक्षीरस्यमतिमांस्त  
रिसङ्गुल्मकुष्ठलुत् । हन्तिशलमुदावर्तेशोत्थाध्मानंभग  
न्दरम् ६२ शमयत्युदराप्यष्टौनिपीतंविन्दुसट्ख्यया । गो  
दुग्धेनोष्टदुग्धेनकालत्थेनशृतेनवा ६३ उष्णोदकेनवापी  
त्वाविन्दुवेगैर्धिरिच्यते । एतद्विन्दुघृतंनामनाभिलेपाद्विरे  
चेयेत् ६४ त्रिफलायारसप्रस्थंप्रस्थंवासारसोद्भवम् ।  
भृङ्गराजरसप्रस्थंप्रस्थमाजंपयंस्तथा ६५ दरमातंत्रघृतं  
प्रस्थंकल्कैःकर्षमिते पृथक् । त्रिफलापिप्पलीद्राक्षाच  
न्दनंसैन्धवंनला ६६ काकोलीक्षीरकाकोलीमेदामरिचना  
गरम् । शर्करापुण्डरीकञ्चकमलंचपुनर्नवा ६७ निशायुग्मं  
चमधुकंसैर्वरेभिर्विपाचयेत् । नक्तान्ध्यंनकुलान्ध्यंचकण्डूं

ये सप्त दूरहोषं ॥ १८ ॥ (उदररोगपर विन्दु घृत) चीते कीकाल, शलाहली,  
हड, कवीला, दोना निशेय, विधारा अमलतासका गूदा जपलगाटा त्रिफला ॥  
५९ ॥ कटुवीतोरई टेरवाली बहे ( यदाल ) नीलकी पत्ती, कोयल सेंहुडकी  
छीमी, पीरामूल, विंग, कटुकी ॥ ६० ॥ और चूक ये सप्त कर्प कर्षभल्ले कल्क  
वरि प्रस्थपर भीमें पचाये छ. पल सेंहुडका दूधडारे ॥ ६१ ॥ और दो पल  
मजाररा दूधडारे षड सिद्ध गी देने तो गुल्म, कुष्ठ अच्यहो शूल, उदावर्त, शोथ,  
पेटफूलना, भगंडर ॥ ६२ ॥ थार थार उदररोग ये दूरहो आठरूंद पानी से ता  
दूधसे वा ऊंटके दूधसे कुलथी हापसे ॥ ६३ ॥ गरम पानीमे जो दूद पियेसे दस्तहो  
यह विन्दुघृत नाभिमें लेप करमेये टस्नआतेहै ६४ ॥ ( नेत्र रोगपर त्रिफला  
घृत ) त्रिफले का रस एकप्रस्थ, रसेका एक प्रस्थ भंगरेका एक प्रस्थ, नकरीवा  
दूध एवप्रस्थ ॥ ६५ ॥ एक प्रस्थ गी कर्ष कर्ष और द्रव्य त्रिफला, पीपरी, दास  
चन्दन, सेंडव, थरियारा ॥ ६६ ॥ दोनों काकोली, विना असगन्ध, मेदा, विना  
मुलेठी, मिर्च, सोंठि, साठ, श्वेतकमला, रक्तकमल, गटापुरना ॥ ६७ ॥ दोनों

पिल्लंतथैवच ६८ नेत्रस्त्रावंचपटलंतिमिरंचाजकंजयेत् ।  
 अन्येपिप्रशमयान्तिनेत्ररोगाः सुदारुणाः । त्रैफलंघृतमेत  
 द्विपानेनस्यादिमूचितम् ६९ द्वेहरिद्रेस्थिरामूर्वामारिवा  
 चंदनद्वयम् । मधुपर्णी चमधु कंपद्मकेसरपद्मकम् ७० उत्प  
 लोशीरमेदोभिस्त्रिफलापञ्चवल्कलैः । कल्कैः कर्पमितैरेतै  
 घृतप्रस्थंविपाचयेत् ७१ विसर्पलूताविस्फोटत्रणकुष्ठवि  
 पापहम् । गौर्यादिकर्मितिरुयानंसर्वत्रणहरंस्मृतम् ७२  
 ब्रुलामधुकरास्नाभिर्दशमूलफलत्रिकैः । पृथग्द्विद्विपलेरे  
 भिद्रोणनीरेणपाचयेत् ७३ मयूरपक्षपित्तान्त्रयकृत्पादास्य  
 वर्जितम् । पादशेषंगृतंनीत्वाक्षीरंदस्वाचतत्समम् ७४ घृ  
 तंप्रस्थंपचेत्सम्यग्जीवनीयैः पिचून्मितैः । तत्सिद्धंशिर  
 सःपीडांमन्यांपृष्ठग्रहंतथा ७५ अर्दितंकर्णनासाभिजिह्वा  
 गलरुजोजयेन् । पानेनस्येतथाभ्यङ्गेकर्णपूरेषुयुज्यते । हे  
 मन्तकालेऽिशिरे घसन्तेषुचशस्यते ७६ त्रिफलामधुकं

हल्दी और मुलेठी इनका कन्ककरी धी में पत्रावै तौ नकान्ध्य, नटुलान् प, ग्राज,  
 पित्ररोग ॥ ६८ ॥ नेत्रस्त्राव, पटन, तिमिर और नीलत्रिन्दु ये सब अच्छेहोयें इस  
 त्रिफलादि घृतको खाय वा नास लेकर यथोचित अनोपान करे ॥ ६९ ॥ (घात्रपर  
 गौर्यादि घृत ) दोनों हल्दी, शलिपर्णी, मुरा सरिवन चन्दन, दोनों मुलेठी,  
 कमल केसर, कमला ॥ ७० ॥ नीलकमल, रस, मेदा, घिना मुलेठी त्रिफला, घात्र,  
 बट, पीपर, पाकर और गुलर इनकी बाल सब कर्प कर्पले कल्ककरी मस्यभर धी  
 में पचावै ॥ ७१ ॥ यह गौर्यादि घृत विसर्पिका, अग्निवासन, शीतला राव, कुष्ठ  
 और विष इन सबको अच्छेकरै ॥ ७२ ॥ ( शिरारोगपर मयूरघृत ) परिधारा,  
 मुलेठी, रासन, शमूल और त्रिफलाये दो दो पल ट्रेड्रोणभर जलमें पत्रावै ॥ ७३ ॥  
 मयूरमास विना अत थोकरै पिता पाच पानीमें गलारै चौध्याई रहै उत्तारि ले  
 यह घृत जितनाहो तितना दूधदे ॥ ७४ ॥ मस्यभर धीमें कर्प कर्पभर जीवनीयगण  
 और कादा सब पत्रावै शिररोग, मन्याव्यया, पुष्टग्रह ॥ ७५ ॥ लंकरी, कर्ण, नाक,  
 नेत्र, जीभ, गला सबके रोगनाशे राय सूत्रे मन्त कानमें डारै हेमन्त शिशिर घसन्त

कुष्ठद्वेनिशेकट्टुगोहिणी । विडङ्गपिप्पलीमुस्ताविशालाकट्टु  
 फलवचा ७७ द्वेमेदद्वेचकाकोल्यासारिवेद्वेप्रियङ्गुका । श  
 तपुष्पाहिङ्गुरास्नात्तन्दनरक्तचन्दनम् ७८ जातीपुष्पंतु  
 गाक्षीरीकमलशकरातथा । अजमोदाचदन्तीचकलकेरते  
 श्चकार्षिकैः ७९ जीवद्वत्सैकवर्णायाधृतप्रस्थचगोःक्षिपेत् ।  
 चतुर्गुणेनपयसापचेदारण्यगोमयैः ८० सुतिथौपुष्यनक्ष  
 त्रेऽमृद्भाण्डेताम्रजेतथा । ततःपित्रेच्छुभदिनेनारीवापुरुषो  
 थवा ८१ एतत्सर्पिनरःपीत्वास्त्रीषुनित्यं वृषायते । पुत्रान्  
 सञ्जनयेद्दीमान्बन्ध्यापिलभूतैसुतम् ८२ अनायुषंवाज  
 नयेद्यां चसूतापुनःस्थिता । पुत्रमाप्नोतिसानारीबुद्धिमन्तं  
 शतायुषम् ८३ एतत्फलघृतं नामभारद्वाजेनभाषितम् ।  
 अनुक्तलक्षणांमूलक्षिपन्त्यत्रिचिकित्सकाः ८४ त्रिफलाद्दे  
 सहचरेगुडूर्वासपुनर्नवाम् । शुकनासांहरिद्रेद्वेरास्नांमेदा  
 शतावरीम् ८५ कल्कीकृत्यघृतप्रस्थंपचेत्क्षीरेचतुर्गुणे ।

में सेवन करना अच्छा कहा है ॥७६॥ (मध्याको फलघृत ) त्रिफला, मुलेठी,  
 फूट, दोनों, हल्दी, फुटकी, विडंग, पीपरी, नागरमोथा, इंदारुण, कायफरी ॥ ७७ ॥  
 भेदा, महाभेदा, विना मुलेठी, दोनों काकोली, विना असगंध, सरिवन, पिठवन,  
 शकरा, सौंफ, हींग, रासन, दोनोंचन्दन ॥ ७८ ॥ चमेलीपुष्प, वंशलोचन, कमल,  
 शकर, अजमोद, और जमालगोटा ये कर्प कर्प भरले कलकरि ॥ ७९ ॥ एकरंगका  
 गाय और बहराहो तिसका भी घी मस्यभर देकर चौगुना दधदे विनुवां कण्डामें  
 मन्दमन्द आंचदेकर पचावे ॥ ८० ॥ सुन्दर तिथि, पुष्य नक्षत्र में मही वा ताँबेके  
 प्रात्रमें शुभदिन पिये स्त्री वा पुरुष ॥ ८१ ॥ पुरुष जो पिये सो वृषभतुल्य काशी रई  
 कैसाभी असमर्थ हो परन्तु पुरुषत्वकी उत्पन्नकरै और शक्तिनके पुनर्दाय ॥ ८२ ॥  
 इयहि स्त्रीके पुत्र मरजाताहो उसके घृतसेवनसे पुत्रहोकर सौत्रर्पणिये ॥ ८३ ॥  
 यह फलघृत भारद्वाज भाषितहै विनाकहे वैद्य इस घृत के संग लक्षणा बूटी की  
 जड़ देते हैं ॥ ८४ ॥ ( योनिदोष पर त्रिफलादि घृत ) त्रिफला, दोनों कट-  
 सरैया, गुर्ध, गदापुरैना, किरस, दोनों हल्दी, रासन, भेदा और शतावरी ॥ ८५ ॥

तत्सिद्धपाथयेन्नारीयोनिरोगनिपीडिताम् ८६ पीडिताच-  
 लितायिचनिःसृताविहृताचया । पित्तयोनिश्चविभ्रान्ता  
 षण्डयोनिश्चयास्मृता ८७ प्रपद्यन्तेहिताःस्थानगर्भगृह-  
 न्तिचासकृत् । एतत्फलघृतं नाम योनिदोषहरस्मृतम् ८८  
 वृषनिम्बामृताव्याघ्रीपटोलानांशृतेनच । कल्केनपकेसर्पि-  
 स्तुनिह्न्याद्विषमज्वरान् । पाण्डुकुष्ठविसर्पिकृमीनशांसि-  
 नांशयेत् ८९ ॥ इति श्रीशाङ्गधरमध्यखण्डेघृतकल्पना-  
 ध्यायोनेवमः ॥ ९ ॥

लाक्षाढककाथयित्वाजलेश्चचतुराढकैः । चतुर्थांश-  
 शृतं नीत्वा तैलं प्रस्थमितं क्षिपेत् १ मस्त्वाढकं च गोदधनः  
 सधतैले विनिक्षिपेत् । शतपुष्पामश्वगन्धांहरिद्रादेवदा-  
 रुच २ कटुकारेणुकामूर्वाकुष्ठचमधुयष्टिकाम् । चन्दनं  
 मुस्तकरास्नांष्टथैर्कषप्रमाणतः ३ चूर्णयेत्तत्रनिक्षिप्य

इनका काय प्रस्थ भर घृत व चारिमस्थ दधमें पकावे जबूधी सिद्ध हो तब स्त्री  
 विषयतौ सब योनिदोष दूरहो ॥ ८६ ॥ पीडित, चलित, निःसृत, विहृत, पि-  
 त्तयोनि, विभ्रान्त, षण्डयोनि ॥ ८७ ॥ ये, सब योनिरोग मिटे और गर्भादेक यह  
 फलघृत नाम घृत योनिदोष पर बहुत अच्छा कहा है ॥ ८८ ॥ (विषमज्वर  
 पर पचति चतघृत) रूसा, नींबू, गुर्ब, भटकटैया और पटोल ( परवर )  
 इन्हीं के फाड़ा और कल्क में दो पकाय लाय तौ विषमज्वर जाय पांडु कुष्ठ  
 विसर्प कृमि और अर्रा ये भी दूरहोयें ॥ ८९ ॥

इति श्रीशाङ्गधरसुधाकरेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अधेघृततैलसाधनप्रकारः ॥ ( लाक्षादितैल ) लाही एक आढक  
 आढक तीन सेर बः रूपये भर होता है चारि आढक पानी में काया करि  
 धीप्योई रहे उतारि ले प्रस्थ भर तैलदे ( प्रस्थ ६४ रूपया भर कहाता  
 है ) ॥ १ ॥ दरीकाजल एक आढक भरदे सौफ, असंगंध, हल्दी, देवदारु ॥ २ ॥  
 कटुकी, मेघदी बीज, घुराफूट, मुलैठी, चन्दन, नागरयोपा, रासन ये कर्ष  
 भरले ॥ ३ ॥ चूर्ण करि तेलमें मध्यम आंचसे सिद्ध करे इस तेलके लगाने से

साधयेन्मृदुवह्निना । अस्याभ्यङ्गात्प्रशाम्यन्तिसर्वेपिविघ्न  
 मञ्जराः ४ कासश्वासप्रतिश्यायस्त्रिकण्टपुत्रहस्तथा ॥ वा  
 तपित्तमपस्मारमुन्मादंयक्षराक्षसान् ५ कण्डूशूलचदोर्म  
 न्धंगान्नाशांस्फुटनंजयेत् । पुष्टगर्भाभवेदस्यागर्भिण्यभ्यं  
 द्गतोभृशम् ६ अश्वगन्धावलाविल्वंपाटलावृहतीद्वयम् ।  
 श्वदंष्ट्रातिबलेनिस्वस्योनाकंचपुनर्नवाम् ७ प्रसारणीम्  
 ग्निमन्थंकुर्याद्दशपलंपृथक् । चतुर्द्रोणैजलेपक्त्वापादशे  
 षंशृतंनयेत् = तैलाढकरसंयोज्यंशतावर्यारसाढकम् । क्षि  
 पेत्तत्रचगोक्षीरंतैलात्तस्माच्चतुर्गुणम् ९ शनैर्विपाचयेद्दे  
 भिःकल्कैर्द्विपलिकैःपृथक् । कुष्ठेलाचन्दनंवालाभांसीशैले  
 यसेन्द्रवैः १० अश्वगन्धावलासास्ता शतपुष्पेन्द्रदारुभिः ॥  
 पर्णीचतुष्टयेनैवतगरेणैवसाधयेत्- ११ तत्तैलनावनेभ्यङ्गे  
 प्रानेवस्तौचयोजयेत् । पक्षाघातंहनुस्तम्भमन्धारतम्भंग  
 लग्रहम् १२ कुब्जत्वंबधिरत्वंचगतिभङ्गकटिग्रहम् । गा

विपमज्जर शयनहोताहै ॥ ४ ॥ कास, श्याम, नाकवहना, त्रिकण्ठे रीदपीडा,  
 पीडजकडना, वातपित्तज मिरगी, यक्ष्म राक्षसी जन्माद ॥ ५ ॥ खाज, पेटपीर,  
 दुर्गंध और देहफुटन ये मिठे व गर्भिणी मर्ले तो गर्भपुष्टिशोय ॥ ६ ॥ ( चायुषर  
 नारायण तेल ) असगन्ध, परिपारा, वेत, प्रादा, भटकटेया, दोनो, गुलुरु, ककडे,  
 नीबू, सोहनपत्ती, गटापुरना ॥ ७ ॥ गंधमसारिणी और अरुणी ये दश दग पल  
 सब द्रव्यले ज्ञाद्रोण पानी में पचावै जर एक द्रोण शेरदे, द्रोण एकसेद पक  
 छटाक का होताहै ॥ ८ ॥ तब एक आढक तेलमें शतावरि का रस एक आढक  
 देय जो गीली होय तो रस निचोरिके देय सूलीदे तो कादाकारिके देय तेलका  
 चाँगुना दूध गऊका दे ॥ ९ ॥ तिसमें कल्क, डारि धीरे धीरे, पचावै कूट, इला-  
 यची, चंदन, सुगन्धवाला, खटामासी, जूरीला, सैबालोन ॥ १० ॥ असगंध,  
 परिपारा, रासन, सोंफ, देवदारु, शालपर्णी, पृष्ठपणी, वनचट्टी, चनसूंग और त  
 गर ये सब दो २ पललेकर कल्कारे और तेलमें साधिलेय ॥ ११ ॥ उस तेल  
 का नासदेय और शरीर में मर्ले पिचकारी आदि कर्ममें देय पक्षाघात, टोदी

ज्येष्ठीमान्पादशेषं संनयेत् ३० तैलप्रस्थैततः सर्वाङ्काथा  
 नेतान्विनिक्षिपेत् । कल्कैरेभिश्च विपचेदमृताकुष्ठनागरेः  
 ३१ रास्नापुनर्नवैरण्डैः पिप्पल्याशतपुष्पया वलाप्रसारि  
 णीभ्यां च मांस्याकटुक्या तथा ३२ पृथग्द्वैपलैरेभिस्साध  
 येन्मृदुवह्निना । हन्यात्तैलमिदं शीघ्रं ग्रीवास्तम्भापवाहु  
 कौ ३३ अर्धाङ्गशोषमाक्षेपमुरुस्तम्भापतानकौ । शाखा  
 कम्पंशिरः कम्पंविंश्वाची महितं तथा । भाषादिकमिदं तैलं  
 सर्ववातविकारनुत् ३४ शतावरीवलायुगमपण्यौ गन्धर्व  
 हस्तकः । अश्वगन्धाश्वदंष्ट्राचिविल्वः कासः कुरण्टकः ३५  
 एषां सार्द्धं पलान्भागान्कल्कयेच्च विपाचयेत् । त्वत्तुर्गुणेन  
 नीरेण पादशेषं शृतं नयेत् ३६ विपाच्यप्रस्थतैलेन क्षीरप्र  
 स्थं विनिक्षिपेत् । शतावरीरसप्रस्थं जलप्रस्थं च योजयेत्  
 ३७ शतावरीदेवदारुमांसीतगरचन्दनम् । शतपुष्पाव  
 लाकुष्ठमेलाशैलेयमुत्पलम् ३८ ऋद्धिर्मेदां च मधुकंका  
 कोली जीवकस्तथा । एषां कृषसमैः कल्कैस्तैलं गोमयव

उतारि ले ॥ २६ ॥ अस्य भरद्वाज मांस-चौंसठपल जलमें पचाय-उतारि द्यानि  
 ले ॥ ३० ॥ तत्र अस्य भर तेलमें सम काथ और मास, रूप देकर पचावै और  
 यह कल्क भी, पचावै गुर्च, कूट, साठि ॥ ३१ ॥ रासन, गदापर्ण, रूढ, पीपरि, साँफ,  
 धरियारा, गन्धप्रसारिणी, जटामासी और कटुकी ॥ ३२ ॥ ये सब आधा आधा  
 पल धीमी आंचदे उस तैलम पकावै इस तैलसे ग्रीवा जकडना, बाहुक्यया ॥ ३३ ॥  
 अर्द्धांग सूतना आक्षेप, ऊरुस्तम्भ, अपतानक, सर्वाङ्गकंप और शिरः ३४ ये, रोग  
 इस मापादितैल से दूरहोये सब वातविकार न रहै ॥ ३४ ॥ ( शतावरि तेल )  
 शतावरि दोनों धरियारा, दोनों पर्णी, रूढ, अश्वगंध, गुडरू, वेल, कास और कुट्टिया ॥  
 ३५ ॥ तत्र देह देह पल कल्ककरि चौगुने जलमें पचाय जर चौध्याई रोपरहै  
 तत्र उतारिले ॥ ३६ ॥ फिरि अस्य भर तेल अस्य भर दूधमें पचावै एक अस्य भरि  
 शतावरिरस्य अस्य भर प्राप्तीमें पचावै ॥ ३७ ॥ फिरि शाकति, देवदारु, जटामासी,  
 तगर, चन्दन, साँफ, धरियारा, कूट, उन्नायची, जरीला, कपल ॥ ३८ ॥ ऋद्धि सिद्धि



ह्लिना ३९ पचेत्तेनैवतैलेननरःस्त्रीषुवृषायते । नारीच  
 लभतेपुत्रंयोनिशूलंचनश्यति ४० श्रद्धशूलंशिरःशूलं  
 कामलांपाण्डुतांतथा । गृध्रसींहीहशोपांश्चमहान्दण्डाप  
 तानकम् ४१ सदाहंवातरक्तेचत्रातपित्तमदारहितम् । असृ  
 गदरंतथाध्मानंरक्तेपित्तंनियच्छति ४२ शतावरीतैलमि  
 दं कृष्णात्रेयेनमाषितम् ( ॐ नारायणायस्वाहा उत्तराभि  
 मुखोभूत्वाखनेत्सदिरशङ्कुना । ॐ सर्वव्याधिनाशनीये  
 स्वाहा इत्युत्पाटनमन्त्रः । ॐ कुमारजीवनीयेस्वाहा इतिपा  
 चकमन्त्रः ) ४३ काशीशंलाङ्गलीकुष्ठंशुण्ठीकृष्णाचसैन्ध  
 वम् । मनःशिलाश्चमारश्चविडङ्गं चित्रकौटुषः ४४ दन्ती  
 कोशातकीवीजंहेमाह्लहिरितालकः । कल्कैः कर्पमितैस्तेलं  
 ततःप्रस्थंविपाचयेत् ४५ स्नुह्यर्कपयसादद्यात्पृथग्द्विप  
 लसम्मितम् । चतुर्गुणगेवांमूत्रंदस्वासम्यक्प्रसाधयेत् ४६  
 कथितंखरनादेनतैलमशीविनाशनम् । क्षारवत्पातयत्ये

विनापराही कंद, मेदा, विनापुरेडी दुइगार कही है इससे दूनी लेना काकीली पिनी  
 असंगं और जीवक विना पाराहीकंद ये सब कर्पभरले कल्ककरि गोंडवा की आंच  
 में पचाये ॥ ३६ ॥ इसे मापमें लगानेसे पुरुष स्त्रियोंमें वृषभ तुल्य होकर रमता है  
 व स्त्री पुत्रजननी है व योनिप्रकार नाशहोताहै ॥ ४० ॥ और अद्गशूल, शिरःशूल,  
 कमल, पाण्डु, गृध्रसी, प्लीह, शोष प्रमेह, दण्डापतानक वायु ॥ ४१ ॥ दाहसहित  
 घातरक्त, त्रातपित्त, मदपाठित, रुधिर आध्मान रक्त पित्त ये सब दूरहोयें ॥ ४२ ॥  
 यह शतावरी तेल कृष्णात्रेयेने कहा है प्रथम मन्त्रे निमंत्रण, दूसरा उत्पाटनी,  
 तीसरा पाचक मंत्र ये तीनों मंत्र मूलसे जानना चाहिये ॥ ४३ ॥ ( अर्शपर  
 कासीस तेल ) कसीस, कलिहारी, कूट, सोंठि, पीपरि, सैषद, मैनाशिल, कनेर,  
 दापविहंग, चीता, अहूस ॥ ४४ ॥ जमालगोटा, वनतीरई धीम, चूक और ह-  
 रताल ये सब कर्प कर्प भरले कल्ककरि, अस्य भर तेलमें मकाय ॥ ४५ ॥ दोपल  
 सेंडुइ दूध, दोपल मदारदूध व तेलका त्रैगुना गोपूत्र देकर भली भाति पका-  
 ये ॥ ४६ ॥ यह, खरनाद आचार्यने कहा है इसके लगाने से बुवासीर का मरसा

तदशांस्यभ्यङ्गतोभृशम् ४७ बलीर्नदूषयंत्येतत्क्षारकर्म  
करंस्मृतम् ४८ मृत्त्रिज्जलासारिवासर्जयष्टीसिद्धयैः पलोन्मि  
तैः । पिण्डारुख्यंसाधयेत्तैलमभ्यङ्गाद्वातरक्तनुत् ४९ अर्कं  
पत्ररसेपकंहरिद्राकृत्कसंयुनम् । साधयेत्सार्धपतैलंपा  
मांकच्छूत्रिचर्चिनुत् ५० मरिचंहरितालंचत्तृत्तरक्तच  
न्दनम् । मुस्तामनःशिलामांसीद्वेनिशेदेवदारुच ५१ वि  
शालाकरवीरेचकुष्ठमर्कपयस्तथा । तथैवगोमयरसंकुर्या  
त्कर्पमितंपृथक् ५२ विषंचार्द्धपलंदेयंप्रस्थंचकटुतैलक  
म् । गोमूत्रद्विगुणंदद्याज्जलञ्चद्विगुणम्भवेत् ५३ मरि  
चाख्यमिदंतैलंसिद्धंकुष्ठव्रणापहम् । जघेत्रिज्जलाणिसर्वाणि  
पुण्डरीकंविचर्चिकाम् । पामांसिध्मंनिरक्तसादद्रूंकच्छूत्रिना  
शयेत् ५४ त्रिफलारिष्टभूमिभ्वद्वेनिशेरक्तचन्दनम् । ए  
तैःसिद्धंमनुष्याणांतैलमभ्यञ्जनेहितम् ५५ भावयेद्विभ्व  
बीजांनिभृङ्गराजरसेनहि । तथासनस्यतोयेनतत्तैलंहन्ति

गिम्पहता है और क्षारकर्म सा कष्ट नहीं होता है "क्षारकर्म सधिये करते हैं", तौ  
मलमार्ग के चक्र में जोलिम जाती है इसमें नहीं आती ॥ ४७१२॥ ( चातरक्त  
पर पिण्डतेल ) मनीठ, सरिदन, रान्त, मुलेठी और योम ये पलपल भरले  
तेन में पचाये इस पिण्डतेलके लगाने से वातरक्त दूर होता है ॥ ४९ ॥ ( कटुपर  
मदार तेल ) अर्कौवाके पत्रका रस इलीका रक्त सरसौ के तेनमें पकारे तौ  
खजुरी, दाद, विचर्ची दूरमें ॥ ५० ॥ ( कुष्ठपर मरिच तैल ) काली इरगल  
निरयोय, रक्तचन्दन, भोया, मैनशिल, जटाभासी, दोनों इली, देवदार ॥ ५१ ॥  
ईदरन, कनेर, कूट, मदारका दूध और गोमरका रस कर्प कर्प भरले ॥ ५२ ॥  
आघापल सिद्धिपा मध्यमर कछआ तेल दूना गोमूत्र व जल दूना दे ॥ ५३ ॥  
इस मरिचादे तेलसे कुष्ठके पाद अच्छे हों श्वेत, रक्त व कालेदाग मिटें पसरा,  
सैद्धान्त, फटीलादाद और भैमहादाद ये सब दूर हों ॥ ५४ ॥ ( चातर  
त्रिफलातेल ) थिफला, नींब, चिगायता, दोनों इली और रक्तचन्दन इसका बना  
तेल लगाने से मनुष्योंको बहुत गुण देता है ॥ ५५ ॥ ( पलितपर निचतेल )

तस्यतः । अकालपलितंसद्यःपुंसांदुग्धान्नभोजिनाम् ५६  
यष्ट्रीमधुकक्षीराभ्यांनवधात्रीफलैःशृतम् । तैलंनस्येकृतं  
कुर्यात्केशांश्मश्रूणिसर्वशः ५७ करञ्जचित्रकौजातीकरवी  
रश्चपाचितम् । तैलमेभिर्दुतंहन्याद्भ्यङ्गादिन्द्रलुप्तकम्  
५८ नीलिकाकेतकीकन्दंमृङ्गराजःकुरंतकः । तथार्जुनस्य  
पुष्पाणिवीजकःसुमनोपिच ५९ कृष्णास्तिलाश्चतगरं  
समूलंकमलंतथा । अयोरजःप्रियङ्गुश्चदाडिमत्वग्गुड  
चिका ६० त्रिफलापद्मपङ्कशचकल्केरतैःपृथक्पृथक् ।  
कर्षमात्रंपचेत्तैलं त्रिफलाक्वाथसंयुतम् ६१ -मृङ्गराजर  
सेनैव सिद्धकेशस्थिरीकृतम् । अकालपलितंहन्तिदा  
रुणंचोपजिह्वकम् ६२ मृङ्गराजरसेनैव लोहकिंठफल  
त्रिकम् । सारिवाञ्चपचेत्कल्केरतैलंदारुणनाशनम् ।  
अकालपलितंकण्डूमिन्द्रलुप्तञ्चनाशयेत् ६३ इरिमेदत्व  
चक्षुष्णां पचेत्पलशतोन्मिताम् । जलद्रोणिततःक्वाथंगृ

नीमबीजकी मीमी भेंगरा रस में भावना देकर आसन रसमें दे उसका तेल नि  
फारि नास ले ती अकालके पके गाल कालेहों दूर भात पथ दे ॥ ५६ ॥  
( पुनस्तैलम् ) सुलेठी कधे आगरोका कव्व, चौगुना तेल दे पकावै फिर  
चौगुना पानीदे पकावै केवल तेलरहै तय उतारिले इसके नाससे केश सघन  
होवै ॥ ५७ ॥ ( इन्द्रलुप्तपर करजतेल ) कंजा, चीता, चमेली व कनेर में  
तेलपकाय लगावैतो बादखोरा दुरुहोय ॥५८॥ ( पलितपर नीलकादितेल )  
नील, केतकीमूल, भेंगरा, कटसरैया, अर्जुन फूलनकाहार, चमेली ॥ ५९ ॥  
काले विटा, लंगर, कमलका सर्वांग, लोहचून, मालकंगनी, अनारकी जाल, गुर्च ॥  
६० ॥ त्रिफला और कमलकी जड़की माटी कर्ष कर्षभर सय ड्रव्यलेवै उसमें  
तेल पचावै त्रिफले का क्वाथसमेत ॥ ६१ ॥ भागरेकारस भी टारै सिद्धवरि तेल  
लगावै, बाल स्थित होय अकालपलित अच्चाहो दाख्य उपजिह्वक शिररोग ये  
सब अच्चेहों ॥ ६२ ॥ ( पलितपर भ्रूंगराजनेटा ) भंगरे के रसमें लोह  
शून वा कीट त्रिफलासारिक उनके कल्कमें तेलपचावै दाख्यनाशहो अकालप-

ह्रीयात्पादशेषितम् ६४ तैलस्यार्द्धाढकंदत्वा । कल्कैः  
 कर्षमितैः पचेत् ॥ इरिमेदलवङ्गाभ्यां गौरिकागुरुपद्मकैः  
 ६५ मञ्जिष्ठा लोध्रमधुकैर्लाक्षान्ध्रोध्रमुस्तकैः । त्वग्जा  
 तीफलकर्पूरकंगोलखण्डैरैस्तथा ६६ पतङ्गधातकीपुष्प  
 सूक्ष्मैलानागकेशरैः । कटुफलेन च संश्लिष्टं तैलमुखरुजंज  
 येन ६७ प्रदुष्टमांभंचलितं शोणं दन्तचर्शोपिस्म ॥ शीतो  
 दं दन्तहर्षणं विद्रधिं कृमिदन्तकम् ॥ दन्तस्फुटनदोर्ग  
 न्धये जिह्वातालवोष्ठजारुजम् ६८ हिङ्गुतुष्युरुशुण्ठीभिः  
 कटुतैलं विपाचयेत् । तस्य पूरणं मात्रेण कर्णशूलं प्रणश्यति  
 ६९ बालविरगानिगोमत्रेपिष्टु तैलं विपाचयेत् । साजक्षीरं  
 सनीरं च वाधिर्यहन्ति पूरणात् ७० बालमूलकेशुंठीनां चारः  
 क्षारयुगं तथा । लवणानि च पञ्चैर्हि गुशिघ्नमहौषधम् ७१  
 देवदारुत्रचाकुष्ठं शतपुष्पारसाञ्जनम् । ग्रन्थिकं भद्रमुस्तं च

लित, राजन व इन्द्रजित् मिट्टे ॥ ६३ ॥ ( मुखदं गुरोगपरं इरिमेदादितैलं )  
 औरदाल पकसी अस्सी गले फूटकर द्रोणभर जलमें पचाये जब चौथाई शेष रहे  
 तब उतारिले ॥ ६४ ॥ आर्द्धाढक तैलदे सैर, लौंग, गेरू, अगूर, पञ्जाल ॥ ६५ ॥  
 मनीठ, लोत्र, गुलेठी, लौही, बटकी जड़, मोथा, तंज, जायफल, कपूर, कैकोल, खेदि-  
 रसार ॥ ६६ ॥ पतंग, धत्रपुष्प, इलायची और नागैरैर ये सब कर्ष कर्ष भरती इस  
 में तैल पचाये लगभग ती सुरोग दूर होय ॥ ६७ ॥ सुरेमांस वदना, दात  
 हलना, दात फूटना मुख कान का विकार, दांत ठंडाहना, दात गिट्ट कियाना,  
 गुणक निनाम, दंतकृमि, दंतफूटना, दुग्ध, जीभरोग, ताजुरोग और थोडेरोग ये सब  
 मिट्टे ॥ ६८ ॥ ( कर्णशूलपर हिङ्गुनेल ) हींग, धनियां और सौंठ इनतीनोंको कहुवातेल  
 में पचाये इस कानमें डालनेसे पीड़ा दूर होय ॥ ६९ ॥ ( अधिरत्वपर, पेल  
 फा तेल ) छोटे बेल गोपूत्र में कल्क करि तेल वकरी का दूध पानी सहित  
 पकाये कान में डालने से अधिरत्वको दूर करना है ॥ ७० ॥ ( कर्ण बहने पर  
 प्यार तेल ) लघुगुण्डर, राग, सन्की जरागार, पांचों लोम, हं ग, संहिजना,  
 सौंठ ॥ ७१ ॥ देन्दारि, दप, कुंड, मोफ, म्गोद, शीपरासुज और नागरमोथा

कल्कैः कर्षमितैः पृथक् ७२ तैलप्रस्थं च विपचेत्कदलीवी  
 जपूरयोः । रसाभ्यां मधुसूक्तं चातुर्गुण्यमितेन च ७३ पूय  
 स्वावेक्येनादंशूलवधिरताकृमान् । अन्वांश्च कर्णजानो  
 गान्मुखरोगांश्चान्नाशयेत् ७४ जम्बीराणां फलरसप्रस्थैकं  
 कुडवोन्मितम् । साक्षिकं तत्रैवातव्यं पलैकापिप्पलीः स्मृता  
 ७५ एतदेकीकृतं सर्वमृदुस्नाण्डे च निधापयेत् । वचाम्भोम  
 धुसंयुक्तं गृह्ये रगुडोन्धितम् । धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं मधुसू  
 क्तसुदाहितम् ७६ पाठाद्देचितिशे मूर्वापिप्पलीजातिप्रल  
 वैः । दन्त्या च तैलसंसिद्धं तस्य स्याद्दृष्टपीनसे ७७ व्या  
 घ्रीदन्तीवचाशिशुतुलसीव्योवसैन्धवैः । कल्कैश्च पाचितं  
 तैलपूतिनासांगदापहम् ७८ कुष्ठं त्रिल्वकणां शुण्ठीद्राक्षाक  
 ल्ककषायवत् । साधितं तैलमाज्यं वानस्यात्क्षवधुनाशनम्  
 ७९ गृहधूमकणार्दिरुक्षारनक्ताहसैन्धवैः । सिद्धं शिखरिणी

ये कर्ष-कर्षे भरिले कल्क करि ॥ ७२ ॥ मस्यभर तेल में केलेका रस विघ्रीटा  
 रस सहित पकाये त्रिगुना मधुसूक्त दे ॥ ७३ ॥ ती पीय कानसे गिरता शब्द  
 होना, पीडा, चिरापन, कानकीर्षः और कानके सब रोग और मुखरोग दूरहोय ॥  
 ७४ ॥ जम्बीरी नीवू का रस मस्यभर कुडवभर शब्द पीपरि पलभर ॥ ७५ ॥ सन  
 इकट्ठे करि माटी के पात्र में पचका काड़ा अदरसका रस शब्द और गुद ये भी  
 मिश्रित करि एतौक्त पात्रका मुहमंदि अनाज में गाढ़े । तेहें सुरा पीये तीन दिन  
 धान्य समाधीना ताहिकरै मधुसूक्त जनुबुध वैद्य महाधी ॥ तीसरे दिन जाके सो म-  
 धुसूक्त है ॥ ७६ ॥ ( पीनस पर पाठादितेल ) पाठा, दोना इली, मूर्वा,  
 पीपरि, चमेलीपत्र और जमालगोटा इनके तेलसे दुष्ट पीनस अरुदा होय ॥ ७७ ॥  
 ( नाकरोगपर अदकट्टेयातिल ) अदकट्टेया, जमालगोटा, यत्त, साहितन,  
 तुलसी, सौंठ, मिरच, पीपरि और सब इनके तेलसे नाक से पीय गिरता और  
 नाकरोग दूरहोय ॥ ७८ ॥ ( त्रिधापर कूदतिल ) कूद, इल, पीपरि, सौंठ  
 और दाख इनका कक्षा और कल्क करि तेल या धीमें पचाय नास लेय दो सौं-  
 करोग दूरहोय ॥ ७९ ॥ ( नासां पर गृहधूमदिनेल ) मस्यभर के गाढ

जैश्चतैलं नासांशं सांहितम् ८० वज्रीक्षीरं रत्रिक्षीरं द्रवधतूर  
 चित्रकम् । महिषीविड्भवंद्रावंसर्वांशं तिलतैलकम् ८१  
 पचेत्तैलावशेषं तद्गोमूत्रेथश्चतुर्गुणे । तैलावशेषं पक्त्वा च त  
 तैलं प्रस्थमात्रकम् ८२ गन्धकाग्निशिलातालं विडङ्गाति  
 विषाविषम् । तिक्तकोशातकीकुष्ठेवचां मांसीं कटुत्रयम् ८३  
 पीतदारुचयपृथक् सजिकाक्षीरजीरकम् । देवदारुचक  
 र्पांशं चूर्णितैले विमिश्रयेत् । वज्रतैलमिदं स्यात्तमभ्यङ्गात्स  
 र्वकुष्ठनुत् ८४ करवीरं शिफादन्तीं तृष्टकोशातकीफल  
 म् । रम्भाक्षारोदके तैलं प्रशस्तं लोमशातनम् ८५ द्र  
 वेषु चिरकालस्थं द्रव्यं यत्सन्धितं भवेत् । आसवारिष्टमे  
 दैस्तु प्रोच्यते भेषजोचितम् ८६ यदपक्वौषधान्बुभ्यांसि  
 द्वमद्यं स आसवः । अरिष्टः काथसिद्धः स्यात्तयोर्मातृपलो  
 निमतम् ८७ अनुक्तमानारिष्टेषु द्रवद्रोणेतुलांगुडम् । क्षौद्रं

का करडुआ, पीपरि, देवदारु, जवातरार, करंड, सेंपबे और चिंचडाबीन इनका तेल  
 नाकरोग हरनेमें हितहै ॥८०॥ (सब कोइ पर) छमिया सेंहुइ का दूध मंदार  
 दूध धतूरे और चीतेकारस भेंसके गोबरका रस तिल तैलमें ॥८१॥ ये सब पचाय  
 तैल रहे तय चींगुना गोमूत्र दे फिर पचाय तैल रहे तय अस्थभर तैलमें ॥८२॥ गन्धक,  
 भिलावा, चीता, मैनशिल, हरताल, बिडंग, दोमो अतीस, कहुवीतोरई, फूट, बच,  
 जटामांसी, त्रिकुट ॥८३॥ दारुहल्ली, गुल्लवी, सज्जी, जीरा और देवदारु ये सब  
 कर्षकर्ष भर पीस तैल सिद्धकरै इस वज्र तैलके लगानसे सरकुष्ठनाशहोयै ॥८४॥  
 (कनेरका तैल रीमशातन पर) कनेरपूल, जपालगोटा, निरोध, कहुनी  
 तोरई, फेला, क्षार और फेलेके पानी में तैल सिद्धकरै लेंगाये तौ चाल गिरिपरै ॥  
 ८५ ॥ (आथासव कल्पना) उदकादि द्रव वस्तुमें औषध देके पात्र में भरि  
 मुहमुदि मासभरि रसने से औषध उत्तम होतीहै उसे आसव या अरिष्ट कहतेहै  
 आसव अरिष्टम दो भेदहै ॥८६॥ उदकादि पदार्थमें जो औषध पूर्वक रीतिसे  
 सिद्धकरै उसे आसव कहिये जो कोई द्रव्यके काथ में उसी रीतिसे सिद्धकरै उसे  
 अरिष्ट कहिये इसके सोनेकी मात्रा चार रूपये भरहै ॥८७॥ जहां अरिष्टमें द्रव्य

क्षिपेद्गुडादद्द्विप्रक्षेपदशमांशकम् च्च ज्ञेयः शीतरसः शी  
 धुरपकमधुरद्रवैः । सिद्धः पकरसः शीघुः सम्पकैर्मधुरद्रवैः  
 ६९ परिपक्वान्नसन्धानसमुत्पन्नासुरांजगुः । सुरामण्डः प्रस  
 न्नास्यात्ततः कादम्बरीघना ६० । तदधोजगलोज्ञेयोभेदको  
 जगलाघनः पुष्कसोहतसारः स्यात्सुराबीजं च किंपवकम९१  
 यत्तालखर्जूररसैः सन्धितासाहिवारुणी ॥ कन्दमूलफला  
 दीनिसस्नेहलवणानि च ९२ यत्रद्रवेषु यन्ते तत्सूक्तमभि  
 धीयते । विनष्टमम्लतांयातं मध्वं वामधुरद्रवैः ९३ विनष्टः  
 सन्धितो यस्तु तच्चूकमभिधीयते । गुडाम्बुना सतैलेन कन्द  
 शाकफलेस्तथा ९४ सन्धितं चास्लतांयातं गुडसूक्तं प्रचक्ष  
 ते । एवंमेवेक्षुसूक्तं स्यान्मृद्धीकासम्भवं तथा ॥ ६५ ॥ तुषा  
 म्बुसन्धितं ज्ञेयमासौर्विदलितैर्यवैः ॥ यवैस्तु निस्तुभैः पकैः

की तौल न होय वो जलादि पदार्थ द्रोणभरवे गुड तुलाभर राहद अर्द्धतुला और  
 द्रव्यका चूर्ण गुडका दशांशदे अगिष्टकरै ॥६३॥ शीघुं मध्वभेद कहते हैं )  
 जो कच्चे ऊस रसादि मधुर पदार्थ में सिद्धकरै उसे शीतरसं शीघु कहिये जो पका  
 यकरसमें सिद्धकरै उसे पकरसशीघु कहिये ॥६६॥ सुरांप्रसन्नादि भेद करि अग्नि  
 मंथल यत्रसे उत्तरी जसे सुरा कहिये सुराके फेनको मंत्रवा कहिये फेनरहित जो  
 नीचे रहै उसे कादंबरी व घनभी कहिये ॥६७॥ सुराके नीचे रहै उसे जगल कहिये  
 जगल के प्रते भाग को भेदक कहिये भेदक पकानेसे जो सार निकरै उसे सुराबीज  
 और किराव कहवे हैं ॥६९॥ ताड़ वा खर्जूरका रस अग्निघ्न च योगकरि वा  
 क्कला लेप सिद्धकरै सो वारुणी है कन्द मूल फल घृत तैलादि स्नेह लवण ॥  
 ६२ ॥ ये खवद्रवपदार्थमें अग्नि च यत्र भीयते मयन करै उसे सूक्त कहिये ॥६३॥  
 जो विनष्टकृदे त्रिगुणितरस लोके स्वयीर सो स्वयीर उद्ये मध्व वा तुंरत मधुद्रव में  
 द्रव्य चूर्ण करि संधित करी मांसभरकी उसे शुक्रकहिये वा गुड प्राणी तेल कंदमूल  
 फल ॥ ६४ ॥ इन्हें पूर्वोक्त रीतिसे संधितकर मांसभरमें सिद्ध करै उसे गुडसूक्त  
 कहिये इसी प्रकार क्लृप्तसका और दासका सूक्त दोताहै ॥६५॥ यवानी पुक्त  
 एकदिन संधितकरै उसे तुषांबु कहिये और यवगुरी प्राणी बेरि भाय एकदिन संधि

मसःपक्त्वा काथेद्रोणावशेषिते । धातक्याविंशतिपलं  
 गुडस्यचतुलांक्षिपेत् १३ मासमात्रंस्थितोभाण्डेकुटंजा  
 रिष्टसंज्ञकः । ज्वरान्प्रशमयेत्सर्वान्कुर्यात्तीक्ष्णंधनञ्जयम्  
 १४ विडङ्गग्रन्थिकरंस्त्रांकुटजत्वक्फलानिच । पाठैला  
 बालुकंधात्रीभागांन्पञ्चपलान्पृथक् १५ अष्टद्रोणेम्मसः  
 पक्त्वाकुर्याद्द्रोणावशेषितम् । पूतेशीतेक्षिपेत्तत्रक्षौद्रं  
 लशतत्रयम् १६ धातकींविंशतिपलांत्रिजातंद्विपलं  
 था । प्रियङ्गुकाञ्चनाराणांसलोध्राणापलंपलम् १७ व्योषं  
 स्यचपलान्यष्टौचूर्णीकृत्यप्रदापयेत् । घृतभाण्डेविनिःक्षि  
 प्यमासमेकंनिधापयेत् १८ ततःपित्रेद्यथाहं चजयेद्विद्रधि  
 मूर्च्छितम् । ऊरुस्तम्भाश्मरीमेहान्प्रत्यष्टीलाभगन्दरान् ॥  
 गण्डमालां हनुस्तम्भंविडङ्गारिष्टसंज्ञितः १९ तुलाद्देव  
 दारुःस्त्राह्वासाचपलविंशतिः । मञ्जिष्ठेन्द्रयवादन्तीतगरं  
 रजनीद्वयम् २० रास्नाकृमिघ्नम्मुस्तंचशिरीषंखदिरार्जु

दण्डद्वयपल ॥ १२ ॥ चाद्रिद्रोणं पानी में पचाय जब द्रोण भरि शेषरहे तब उ-  
 तारि लें बीसपल धवकूल घ तुलाभर गुडहारि ॥ १३ ॥ माटी के पात्र में मास  
 भर राखै यह कुटजारिष्ट सब ज्वरोंको दूरिकरि अग्निको तीक्ष्ण करताहै ॥ १४ ॥  
 (विद्रधीपर विडंगारिष्ट) विडंग, पिपरामूल, रासन, कुरैयाबाल एक एक  
 पल पाडा, एला, नालबड, आवरा ये पाच पाच पल ॥ १५ ॥ आठद्रोण जल  
 में आठपाय द्रोण भरहे, सतारिलें ठंढाभये तीनसै पल शहद ॥ १६ ॥ बीसपल  
 धवकूल, तम्र पत्रन, इलायची, द्रोणल गोदी, कचनार लोध पल पल भर ॥ १७ ॥  
 निकुटा आठपल चूर्ण करिके डारै घृत भानन में एक मास भर राखै ॥ १८ ॥  
 जैसा अग्निजल देये तैसा पिलावै घौ विद्रधी दूरहो ऊरुस्तंभ, पथरी, प्रमेह, मत्प-  
 ष्टीला, भगार, गण्डमाला और हनुस्तभये रोग इस विडंगारिष्टमें अच्छे होने हैं ॥  
 १९ ॥ ( प्रमेहपर देवदारु अरिष्ट ) मर्द्धेतुला देवदारु, रूसा बीसपल, मं  
 जी, इन्द्रयव, जमालगोटा, तगर, दोनों हल्दी ॥ २० ॥ रासन, विडंग, नागर



नौ । भागान्द्रशपलान्दद्याद्यत्रान्यात्रत्सकस्यत्वरं १ चन्दन  
 स्यगुडुच्यार्चरोहिण्याश्चित्रकस्यचं । भागानष्टपलाने  
 तानष्ट्रोणेम्भसःपचेत् २२ द्रोणशोपेकषायेचशीतीभूतेप्र  
 दापयेत् । धातक्याःषोडशपलं माक्षिकस्यतुलंत्रयम्  
 २३ व्योषस्यद्विपलंदद्यात्त्रिजातस्यद्वतुष्पलम् । चतुष्प  
 लंप्रियङ्गुश्चद्विपलंतागकेशरम् २४ सर्वाण्येतात्तिसञ्च  
 पर्यघृतभाण्डेनिघ्रापयेत् । मासादूर्ध्वपिवेदेनंप्रमेहं हन्तिदु  
 र्जयम् २५ वातरोगान्प्रहृष्यशोमूत्रकृच्छ्राणिनाशयेत् ।  
 देवदावर्षादिकोरिष्टदङ्कुष्टनिवारणः २६ खदिरस्यतुला  
 द्विन्तु देवदारुचतस्रमम् । वाकुचीद्वादशपलांदावीस्या  
 त्पलविंशतिः २७ त्रिफलाविंशतिपलान्यष्ट्रोणेम्भसःप्र  
 चेत् । कषायेद्रोणशोपेचपूतेशीतेविनिक्षिपेत् २८ तुला  
 द्वयंमाक्षिकस्यतुलंकाशकरामता । धातक्याविंशतिपलं  
 कङ्कोलंतागकेशरम् २९ जातीफलंलवङ्गैलात्वक्पत्राणि  
 पृथक्पृथक् । पलोन्मितानिकृष्णायादद्यात्पलचतुष्टय  
 म् ३० घृतभाण्डेविनिक्षिप्यमासादूर्ध्वपिबेन्नरः । महा  
 मोघा, सिरस, खैर और अर्जुन ये दश दश पल तथा अजनायन, दुर्गया ॥ २१ ॥  
 चंदन, गुर्घे, कटुकी, चीता, स्माठ आठ पल पानी आठ द्रोण में पचावै ॥ २२ ॥  
 ज्वर द्रोण भर शेप रहे तौ ये औषधद्वारे घाण्ड्य सोलहपल तीनतुला, शब्द ॥  
 २३ ॥ त्रिफुटा दोपल, तज, पत्रज, इलायची ४ पल, त्रिबंगु, ४ पल और नागके  
 शर दोपल ॥ २४ ॥ इनसत्रका चूर्ण घीके घर्तनमें मामभर राखै फिर पिपे तौ दुर्जय  
 प्रमेहको हरताहै ॥ २५ ॥ तथा चातुरोग, ग्रहणौ, अर्श व मूत्रकृच्छ्रको नाशै इस देवदारु  
 अरिष्टमे दाद व फुष्ट अच्चा होवाहै ॥ २६ ॥ ( कुष्ठपरखदिरारिष्ट ) सिर  
 अर्द्धतुला, देवदारु अर्द्धतुला, यमुची १२ पल, हल्दी २० पल ॥ २७ ॥ त्रिफला  
 २० पल इनको आठद्रोण जनमें पचावै द्रोणभर रहै अष्टाक्षरि औषधद्वारे ॥  
 २८ ॥ शब्द २ तुला, रांड १ तुला, घाण्ड्य २ पल, कंबोज, नागकेशर ॥ २९ ॥  
 जापफला, लोण, इलायची, तज और पत्रज ये सत्र पल २ भा, पीपरी ४ पल ॥ ३० ॥

ऋद्विद्विके ॥ ४९ ॥ कुर्यात्पृथग्द्विपलिकान्पचेद्दृष्टगुणेज  
 ले । चतुर्थीशंशृतंतीत्वामृद्गाण्डेसंनिधापयेत् ५० चतुःषष्टि  
 पलांद्राक्षांपचेत्तीरेचतुर्गुणे । त्रिपादशंपंशीतंचपूर्वकाथेश  
 तंक्षिपेत् ५१ द्वात्रिंशत्पलिकंक्षौद्रंदद्याद्दुडंचतुःशतम् ।  
 त्रिंशत्पलानिधातिक्रयाःकङ्कोलंजलचन्दनम् ५२ जातीफ  
 लंलवङ्गंचत्वंगेलापत्रकेशरम् । पिप्पलीचेतिसञ्चूर्णभा  
 गौर्द्विपलिकैःपृथक् ५३ शाणमात्रांचकस्तूरींसर्वमेकत्रनि  
 क्षिपेत् । भूमौनिखातयेद्गाण्डेततोजातरसंपिबेत् ५४ कत  
 कस्यफलंक्षिप्त्वारसंनिर्मलतानयेत् । ग्रहणीमरुचिशूलं  
 श्वांसकासंभगन्दरम् ५५ वातव्याधिच्छयंछर्दिपाण्डुरोगं  
 चकामलाम् । कुष्ठान्यशींसिमेहांश्चमन्दाग्निमुदराणिच  
 ५६ शर्करामश्मरींमूत्रकृच्छ्रन्धातुक्षयंजयेत् । कृशानांपु  
 ष्टिजननोबन्ध्यानांपुत्रदःपरः । अरिष्टोदशमूलाख्यस्तै  
 जःशुक्रबलप्रदः ॥ १५७ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेसंन्धा-  
 नकल्पनायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अदि द्विदि ॥ ४९ ॥ ये सब दोरे पल सब ओपधियोका अरुगुना जल औटावै ज  
 चौध्याई रोप रहिजाय तत्र बंतरि माटी के पात्रमें धरे ॥ ५० ॥ दास साठ पल  
 चौगुना जलटे औटे चौध्याई जरै तीन चरणरुई तत्र वंदाकरि पहिले फाय साथ  
 मिलावै ॥ ५१ ॥ शर्द पल ३२ गुड पल २०० धत्रपुष्प पल ३० शीतलचीनी,  
 रस वा चंदन ॥ ५२ ॥ जायफल, लौंग, वज, इलायची, पत्रज, केशर और पीपरि  
 इन सबों का चूर्ण दो दो पल ॥ ५३ ॥ कस्तूरी चारिमासे सब इकट्ठेकरि उसी में  
 दारि धरती सोदि गाढे उसमें का रस पिये ॥ ५४ ॥ निर्मली रगडके डाले तौ  
 रस निर्मल होजाय इसके पान करने से ग्रहणी, अरुचि, शूल, श्वासकास, भग-  
 ण्डर ॥ ५५ ॥ वातव्याधि, क्षयि, छर्दि, पांडु, कामला, कुष्ठ अरु, प्रमेह, मन्दाग्नि,  
 वदरोग ॥ ५६ ॥ मिक्ताप्रमेह, पथरी, मूत्र कृच्छ्र और धातुक्षय ये रोग जायें दुर्बल  
 मोटाहोप पाणिनि पुषजन यह दशमूलारिष्ट तेज धानु और ज्वन को देताई ॥ १५७ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

स्वर्णतारंताघमारंतागवङ्गौचतीक्ष्णकम् । धातवः स  
 षविज्ञेयारततस्ताऽच्छोधयेद्बुधः १ स्वर्णतारारताघाणां  
 पत्राण्यग्नौप्रतापयेत् । निषिञ्चेत्सप्ततप्तानितैलेतक्रेचका  
 ख्निके २ गोमूत्रेचकुलत्थानांकपायेचत्रिधात्रिधा । एवंस्व  
 र्णादिलोहानांविशुद्धिःसम्प्रजायते ३ नागवङ्गौप्रतप्तौत्रा  
 गलितौतौनिपेचयेत् । त्रिधात्रिधाविशुद्धिःस्याद्रविदुग्धेन  
 चत्रिधा ४ स्वर्णस्यद्विगुणंसूतमम्लेनसहमर्दयेत् । तद्गोल  
 केसमगन्धनिदध्यादधरोत्तरम् ५ गोलकंचततोरुध्याच्छ  
 रावद्वसम्पुटे । त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात्पुटान्येवंचतुर्दशः ६  
 निरुत्थंजायतेभस्मगन्धोदेयःपुनःपुनः। काञ्चनेगलितेना  
 गंषोडशांशेननिक्षिपेत् ७ चूर्णयित्वातथाम्लेनघृष्ट्वाकृ  
 त्वाचगोलकम् । गोलकेनसमगन्धदस्त्राचैर्वाधरोत्तरम् ८  
 शरावसम्पुटेघृत्वापुटेत्रिंशद्वनोपलैः । एवंसप्तपुटैर्हमनिरु  
 त्थंभस्मजायते ९ काञ्चनाररसैर्घृष्ट्वासमसूतकगन्धयोः ।

( स्वर्णादिधातुशोधन ) सोना, चांदी, तांबा, पीतर, सीसा, रांगा और  
 लोहा इन सातों धातुओंके शोधने की रीति कहते हैं ॥ १ ॥ सोना, चांदी, पीतर  
 और तांबा इनके सूक्ष्म पत्र उना आगिमें लाल तपाय तेल मट्टे का नीमें बुझाय ॥  
 २ ॥ गोमूत्र में कुलथी काथ में इन सत्रमें तीन तीनवार बुझावै इसीमाति स्व-  
 र्णादि धातु शुद्ध होतीहैं ॥ ३ ॥ सीसा रागा ये गन्ताकृ पूरोंक्त पदार्थोंमें तीनवार  
 बुझावै फिर तीन २ बार मदारदुग्धमें बुझावै ॥ ४ ॥ ( सोना मारनेकी धिधि )  
 शुद्धसोना तिस ३ दूना शुद्ध पारा मीचूके रसमें त्रोटि गोली करि गोली समान गं-  
 धक पीसि तरे ऊपरधरे ॥ ५ ॥ मट्टीके दो सरवाले एकनीचे में गोलाधरि दूसरा  
 ऊपरदके उसपर कपरीटीकरि त्रिगुणकंडा की आंचठेय इसे शरासंपुट कढते हैं  
 इसी प्रकार आगिले निकार संपुटकरि चौदहवार आचदेवै ॥ ६ ॥ यों प्रतिआचदे  
 गंत्रकठेनेसे स्वर्णभस्म निर्मल होती है ( पुनर्विधि सोनेकी ) १६ मारो सोना  
 गलाय माशाधरि सीसाठारि उतारि छट्टाकरि ॥ ७ ॥ चूर्णकरै नीचूके रस में  
 गोलाधरै नीचे ऊपर गंत्रकरि ॥ ८ ॥ गोलके समान शरासंपुटकरि ३० गो-

कञ्जलीहेमपत्राणिलेपयेत्सममात्रया १० काञ्चनारत्व  
 चःकल्कसूपायुग्मंप्रकल्पयेत्। धृत्वातत्सम्पुटेगोलंमृन्मूषा  
 सम्पुटेचतत् ११ निधायसन्धिरोधंच कृत्वासंशोष्यकौकि  
 लैः । वह्निस्वरतरंकुर्यादेवंदत्त्वापुटत्रयम् १२ निरुत्थंजा  
 यतेभस्मसर्वकार्येषुयोजयेत् । काञ्चनारप्रकारेणलांगली  
 हन्तिकाञ्चनम् १३ ज्वालामुखीतथाहन्यात्तथाहन्तिमनः  
 शिला । शिलासिन्दूरयोश्चूर्णंसंमयोरर्कदुग्धकैः १४ सप्तै  
 वभावनादद्याच्छोषयेच्चपुनःपुनः । ततस्तुगलितेहेम्नि  
 कल्कोयंदीयतेसमः १५ पुनर्धमेदतितंरां यथाकल्कोवि  
 लीयते । एवंवारत्रयंदद्यात्कल्कोहेममृत्तिर्भवेत् १६  
 पारावतमलैलिम्पेदथवाकुक्कुटोद्भवैः । हेमपत्राणितेषांच  
 प्रदद्यादधरोत्तरम् १७ गन्धचूर्णसमं कृत्वा शरावर्युगसम्पु  
 टे । प्रदद्यात्कुक्कुटपुटं पञ्चभिर्गोमयोपलैः १८ एवंनवपु

इटाकी आचदे तब सोना निरुत्थ भस्म होजाताहै ॥ १ ॥ ( तीसरा ) कचनारके  
 रस में पारा, गंधक समान मिलाय खरलकरै खर कजलीहो तब सोने के पत्रर  
 लगावै ॥ १० ॥ फिर कचनार की छाल पीसिकै उस गोलेपर गहुतसी लपेटै  
 फिर दोपरिया मिट्टीकी बना एकमें धरि दूसरी ऊपर दकि ॥ ११ ॥ कसिकै क-  
 परौठी करि सुत्ताय बड़ी आचदे इसीतरह मथम कही रीतिसे तीन आचरे ॥ १२ ॥  
 जब मिलाने से न जिये तौ उचमहै भस्म जैसे कचनार, विमान से भरताहै तैसेही  
 कदि या रीति से भी भरताहै ॥ १३ ॥ ऐसे ज्वालामुखी कदे अरणी से भी भस्म  
 होताहै तैसे मैन्शिल से मैन्शिल सेंदुर सम ले मदारदूध में घोटे ॥ १४ ॥ सात  
 बार घोटे घोटे सुत्ताय सुत्ताय ले तब दशभासे सोना गलाइ चरक ताने लगे तब  
 दशभासे वह मैन्शिल सिंदूर का सिद्धचूर्ण सोनेमें छोड़ै ॥ १५ ॥ बुकनी दंके तीन  
 आचदे जतक वह बुकनी न जरिजाय ततक आचदे इसीपाति बुकनी देदे तीन  
 आचदेय तौ सोना भस्म होग ॥ १६ ॥ पाचमां कजूर की वा कुक्कुटकी धीट दोनों  
 सोने के पत्रकरि ऊपरनीचे लपेटै ॥ १७ ॥ उसी के समान गन्धकचूर्ण भी दोनों

टंदद्याद्दशमं चर्महापुटम् । त्रिंशद्दशोपलैरेवं जायते हेम  
 भस्मताम् १९ भागैकं तालकं मर्द्यं याममम्लेन केनचित् ।  
 तेन भागत्रयं तारपत्राणि परि लेपयेत् २० धृत्वामूषापुटे  
 रुध्वा पुटे त्रिंशद्दशोपलैः । समुद्धृत्य पुनस्तालं हत्वा व  
 ध्वापुटे पचेत् । एवं चतुर्दशपुटे स्तारं भस्म प्रजायते २१  
 स्नुहीक्षीरेण सम्पिष्टं माक्षिकं तेन लेपयेत् । तालकस्य प्रका  
 रेण तारपत्राणि त्रुद्धिमान् । पुटे चतुर्दशपुटे स्तारं भस्म प्र  
 जायते २२ अर्कक्षीरेण सम्पिष्टो गन्धकस्तेन लेपयेत् । समे  
 नारस्य पत्राणि शुद्धान्यम्लद्रवैर्मुहुः २३ ततो मूषापुटे धृ  
 त्वापुटे द्वजपुटे नतुं । एवं पुटद्वये नैव भस्मारं भवति ध्रुवम् २४  
 आरवर्त्कास्य मप्येवं भस्मता घन्तुनिश्चितम् । अर्कक्षीरं  
 घंदाजं स्यात्क्षीरं निर्गण्डिका तथा । ताघरीति ध्वनिवधे स

मंगन्धकयोगतः २५ सूक्ष्माणिताम्रपत्राणि कृत्वामंशोधं  
 येद्बुधः । वासरत्रयमम्लेनततःखल्वेविनिक्रिपेत् २६  
 पादाशंसूतकंदत्वा याममम्लेनमर्दयेत् । ततउद्घृत्यप  
 त्राणि लेपयेद्द्विगुणेनच २७ गन्धकेनाम्लघृष्टेन तस्य  
 कुर्याच्चगोलकम् । ततःपिष्ट्वाचमीनाधी चाङ्गेरीचपुनर्नवा  
 २८ तत्कलेनवर्द्धिर्गोलं लेपयेद्द्व्यङ्गुलोन्मितम् । धृ  
 त्वातद्गोलकंभाण्डे शरावेणचरोधयेत् २९ बालुकाभिः प्र  
 पूर्याथ विभूतिलवणाम्बुभिः । दत्त्वाभाण्डेमुखेमुद्रांततश्चु  
 ल्ल्यांविपाचयेत् ३० क्रमवृद्ध्याग्निनासम्प्रग्यावद्याम  
 चतुष्टयम् । स्वाङ्गशीतलमुद्घृत्यमर्दयेत्सूरणद्रवैः ३१  
 दिनैकंगोलकं कुर्याद्वर्द्धगन्धेन लेपयेत् । सघृतेनततो  
 मूषापुटेगजपुटेपचेत् ३२ स्वाङ्गशीतसमुद्धृत्य मृतं  
 ताम्रंशुभंभवेत् । वान्तिभ्रान्तिक्लमंरेकं न करोतिकदाच

पय व मित्रहीरस में गणक पीसि तावे वा कासे त्रा पीतरपत्र पर लगाय पूर्वोक्त  
 रीतिसे कूकै तौ तीनीमैर ॥ २५ ॥ ( ताम्रभस्म ) डमली पत्रकी मुट्टाई, सुमपत्र  
 करि ताम्रपत्र पर सदाईका पानीदे तीन दोलायत्रकी आचदेकर सरलकरै ॥ २६ ॥  
 तावे की चौधारी पाराटे पहरभर नीरू में घोड़ फिर तावेकी दूनी गणक नीरूके रसमें  
 घोड़ पत्र पत्रनेप गोला वापि मकोप या अमलोनिमा ता गदापुरैता ॥ - ७ ॥ २८ ॥  
 इनकी पीठी दो अंगुल मोटी गोजपर लेपेट एक बासनमें धरि मुद्गुंदिदे ॥ २९ ॥  
 तत्र एक बड़े घासनकी पेंदीमें छेदकरि उत्तरपर अन्नरुधरि घोड़ा बालू भरै तिसपर  
 लोनवा पानी दिडक पहिला बासनधरै फिर गजुभरि लोणका पानीटे दवाईदे  
 जिममें यह घासन तुपनाइ तब बड़े घासन का मुद्गुंदि कपरौटी करि चूहेपै धमि  
 लकड़ीकी आचदेय ॥ ३० ॥ मद आचदे फिर क्रममे त्रेज करता चार पहर  
 आचदे ठंडा करि सूरनके रसमें ॥ ३१ ॥ एरुदिन उसी तावेका आधा गणक आधा  
 पीले सरलकरि उसे तावेपर लेपकरि, मूसायंत्रमें धरि फिर गजपुट आचदे ॥ ३२ ॥  
 जब उसी में स्वाभाविक शीत होजाय तब निकारिले तौ उवाकी संभ्रम चित्त

१ माताजी ( मयला ) चूक म पुननवा फो कइते हैं और नितीके यत्रमें बुन्की पहाती दे ॥

३३ तीम्बूलीरससम्पिष्टं शिलालेपात्पुनः पुनःपिष्ट्वा  
 त्रिंशद्भिः पुटैर्नागा निरुत्थोयातिभस्मतम् ३४ अश्व  
 चक्रचिञ्चत्त्वक्चूर्णं चतुर्थांशेननिक्षिपेत् । मृत्पात्रेद्राधिते  
 नागेलोहद्वयप्रचालयेत् ३५ यामैकेनभवेद्भस्मतसुत्यां  
 चमनःशिलाम् । काञ्जिकेनद्वयपिष्ट्वापचेद्दृढपुटेनच ३६  
 स्वाङ्गशीतंपुनःपिष्ट्वाशिलयिकाञ्जिकेनच । पुनःपुटच्छरा  
 वाभ्यासेवं पट्टिपुटेमृतिः ३७ मृत्पात्रेद्राधितेवृद्धे चि  
 ञ्चश्वत्थत्वक्चोरजःना क्षिप्त्वावह्मचतुर्थांशमद्योद्वयप्र  
 चालयेत् ३८ ततोद्वियाममात्रेणवह्मभस्मप्रजायते । अ  
 थभस्मसमंतालं क्षिप्त्वाग्नेनविमर्दयेत् ३९ ततो गजपु  
 टेपक्त्वा रसेनपुनरम्लयेत् । तालेनदेशमांशेन चामैके  
 ततःपुटेत् ४० एतदशपुटेःपक्वोवह्मस्तुधियतेध्रुवमर्गं शु  
 च्छ्लोहमवचूर्णं पातालगरुडीरसैः । मर्दयित्वापुटेद्द्विहोद  
 विकलाई और दस्त आना दूरहो तब जानिये ताकी शुद्धमया ॥ ३७ ॥ तास्त्र  
 भस्म) पानके रसमें पैतशिलको पीसि सीसे के पत्रपर लगाने बलिने करेताहो  
 (आंचदे ऐसेही पत्तिस आंचदे ॥ ३४ ॥ (पुनःविधाने) पीसि. बन्नीकी बन्नी  
 का चूर्ण चौथाई सीसेदे माटी के बसनेमें धारे नीचे बाँधकरे कर सीसे रस  
 तब वही दोनों छालका चूर्ण डारि डारि लोहेको कालीमें चन्दाने ॥ ३५ ॥  
 ऐसे पहर भर आंचदेय तब सीसेकी भस्मजेके बराबर पैतारनेदे कांशेमें दोटे  
 सुखाय गजपुट आंचदेय ॥ ३६ ॥ इतदामये फिर पैतारने कांशेदे पीसि  
 गजपुटदेय ऐसे साठे आंचदेय तब सीसामर को साठेसे कन्देय तो जीतला  
 है ॥ ३७ ॥ धर्मभस्म रांगा माटी के बसने में लगाने चौथाई पीसि बन्नीकी  
 छालको चूर्ण देकरे लोहे की काली से घोट ॥ ३८ ॥ दोपहर घोट तो रांगा  
 भस्महोय रांगा की भस्म के तुल्ये हस्तानु डारि निम्बू के रस में घोट ॥ ३९ ॥  
 गजपुटकी आंचदे फिर निकार नोईका रस और देशांश हरेतानेदे पहर भर घोटै ॥  
 ४० ॥ फिर उसे फूकेदे इसभातिदेश आंचदे नये चंग तैयार होय शुद्धनोहा ति-  
 सीका चूर्ण पातालमूली और पातालमूली विना छरहंटा के रसमें घोटै आंच

१। द्यादेवंपटत्रयम् ४१ पुटत्रयंकुमरियाश्वकुठारच्छिन्नकार  
 सैः । पुटपटुकंतनोद्यादेवतीक्ष्णमृतिर्भवेत् ४२ क्षिपेद्द्वी  
 दशमांशेनदरशंतीक्ष्णलोहतः । मर्दयेत्कन्यकाद्रावैर्याम  
 युग्मं ततः पुटत् १। एवंमत्तपुटैर्मृत्युं लोहचूर्णामवाप्नुयात्  
 ४३ रसैःकुठारच्छिन्नायाः पार्तालगरुडीरसैः । इस्तन्येन  
 चार्धदुग्धेनतीक्ष्णस्यैवमृतिर्भवेत् ४४ सूतकाद्विगुणंगन्धं  
 दत्त्वाकुर्याच्चकञ्जलीम् । द्वयोःसमं लोहचूर्णं मर्दयेत्कन्य  
 काद्रवैः ४५ यामयुग्मंततःपिण्डं कृत्वाताम्रस्यपात्रके । घ  
 भेधृत्वोरुवृक्तस्य पत्रैराच्छादयेद्बुधः ४६ यामार्द्धेनोष्म  
 ताभर्याद्धान्यराशन्यसेत्ततः । दत्त्वोपरिशंरावऽषत्रिदिना  
 न्तोसमुद्धरेत् ४७ पिण्डाच्चग्रालयेद्वस्त्रादेववारितरंभवेत् ।  
 एवंसर्वाणिलोहातिस्वर्णादीन्यपिमाहमेत् ४८ शिलागन्धा  
 र्कदुग्धाक्लास्त्रणार्थास्सप्तधावतः । म्रियन्तेद्वादशपुटैः  
 सत्यंगुरुवचोयथा ४९ आक्षिकंतुत्थकाभ्रौचनीलाङ्गुन  
 दे, ऐसे तीन आच दे ॥ ४१ ॥ फिर घीकुवारके रसमें घोटै तीन आचदे फिर  
 कुरिया झाल के काय में प्रोदि कृम्यायदे तो लोह भस्म होता है ॥ ४२ ॥ (पुनः)  
 जितना लोहाहो तिसका चारहवा अंश सिंगरफदे घीकुवारके रसमें दोपहर घोटै  
 आच दे तो लोह भस्म होता है ॥ ४३ ॥ (पुनः) कुरिया रस वा छरहटा रस  
 में रा ही के दूध में वा मदार रस में सिंगरफ युक्त किसी में छोटि सात आच  
 दे तो लोह भस्म होता है ॥ ४४ ॥ (पुनः) पारे की दूनी गन्धकभिलाय कजली  
 करि कजली के समान लोह चूर्ण ले, घीकुवारके, रसमें दोनों घोटि ॥ ४५ ॥  
 दोपहर घाटि पिण्डी धनाय ताजे, के पत्र में घरि रंढपात से देंकि ॥ ४६ ॥ चारि  
 मरी घूय में राक्षि पतौआ उतारि फेंकिदेय दूसरे पात्रमें दाकि अनाज की रागि  
 में तीनदिन गादिकै निकार लेय ॥ ४७ ॥ खच पीसिके कपड़े में दानि पानी  
 पर डारे से लोह तिरंगा ऐसेही स्वर्णादि सब धातु मारिये ॥ ४८ ॥ ( तीस-  
 रीविधि ) शिला, च गन्धक मदार के दूध में सरल कारणे इसी प्रकार सात  
 धातु में चादे जिस धातुको पारद आचदे इससे धातु भस्म होजाती है यह रीति नि-



शिलालकाः । रसकरुचैवविज्ञेयार्तेसप्तोपधातवः । ५०  
 माक्षिकस्यत्रयोभागा भागैकसैन्धवस्यच । मातुलुङ्गद्रवै  
 र्वाथजम्बीरोत्थद्रवैः पचेत् ५१ चालयेच्छोहपात्रेणयावत्पा  
 त्रंसुलोहितम् । भवेत्ततस्तुसंशुद्धस्वर्णमाक्षिकमृच्छति  
 ५२ (अन्यञ्च) कुलस्थस्यकपायेणघृष्ट्वातैलेनवापुटेत् । तं  
 क्रेणवाजमूत्रेणघ्नियतेस्वर्णमाक्षिकम् ५३ कर्कोटीमेषतृ  
 ङ्गयुत्थैर्द्रवैर्जम्बीरजैरसैः । भावयेदातपेतीत्रेविमलाशुभ्यो  
 तिध्रुवम् ५४ विष्टयासर्दयेत्तुल्यमार्जारककपोतयोः । दशांशं  
 टङ्कणं दत्त्वापच्येन्मृदुपुटेततः । पुटं दध्नः पुटं शीद्रेदयत्तुत्थ  
 विशुद्धये ५५ कृष्णाभ्रकन्धमेद्दह्नौततः । क्षीरेविनिःक्षिपे  
 त् । भिन्नपत्रंतुत्कृत्वातन्दुलीयाम्लयोर्द्रवैः ५६ भावयेद्  
 ष्टयामन्तदेवंशुभ्यतिचाभ्रकम् । बद्धाधान्ययुतायस्त्रेमर्द  
 येत्काञ्जिकैस्सह ५७ कृत्वाधान्याभ्रकतत्तुशोषधित्वायम

र्दयेत् । अर्कक्षीरौदिनमर्द्यचक्राकारन्तुकारयेत् ५८ वेष्टये  
 दर्कपत्रैश्चसन्प्रग्गजपुटेपचेत् । पुनर्मर्द्यपुनःपाच्यंसेत्  
 वारंप्रयत्नतः ५९ ततोवटजटाकाथैस्तद्वद्द्वेषुपुटेत्रयम् ।  
 धियतेनात्रसन्देहःसर्वरोगेषुयोजयेत् ६० शङ्खधान्याभ्रं  
 कंमुस्तंशुण्ठीषड्भागयोजितम् । मर्दयेत्कांजिकेनैवंदिनेत्रि  
 त्तकजैरसैः ६१ ततो गजपुटं दद्यात्तस्माद्बुद्धृत्यमर्दयेत् ।  
 त्रिफलाचारिणातद्वत्पुटेदेवपुटेस्त्रिभिः ६२ बलागोमूत्रमु  
 शलीतुलसीशूरणद्रवैः । मर्दितंपुटितं बह्वौत्रिभिवेलेन  
 जेन्मृतिम् ६३ धान्याभ्रकस्यभागैकद्वौभागौटङ्कणस्यच  
 पिण्ड्वातदधसूपायां रुद्ध्वातीत्राग्निनापचेत् । स्वभावशी  
 तलंचूर्णसर्वरोगेषुयोजयेत् ६४ नीलाञ्जनंचूर्णयित्वा ज  
 म्बीरद्रवभाषितम् । दिनेकमातिपेशुद्धंभवेत्कार्येषुयोजयेत्  
 ६५ एवंगौरिककाशीशंठङ्कणानियराटिका । तुवरीशंखकंकु  
 प्टशुद्धिमायातिनिश्चितम् ६६ पचेत्त्रयहमजामूत्रैर्दोलाय

यासनमें धरि जब धिराय कांजी जग्य अभ्रक सुखाय मदार दूधमें दिनमर पुटाय  
 दिक्रियाकरे ॥ ५८ ॥ मदार परमें लपेट गजपुट आंचदे ऐसेही मदार दूधमें घोटि  
 घोटि सातपुटदेय ॥ ५९ ॥ ( फिर ) परगदजटाकाथमें घोटि घोटि तीन पुटदेय  
 इस प्रकार निस्तदेह अभ्रक मरेगा समकर्म योग्य होयगा ॥ ६० ॥ ( दूसरीविधि )  
 शुद्ध अभ्रक ले दठा दठाभंश मोघा व सौठ दे कांजीमें दिनमर सरलकरि फिर  
 चीता के रसमें ॥ ६१ ॥ तत्र गजपुट आंचदे फिर निकार तीनयात्र त्रिफला रस  
 में घोटि घोटि गजपुट आंच देय ॥ ६२ ॥ फिर बरियारा, गोमूत्र, एशली,  
 कृष्णतुलसी और शूरन इनके रस में घोटि घोटि तीनवार गजपुट आंच देय  
 तो अभ्रक मरे ॥ ६३ ॥ एक भाग शुद्ध अभ्रक दो भाग सुहागा देकर अंधमुपक  
 यगमें रुंघि गजपुटकी तेज आंच में पूंक इसकी छंटी मृदति है सत्र रोगों में देना  
 योग्य है ॥ ६४ ॥ ( सुरभा शोधन व भारण ) सुरभा जूरीनरि जम्बीरी नीं-

\* यद्यथापि मृत्पत्र-वदन्तः । यस्मिन् पत्रे धादिभिः भरकरे जो औषध बाधनीहो वसती पायली  
 वार भरकाय देव इसभाति सराविधि करवे को राजपुत्र कादि ॥ ५७ ॥ १११

त्रेमनःशिलाम् । भावयेत्सप्तधापितैरजायाःशुद्धिमृच्छति  
 ६७ (अन्यच्च) अगस्तिपत्रतोयेन भावयेत्सप्तवारकम् ।  
 शृङ्गवेररसैर्वापि विदधाति मनःशिलाम् ६८ तालकंकणशः  
 कृत्वा तन्नूर्णकाञ्चिकेक्षिपेत् । दोलायन्त्रेण यामैकं ततः कण्ठमा  
 ण्डजैर्द्रवैः ६९ तिलतैलेपचेद्यामं यामञ्चेत्त्रिफलाजलैः ।  
 एवं ग्रन्थे चतुर्ग्रामं पाच्यं शुद्धयति तालकम् ७० नरमूत्रे तु  
 गोमूत्रे संसाहंरसकंपचेत् । दोलायन्त्रेण शुद्धं स्यात्ततः का  
 र्यं पुनोजयेत् ७१ लाक्षां मीनपयश्चागं टङ्कणमृगशृङ्गकम् ।  
 पिण्याकंसर्पपाशियर्गुञ्जोर्णागुडसैन्धवम् ७२ यथास्ति क्वा  
 घृतं क्षौद्रं यथा लभं विचूर्णयेत् । एभिर्विभिश्चिताः सर्वे धात  
 वांगाढवाह्विता । मषाधमाताः प्रजायन्ते मुक्तमस्त्वनिसंश  
 यः ७३ कुलित्थकोद्रवकाथैर्दोलायन्त्रे विपाचयेत् । व्या

श्रीकन्दगतवज्रं त्रिदिनशुद्धिमृच्छति ७४ तसंततन्तुत्त  
 द्रव्यं खरसूत्रे निषेचयेत् ॥ पुनस्ताप्यं पुनः सेच्यमेवं कुर्यात्त्रि  
 सप्तधा ७५ मत्कुणैस्तालकपिण्ड्याः प्रावद्धवतिगोलकम् ॥  
 तद्गोले निहितं वज्रं तद्गोलं चाधिकं धमेत् ७६ सेचयेदख  
 सूत्रेण तद्गोलं चाक्षिपेत्पुनः ॥ रुद्धात्मात्पुनः सेच्यमेवं कु  
 र्यात्त्रिसप्तधा ॥ एवं च घिवते वज्रं चूर्णं सर्वत्र योजयेत् ७७  
 द्विद्वुसैन्धवभ्रयुक्ते काथे कौलत्यजे क्षिपेत् ॥ तप्ततप्तपुनर्वज्रं  
 भूयाच्चूर्णं त्रिसप्तधा ७८ मण्डकं कांस्यजे पात्रे निगृह्य स्था  
 पयेत्सुधीः ॥ स भीतो मूत्रयेत्तत्र तन्मूत्रे वज्रमावपेत् ॥ तप्त  
 न्तप्तञ्च बहुधा वज्रस्यैव स्मृतिर्भवेत् ७९ वैक्रान्तं वज्रं वच्छो  
 ध्यं नीलं बालोहितं तथा ॥ हयमूत्रे तु तत्सेच्यं तप्ततप्तहि  
 सप्तधा ८० तत्तश्च मे षडुग्धेन पञ्चाङ्गे गोलकं क्षिपेत् ॥ पु  
 टेन्मूपापुटे रुद्धा कुर्यादेवं च सप्तधा ८१ वैक्रान्तं भस्मतां

टैपांकी मईकी लुगदीमें हीराखले कपडेमें बांधि तीनदिन सिद्ध करे तब हीरा शुद्ध हो  
 फिर आगमें तपाय खर(गध) के मूत्रमें २१ बार बुझावे ॥ ७४ ॥ मत्कुण कह  
 खटकिरिया और हस्तालि पौसि गोलाकरि उसमें हीराधरि तीव्र आंचदेकर मूपा  
 धर्ममें राखि भाषीमें फूँके ॥ ७५ ॥ (फिर) अश्वमूत्रमें २१ बार बुझाय हरताल  
 गोलामें धरि फूँके इफीसवार अश्वमूत्र में लुकापि फूँके ऐसे हीरा भस्म होता है  
 उसकी चूर्ण सबेध साध्य है ॥ ७७ ॥ (पुनर्विधिः) हीरा, मण्डकतेत, अन्धरी,  
 काथमें डारि उसमें हीरा तपाइ तपाइ २१ बार बुझावे तो हीरा मर ॥ ७८ ॥ (तृ  
 तीयविधि) मेढक कासेके पात्रमें मूँदे उसे डरायै जब भयसे मूते उस मूत्रमें हीरा  
 तपाय तपाय बहुत बुझावे तो खिलके चूर्ण हो मरिजाय ॥ ७९ ॥ वैक्रान्त शोध  
 नमारण) वैक्रान्त कबे हीरेको कहते हैं कालाही वा लाल से हीरेको नाई  
 शोधे लाल करि करि १४ बार बुझाय ॥ ८० ॥ मेढासिगो के पंचांगके गोले में  
 धरि मूपाधर्म अरि संपुटकरि फूँकदे इसीतरह सातबार फूँके ॥ ८१ ॥ तब वैक्रा

यातिवज्रस्थानेमियोजयेत्।स्वेदयेद्दोलिकायन्त्रेजघन्त्याः  
स्वरसेनत्र ॥ मणिमुक्ताप्रवालानां यामैकशोधनंभवेत्  
८२ कुमारीतन्दुलीयेन स्तन्येनचनिषेचयेत् । प्रत्येकं स  
स्वेदञ्चतप्ततप्तानिकृत्स्तशः ८३ मौक्तिकानिप्रवालानि  
तैधरत्नात्प्रशोधतः । क्षणाद्विविधवर्णानि धियन्तेनाग्रसं  
शयः ८४ उक्त्वाक्षिकवन्मुक्ताप्रवालानिचमारयेत् ॥ एवं  
ज्वरत्सर्वरत्नानि शोधयेन्मारयेत्तथा ८५ शिलाजतुसर्पा  
तीघ्रि ग्रीष्मत्तशिलान्युत्स ॥ गोदुग्धैस्त्रिकलाकारैश्छि  
राजैश्चमर्दयेत् ॥ आक्षपेदिनमेकन्तु तच्छुष्कंशुद्धतां  
व्रजेत् ८६ मुख्यांशिलाजतुशिलां सूक्ष्मखिपडंप्रकृत्स्नित  
म् । निक्षिप्यात्युष्णपानीयेग्रामैकंश्रापयेत्सुधीः ८७ म  
र्दयित्वाततीनीरं गृह्णीयाद्द्वलकालितम् ॥ स्थापयित्वा  
चमृत्पात्रं धारयेदातपेभुधः ८८ उपरिस्थंघनंयस्या  
त्तत्किपेदन्यपात्रके । धारयेदातपेतस्मादुपरिस्थंघनं  
येत् ८९ एवंपुनःपुनर्नीत्वा द्विमासाभ्यांशिलाजतु ॥ भू  
त्तभस्महाय सोहीरेकी ठौरदेय ॥ ( सर्वरत्नशोधन व मारण ) अग्ने शोकी  
वा माणिक वा भूगा भरणी रसदे दोलायत्र मे एकाग्र सिद्धकरी ती दुग्ध रीव ॥  
८२ ॥ घीकुवार चौराई वा लीका दूध इन तीनीमें सातसातवार पाणिकादि वषट्  
तपाय बुझाये ॥ ८३ ॥ भूगा मुक्तादि मे सब चणभरमें बली पलट मातेई इसमें सं  
शयनहीं ॥ ८४ ॥ भूगा, भोती, सोनीयाली की रीविते भी परतारे और सर रह  
हीरेकी नाई शोधै व मारै ॥ ८५ ॥ शिलाजीत शोधन ॥ ग्रीष्मकी वातजते  
पर्वतसे जुया शिलाजीत खाय जायका दूध वा त्रिकला काये वा भारेके रसमें पर  
भर घोटि दिनभर घाममेंधरे सूखजाव ती शुधियाय ॥ ८६ ॥ (दूसरीरीति) ८७ ॥  
शिलाजीतकी शिलाले छोटें छोटे टुककरे अति उष्णजलमें पांशपर एक ॥ ८८ ॥  
उसे पानीमें पीसै फिर दानके लैलेप फिर भांटीके घासनमें करि धरन पर ॥ ८९ ॥  
जब मलाई परे उसे कांछि और पात्रमें रखलै फिर और बह नकरै ॥ ८९ ॥  
दे फिर मलाई लेले पहिली मलाई में रस्ता जाय इसीपांति दो मासतक करै

यात्कार्यक्षमं बह्वौ क्षिप्त्वा लिङ्गोपभंभवेत् ९० । निर्धूमं च  
 ततः शब्दं सर्वकर्मभुजयेत् । अथः स्थितं त्वत्तच्छेषं त  
 स्मिन्नारं विनिःक्षिपेत् । विमर्द्यधारयेद्घर्मपूर्ववच्चैव न च  
 येत् ९१ । अक्षाङ्गैरेधमेत्किट्टं लोहजंतद्गवांजलैः । सेच  
 येत्तप्ततप्तं च सप्तवारंपुनःपुनः ९२ । चूर्णयित्वा ततः काथै  
 द्विशुणौ क्षिफलाभयैः । आलोढ्यभर्जयेद्बह्वौ मण्डूरं जाय  
 तेवरम् ९३ । क्षारलक्षस्य काष्ठानि शुष्कान्यग्नौ प्रदीयते ।  
 नीत्वा तद्भस्म मृत्पात्रे क्षिप्त्वा नीरे चतुर्गुणे ९४ । विमर्द्यधा  
 रयेद्द्रात्रौ प्रातर्बहुजलं नयेत् । तन्नीरं काथयेद्बह्वौ याव  
 त्सर्वं त्रिशुष्यति ९५ । ततः पात्रात्समुल्लिख्य क्षारोग्राह्यः  
 क्षितप्रभः । चूर्णाभः प्रतिसार्यः स्यात्पेयः स्यात्काथवत्स्थ  
 तः । इति क्षारद्वयंधीमान् युक्तकार्येषु योजयेत् ९६ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेणैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

तत्र शिनाजीत कार्यकारी होता है और आगिमें रखने से लिंकार होता है ॥  
 ९० ॥ निर्धूमये जानिये कि शिनाजीत अथवा बनगया पहिली मलाई इस प्रकार  
 घनी फिर पहिली मलाई के तरे और जो बहुशारका निकला पानी उसके तरे थ-  
 राइरे इन दोनोंको गरमपानी देदे पीसि फिर दोमासताई दूना पानी डारि शुद्ध  
 करे ॥ ९१ ॥ ( अथ मंडूरविधि ) कीटी लोहेका मैल नहेराकी लकड़ी के  
 कोयलामे लालकरि गोमूत्रमें सातवार बुभाये ॥ ९२ ॥ तत्र कीटका चूर्णकरि दूने  
 क्षिफला कायमें मिजाय पात्रमें घरि आंचमें क्षिफला काय जरायके उतारिले तत्र  
 मंडूर अच्छा होता है ॥ ९३ ॥ ( अथ क्षारविधि ) क्षारलक्षकी लकड़ी की  
 राखकरि चौगुने पानीमें धोति ॥ ९४ ॥ रातभर राखि प्रमात् धिराना पानी ले  
 आगिपर चढ़ाय पानी जरायै जत्र पानी जरिजाय ॥ ९५ ॥ तत्र उतारिले उंसीको  
 चार कहते हैं सफेद होता है और सत्र पानी न जरै तो काय समरइता है ये दो  
 प्रकार सार पैचमत्त औपषोमें देते हैं " कुरैया, पलाश, वकायन, धरेडा, अमल-  
 तास, मदारे, अमली, सेहुंड, चिरचिरा, पादा, केला, जमालगोटा, सहिजन और  
 मरी" इत्यादि चारखच कहाने हैं ॥ ९६ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेणैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

पारदः सर्वरोगाणां जेता पुष्टिकरः स्मृतः । सुदिने सा  
धनं कुर्यात्संसिद्धिं देहलोहयोः १ रसेन्द्रः पारदः सूते हर  
जः सूतकोरसः । बुधैस्तस्येति नामानि ज्ञेयानिरसकर्म  
सु २ तास्य तारारनागाश्चेहमवङ्गौ च तीक्ष्णकम् । कांस्थ  
कं वृत्तलोहं च धातुघोनवसंस्थिताः । सूर्यादीनां ग्रहाणां  
ते कथितानामभिः क्रमात् ३ राजीरसो नमूपायारसं क्षिपत्वा  
विबन्धयेत् । वसोणदोलिकायन्त्रे स्वेदयेत्काण्डिजैः स्वय  
हम् । दिनैकं मर्दयेत्सूतं कुमारीसम्भवेद्रवैः ४ तथा चित्र  
कजैः काथैर्मर्दयेदं कवासरम् । काकमाचीरसेस्तद्विदिनमे  
कञ्चमर्दयेत् ५ त्रिफलायार तथा काथैरसो मर्द्यः प्रयत्नतः ।  
ततस्तेभ्यः पृथक्कुर्यात्सूतं प्रक्षाल्य काण्डिजैः ६ ततः क्षि  
पत्वारसं खल्वैरसाद्द्वैचसैन्धवम् । मर्दयेन्निम्बुकरसैर्दिन  
मेकमनातुरम् ७ ततो राजीरसो नश्च शुष्यश्च नवसाद्

पाराको सर्वरोग जीतनेवाला १ पुष्टिकारक कहते हैं शुभ दिन शुद्ध कम्पा  
आरम्भ करे थच्छा सिद्ध हो नो जरा व्याधि दूर करे लोहादि धातु पारे मे नंस्कार  
करे उत्तम होय शरीर पुष्टि करती है प्रमाण ॥ उत्तमं सरात्रेण मयनं वेपथ्वादि-  
भिः । अधमं मूत्रक्षारैश्च तैलेनाप्यधमायमम् ॥ १ ॥ (पारानाम) रसेन्द्रः पारदः,  
सूत, हरज, सूतक और रस ये छः नाम पंडित रसत्रिया में मशहूर हैं ॥ २ ॥  
वावा, रुगा, पीतल और सीसा, सोना, रंगण, पोलाद, कांता और लोहा ये नव  
धातु सूर्यादि नक्षत्रहके क्रमसे ही नाम समझने हैं ॥ ३ ॥ (रसशोधन) रस, लहसुन  
की लुगदीका सूसायंत्र करि पाराभरि मुलमंदि गात्रे बरतमें बावि दोलायंत्रमें कांती  
के संग तीनदिन आंचदे शुद्ध करै फिर एक दिन त्रिकुचार के रसमें घोटे ॥ ४ ॥  
एकदिन चांदाकायमें एकदिन मकोथरसमें ॥ ५ ॥ एकदिन त्रिफलाके रसमें पार  
पारा निशारे घोण लेय ॥ ६ ॥ पारा एकभाग सैराश्रद्धभाग टिनपर नेंद्रे रसमें  
सूत्रोटे ॥ ७ ॥ राई, लहसुन थच्छा नालादर ये सब पारके समानले पारके संगे

रः । एतैरससमैस्तद्वत्सूतोमर्द्यस्तुषाम्बुना ८ ततःशंशो  
 प्यचक्रामंकृत्वालिप्त्वाचहिङ्गुना । द्विस्थालीसम्पुटेकृत्वा  
 पूरयेल्लवणेनच ९ अथस्थालींततोमुद्रांदद्याद्दृढतरा  
 म्बुधः । विशोप्याग्निविधायाधोनिषिञ्चेदम्बुचोपरि १०  
 ततस्तुकुर्यात्तीव्रग्निं तदधःप्रहरत्रयम् । एवंनिपातये  
 दूर्ध्वैरसोदोषविवर्जितः । अथार्द्धपिठरीमध्येलग्नोग्राह्यो  
 रसोत्तमः ११ लोहपात्रेविनिक्षिप्यघृतमग्नौप्रतापयेत् ।  
 तप्तेघृतेतत्समानांक्षिपेद्गन्धकजंरजः १२ विद्रुतंगन्धकंज्ञा  
 त्वाद्गन्धमध्येविनिक्षिपेत् । एवंगन्धकशुद्धिःस्यात्सर्वका  
 र्येषुयोजयेत् १३ मेषीक्षीरेणदरदमम्लवर्गैश्चभावितम् ।  
 सप्तवारंप्रयत्नेनशुद्धिमायातिनिश्चितम् १४ निम्बूरसैर्नि  
 म्बपत्ररसैर्वायाममात्रकम् । पिण्ड्वादरदमूर्ध्वचपातयेत्सूत  
 युक्तिवत् । ततःशुद्धंरसंतस्मान्नीत्वाकार्येषुयोजयेत् १५ का  
 लकूटंवत्सनागःशृङ्गकश्चप्रदीपनः । हालाहलोब्रह्मपुत्रो

गुपाम्बुमें सब मिलाय मर्दनकरै ॥ ८ ॥ जब सूखकै गाढाहो तब टिकरी बना हींग  
 लेपकरि फिर एक हांडी नोनभरि तिसके बीचमें पूर्वोक्त टिकिया धरि तिसपर दू-  
 जीहाड़ी के मुहरगरेहों जिसमें संधि न रहै तब कपड़ीदी करि आचदेय ऊपर भीजी  
 कयरीराखै उसे सौंचतारहै नीचे तीनपहर तक आच सेजराखै जब ठंडीहो तब उ-  
 परवाली हाडैमें जो दोपखोजल रस लपटा छटायके सत्र कायमें युक्तकरै ॥ ९ ॥  
 ११ ॥ ( गंधकशोधन ) लोहेकी कडाही में घी अतितप्तकरै घीके समान गंधक  
 शूण्य छोड़ै जत्र गलै तत्र चौगुने दूधमें गरमहो नाइके लुभानै तौ गंधक शुद्धहोकर  
 सर्व कायोंमें योग्य होताहै ॥ १२ ॥ १३ ॥ ( सिंगरफशोधन ) सिंगरफको भेड़  
 के दूध और नींबूके रसमें घोटि मुलावै इसे भावना कहिये ऐसे सात भावना देने  
 से सिंगरफ निश्चय शुद्ध होताहै ॥ १४ ॥ ( सिंगरफसे खार निकालने की  
 विधि ) नींबूरस वा नींबपत्र रसमें पहरभर सिंगरफ घोटि फिर दमरूपत्रकरि उ-  
 तारिलेय "दमरूपत्र यों कहते हैं" जैसे प्रथम पारा उड़ायाहै उड़ाय लेने से भी पारा  
 शुद्धहोकर सर्व कार्यकारक होजाताहै ॥ १५ ॥ ( अब पारेका शुद्ध करनाकहे



हारिद्रः सङ्कुक्स्तथा । सौराष्ट्रिकद्विप्रोक्ताविषभेदां  
 मीनव १६ अर्कसेहृण्डधतूरालाङ्गुलीकरवीरकः गुञ्जाहि  
 फेनमित्येताः सप्तोपविपजातयः १७ एतैर्विमदितःसूत  
 शिञ्जन्नपक्षः प्रजायते । मुखंचजायतेतस्यधातुश्चप्रसते  
 परान् १८ अथवाकटुकक्षारौराजीलवणपञ्चकम् । रसो  
 नोनवसारश्चशिशुश्चैकत्रचणितैः । समांशैःपारदादेतै  
 र्जम्भीरेणुरसेनवा ॥ निम्बूतयैःकाञ्जिकैर्वाभोष्णखल्वेवि  
 मर्दयेत् १९ अहोरात्रत्रयेणस्याद्रसेधातुचरंमुखम् । अथ  
 वाविन्दुलीकिट्टैःरसोमर्द्यस्त्रिवासरम् । लवणाम्लैर्मुखंत  
 स्यजायतेधातुघस्मरम् २० अथकच्छपयत्रैणगन्धजार  
 णमुच्यते । मृत्कुण्डेनिक्षिपेत्तीरंतन्मध्येचशरावकम् २१  
 महत्कुण्डविधानाभमध्येमेखलायुतम् । लिप्त्वाचमेखला  
 मध्येचूर्णितत्ररसंक्षिपेत् २२ रसस्योपरिगन्धंस्परजोदद्या

शुष्काकर करनाभी कहते हैं) कालकंद, बर्धनार्ग, शिंशिया, मंशिन,  
 हालाहल, ब्रह्मपुत्र, हरदिया, सङ्कु और सौराष्ट्र के नरविषह औ पदार्थ सेहुँद,  
 धूरा, कलिहारी, कनर, नार्तुंउची, अर्कमेथे सात उपविषह ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥  
 सप्त विषमं मर्दन करने से प्रायः पत्तनीन होजायै समस्त धातुओं के भक्षण करने  
 को समर्थ होताहै ॥ १८ ॥ (अथ वृत्तरा प्रकार) विहुटा दोनो रसर और रस  
 और पांचोलोन, लारुन, शैवादार और सहैमनकी क्षालि सव समभागलेचूर्ण  
 करै तब पारे के समानने लरीरस वा गंधूस वा कांजीये गरमकरि हरलकरे ॥  
 १९ ॥ तीन दिनरात सब सारा सब धातुओं को साथ और खेल न पद पारा के  
 मुरा होताहै और धरुंटा वा नीरुहरी में तीनदिन घोटै फिर पांचोलोन और  
 नांयूके रसमें घोटै तब पारोका मुखरुतै और धातु पत्तणकरे ॥ २० ॥ (कच्छप-  
 यंत्रकरि गंधक कूचनेकी विधि) एक माटी का कूडाले विसमें चार थंगुल  
 पानी भरि एक नहनकी राति उस सदनकी केबरे पानी एक थंगुल ॥ २१ ॥ तिस  
 में पारा और गंधकप्रमाण भरिउसदूसरासहनकी ठकि घूमो दोनोसदनकी पद्य  
 मुर निःसंघि हुँदवशिक्रउसके मुँदपर पायी लण्डवन्दकै निसंयकंरना की कर्मी

त्समांशकम् । ततोपरिशरावंचभस्ममुद्रांप्रदापयेत् २३  
 ततोपरिपुष्टं दत्त्वा चतुर्भिर्गोमयोपलेः । एवंपुनःपुनर्गन्धष  
 ड्गुणंजारयेद्ब्रुवः ॥ गन्धेजीर्णेभवेत्सूतरतीक्ष्णाग्निःसर्व  
 कर्मसु २४ धूमसारंरसंतोरीं गन्धकंनवसादरम् । ग्रामैकंमर्द  
 येदन्लैर्भागंकृत्वासमांशकम् २५ काचकुप्यांविनिक्षिप्य  
 तांचमृद्वसमुद्रया । विलिप्यपरितोवक्तंमुद्रांदत्त्वाचशोपये  
 त् २६ अधःसच्छिद्रपिठरीमध्येकूपीनिवेशयेत् । पिठरीं  
 वालुकापूरैर्भूत्वाचाकुपिकागलम् २७ निवेश्यचुल्ल्यां  
 तदधःकुर्याद्द्विज्ञानैःज्ञानैः । तरुमादप्यधिकंकिञ्चित्पावकं  
 ज्वालयेत्क्रमात् २८ एवंद्वादशभिर्यामैस्त्रियतेसूतकोत्त  
 मः । स्फोटयेत्स्नाङ्गशीतंतमूर्ध्वगंगन्धकंत्यजेत् । अध  
 स्थंचियतेसूतंमर्वकार्येषुयोजयेत् २९ अपामार्गस्यधी  
 जानांमूषायुगमंप्रकल्पयेत् । तत्सम्पुटेन्यसेत्सूतंमलयूदु  
 ग्धमिश्रितम् ३० द्रोणपुष्पीप्रसूनानिविडङ्गगिरिमेदक  
 म् । एतच्चूर्णमधोर्ध्वंचदत्त्वामुद्रांप्रकल्पयेत् ३१-तंगोलं

न गिरै तत्र ऊपर से चार वितुर्गं कंटाकी आंचदेवे इसीप्रकार छःबार पारा गंधक  
 समानदे चार फटाकी आच देदकर फूँके वी पारा तीक्ष्णाग्निकारी होकर सर्व कार्य  
 योग्य होता है ॥ २४ ॥ २५ ॥ । अध पारदभस्मविधि ) पुष्पासार ( करतुचां )  
 पारा, फटकरी, गंधक और नौसादर इन सब द्रव्योंको समभागले पहरभर नीरूके  
 रसमें घोटिा ॥ २५ ॥ फिर आतशी शीशीमें भरि कपडौटीवरि धूपमें सुत्वात्रै तत्र एक  
 नांदले बीच पेंदीमें छेदकर उस चिद्रार अन्नकरि उसार शीशी स्थित करि ऊपर  
 बालू भरि चूहेमें धरि तरे आगिगारि पहर धारह पहले अतिमद आचकरि फिर क्रम  
 क्रम आंच नीत्रकरै तौ पारान उडै सिद्ध होजाय जब सिराय तत्र शीशी निकारि  
 फोरै उभमें गंधक ऊपर मने में पारतले पेंदीमें होयगा उस गंधक को फेंक पारा  
 समेटिले यह पास सर्वकार्य योग्य होजाता है ॥ २६ ॥ २७ ॥ ( पुनः ) चिरचिरा  
 बीज पीसि टोमूषा बनाय पारा कटगूरके दूधमें घोटि ॥ ३० ॥ मूषाधेअर्धेइसचूर्ण  
 के बीचमें पारापरै मूषापूजन, तिंडग, गैरका चूर्ण ऊपर दूसरा मूषावरि कपडौटी,

सन्धयेत्सम्यङ्मृन्मूषासम्पुटेत्सुधीः । मुद्रादत्वाशोषयि  
 त्वाततोगजपुटेपचेत् । एवमेकपुटेनैवजायतेभस्मसूतकम्  
 ३२ काकोदुम्बरिकादुग्धैरसेकिञ्चिद्धिमर्दयेत् । तद्दुग्धघृ  
 ट्प्रहिङ्गोश्चसूषायुग्मंप्रकल्पयेत् ३३ घृत्वातत्सम्पुटेसूतं  
 तत्रमुद्रांप्रदापयेत् । घृत्वातद्गोलकंप्राज्ञोमृन्मूषासम्पुटेधि  
 के ३४ पचेन्मृदुपुटेनैवसूतकोयातिभस्मताम् । नागवल्ली  
 रसैर्घृष्टःकर्कोटीकन्दगर्भितः । मृन्मूषासम्पुटेपक्कःसूतोया  
 त्येवभस्मताम् । ३५ खण्डितंमृगशृङ्गञ्ज्वालामुख्यारसैः  
 समम् । रुद्धाभाण्डेपचेच्चुल्ल्यांयामयुग्मंततो नयेत् ३६ अ  
 ट्प्रांशंत्रिकटुदद्यात्त्रिष्कमात्रंतुभक्षयेत् । नागवल्लीरसैःसाई  
 वातपित्तज्वरापहम् ३७ अयंज्वरांकुशोनाम्नारसैःसर्वज्वरा  
 पहः । पारदंरमकंतालंतुत्थंठङ्कणगन्धके । सर्वमेतत्समंशुद्धं  
 कारवेह्लरसैर्दिनम् ३८ मर्दयेल्लेपयेत्तेनताखपात्रोदरंभिष  
 क् । अङ्गुल्यर्द्धप्रमाणेनततोरुद्धाचतन्मुखम् ३९ विपचेद्वा

करि माटीलेमके मुखाय एक गजपुट आंचदे ऐसे पारा एकही आंच में भस्म  
 होजाताहै ॥ ३१ । ३२ ॥ ( पुनः ) कटगूलरके दूधमें पाराघोठि फिर उमी दूधमें  
 हींग पीसि मूसावनाइ पारा भरि कपडौटी करि माटीके मूसा में धरै पुनः कपडौटी  
 करि ॥ ३३ । ३४ ॥ वीस गोइटाकी आंचदे पारा भस्म होताहै ( पुनः ) पान  
 के रसम पारा घोटि बांभरससा की बढ कोनके भरै रसमें मूदि कपडौटी  
 करै माटी लेप मुखाय थोडी आंचमें धूँके से पारा भस्म होता है ॥ ३५ ॥  
 ( अथ ज्वरांकुश ) हरिण के सांग रूईवरि बराबर जैतका रबले माथे के  
 घासनमें धरि मुंह मूदि टोपहरकी आंच देकर उनालिये ॥ ३६ ॥ फिरजात्रां  
 अंश त्रिमुटादे पीमे चाररची ज्वरांकुश फनके रसमें खिलायै तौ पात, पित्त, ज्वर  
 नाशकरै ॥ ३७ ॥ यह ज्वरांकुश नामरस तय ज्वरको हरताहै ( ज्वरारिरस )  
 पारा, सपरिया दरतान, हृदिया, मुहागा और गंधकये समानशोयि कालेके रस  
 में एकदिन ॥ ३८ ॥ वैदिके ताक्षरात्रयं जाया शृंगुलमोदालोसिपात्रमुखमूदि ॥ ३९ ॥

लुकायन्त्रेच्छिप्त्वाधान्यानितन्मुखे। यदास्फुटन्तिधान्यानि  
 तदासिद्धंविनिर्दिशेत् ४० ततो नयेत्स्वाङ्गशीतंताम्रपात्रो  
 दराङ्गिषक्कारसंज्वरारिनामानंविचूर्ण्यमरिचैःसमम् ४१ मा  
 षैकंपर्णखण्डेनभक्षयेन्नाशयेज्ज्वरान् । त्रिदिनैर्विषमंतीव्र  
 मेकद्वित्रिचतुर्थकम् ४२ तालकंतुत्थकंताम्ररसंगन्धमन  
 शिशलाम् । कर्षकर्मप्रयोक्तव्यमर्दयेत्त्रिफलाम्बुभिः ४३  
 गोलंन्यसेत्सम्पुटकेपुटंदद्यात्प्रयत्नतः । ततोनीत्वार्कदुग्धे  
 नवज्जीदुग्धेनसप्तधा ४४ क्वाथेनदन्त्याःश्यामायाभावयेत्स  
 प्तधापुनः । मापमात्रंरसंदेयंपञ्चाशन्मरिचैर्युतम् ४५ गुडं  
 गद्यानकंचैवतुलसीदलयुग्मकम् । भक्षयेत्त्रिदिज्भक्त्या  
 शीतारिर्दुर्लभंपरम् ४६ पथ्यंदुग्धौदनंदेयंविषमंशीतपू  
 र्वकम् । दाहपूर्वहरत्याशु तृतीयकचतुर्थकौ ४७ द्वयाहि  
 कंसनतंचैववैवर्ण्यंचनियच्छति । भागैकस्याद्रसाच्छुद्धा  
 देलायाःपिप्पलीशिवा ४८ अकारकरभोगन्धःकटुतैलेन

कपडौटी करि बालकायंत्र में धरि थंत्रमुख खुल्यारति आवदेय जब उस बाल  
 में धानहारे से खीनहोजाय तब जानिये कि रस सिद्ध होगया ॥ ४० ॥ जब  
 स्वभावसे ठंढाहो तब उसे पात्रसे छुड़ायले उस ज्वराकुशके समान मरिच मिलाय  
 पीसलेय एकमाश पानके टुकड़ेमें धरि खिलावैज्वरको नाशकरै तीनदिन खानेसे  
 अतिकठिनज्वर, अन्तरिया, तिजारी और चातुर्थिकये सब दूरहोये ॥ ४१ ॥ ४२ ॥  
 ( शीतज्वारि रस ) हरताल, तूतिया और तावा भस्म, शोधा पारा, गन्धक  
 शुद्ध और मैन शिलयें सब कर्प कर्पपर लेकर त्रिफलाके रसमें घोटै ॥ ४३ ॥ गोला  
 यापि कपडौटी माटी लेस खूब फूफिमदार और मेहुँदकेदूधमें सातभावनादे ॥ ४४ ॥  
 फिर नमालगोट्रा वी जडके काइमें फिर निशेय के फूडे में मात भावनादे तब  
 एक माशेरस पचास मरिच ॥ ४५ ॥ छ माशे गुड़ दो तुलसीदल भक्तिपूर्वक तीन  
 दिन खाय शीतारि रस इसका नाम है बहुत दुर्लभ है ॥ ४६ ॥ पय दूधभातदेय  
 छूड़ी, राह, ज्वर, तिजारी, चातुर्थिक ॥ ४७ ॥ अन्तरिया, नित्यज्वर और उवर  
 अनियतिकार सब नाश होवै ( अथ उवरघ्नी शुटिका ) शुद्ध पारा एकभाग

शोधितः । फलानिचन्द्रवारुण्याश्चतुर्भागमिताह्यमी ४६  
एकत्रमर्दयेच्चूर्णमिन्द्रवारुणिकारसे । माषोन्मितावटीकृ  
त्वादद्यात्सर्वज्वरेभिषक् । त्रिन्नारसानुपानेनज्वरघ्नीगुटि  
कामना ५० शुद्धोवुभुक्षितःसूतोभागद्वयमितोभवेत्तथा  
गन्धस्यभागोद्दीकुर्यात्कज्जलिकान्तयोः ५१ सूताच्चतुर्गुणे  
ष्वेवपारदेषुविनिक्षिपेत् । भागेकंठङ्कणदत्त्वागोक्षीरेणवि  
मर्दयेत् ५२ तथाशङ्खस्यखण्डानांभागानष्टौप्रकल्पयेत् ।  
क्षिपेत्सर्वपुटस्यान्तश्चूर्णलिप्तशरात्रयोः ५३ गर्तेहस्ता  
न्मितेघृत्वापाच्यंगजपुटेनच । स्वाङ्गशीतंसमुद्धृत्यपिष्ट्वात  
त्सर्वमेकतः ५४ षड्गुञ्जासम्मितंचूर्णमेकोनत्रिंशद्वर्षणैः ।  
घृतेनवातजेदद्यान्नवनीतेनप्रीतिके ५५ क्षौद्रेणकफजे  
दद्यादतीसारैक्षयेतथा । अरुचौग्रहणीरोगेकाश्येमन्दान  
लेतथा ५६ कासश्वाभेषुगुल्मेषुलोकनाथरसोहितः । त  
स्योपरिघृतान्नंचभुञ्जीतकवलत्रयम् । भवेत्क्षणैकमुत्तानः  
शयीतानुपधानके ५७ अनम्लमन्नंसघृतंभुञ्जीतमधुरंदः

पलुवा, पीपरी, हृदयंगी ॥ ४८ ॥ अकरकरहा, कदुआ तेलकाशोषागन्धक और  
इन्द्ररत्न ये चार चार भाग ॥ ४९ ॥ इन्द्ररत्नरस में घोड़ि मापमात्र गोली बांधि त  
रणज्वर में गुर्च रस में वैद्य ज्वरानी गुटिकाको खिलावे ॥ ५० ॥ ( लोकनाथ  
रस ) पारा युष्कित और धातुमल्लक दोभाग दोनोंको खरलकरि कजरी करि  
पासे चौगुनी कौड़ीकी भस्म पारे समान मुहागा गांधके दूधमें घोटै ॥ ५१ ॥ ५२ ॥  
पारेसे अठगुणी शङ्खकी भस्म शुद्ध मव पीसि दो सरसों के भीतर लेस ॥ ५३ ॥  
दोनोंको सम्पुटकरि वल्ल लपेटि माटी लगाय गजपुटमें फूंकदे जब ठण्ढाहो तब खु  
रचके निकारि खरल करै ॥ ५४ ॥ फिर बरची यह रस फिरच संङ्ख खरलकरि चातरो  
गमें घीमें दे पिचमें मक्खन साथे दे ॥ ५५ ॥ कफरोगमें शहदमें दे अतीसार, बर्दि,  
अरुचि, ग्रहणी, दुर्बलता, मन्दाग्नि ॥ ५६ ॥ कास, स्वास और गुल्म(गोला) इन  
रोगों में एहदयुक्त दे इस लोकनाथ पर प्रथम तीन कौर घीभात खापतिर चरण

धि । प्रायेण जाङ्गलमांसं प्रदेयं घृतपाचितम् ५८ सदुग्ध  
 भक्तं दद्याच्च जाते ग्नौ सान्ध्यभोजने । सघृतान्मुद्गवटकान्वय  
 ज्जनेष्वेव चारयेत् ५९ तिलामलककल्केन स्नापयेत् सर्पिषा  
 थवा । अभ्यञ्जयेत् सर्पिषा च स्नानं क्रोष्णोदकेन च ६० क  
 चित्तैलं न गृह्णीयात्तद्विलंबं कारवेच्छकम् । वार्ताकंशफरींचि  
 षचांत्यजेद्व्यायाममैथुने ६१ मद्यंसन्धानकंहिद्गुशुण्ठी  
 माषांश्च सूरिकान् । कूपमाण्डं राजिकां कोलं काठिजकं चैव  
 वर्जयेत् ६२ त्यजेद्युक्तां निद्रांचं कांस्यपात्रे च भोजनम् ।  
 ककारादियुतं सर्वत्यजेच्छाकफलादिकम् ६३ ग्राहयोयं लो  
 कनाथस्तु शुभेन क्षत्रवासरे । पूर्णातिथौ भित्ते पक्षे जाते चन्द्र  
 वले तथा ६४ पूजयित्वा लोकनाथं कुमारिं भोजयेत्ततः । दाने  
 दद्याद्द्विघटि कामध्ये ग्राह्योरसौत्तमः ६५ रसात्सञ्जाय  
 ते तापस्तदा शर्कस्यायुतम् । सत्त्वं गुडच्या गृह्णीयाद्दंशलोच  
 नयायुतम् ६६ खर्जूरं दाडिमं द्राक्षां मिश्रुखण्डानि चारयेत् ।

भर बिना तकिदे विद्यौने साटपर उताना से वे फिर चाहै जैसे शयन करै ॥ ५७ ॥  
 खटाई छोड़ मधुर दही अच्छे मृतके सद्ग अन्नसाय और अथर्वय जङ्गली मृगादिपशु  
 भक्ष्य मास घीमें अच्छीतरह भूजिखाय ॥ ५८ ॥ और सन् याके समय पका अर्द्धी  
 विशेष दूधभात भोजन करै और मूँगके मोदक अधिक घृतमें रने भोजन सद्गसाय ॥  
 ५९ ॥ तिल, और राज पीसि उबटन लगभग वा घी मर्दन करि न्हाय उच्छिदक से  
 कपर ताई न्हाय ॥ ६० ॥ तेल न छुवै वेल, करेला, भाटा, मजरी, अमली, श्रम  
 और स्त्रीभोगको त्यागै ॥ ६१ ॥ मद्य, अचार, हींग, सूँठ, जर्द, मसूर, पेठा, राई,  
 वेर और काजीको तजै ॥ ६२ ॥ सोसमें न सोवै कालेमें न खाय ककारादि आय  
 के फल और सागोंको तजै ॥ ६३ ॥ यह लोकनाथरस शुभनक्षत्र, रास, पूर्णाति  
 थि, शुक्रपक्ष, बल रात्र चन्द्रमादेसि ॥ ६४ ॥ लोकनाथ रसको पूजि कुँवारी जि  
 वाय दाट्ये द्विघटिका साधि भक्षण आरम्भ करै ॥ ६५ ॥ इसके स्नाने पर तप  
 आतीहै तब भित्री, गुर्धका सत और दंशलोचन इन सबको मिलायकर देवे ॥ ६६ ॥  
 खनूर, अनार, दास व उलकी गेंदेगी टे तो रसताप दूहो घनियाकी डाल दूरे

अरुचौनिरतुपंधान्यघृतमृष्टंसशर्करम् ६७ दद्यात्तथाञ्च  
 रेधान्यंगुडुचीकाथमाहरेत् । उशीरिवाशककाथं दद्यात्सम  
 धुशर्करम् ६८ रक्तपित्तेरुफेडनासेकासेचरवरसंक्षये । अग्नि  
 मृष्टंजयाचूर्णमधुनानिशिरीयते ६९ निद्रानाश्रोतिसरिच  
 ग्रहण्यांपावकक्षये । सोवर्चलाभयाकृष्णाचूर्णसुष्णजलैः  
 पिवेत् ७० शूलेजीर्णेतथाकृष्णामधुयुक्तज्वरेहिता । छिद्योद  
 रेवात्तरक्तेद्वर्चाषेचगुदाङ्कुरे ७१ नासिकाश्रुतिरक्तेचरसंदा  
 डिमपुष्पजम् । दूर्वायाःस्वरसनस्येप्रदद्याच्छर्करान्वितम्  
 ७२ कालमञ्जांकणांवाहिपक्षभरुमसशर्करम् । मधुनालेह  
 येच्छर्दिहिकाकोपप्रशान्तये ७३ विधिरेपप्रयोज्यस्तुराथ  
 स्मिन्पोटलीरसे । मृगाङ्गेहेमगर्भेपमौक्तिकारुष्येप्रैषुचाद्  
 त्येवंलोकनाथोक्तेरसःसर्वरुजोजयेत् ७४ भूर्जवक्षुपत्रा  
 षिहेमनःसंक्षमाणिकारयेत् । तुल्यानितानिसूतेनखल्वेक्षि  
 प्त्वाविमृदयेत् ७५ काञ्चनाररसेनैवज्वालामुख्यारसेनवा ।

करि शीमे भूजिकं चूर्ण करि मिश्री भिलाष तिलाव ॥ ६७ ॥ उसी तापमें भलिपां  
 गुर्चका कादादे, रस च उसेका कादादे, मरु च विधीको भिलाषदे ॥ ६८ ॥ रक्त  
 पित्त, कफ, रगत, कास और ररभंग ये सब अन्धे होयें यांगं भूजि चूर्ण करि  
 लोकनाथसंयुक्त रातको खिलार ॥ ६९ ॥ तथा नदिनाश, अतीसार, संश्लेशी-य  
 गन्दाग्निमें-सोचर, हड् बन्धीरिसाथ रसदेकर गरमपानी भिलाव ॥ ७० ॥ तो शूले  
 व अजीर्ण को दूरिकरै, धीपरि, शहदयुक्त साय तो पिलगी, वातरक्त, छर्दिषे  
 येश को दूरिकरै ॥ ७१ ॥ ( नासार्का कारण ) अमारस में दे दूरस विधी  
 लोकनाथसंयुक्त नासदे ॥ ७२ ॥ वेरमिगी, धीपरि, मोरपंरकी भरुम, मिश्री, श-  
 हदयुक्त साय तो छर्दि व छिद्यो को दूरिकरै ॥ ७३ ॥ ये जो भांति भांति के  
 अनोपान लोकनाथमें त्रहे तो पोटीकी के रसमें भी सब उसी रीतिसे देनाचाहिये  
 जैसे शूर्पाक, हेमगर्भ, मौक्तिकारुष्य और पंचवत्तादि पोटीकारस इनसयों में लोक-  
 नाथोक्तेरीति सदय करै वा सम्पूर्णरोग अन्धेहो ॥ ७४ ॥ ( मृगांकपोटीकीर  
 स क्षेपादि पर ) सोनेका रथ समाननाथ सोने के समं पात भिलाष रारन

लाङ्गल्यावारसैस्तावद्यावद्भवतिपिष्टिका, ७६ ततोद्देम्न  
 श्चतुर्थांशं तङ्कणं तत्र निःक्षिपेत् । पिष्टमौक्तिकं चूणैश्च हेमं  
 द्विगुणमाहरेत् ७७ तेषु सर्वसमं गन्धं क्षिप्त्वा चैकत्र मर्दये  
 त् । तेषां कृत्वा ततो गोलं वा सोभिः परिवेष्टयेत् ७८ पश्चा  
 न्मृदावेष्टयित्वा शोषयित्वा च धारयेत् । शरावसम्पुटं स्यान्ते  
 तत्र मुद्रां प्रदापयेत् ७९ लवणापरितंभाण्डे स्थापयेत्तं च स  
 म्पुटे । मुद्रां दत्त्वा शोषयित्वा ब्रह्मिर्गोमयैः पुटेत् ८० ततः  
 शीते समान् हृत्य गन्धं सूतसमं क्षिपेत् । घृण्ण्वा च पूर्ववत् खल्वेपु  
 टेद्भ्रजपुटेन च ८१ स्वाङ्गशीतं ततो नीत्वा गुञ्जायुग्मं प्रयो  
 जयेत् । अष्टभिर्मरिचैर्युक्तः कृष्णात्रयमथापि वा ८२ वि  
 लोक्यद्वेयादोषादिते कैवरसरक्षिका । सर्पिषामधुना वापि  
 देयादोषाद्यपेक्षया ८३ लोकनाथसमं पथ्यं कुर्वात्स्वस्थम  
 नाः शुचिः । श्लेष्माणेग्रहणीकासंश्वासं च यमरोचकम् ।  
 मृगाङ्गोयं रसो ह्यन्यात्कृशत्वं बलहानिताम् ८४ सूतात्पाद

करे ॥ ७५ ॥ कचनारिका रस वा भरणीरस वा करिबारस में घोटै जगतक  
 गोला रंधजाय ॥ ७६ ॥ सोने का चौध्याई मुद्रागादे और सोने का दूना मोती  
 का घनाटे ॥ ७७ ॥ इनसभके समान गंधकटे सब तरलपरि गोलावांधि रस क  
 पड़ा लपेटे ॥ ७८ ॥ फिर माटी से लेस मुद्राय शरावसंपुट करि ॥ ७९ ॥ लोह  
 पूरित पात्रमें संपुटपरै उसका मुंहसुखाय गजपुट में फूंकटे ॥ ८० ॥ दंडाभयेपर नि  
 कारिके सोने के समान पारा थौर सोने समान गंधकको युक्तकरि पूर्ववत् रसमें  
 स्वरलपरि फिर उसीक्रिया से गजपुट में फूंक ॥ ८१ ॥ जय डंढाहो तय निकालि  
 दो गुंजा रस आठ धिरव वा तीन पीपरि के संगटे ॥ ८२ ॥ थौरटोपको विचारि  
 के भांपर रचीभर घाट वा वाद समझके देई थी अथवा शहदके साथ टोप वि  
 चारिके देना चाहिये ॥ ८३ ॥ पथ्य लोकनाथसदृश इसमें भी देना योग्य है चित्त  
 एवाग्रकरि धृतिपवित्र होकर साथे तौ श्लेष्मा, ग्रहणी, कास, श्वास, क्षयी और  
 अरुधि इन रोगोंको यह गृणांजस दूर करता, न बलहीनको बलवान् करताहुआ,



प्रमाणेन हेमपिष्टिप्रकल्पयेत् । तयोः स्याद्विगुणो गन्धो म  
 देयेत्काञ्चनारिणा ८५ कृत्वागोलंक्षिपेन्मूषासम्पुटेमुद्रये  
 ततः । पचेद्ब्रूधरयन्त्रेण वा सरत्रितयंबुधः ८६ ततः उद्धृत्य  
 तरसर्वं दद्याद्ब्रूधं च तत्समम् । मर्दयेदाद्रं करसैश्चित्रकस्य  
 रसेन वा ८७ स्थूलपीतवराटांश्च पूरयेत्तेन यत्नतः ।  
 एतस्माद्दोषधातुकुर्यादष्टमांशेन टङ्कणम् ८८ टङ्कणाद्वै  
 विषं दत्त्वा पिष्ट्वा सेह्युण्डत्तु धर्कैः । मुद्रयेत्तेन कल्केन वराटा  
 नां मुखानि च ८९ भाण्डे चूर्णं प्रलिप्याथ घृत्वा मुद्रां प्रदाप  
 येत् । गर्ते हस्तोन्मिते घृत्वा पुटेद्गजपुटेन च ९० स्वा  
 द्भृशं तीरसं नीत्वा प्रदद्यात्लोकनाथवंतः ९१ पथ्यं मृगाङ्गव  
 हेयं त्रिदिनं लवणं त्यजेत् ९२ यदाच्छर्दिर्भवेत्तस्य दद्या  
 त्छिन्नारसं तदा ९३ मधुयुक्तं तदा श्लेष्मकोपे दद्याद्दुर्द्धक  
 म् ९४ विरेके भर्जिता भङ्गा प्रदेयात्तदधिसंयुता । जयेत्कासं  
 चयंश्वासं ग्रहणी मरुचिन्तथा ९५ अग्निं च कुरुते दीप्तं

दुर्बलको मोटा करताहै ॥८४॥ ( कफक्षयीपर हेमपोटलीरस ) पारा, पारेकी  
 चौथ्याई सोनाले रसरलकरै जय पीठी होजाय तब दोनोंसे दूनी गंधकठे कचनारके  
 रसमें घोदि गोलाकरै ॥ ८५ ॥ सो मूषायंत्र में भरि संपुटकरी यत्र लपेट माठी  
 लंगाय सुराय भ्रूधरबंधमें फंरुदे भ्रूधरयंत्र एकहाथ गदिरा, लंबा व चौड़ा खोदि  
 तिसमें छोटागडा खोदि औपधरस माठीसे टानि तिसपर विनुवाकंहा कतसी करि  
 षडे गढ़ेमें भरि तीनदिन आंचदे ॥ ८६ ॥ जब इतभावसे शीतलहो तब निकारि  
 समान गंत्रकले अद्रक वा चीतेके रसमें घोदि ॥ ८७ ॥ वही पीलीकौड़ी में भरि  
 औपयका अष्टमांश मुद्रागा ॥ ८८ ॥ मुद्रागे का आधा सिंगिया दोनों सेहूडके  
 दूधमें पीसि कौड़ी का मुख बंदकरै ॥ ८९ ॥ फिर माटीपात्रमें नूनोलेसि कौड़ी  
 में भरि दूसरे दिवस बंधकरि सुद्रितकरि गजपुटेसे आंचदे ॥ ९० ॥ टंदाथये नि  
 कारि लोकरनायकी रीति से सिलावेय मृगांकी रीति से पथ्यदे तीनदिन लोन  
 वर्जितरहै ॥ ९१ ॥ जो छर्दि होय तो मुर्चका रस वा काय मधुयुक्ते कफादि में  
 गुड़ अद्रासस युक्तदे ॥ ९२ ॥ अतीसारमें भूनीभाग व हींग दोनोंके संगदे तथा

कक्रवातंतिमच्छति । हेमगर्भःपरोज्ञेयोरसःपोटलिकाभि  
 धः ९४ रसरुप्रभागाश्चत्वारस्तावन्तःकनकस्यच । तयो  
 र्चपिष्टिकांकृत्वागन्धोद्वाद्दशभागिकः ९५ कुर्यात्कज्ज  
 लिक्रतेषामुक्ताभागाश्चषोडश । चतुर्विंशच्चशङ्खस्य  
 भागैकंठङ्कणस्यच ९६ एकत्रमर्दयेत्सर्वैकनिम्बुकजैर  
 स्त्रैः । कृत्वातेषांततोमोलंमृपासम्पुटकेन्यसेत् ९७ मुद्राद्  
 र्वाततोहस्तमात्रेगतेष्वगौमयैः । पुटद्गजपुटेनैवस्वाङ्क  
 शितंसमुद्धरेत् ९८ पिष्ट्वागुञ्जाचतुर्मानिदद्याद्गव्याज्वसंयु  
 तम् । एकोनत्रिंशद्गुन्मानमरिचैःसहदीयते ९९ राजतेमृन्म  
 त्रेपात्रेकाचजेवापिलेहयेत् । लोकनाथसमंपश्यंकुर्यात्प्रय  
 त्तमानसः १०० कासेश्वासक्षयेवातेकफेग्रहणिकागदे । अ  
 तीसारप्रयोक्तव्यापोटलीहेमगर्भिका १०१ शब्दसूतोविषगन्ध  
 प्रत्येकंशाणसन्मितम् । धूर्तवीजंत्रिशाणंस्यात्सर्वैभ्योद्वि  
 गुणीभवेत् २० हेमाभंकारयेदेषांचूर्णसूक्ष्मंप्रयत्नतः । देयं

कनकसंज्ञायीह्वारा, ग्रहणीय अरुचि इनमें भी देही-व भंगके साथदे ॥ ९३ ॥  
 अग्निदीपन व कफघातनाशन हीकर यह हेमपोटलीरस श्रेष्ठ कहाताई ॥ ९४ ॥  
 ( पुनर्हेमगर्भरस कास पर ) पारा चारभाग व सोना चारभाग इन दोनों की  
 पाँचकरि द्वादशभाग गंधकेदे ॥ ९५ ॥ व तीनोंको कजलीकरि, सोलहभाग मोती  
 चौदीस भाग शङ्ख एकभाग सुहागा ॥ ९६ ॥ ये सब एकत्र करि पके, चौबूके रस  
 में जोदि गोलावांषि मृपापुट में धरि मुद्रांसाधि ॥ ९७ ॥ सुखाय दार्धभर सुमिको  
 सोदि उत्तम धराय हृथभर कंडा भरार्थ फुंदि ज्व शीतल होजाये तब भिकारि  
 धरे ॥ ९८ ॥ त्वासरिची रस मिर्च छन्तीस गोवृनमें पीसिदेवे ॥ ९९ ॥ चांदीचो पाटो  
 वा कांचके पात्रमें धरि खिलौवै और लोकनाथ रस सम पृथक् यतावै ॥ १०० ॥ तो  
 यह कंठा, रसास, ज्ञायी, चंत, कफ, ग्रहणीय अतीसारवाले को देयः यह हेमगर्भः  
 पोटली, इन सबभोगनको, हरती है ॥ १ ॥ पारा गंधक विष शोषे चारि चारि  
 पारो अनुवाधी व चारदमारो सबका यत्ना ॥ २ ॥ चोक चोक विना फूट सब युक्त

जस्वीरमञ्जाभिश्चूर्णगुञ्जाद्वयोन्मितम् ३ आर्द्रकश्चर  
 सैर्वापिञ्चरहन्तित्रिदोपजम् । ११ एकाहिकद्वयाहिकवात्तृती  
 श्रवाचतुर्थकम् । विषमञ्चञ्चरहन्त्याहिरव्यातोयञ्चराङ्कु  
 शः १२ दरदंघत्सनाभंषमरिचंठङ्कणंकणाम् । चूर्णयत्सम  
 भागेनरसोह्यानन्दभैरवः १३ गुञ्जकंवाह्निगुञ्जवा बलञ्जा  
 त्वाप्रयोजयेत् । मधुनालेहयेच्चोपिकुटजस्यफलस्यचम् ।  
 चूर्णितकपमात्रन्तुत्रिदोपोत्थातिसारजित् १४ दध्यन्नदा  
 प्रयत्पध्वंगव्याज्यतक्रमेवत्रा । पिपासायांजलंशीतंविज  
 याचहितानिशिः १५ विषंपलमितंसूतः १६ शोणिकश्चूर्णये  
 द्द्वयम् । तच्चूर्णसम्पुटघृत्वाकाचलिप्तशरावयोः १७ मुद्गा  
 दत्वाचसंशोष्यतत्तश्चुल्ल्यानिवेशयेत् । वह्निशनैःशनैः  
 कुर्यात्प्रहरद्वयसङ्ख्यया १८ ततउत्पाद्यतन्मुद्रामुपरि  
 स्थशरावकात् । संलग्नोयोभवेद्भूमःसंगृहणीयाच्छनैःश  
 नैः १९ वायुस्पर्शोयथानस्यात्ततः कूप्यानिवेशयेत् ।

करि सूक्ष्म चूर्णकरि दो गुजा रस जमीरी क ॥ ३ ॥ वा अदरकरस में दे विदोप  
 जनिव ज्वर नाशकरि नित्य अनेवाला, अंतरिया, तिनरिया, चातुर्थक व विषम-  
 ज्वर को यह ज्वराक्षर निरचय कर नाश करताह ॥ ११ ॥ ( आनन्दभैरवरस  
 अतीसारपर ) शुद्ध सिंगरफ, सिंगिया, मिरच, सुहागा ६ तीपरी ये सब स-  
 यानले महाने चूर्णकरिये यह आनन्दभैरवरस ॥ १२ ॥ रागीका बलदेसि एक  
 गुजा या दो गुजा इत्यत्र न कुर्यात्बाल इन दानों को दशभाग पीसि रसयुक्त श-  
 द्दमें पिलाय ज्दावे तो त्रिदोपजन्य अतीसार इहाय ॥ १३ ॥ गज्जका दही को  
 घृत वा मरुत पथ्य भातसाथ साथ उदा पानी पिलावे धार भाग इच्छतिरु  
 धोय वनाय रातको पिलावे ॥ १४ ॥ ( सन्निपातपर लघुचिकित्साभरण )  
 सिंगिया १ पल पाय ४ माश दाना खालकरि दो पर कान के लुक्करी हरे  
 में धरिके ॥ १५ ॥ मुद्गाकरि सुहाय च्छेपर ज्दाय मंदमंद दो पररकी आंचेदय ॥  
 १६ ॥ दाना उदाकरि ऊपर के सरवा मलगा गुआं डोले से वीलले ॥ १७ ॥  
 जिस पात्र में पवन न जातके जरा शीरो में पर मुनीकुम्भे शीरो करिले ॥ सु-

यावत्सूचीमुखेलगतंकूप्यांनिर्यातिभेषजम् ११ तावन्मा  
त्रोरसोद्देशोमूर्च्छितेसन्निपातिति । क्षुरेणप्रच्छितेमूर्धिते  
तोङ्गुल्याच्चर्धयेत् १२ रक्तभेषजसम्पर्कान्मूर्च्छितोपिहि  
जीवाते । तथैवसर्पदष्टस्तुमृतावस्थोपिजीवति । यदाता  
प्रोक्षेत्तस्यमधुरतत्रदीयते १३ सूतधस्मसमगन्धगन्धा  
त्पादमनःशिला । साक्षिकंपिप्पलीव्योपंप्रत्येकंशिलया  
समम् १४ चूर्णयिद्वावयेत्पित्तैर्मत्स्यमायूरसम्भवेः । सप्त  
धाभांशुसंशुष्कदेयगुञ्जाद्वयोन्मितम् १५ तालपर्णीरसै  
श्चानुप्रञ्चक्रोलशृतोपिवा । जलबुन्दोरसोनासन्निपातं  
नियच्छति । जलयोगश्चकर्तव्यस्तेनवीर्यभवेद्रसः १६  
शुद्धसूतंविषगन्धंमरिचंटङ्गुणंकणा । मर्दयेद्दूर्तजैर्द्रावैर्दिन  
मेकंचशोषयेत् १७ पञ्चवक्त्रोरसोनासद्विगुञ्जःसन्निपातहा

चीमुख एक लई समले करे उसकांमुख सुई समानहो उसे सूचीमुख कहते हैं ११  
उससे जितना निकसे ॥ १२ ॥ तिनना सन्निपातका शिर मुड़ाये पढ़ने देय  
जो रक्त निकले उसी घावपर उस रसको अंगुरी से मले ॥ १२ ॥ जो रुधिर  
व रस में मिल जाय तो मूर्च्छित जागे तैसेही सांपका काटा जागे फिर इसे  
इस वचनार से तै आये तब उस रोगी को मधुर अर्थात् भंडेरी, अनार, दुहारा  
व दास्तात्रि का खिलावे ॥ १३ ॥ ( सन्निपात पर जलबुन्दरस ) पाराभ  
स्म समान गन्धककी आध्याई मैनाशुल, सोनाभासी, पीपरि, सांठि, मिच सब  
मैरदिन समान ले ॥ १४ ॥ खुरलकरि मडरी के पित्तमें सात भावनादे तैसेही  
मधुरपित्त में सात भावनादे सुखाय दो गुंजा खनावे ॥ १५ ॥ श्वेत मुसली के  
रसमें आर पंचकोल, सांठि, मिच, पीपरि, चाव व चीता इनके कादे में दे यह  
जलबुन्दरस सन्निपातको दूर करता है जल उण्डा पिये व उण्डे जल से हाथ मुँह  
धोये व जल का स्पृशे राखे तो आंख वल पातीहै सन्निपात को दूर करती  
है ॥ १६ ॥ ( सन्निपात पर पंचयकरस ) शुद्धपारा, सिंगिया, गन्धक,  
मिरच, मुहागा, पीपरि व घट्टाके रसमें एक दिन मर्दनकरे घायमें सुखावे ॥ १७ ॥

अर्कमूलकषायन्तुसत्रूप्रमनुप्राययेत् १८ युक्तं द्वयोर्द्वयं  
 प्रथमं जलयोगं च कारयेत् । रसेनानेन शाम्यन्ति सच्चौद्रेण क  
 फोद्भवाः १९ मध्वार्द्रकरसंचानुपि वेदग्निवितृहये ॥ यथे  
 पृथ्वतमांसाशीशक्तो भवति पावकः २० रसगन्धौ समानांशं  
 धतूरफलजैरसैः । मर्दयेद्दिनमेकन्तु तत्तुल्यं त्रिकटुक्षिपेत् ।  
 उन्मत्तारण्योरसो नाम्ना नस्ये रघात्सन्निपातजित् २१ नि  
 स्त्वग्जेपालबीजं च दशनिष्कं विचूर्णयेत् । मरिचम्पिप्य  
 लीसूतं प्रतिनिष्कं विमिश्रयेत् २२ भावयोजम्बीरजैर्द्रावैः  
 सप्ताहं सम्प्रयत्नतः । रसोयमञ्जनेदत्तसन्निपातं विनाशये  
 त् २३ सूतं टङ्गुलकं तुल्यं मरिचं सूततुल्यकम् । गन्धकं पि  
 प्यलीशुण्ठी द्वौ द्वौ भागौ विचूर्णयेत् २४ सर्वतुल्यं क्षिपेद्दन्ती  
 बीजं निस्तुषितं भिषक् । गुञ्जैर्करैश्च नंसिद्धं नाराचोयं महा  
 रसः । आध्मानं मलविष्टं भुदावर्त्तचनाशयेत् २५

यह पंचक रस दो गुंजा सन्निपात में देठ ती सन्निपात दूर होय ॥ ( म-  
 दारमूल काय ) सौंठि, मिरच व पीपरि के सत्रदे पदी जनेपाने है ॥  
 २० ॥ पथ्य दही भातदे और जलयोग कहे जलमें वैठि ओपरें खापर रस सत्रे  
 देय ती कफजनित उपद्रव अच्छे होय ॥ १९ ॥ यद्रक शब्द सत्रदे ती अग्नि  
 दीपन करे और यथायोग्य तृत, मास खाइ ती अग्नि प्रबन्ध करे ॥ २० ॥ ( स-  
 न्निपात पर उन्मत्तरस ) पारा, गन्धक सम भागदे इस्फुलके रससे सरल  
 करि तिसके समानं त्रिकुटा दे पीसि इस उन्मत्तरसके मानदेने से सन्निपात  
 दूरहोता है ॥ २१ ॥ ( सन्निपात पर अञ्जन ) जमानगोटा दीनि पिचा  
 दूरकरि चालिस भासे चूर्ण करे पिरंच, पीपरि व सौंठि चार चार भागे ले ॥  
 २२ ॥ जंभीरीरस में सांत दिने धोठि अञ्जन करे ती सन्निपात दूरहोय ॥ २३ ॥  
 ( शूलपर नाराचरस ) पारा, सुदागा समभाग करि समान निच, गन्धक,  
 पीपरि व सौंठि दो २ भागले सरले करे ॥ २४ ॥ सब के मर्दान हुडं जमान-  
 गोटा दे एकत्र करि सरलकरे गुंजाय देने से रचन होय यद रुगाच नानरस  
 आ मान, मलविष्टं व उदावर्त्त ये सब रोग नग्य करत है ॥ २५ ॥

दरदंष्ट्रकण्ठशुण्ठी पिप्पलीचैककार्पिकाः-१ हेमाह्लापलमा  
त्रास्याहन्तीबीजंचतत्समम् २६. विचूर्ण्यैकत्रसर्वाणिगो  
दुग्धेनैवसाधयेत् । त्रिगुञ्जैरेषनन्द्याद्विष्टम्भाधमानरोगिषु  
२७ सूतभस्मत्रिभागंस्याद्भागैकहेमभस्मकम् । मृतंता  
मस्यंभागैकंशिलागन्धकतालकम्-२८ प्रतिभागद्वयंशु  
द्धमेकीकृत्यविचूर्णयेत् । वराटान्पूरयेत्तेनक्षार्गीक्षीरेणटङ्क  
णम् । पिष्ट्वातेनमुखंरुद्ध्वामृद्गाण्डेसन्निरोधयेत् २९ शुष्कंग  
जपुटेपक्त्वाचूर्णयेत्स्वाङ्गशीतलम् । रत्नोरंजमृगाङ्गोयंच  
तुंगुञ्जःक्षयापहः । दशपिप्पलिकाक्षाद्वैरेकोनत्रिशद्वप  
णैः ३० शुद्धंसूतंद्विभागन्धं कुर्यात्खल्वेनकञ्जलीम् । त्रयोः  
समंतीक्षणेचूर्णमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ३१ द्विनामान्तेकृतंगो  
लंतास्रपात्रेनिधापयेत् । आच्छाद्यैरपडपत्रेणयामोद्धेत्युष्णं  
ताभवेत् ३२ धान्यराशौन्यसेत्पश्चाद्दहोरत्रात्समुद्धरेत् ।

( शुद्धपर इच्छाभेदीरस ) शुद्धशिगरफ, मुद्गागा, सौंठि कपीपरि कर्प-कर्प  
भर, चीक पलभर जमालगोटा-पलभर ॥ २६ ॥ सत्र सरलकरि गोदूध में तीन  
शुंजा रचनार्थ देय इत इच्छाभेदी रससे विष्टय २ आमान दरहो ॥ २७ ॥  
( क्षयीपर रजमृगांकरस ) पाराभस्म-तीन भाग, सोनाभस्म एक भाग  
ताम्रभस्म एक भाग, मन्शिल, शुद्धगन्धक, हरताल ॥ २८ ॥ दो २ भाग सत्र  
योद्वि कौडी में भरि, पकरी के दूध में मुद्गागापीसि, कौडीका, सुग्ध मुँदि माटी  
पात्रमें धरि सम्पुटकरि ॥ २९ ॥ मुग्धाय गजपुष्पै, फूँद्रेय जघ सिरस्य तत्र सरलकरे  
इस राजमृगांकरसको चारशुंजा देय तौ जघी जघदोषभनोराने दश पीपरि शूट  
या उर्नास मिरच शद्ध सुद्धदेय ॥ ३० ॥ ( क्षयीपर त्र्ययन्निरस ) शुद्ध  
पारेसे दून्ने शुद्धगन्धक सग्लकरि कमलीकरि दोनोंके समान पीलादकी भस्मले  
सत्रको पीकुवारके रसमें ॥ ३१ ॥ दो पहरभर योद्वि रामन में रत्न रंदाप्रसे हापि  
थापि पहरभर दूधमें धरे उष्णहोय ॥ ३२ ॥ तत्र नाजकी रागिमें एक दिनरान दारि

संपीच्यगालश्लेहस्रेततोवारितरंभवेत्-३३ त्रिकटुत्रिफली  
 लाभिर्जातीफललवङ्गकैः । नवभागोन्मितैरतैःसमःपूर्वर  
 सोभवेत्-३४ सञ्चूर्ण्यलोडयेत्क्षौद्रैर्भक्ष्यंनिष्कद्वयद्वयम् ।  
 अथमग्निरसोनाम्नाक्षयकांसनिकृन्तनः-३५ सूतार्धो ग  
 न्धकोमर्द्योयामैकं कन्यकारसैः । द्वयोस्तुल्यताम्रपत्रं पूर्वक  
 लकेनलेपयेत्-३६ दिनैकंस्थालिकायत्रपक्वमादायचूर्णये  
 त् । सूर्यावतोरसोद्येषद्विगुञ्जःश्वासजिद्धवेत्-३७ शुद्धसू  
 तंमृतलोहंताप्यंगन्धकतालकम् । पथ्याग्निमन्थनिर्गण्डी  
 त्र्यूषणंटङ्कणंविषम्-३८ तुल्यंशंमर्हयेत्खल्वेदिनांनिर्गुण्ड  
 काद्रवैः । मुण्डीद्रवैर्दिनैकन्तुद्विगुञ्जवटकीकृतम्-३९ भक्ष  
 येद्वातरोगातीनाम्नास्वच्छन्दभैरवः । रास्नामृतादेवदारु  
 शुण्ठीवातारिजंशृतम् । सगुग्गुलुं पिबत्कोष्णामनुपानंसुखा  
 वहम्-४० दग्धान्कपर्दिकांनिष्पट्ट्वात्र्यूषणंटङ्कणंविषम् !

कै निवारि लेप फिर रासलकरि यस्मिं छानिले तत्र जलपर डारै तौ तिरैगी ॥  
 ३३ ॥ त्रिकुटा त्रिफला इलायची जामफल लोंग ये सय नवभाग इन सब समान  
 स्वपमग्निरस ले ॥ ३४ ॥ ये सय स्वरलकरि शहर में दो निष्क राय यह भग्नि  
 रस क्षयी व कास को नाश करता है ॥ ३५ ॥ (श्वासपर सूर्यावत्तरस)  
 पारा की आधी गन्धक पहरमर धातुवार के रसमें,गोटि दोनों के सम तावेवा पात्र  
 ले तिसपर लेपकरि यह कजरी ॥ ३६ ॥,एक दिन थालीयंत्र में पकाय ऐंघले या-  
 लिकापन्न माटीकी हांडीमें लोनभरि तिसपै तुम्बेका पत्रपरि मुंहमूँदि कपडौटी  
 करि फूंक देय यह सूर्यावत्तरस पीसि-दो, गुंजा खनारै तौ रास नाशकरै ॥३७॥  
 (स्वच्छन्दभैरवरस) शुद्धपारा,मराजोहा, सोनामासी, गंधक,हरताल, इड,  
 अरणी,मेवड़ी, त्रिकुटा, मुनासुहागा, सिंगिया, मेवड़ीरस ॥ ३८ ॥ त्रिकुटा, मुना  
 सुहागा, सिंगिया व मेवड़ी रसमें सब मिलाय-समान स्वरल करि फिर,एक दिन  
 गोरखमुंडीके रसमें रासल करि दो गुंजाकेसमान गोलीकरै ॥ ३९ ॥ यह स्वच्छन्द  
 भैरवरस,वातरोगी को खिलावै तथा रासन, सुर्य, देवदारु, सोंठ व रण्डकीजुद्ध  
 इनका-नादाकरि गुग्गुलुयुक्त गरम द्रव्यके सङ्ग पिलावै यह, धनुपान सुगंधाधी

गन्धकंशुद्धसूतञ्चतुल्यंजम्बीरजैर्द्रवैः ४१ मर्दयेद्भक्षये  
 न्मापंमरिचाज्यंलिहेदनु । निहन्तिग्रहणीरोगंपथ्यंतक्रौद्  
 नंहितम् ४२ मृतंताम्रमंजाक्षीरैःपाच्यंतुल्यैर्गतद्रवैः ४३ त  
 त्ताम्रंशुद्धसूतञ्चगन्धकंचसमंसमम् ४३ निर्गुण्डीस्वर  
 सेर्मर्द्यंदिनंतद्रोलकंत्रजेत् । यामैकंत्रालुकायन्त्रेपाच्यंयोज्यं  
 द्विगुञ्जकम् ४४ बीजपूरकंमूलञ्चसजलंचानुपाययेत् ।  
 रसस्त्रिविक्रमोनाम्नामासैकेनाश्मरीप्रणुत् ४५ तालंता  
 प्यंशिलांमृतंशुद्धसैन्धवकङ्कणाम् । समांशंचूर्णयेत्खल्वे  
 सूताद्द्विगुणगन्धकम् ४६ गन्धतुल्यंमृतंताम्रंजम्बीरै  
 दिनपञ्चकम् । मर्द्यषड्भिःपुटैःपाच्यंभूधरेसम्पुटेपथेत् ।  
 पुटेपुटेद्रवैर्मर्द्यंसर्वमेतत्तुषट्पलम् ४७ द्विपलंमारितंताम्रं  
 लोहभस्मचतुष्पलम् । जम्बीराम्लेनतत्सर्वंदिनंमर्द्यंपुटे  
 ह्यु ४८ त्रिंशदंशंविषंचास्याक्षिप्त्वासर्वंविचूर्णयेत् । म

हे ॥ ४० ॥ ( हंसपोटली ग्रहणीपर ) भुनी कौडी पीसि साँठ, मिर्च, पीपरि,  
 सुहागा, सिंगिया, गन्धक और शुद्धपारा इन सब द्रव्योंको समानले जंभीरी के  
 रसमें ॥ ४१ ॥ खरलकरि माश एकभर मरिच व बीकेसाथ राय तब ग्रहणी  
 नाशहोय माठा भात पथ्य देय ॥ ४२ ॥ ( त्रिविक्रमरस अश्मरीपर ) मरा  
 तांया, बकरी दूध समानले किसी पात्रमें घरि आंचदे दूधतरे उतारिले तत्र तांवे  
 के समान शुद्धपारा, गन्धक ॥ ४३ ॥ मेवड़ीके रसमें एक दिन घोटि गोलींकरि  
 म्सायन्त्र में भरि बालुकायन्त्र में आंचदे तत्र टो गुंजा खिलावै ॥ ४४ ॥ विजारा  
 की जड़के रसमें या काड़ेमें यह रसदेय इस रसका त्रिविक्रम नामहै माशेभर सेवन  
 करै तो पपरीको दूर करता है ॥ ४५ ॥ ( कुष्ठपर महातालेचर रस ) हर-  
 ताल, सोनामासी, मैनशिल, पारा, सैन्धव व सुहागा ये सब समान खरलकरि पारे  
 से दूनी गन्धकदे ॥ ४६ ॥ गन्धककेतुल्य मरा तांया जंभीरी के रसमें पांच दिन  
 घोटि शराबसम्पुट में घरे कपड्डी करि भूधरयन्त्र में फूंकदे ऐसे ढःगार फूंकदे  
 फिर निकारि विजासण में पांच दिन घोटै पूर्वस्तु आंचदे तब छःपल रसले ॥  
 ४७ ॥ मरा तांया टोपल व लोह मरा चारपल ये दोनों जंभीरी रसमें एक दिन



हिषाज्येनसम्मिश्रंनिष्कार्द्वैभक्षयेत्सदा ४९ मध्वाज्यैर्त्रा  
 कुचीचूर्णंकर्षमात्रंलिहेदन् । सर्वकुष्ठंनिहन्त्याशुमहाता  
 लेश्चरारसः ५० सूतभस्मसमोगन्धो मृतायस्ताम्रगुग्गु  
 लू । त्रिफलाचमहान्म्वश्चित्रकश्चजिलाजतु ५१ इत्ये  
 तच्चूर्णितंकुर्यात्प्रत्येकंशाणषोडश । चतुष्पष्टिकरञ्जस्य  
 बीजचूर्णंप्रकल्पयेत् ५२ चतुष्पष्टिमृतंचाभ्रंमध्वाज्याभ्यां  
 विलोडयेत् । स्निग्धभाण्डेषृतंखादेद् द्विनिष्कंसर्वकुष्ठन्  
 त् । रसःकुष्ठकुठारोयं गलत्कुष्ठनिवारणः ५३ शुद्धंसूतं  
 द्विधागन्धमर्द्यंकन्याद्रवैर्दिनम् । तद्गोलांपिठरीमध्येताम्र  
 पात्रेणरोधयेत् । सूतकाद्विगुणेनैवशुद्धेताम्रोमुखेनच ५४ पा  
 र्श्वेभस्मनिधायथपात्रोर्ध्वगोमयंजलम् । किञ्चित्किञ्चि  
 त्प्रदातव्यंचुल्लयांयामद्वयंपवेत् । चण्डाग्निनातदुद्धृत्य  
 स्वाङ्गशीतंसमुदरेत् ५५ काष्ठादुम्बरिकावह्नित्रिफलारा

घोटि दश गोइटा में आचदे ॥ ४८ ॥ इस भस्मका तीसवा अंश सिंगियादे तारल  
 करै तन दोमाशे भसके धीमें नित्य साय ॥ ४९ ॥ इसके पीडे बहुचीका चूर्ण दश  
 माशे गहदुक्त पीके साथ साथ तौ सब कुष्ठ नाशदीये इसका नाम महातालेश्चर  
 है ॥ ५० ॥ ( कुष्ठकुठाररस ) मग्न भस्म, गन्धक, मसालोहा, ताम्र गुग्गुलू,  
 त्रिफला, चकावन, चीवा और शुद्धशिलाजीत ॥ ५१ ॥ ये द्रव्य सोलहशाण  
 चीसंति शाण करेज धीनका चूर्ण ॥ ५२ ॥ अभ्रक भस्म ६४ शाणसत्र इकट्ठी  
 करि शहैट और धीमें मिलाय समान घृत भाडमें भरि धरि इसे आठमाशे सिलारै  
 तौ सब कुष्ठ दूरकरे यह कुष्ठकुठार रस गलित कोड भी नाशकरता है ॥ ५३ ॥  
 ( उदपादित्परस ) शुद्ध पात्र च दूनी मन्धक एक दिन धीकुवार को रसमें  
 मदेन करि गोली वापि माटीके पात्रमें धरि पारेसे त्रिगुणा तावेकी गहरी कटोरी  
 बनाय उस भाटीपात्र के भीतर गोलेपर ढापि किसी वस्तु से निःसंधिकरि बंद  
 करि ॥ ५४ ॥ चागों और ढकों के रातभरि चूल्हे पर धरि टोपहर आचदेय  
 और उस तावेके ढकनेपर पानीमें गोबर धो लि थोडा थोडा छोडता जाय अन्न  
 में तीव्र आचदेय देडा भये उतागि ॥ ५५ ॥ कठगुलर, चीवा, त्रिफला, अफ-

जघ्नकम् । विडङ्गवाकचीवीजं काथयेत्तेन भावयेत् ५६  
 दिनैकमुदयादित्योरसोदेयोद्विगुञ्जकः । विचर्चिकांदद्दु  
 कुष्ठं श्वेतकुष्ठञ्च नाशयेत् ५७ अनुपानं प्रकुर्वीत वा कु  
 चीफलचूर्णकम् । खादिरस्य कपायेण समेन परिपाचितम्  
 ५८ त्रिशाणं वा गत्रां क्षीरैः क्वाथैर्नात्रिफलोद्भवैः । त्रिदिना  
 न्ते भवेत्स्फोटः सप्ताहं द्वाकिलासके ५९ नीलंगुञ्जांचका  
 सीसंघत्तरंहंसपादिकम् । सूर्यभक्तांघचाङ्गेरीपिष्ट्वा तुल्या  
 निलेषयेत् ६० स्फोटस्थानप्रशान्त्यर्थं सप्तरात्रं पुनः पुनः ।  
 श्वेतकुष्ठं निहृत्वांशुसाध्यासाध्यं न संशयः ६१ अपरं श्वित्र  
 लेपोपिकथ्यतेऽत्र भिषग्वरैः । गुञ्जाफलाग्निचूर्णचलेपितं  
 श्वेतकुष्ठनुत् । शिलापांमार्गभस्मानिलिप्तं श्वित्रं विनाश  
 येत् ६२ शुद्धमूतं चतुर्गन्धपलं यामं विचूर्णयेत् । मृतताम्रा  
 अलोहानांदरदचपलंपलम् ६३ सुवर्णैरजतंचैव प्रत्येकं द

लतासपत्र, विडंग व बकुची बीज इनका काथकरि रसकी भावनादे ॥ ५६ ॥  
 एक-दिन घोटि यह उदयादित्य रस दो गुंजा खिनाने से विचर्चिका, दाद व  
 श्वेतकुष्ठ अच्छा होनाय ॥ ५७ ॥ अनुपान सतिरसार काथ वा गऊका दूध  
 वा त्रिफले के काथमें तीन शाण बकुची चूर्ण दो गुंजा रसयुक्त राय ती तीन  
 दिनके अन्तमें स्फोट कुष्ठ दूरहो सात दिनके अन्तमें सफेद कुष्ठ दूरहो ॥ ५८ ॥  
 ५९ ॥ ( श्वित्रपर लेप ) नीलपत्र, गुंजा, कसीस, धतूरा, हंसपत्र, सूर्यमुखी  
 फार छोटी लुनियां ये सब सम भाग लेप करने से ॥ ६० ॥ जहां फूटाहो तहां  
 ती सात दिन में गलितकुष्ठ अच्छा होय और श्वेतकुष्ठ साध्य वा असाध्य दूर  
 होय ॥ ६१ ॥ इसीपर श्रेष्ठ वैद्य और लेप कहते हैं गुंजी व चीताको जल में  
 पीसि लगाने से श्वेतकुष्ठ दूरहोय मैंनाशिन चिरचिरा रास पीसि पानी के साथ  
 लेपकरै तो श्वेतकुष्ठ दूरहोय ॥ ६२ ॥ ( कुष्ठपर, सर्वेद्रवर रस ) शुद्ध  
 पाप एकपल, गन्धक चारपल एकपहर खरल कर मरताया, अभ्रक, लोह,  
 रंग ये शुद्ध सब एक एक पल ॥ ६३ ॥ मरसोना व चांदी एकपल आरौ

अध्याय १२ ।

शनिष्ककम् । माषैकं मृतवज्रञ्चेतालं शुद्धपलद्वयम् ६४  
जम्बीरोन्मत्तवासाभिः स्नुह्यैर्कविषमुष्टिभिः । मर्द्यहचारिजैः  
द्रावैः प्रत्येकेन दिनं दिनम् ६५ एवं सप्तदिनं मर्द्यैतद्गोलं ब्रह्म  
वेष्टितम् । बालुकायन्त्रगंस्वेद्यं त्रिदितं लघुवह्निना ६६ आ  
दाय चर्णयेच्छूलक्षणं पलैकं योजयेद्विषम् । द्विपलं पिप्पली  
चूर्णमिश्रं सर्वेश्वरोरसः ६७ द्विगुञ्जो लिह्यते ज्ञाद्रेः सुप्तिमं  
डलकुष्ठजित् । वाकुचीदेवकाष्ठं च कर्षमाणं मुचूर्णयेत् । लि  
हेदेरण्डतैलाक्तमनुपानं सुखावहम् ६८ हेमाह्वापञ्चपलि  
कांक्षिप्रातः कघटे पचेत् तत्रैर्जाणैः समुद्धृत्य पुनः क्षीरे घटे  
पचेत् । क्षीरे जीर्णं समुद्धृत्य क्षालयित्वा विगोषयेत् ६९ त  
च्चूर्णं पञ्चपलिकं मरिचानां पलद्वयम् । पलैकं मर्च्छितं सूतमे  
कीकृतवानुभक्षयेत् । निष्कैकं मुतकुष्ठार्तः स्वर्णक्षीरीरसाह्य  
यम् ७० भस्मसूते मृतं ज्ञातं मुण्डमस्मशिलाजतु । शुद्धं ना  
गं शिलाठयोपत्रिफलांजोलबीजकम् ७१ क्षिपित्थं रजनी

चूर्णभृङ्गराजेन भावयेत् । विंशद्द्वारं विशो ज्याथमधुचुक्कालि-  
 ह्वरसदा ७२ निष्कमात्रं हरेन्मेहान्मेहवद्धरसोमहान् । मं-  
 हानिम्बस्य बीजानि पिप्पुद्धाषट्सम्भितानि च ७३ पलं त-  
 षडुलतोयेन घृतनिष्कद्वयेन च । एकीकृत्य पिबेच्चानुहन्ति मे-  
 हं चिरन्तनम् ७४ चतुःसूतस्य गन्धोष्ठीरजनीत्रिफलाशि-  
 वा । प्रत्येकं च द्विभागं स्यात्त्रिवृज्जैपालचित्रकम् ७५  
 प्रत्येकं च त्रिभागं स्यात्त्र्यषदन्ती च जीरकम् । प्रत्येकमष्ट-  
 भागं स्यादेकीकृत्य विचूर्णयेत् ७६ जयन्ती स्नुक्पयोभृङ्गव-  
 ह्निवातारितैलकैः । प्रत्येकं नक्रमाद्गन्धसप्तवारं पृथक्पृ-  
 थक् ७७ महावह्निरसो नाम निष्कमुष्णजलैः पिबेत् । वि-  
 रेचनं भवेत्तेन तक्रभक्तं ससेन्धवम् ७८ दिनान्ते दापयेत्पथ्यं  
 वर्जयेच्छीतलं जलम् । सर्वोदरहरः प्रोक्तो मूढवातहरः परः  
 ७९ गन्धकं तालकं ताप्यं मृतताचं मनःशिला । शुद्धं सूतं च  
 तुल्यांशं मर्दयेद्भानयेद्दिनम् । पिप्पल्यास्तुकपायेणवर्जी

निकला, भूवेरीकी गूदी ॥७१॥ कंधा और हल्दी इन सबका चूर्ण भंगोके रसमें  
 घोटें जय सूगजाय तत्र शठ मिलाय चाटै ॥ ७२ ॥ ४ मासे नित्यखाय तो  
 भंगेह नाशहोय इस रस का मेहखद नाम कहते हैं यवायन के पिया छः पीसि  
 लेय ॥ ७३ ॥ चारि पैसाभर चायलका धोवन आठमासे दी सत्र मिलायके  
 पियै तो बहुत दिनी प्रमेह दूर होताई ॥ ७४ ॥ ( जलोदर पर चक्षिरस )  
 पारा पल चार, गन्धक पल आठ, हल्दी, त्रिफला व हड ये सत्र दो २ पल, नि-  
 शोय, जैपाल और चीता ॥ ७५ ॥ ये सत्र तीन २ पल, त्रिकुटा, जमालगोटे  
 की जड़ और इत्रेत जीरा आठ २ पल सब मिलाय सरल करै ॥ ७६ ॥ अरुणी  
 वा रस सहृद्दृष भंगरागा चीतारस सकादा रेंडीका तेल इनमें क्रमसे सातसात  
 भाग ॥ ७७ ॥ यह महावहिरस चार मासे मुहमें धरि गरमपानी से उतारि  
 जाय तत्र मल निरे सन्धाको रेचन के पीड़े पच्य मट्टा भात संधपलोन देकर  
 गरम जल पियै सब पेटके रोग दूरहोयै व भूदयात दूरहो ॥ ७८ ॥ ७९ ॥  
 (धुन्नपर विनोर्धररस ) शुद्ध गन्धक, हरताल, सोनामाली, मरातावा,

क्षीरेण भावयेत् ॥ ८० ॥ निष्कार्द्वं भक्षयेत्क्षौद्रैर्गुल्मं ह्रीं हि । दिकं  
जयेत् । रसो विद्याधरो नाम गोमूत्रं च पिवेदनु ॥ ८१ ॥ टङ्कणं  
हारिणं शृङ्गरवर्णं शुल्बं मृत्तरसम् । दिनैकमाद्र्द्रं कद्रावर्मर्च्चैरु  
द्धापुटेपचेत् ॥ ८२ ॥ त्रिनेत्राख्योरसः रोच्यं माषं मध्वाज्यकैलि  
हेत् । सैन्धवं जीरकं हिङ्गुमध्वाज्याभ्यां लिहेदनु । पक्तिशूलं  
हरत्याशुमासमात्रं न संशयः ॥ ८३ ॥ शुद्धसूतं द्विधा गन्धयामै  
कं मर्दयेद्दृढम् । द्वयोस्तुल्यं शुद्धताम्रं सम्पुटेतं निरोधयेत्  
॥ ८४ ॥ ऊर्ध्वाधोलवणं दत्त्वा मृद्गाण्डे धारयेद्विषक् । ततो गज  
पुटेपक्त्वास्त्राङ्गशीतं समुद्धरेत् ॥ ८५ ॥ सम्पुटं चूर्णयेत्सूक्ष्मं  
पर्णखण्डे द्विगुल्लकम् । भक्षयेत्सर्वशूलार्तो हिङ्गुशुण्ठीसर्जौ  
रकम् ॥ ८६ ॥ वचामरिचजं चूर्णं कर्षमुष्णजलैः पिवेत् । असाध्यं  
नाशयेच्छूलं रसोयं गजकेशरी ॥ ८७ ॥ शुद्धसूतं विषं गन्धमज  
मोदाफलत्रयम् । सर्जक्षारं यवक्षारं वह्नि सैन्धवजीरकौ ॥ ८८

मैनशिल और पारा सत्र समानले खरल करि फिर पीपरि कापमें दिनभर खरल  
करै एक दिन सेंद्रुड दूप में खरल करै ॥ ८० ॥ दो माये शहद सत्र चाटै तौ  
। गुल्म व छीहा दूरहोय यह विद्याधर रस साथ ऊपर से गोमूत्र पिये ॥ ८१ ॥  
( त्रिनेत्ररस पक्तिशूलपर ) सुहागा, हरिणभृंग, सोना, तांजा और पारामरा  
एक दिन अदरकके रसमें घोटि गजपुटेमें फूंकदे ॥ ८२ ॥ यह त्रिनेत्ररस माशा  
भर घृत शहद में चाटै तिसपर सैधव, जीरा, होंग, घृत और शहद चाटै यों मास  
भर चाटनेसे पसुरी की समस्त पीडा दूरहोय ॥ ८३ ॥ ( शूलपर गजकेशरी  
रस ) शुद्धपारा व दूना शुद्ध गन्धक-दोनों बलपूर्वक घोटि तिसके समान शुद्ध  
तापेके कुटके करि कजली में मिलाय सम्पुटकरै ॥ ८४ ॥ फिर माटी के पात्रमें  
नोन बीचमें सम्पुटगाडि गजपुट आचदे उषदाभये निकाले ॥ ८५ ॥ तब खरल  
करि पकेपान में दो गुंजारस सवावै तौ घेटत शूल घिटै और उसीपर भुनीहोंग,  
सोंठ, जीरा ॥ ८६ ॥ वच और मरिच इनका चूर्ण उष्णोदकके साथ पिये तौ प्रसाध्य  
शूल भी नाश होजाय यह गजकेशरी रस कहाता है ॥ ८७ ॥ ( मन्दाग्नि  
पर अग्निनतुण्डीरस ) शुद्ध पारा, विष, गन्धक, अजमोद, त्रिफला, सञ्जी

सौवर्चलं विडङ्गानिसामुद्रं त्र्युषणं समम् । विषमुष्टिसर्वं  
 तुल्यं जम्बीरान्लेन मर्दयेत् । मरिचाभां वटीं खदेद्वह्निमान्द्य  
 प्रशान्तये ८९ शुद्धसूतं विपंगन्धं समं सर्वं विचूर्णयेत् । मरि  
 चं सर्वतुल्यां शं कण्टकार्याः फलद्रवैः । मर्दयेद्वाचयेत्स  
 र्वमेकं विंशतिवारकम् ९० चटीगुञ्जात्रयं खादेत्सर्वाजीर्णप्र  
 शान्तये । अजीर्णकण्टकश्चायं रसो हन्ति विसूचिकाम् ९१  
 मृतं सूतं मृतं ताद्यं हिङ्गुपुष्करमूलकम् । सैन्धवं गन्धकं तालं क  
 टुकीं चूर्णयेत्समम् ९२ पुनर्नवादेव दालीनिर्गुण्डीतन्दुली  
 यकैः । तिक्तकोशातकी द्रावीर्दिनैकं मर्दयेद्दृढम् ९३ माषमा  
 त्रिलिहेत्त्रौद्रैरभं मन्यानभैरवम् । कफरोगप्रशान्त्यर्थं छिन्ना  
 काथं पिबेदनु ९४ सूतहाटकवज्राणि ताम्रलोहं च माक्षिकम् ।  
 तालं नीलाञ्जनं तु तथ महिफेनं समांशकम् ९५ पञ्चानां लवणा  
 नां च भागमेकं विमर्दयेत् । वजीचीरैर्दिनैकं तरुद्धातं भूधरे

जदावार, चीता, सैन्धव, जीरा ॥ ८८ ॥ कालानोन, विडङ्ग, पागालोन और बिजुटा  
 ये सब समान भागले और सबके समान कुचलाले जमीरीके रसमें घोटि मरिच  
 सम गोली वापि राय इस अग्निगुणैरससे मन्दानि दूर होजाती है ॥ ८९ ॥  
 ( विसूचिका ( हैजा ) पर अजीर्णकण्टकरस ) पारा, सिंगिया और  
 गन्धक ये तीनों शुद्ध सबसम भागले सरल करि सबके समान मरिचदे भटक  
 देवा फलके रसमें मिजोय इफीसवार घोटि ॥ ९० ॥ तीनरची भर घटी बनाय  
 कर खावे तो इस अजीर्णकण्टकघटी के खाने से सब अजीर्ण शान्त होय और  
 विसूचिका को हने ॥ ९१ ॥ ( अथ मन्यानभैरव ) मृतक पारा व तांजा,  
 हींग, पुष्करगूल, सैन्धव, शुद्ध गन्धक, इरताल और कटुकी ये सब सम भाग  
 सरल करि ॥ ९२ ॥ गदापुरैना, वंदाल, मेरडी, चौराई और बहुचीतोरई इन  
 सबके रसमें एक एक दिन बलपूर्वक क्रमसे घोटि ॥ ९३ ॥ माशाभर शहद  
 युक्त नित्य खाय यह म्यानभैरवरस कहाता है इसपर कफरोगनाशार्थं गुर्च का  
 काथं पिबे ॥ ९४ ॥ ( अथ चोतनाशकरस ) शुद्धपारा, शुद्धसोना, शुद्धहीरा, शु  
 द्दलोहा, शुद्धमौनामासी, शुद्धरत्नाल, शुद्धमुग्गा, शुद्धनीतिवा और अफीम ये

पचेत् ६६ माषैकमार्द्रकद्रावैर्लेहयेद्दातनाशनम् । पिप्प  
लीमूलजंक्राथंसकृष्णमनुषाययेत् । सर्वान्वातविकारांस्तु  
निहन्त्याक्षेपकादिकान् ६७ कनकस्याष्टभागाःस्यु सूतो  
द्वादशभिर्मतः । गन्धोपिद्वादशप्रोक्तस्ताधंशाणद्वयोन्मि  
तम् ९८ अन्नकस्यचतुःशाणंमाक्षिकस्यद्विशाणिकम् ।  
वद्भोद्विशाणःसौवीरंत्रिशाणंलोहमष्टकम् ९९ विषंत्रिशा  
णिकंचैवलाङ्गलीपलसन्मिता । मर्दयेद्दिनमेकञ्चरसैरम्ब  
फलोद्भवैः २०० दद्यान्मृदुपुटंवह्नौततश्चूर्णितुकारयेत् ।  
माषमात्रोरसोद्वेयः सन्निपातेसुदारुणे १ आर्द्रकस्वरसै  
नेवरसोनस्यरसेनवा । किलासंसर्वकुष्ठानिविसर्पचभगुन्द  
रम् । ज्वरंगरमजीर्णचहरेद्रोगहरोरसः २ रसोगन्धस्त्रि  
त्रिकर्षौकुर्यात्कज्जलिकांद्वयोः । ताराभ्रताखवङ्गाहि  
साराश्चैकैरुकार्षिकाः ३ शिशुज्वालामुखीशुष्ठीविल्वेभ्य

समानभाग ॥ ६४ ॥ एक भागमें पांचोलीन ये सत्र द्रव्यले एकदिन सैहूँडके दूध  
में खरलकरै संपुट में राखि भूररथत्रमें पचावै ॥ ६५ ॥ माशेभर रस अदरकके  
रसमें मिश्रित करि खाये तो सत्र वायु नाश होय अथवा पिपरामूल काप में पीपरि  
मिलायके देय तो सत्र दात विकार आक्षेपकादि निलाय जायें ॥ ६७ ॥ (सन्निपात  
पर कनकसुन्दर रस ) आठभाग सोनाभस्म, बारहभाग पाराभस्म, शुद्धग-  
न्धक बारहभाग, दोशाण ताम्रभस्म ॥ ६८ ॥ अन्नकभस्म ४ शाण, सोनामासी  
भस्म २ वद्भ २ सुरमाभस्म ३ लोहाभस्म ८ ॥ ६९ ॥ विष ३ पल, करियारी  
पलभर ये द्रव्य और रस एक दिन जम्बीरी, नींबू में खरलकरै ॥ २०० ॥  
संपुटकगि थोडी आचट्टे फूँकि फिर खरलकरै मागामर सिलायै तो अत्यन्त वदा  
हुआ सन्निपात दूरहोय ॥ १ ॥ अदरक वा लहसुन के रसमें सिलायै तो, कि  
लास, सर्वकुष्ठ, विसर्प, भगंदर, ज्वर, विषविकार और अजीर्ण इन रोगों को यह  
कनकसुन्दर रस हरताहै ॥ २ ॥ ( सन्निपात पर भैरवरस ) पारा ३-कर्प व  
गन्धक ३ कर्प इनदोनोंको घोटि कजलीकरि तागा, चांदी, पीतर, बंग और पौलाट  
ये पाचोभस्म कर्पभर ॥ ३ ॥ सहिजन ज्वालामुखी व साँठि का कादा बेलके, फल

स्तन्दुलीयकात् । प्रत्येकंस्वरसैःकुर्याद्यामैकैकंविमर्दये  
 त् ४ कृत्वांगोलंघृतं वस्त्रैर्लवणैःपुरितंन्यसेत् । काचभाण्डे  
 ततःस्थाल्यांकाचकूर्पानिवेशयेत् । बालुकाभिःप्रपूर्याथ  
 वह्निर्यामद्वयंभवेत् ५ ततउद्धृत्यतंगोलंचूर्णयित्वाविमि  
 श्रयेत् । प्रवालचूर्णकर्षणं शोणमात्राविषेणच ६ कृष्णस  
 पिस्यगरलैर्दिवसंभावयेत्तथा ६ तगरमुशलीमांसीहेमाह्ला  
 वितसःकणा । नीलिनीपत्रकंचैलाचित्रकश्चकुटेरकः ७ श  
 तपुष्पादेवेदालीधत्तुरागस्त्यमुण्डिकाः । मधुकजातिमद  
 नारसैरेषांविमर्दयेत् । प्रत्येकमेकवेलंचततःसंशोष्यधारये  
 त्बीजपुरार्द्रकद्रावमरिचैःषोडशोन्मितैः । रसोद्विगुञ्जाप्र  
 मितःसन्निपातेषुदीयते । प्रसिद्धोयंरसोनाम्नासन्निपातस्य  
 भैरवः ९ तारमौक्तिकहेमानिसारश्चैकैकभागिकाः । द्विभा  
 गोगन्धकःसूतस्त्रिभागोमर्दयेदिमान् १० कपित्थस्वरसैर्गा  
 ढंमृगशृङ्गेततःक्षिपेत् । पुटेन्मध्यपुटेनैवसमुद्धृत्यचमर्दये

का रस चौसईरस इन रसमें पहरपहरमर घोटि ॥ ४ ॥ गोलांवाधि कपडौटीकरि  
 दो कांचके प्याले एकमें लोहभरि गोलां धरि दूसरा लोह पुरित प्याला ढांकि  
 कपडौटीकरि तय माठी पात्रे के बालुकांयंत्रमें धरि दोपहरकी आंचदेय ॥ ५ ॥ ठंडा  
 भये निकारि खरलेकरि फिरि गुंजा चूर्ण कर्पभर, विष शोणभर चं काले सांपका  
 जहरयुक्त एक दिन खरलकरै फिर कांचकी शीशोमें भरि बालुकायंत्रमें दोपहरकी  
 आंचदे ठंडामये निकारि चूर्णकरै ॥ ६ ॥ सगर, मुशली, जटायांसी, चौके, जगन्नाथी  
 पीपरि, नीलक्रीपाती, इलायची, चीता, कटसरैयां ॥ ७ ॥ सौंफ, धनतोरई, धतूरा,  
 अगस्त्य, मुंठी, महुआ, चमेली और मैनफल इनसबका रस वा काढ़ा करि क्रम  
 से एकएकवार घोटि सुंजाय राखै ॥ ८ ॥ जंभीरीरस वा अदरकरस १६ मरिचो  
 से दोगुंजा प्रमाण रसके साथ सन्निपात में देय यह प्रसिद्ध सन्निपातभैरवनाम  
 रस कहाताहै ॥ ९ ॥ (अथं ब्रह्मणिकपाटेरस ) चांदी, मोती, सोना और  
 लोहा इनकी भस्म एक एक भाग, मुंदगन्धक दो भाग और शुद्ध पारा तीन भाग थे  
 सब खरनकरि ॥ १० ॥ फिर कौयेके रसमें खरलेकरि हरिणके सींगमेंभरि कपडौटी



तु ११ वलारसैः सप्तवेलमपामार्गरसैस्त्रिधा। लोधं प्रतिविषा  
 मुस्तं धातकीन्द्रयवाः स्मृताः । प्रत्येकैः स्वरसैर्नित्यं भावना  
 स्यात्त्रिधात्रिधा १२ माषमात्रोरसो देयो मधुना मरिचैस्त  
 था । हन्यात्सर्वानतीसारान्ग्रहणीं सर्वजामपि । कपाटो ग्रह  
 णी रोगे रसो यं वह्निदीपनः १३ मृतसूताश्च के गन्धं यवक्षारं  
 सटङ्कणम् । अग्निमन्थं वचां कुर्यात्सूततुल्यानिमान्सुधीः  
 १४ ततो जयन्ती जम्बीरमृद्गुद्रावैर्विमर्हयेत् । त्रिवासरं ततो  
 गोलं कृत्वा संशोष्य धारयेत् । लोहपात्रेशरावच्च दध्वा परि  
 विमर्दयेत् १५ अधो वह्निशनैः कुर्याद्यामाद्धं तत उद्धरेत् ।  
 रसतुल्यां प्रतिविषां दद्यान्मोचरसं तथा । कपिस्थविजया  
 द्रावैर्भावयेत्सप्तधाभिषक् १६ धातकीन्द्रयवामुस्तं लोध  
 म्बिल्वंगुडुचिका । एतद्रसं भावयित्वा वेलकैकं च शोषयेत्  
 १७ रसं वज्रकपाटारुषं शाणैकं मधुना लिहेत् । वह्निशुण्ठी  
 विडंबिल्वं लवणं चूर्णयेत्समम् । पिबेदुष्णाम्बुना चानुसर्व

करि तीस गोपेदा की आचदे उंढाभुषे निकादि निकादि खरलकरि ॥ ११ ॥ परि  
 पारारसमें सातवार खरलकरि फिर तीनवार निरिचिरारसमें खरलकरि फिर लोष,  
 अतीस, मोषा, धवपुष्य, इन्द्रयव और गुर्च इनके रसमें तीन तीनवार क्रमसे खरल  
 करि ॥ १२ ॥ माशभर रस शहद मरिच पिलाय चाटे तो सब अतीसार व ग्रहणी  
 को दूरिकरै यह ग्रहणीरुपाट अग्निको दीपन करताई ॥ १३ ॥ वज्र कपाटरस  
 ग्रहणीपर ) पारामस, अक्षकभस, शुद्धगन्धक, जवात्पार, सुहागा, अरणी  
 बीज और घालवच ये सब समानभागले ॥ १४ ॥ यह रस जैति, जंभीरी व भंगरा  
 इनके रसमें तीन तीन दिन थोडे गोलाकरि सुखाय लोदेकी कडेषा में धरि माटी  
 पात्रसे बंदकरि ॥ १५ ॥ मंद मंद चार घडी आंचदे उतारिलेय तब उस रस को  
 समान अतीस व मोचरस डालि कैषा व भाग के रसमें वैध सातसात धारघोटे ॥  
 १६ ॥ फिर धवपुष्य, इन्द्रयव, मोषा, लोष, वेल और गुर्च इनके रसमें एकएक बार  
 घोट सुखायले ॥ १७ ॥ यह वज्रकपाटरस शाणभर शहद के संगसाथ ऊपर से  
 पीता, सोधि, पागानोन, वेल और सैध्व इन सबका समभाग खर्चपरि उष्णजलके

जाग्रहणीजयेत् १८ तारवज्रसुवर्णचताघसूतचगन्धक  
म् । लोहक्रमविट्टद्वानिकुर्यादितानिमात्रया १९ विमर्द्य  
कन्यकाद्रात्रैर्न्यसेत्काचमयेघटे । विमुच्यपिठरीमध्येधार  
येत्सैन्धवेभृते । पिठरीमुद्रयेत्सम्यक्ततश्चुल्ल्यानिवेशये  
त् २० वह्निशनेः शनेः कुर्याद्विनैकततउद्धरेत् । स्वाङ्गशी  
तंचसंचूर्णभात्रयेदकदुग्धकैः २१ अश्वगन्धाचकाको  
लीवानरीमुशलीक्षुरी । त्रित्रिवेलेरसैरासांशतावयाश्चभा  
वयेत् । पद्मकन्दकसेरुणारसैः कासस्यभावयेत् २२ कस्तूरी  
व्यापकपूरकङ्कालैलालवङ्ककम् । पूर्वचूर्णादष्टमांशमेतच्च  
र्णविमिश्रयेत् २३ सर्वैः समांशकराचदत्त्वाशाणोन्मिता  
मजेत् । गोदुग्धद्विपलेनैवमधुराहारसेवकः । तरुणीरम  
येद्बह्व्लीःशुक्रहानिर्नजायते २४ सूतोवज्रमणिमुक्ताता  
रहेमसिताश्रकम् । रसैः कर्पमितानेतान्मदयेदिरिमेदजैः  
२५ प्रवालचूर्णगन्धश्चद्विद्विकर्षविमिश्रयेत् । ततोश्वग

पाय स्वाय तौ सय ग्रहणी दरिद्रिये ॥ १८ ॥ ( मदन कामदेवरस ) चांदी  
हीरा, सोना और तांबा इन चारोंकी भस्म तथा पारा, गंधक व लोहा ये क्षीनों शुद्ध  
इन सातोंको क्रमसे बढती भांगले ॥ १९ ॥ धीकुरारके रसमें घोटि शीशीमें धरि  
कपडोंकीकरि माटीपात्र में नीचे ऊपर नोनपरि पीचमें शीशीधरि सपुटकारि बूलेपर  
परि ॥ २० ॥ दिनभर मंद मंद आंच धारि फिर निकारि मदारकेदूधमें सरलकरि ॥  
२१ ॥ असंगंध काकोली विना भी असंगंधे, किमाच, मुशली, तालमलाना और  
शतापरि इनके रसमें तीन तीन भावना दे फिर कमलकी जड़ कसेरु व कांस इनकी  
तीन तीन भावनादेय ॥ २२ ॥ कस्तूरी, त्रिकुटा, कपूर, शोतलचीनी, इलायची और  
लवंग पीसि पूर्वचूर्ण जो भावनादिसे सिद्धकिये का आष्टमांश कस्तूरयादिचूर्णयुक्त  
करि ॥ २३ ॥ सबके समान शकर मिलाय शोणभरि स्वाय आठ पैसापरि दूधपियै  
पथ्य मधुरकरि इसके लगनेसे बहुत क्षिणों से गमनकरै परन्तु घातु न पड़े ॥ २४ ॥  
( अम कंदर्पसुन्दररस ) शुद्धपारा, हीरा, मोती, चांदी, सोना व कृष्णाश्रक ये  
पांच भस्म सय करि कां भरले सिरकायमें एकदिन घोटै ॥ २५ ॥ मूंगका चूर्ण

न्धास्वरसैर्विमर्षमृगशृङ्गके । क्षिप्त्वामृदुपुटेपक्त्वाभावये  
 द्वातकीरसैः २६ काकोलीमधुकंमांसीवलात्रयविशेङ्गुद्  
 म् । द्राक्षापिप्पलिवन्दाकंवरीपर्णीचतुष्टयम् २७ परूषकं  
 कंसेरुश्चमधुकंवानरी तथा । भावयित्त्वारसैरासांशोषयि  
 त्वाविचूर्णयेत् २८ एलात्वक्पत्रकंमांसीलवङ्गागुरुकेशर  
 म् । मुस्तंमृगमदःकृष्णाजलंचन्द्रश्चमिश्रयेत् २९ एत  
 ज्ज्वरैःशाणमितैरसंकन्दर्पसुन्दरम् । खादेच्छाणमितंरात्रौ  
 सिताधात्रीविदारिकां ३० एतासांकर्षचूर्णेनसर्पिःकर्षेण  
 संयुतम् । तस्यानुद्विपलंक्षीरंपिवेत्सुस्थितमानसः । रम  
 णीरमयेद्वह्नीहानिकापिनंगच्छति ३१ शुद्धरसेन्द्रभागे  
 कंद्विभागंशुद्धगन्धकम् । क्षिपेत्कज्जलिकांकुर्यात्त्रती  
 क्षेणभवंरजः । क्षिप्त्वाकज्जलिकातुल्यंप्रहरैर्कविमर्दयेत्  
 ३२ तत्रकन्याद्रवैर्घर्मत्रिदिनंपरिमर्दयेत् । ततःसञ्जायते  
 तस्यसोष्णोधूमोद्गमोमहान् ३३ अथतत्पिण्डतंकृत्वाता

व शुद्धगंधक दोसो कर्ष मिलाय असंगंध के रसमें एकदिन घुटाय मृगसंग में भर  
 कपडोंकी करि थोड़ी आचम धरि फूंकदे फिर धधफूलके रस को फायमें भावनादे ॥  
 २६ ॥ फिर काकोलीप्रिना आसन, मुलेठी, जदामासी, वरियारा, गुलराकरी, कर्कई,  
 मसीङ्ग, हिंगरट, मुनवा, धीपरका वादा, कटसरैया, वनभूंग, सुदुगंधर्षी, मापपर्षी ॥  
 २७ ॥ फालसा, कसेरु, महुआ और किमाचबीज इन सबों के रसमें एक एक मर्द-  
 नादे सुराय खरलकरि धरिरातै ॥ २८ ॥ इलायची, वज, पत्रज, म्दामासी, लौंग,  
 अमर, केशर, मोथा, कस्तूरी, धीपरि, सुगन्धगाला और कपर इनका चूर्णकरि ॥ २९ ॥  
 शाखभरले और शाणभर पूर्णोक्त वन्दर्पसुन्दरस और सांड, औचरा व विदारी-  
 कंद ॥ ३० ॥ इन सबको मिलाय कर्षभर धी रातिको साय बियपीपुरुष दूधपियै  
 सो पुरुष बहुत स्त्रीसंग भोगकरै तौ वैर्षहानि नहीं होवै ॥ ३१ ॥ ( क्षयीपर  
 लोहरसायन ) शुद्धारा एकभाग व शुद्धगंधक एक भाग इन दोनों को घोटि  
 कजली करि तीन भाग शुद्ध धोलादना चूर्ण कजली संग पहरभर घोटि ॥ ३२ ॥  
 फिर धीरुगारके रसमें रदिन - १ ममें दंडि घोटै तत्रधाम और घोटनेकी गरमीसे बहुत

स्रपात्रेनिधाय च । मध्येधान्यकुशूलस्यत्रिदिनंधारयेद्बु-  
 धः ३४ उद्धृत्यतस्मात्खल्वेतुक्षिप्त्वाघर्मेनिधाय च । रसैः  
 कुठारच्छिन्नायास्त्रिवेलंपरिभावयेत् ३५ संशोष्यघर्मेकाथै-  
 श्र्यभावयेत्त्रिकटोस्त्रिधा । वासामृताच्चित्रकाणारसैर्भाव्यं क्र-  
 मात्त्रिधा ३६ लोहपात्रेततःक्षिप्त्वाभावयेत्त्रिफलाजलैः ।  
 निर्गुण्डीदाडिमत्वग्भिर्धिसंभृङ्गकुरण्टकैः ३७ पलाशकद-  
 लीद्रावैर्वाजकस्यश्रुतेन च । नीलिकालम्बुपाद्रावैर्वज्रूलफ-  
 लिकारसैः ३८ भावयेत्त्रिवेलं च ततोनागवलारसैः । शं-  
 तावरीगोक्षुरकैः पातालगरुडीरसैः । त्रिवेलयथा लाभ-  
 भावयेदेभिरौषधैः ३९ ततः प्रातर्लिहेदाज्यमधुभ्यांकोलमा-  
 त्रकम् । पलमात्रं वलाकाथं पिवेदस्वानुपानकम् ४० मास-  
 त्रयाच्छीलितं स्याद्वलीपलितनाशनम् । मन्दाग्निश्वास-  
 कासौ च पाण्डुत्ताकफमारुतौ ४१ पिप्पलीमधुसंयुक्तं हन्या-  
 देतन्नसंशयः । वातास्त्रमूत्रकृच्छ्रं च ग्रहणी चोदरं तथा ४२

धुआं लडेगा ॥ ३३ ॥ जब कड़ाही गोला बांधि रूंदपत्र लपेट तांवे के पात्र में रख  
 मुख भूँदियामें तीन दिन गाढ़रखलै ॥ ३४ ॥ फिर निकारि बैद्य याममें धरि स-  
 युजाके रसमें तीन भावनादे ॥ ३५ ॥ जब सूखिजाय तब सोंठि, मिर्च व पीपरि  
 तीनोंके तीनकाय करि तीन भावना दे फिर रूसा, गुर्च व चीता इन्हें एक एक के  
 रसमें तीन-तीन भावनादे ॥ ३६ ॥ जलसे निकारि लोहपात्रमें धरि त्रिफलामें घोटि  
 मेवही, अनारका झिलका, भसीड़, भंगरा, कटसरैया ॥ ३७ ॥ पलाश, केलाट्छरस  
 व विजयसारके रसका फाय, नीलगुण्डीरस, चूरकी छाल ॥ ३८ ॥ ये सब इन  
 के रस वा फायमें तीन-तीन भावनादे फिर धरियारा, शतावरि, गुग्गुलु व धरदट  
 इनके रसमें तीन-तीन भावना देना जो मिलै ॥ ३९ ॥ प्रभात समय आठमासे  
 रस घृत शहद में विलावै तिसपर धरियाराकाय पलपर पिये यह अनुपान  
 है ॥ ४० ॥ तीन महीना सेवनकरै रवेत शर न होय और त्वचाकी कुरीपड़ना  
 दूरहोय मन्दाग्नि, र्वास, कासी, पांडु, कफ और वायुविकार इनके ग्रथे ॥ ४१ ॥  
 पीपरि, शहदघुक्क साथ तो वातरचत, मूत्रकृच्छ्र, ग्रहणी, जलोदर ॥ ४२ ॥

अण्डवृद्धिजयेदेतच्छिन्नासत्वमधुप्लुतम् । बलवर्णकरं वृ  
 ष्यमायुष्यंपरमं स्मृतम् ४३ कूष्माण्डं तिलतैलं च माषाक्षरा  
 जिकांतथा । मद्यमम्लरसंचैव त्यजेन्नोहस्यं सेवकः २४४ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेरसशोधनमारणं  
 द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

इति शार्ङ्गधरस्यद्वितीयखण्डस्समाप्तः ॥

तथा अण्डवृद्धि न रहै गुर्चका सत और रंहैदयुक्त देवे तौ बल सुन्दरता व आयुको  
 बढाता है ॥ ४३ ॥ रवेत कुम्हडा, तिल-तैल, उर्दद, राई, मद्य और खटाई इन  
 पदार्थों को लोह खानेवाला त्याग देवै ॥ २४४ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेभापाटीकायाद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरस्यवार्तिकभापासमेतोद्वितीयखण्डस्समाप्तिमगादिति शिबं ॥

# शाङ्गधरसंहिता

भाषाटीकासमेता ॥

(तृतीयखण्डः)

प्रथमाध्यायः ॥

स्नेहश्चतुर्विधः प्रोक्तो घृतं तैलं वसा तथा । मज्जा च त  
त्पिबेन्मर्त्यः किञ्चिदभ्युदितैरवौ १ स्थावरो जङ्गमश्चैव  
द्वियोनिः स्नेह उच्यते । तिलतैलस्थावरेषु जङ्गमेषु घृतं व  
म् । द्वाभ्यां त्रिभिश्चतुर्भिस्तैर्यमकस्त्रितो महान् २ पिबे  
त्त्रयहं चतुरहं षडहं तथा । सप्त रात्रात्परं स्नेहः सात्मी  
भवति सेवितः ३ दीपकालाग्निवयसां बलं दृष्ट्वा प्रयोजये  
त् । हीनां च मध्यमां ज्येष्ठां मात्रां स्नेहस्य बुद्धिमान् ४ अमा

(अथोत्तरखण्डः प्रारभ्यते) प्रथम स्नेहपानक्रिया—स्नेह चारिमांतिका कहिये  
घृत १ तैल २ वसा कहे “मांसमें मिली चर्बी” ३ हाडके भीतरकी मज्जा ये चारों  
स्नेह वैद्य सूर्योदय होते मनुष्य को पिलावै ॥ १ ॥ ये स्नेह दो प्रकारके हैं स्थावर  
और जंगम स्थावर कहिये (अचर) जहाँ उपजै वहाँ स्थिर रहै ऐसे स्नेह अनेक प्रकार  
के हैं उनमेंसे तिलका तैल श्रेष्ठ है जंगम कहे (चर) जो रवासासहित है तिनसे उत्पत्ति  
घृतादि अनेकनमें घृत श्रेष्ठ है (अथ स्नेहभेद) घी, तैल वैद्य तिसे यम कह घी तैल  
वसा मिलावै तौ त्रिटक्क है घी, तैल, वसा, मज्जासंयुक्त हो तौ महान् कहते हैं ॥ २ ॥  
(अथ स्नेहपानक्रम) घृत रोगीको तीनदिन पिलावै तैल चारदिन वसा पांच  
दिन मज्जा छहदिन घृतादि स्नेह सात दिनसे अधिक से अधिक पान करने से  
आहार होजाता है औषध सदर गुण नहीं करता है ॥ ३ ॥ (अथ स्नेहमात्रा  
प्रकार) वातादि दोष, शत्रु काल, जठराग्नि, अवस्था और निर्वज, सबल व

त्रयातथाकालेभिथ्याहारविहारतः । स्नेहःकरोतिशोफांशौ  
 तन्द्रांनिद्रांघिसंज्ञिताम् ५ अकालेचातिमात्रंवाश्रसात्म्यं  
 यच्चभोजनम् । विपमाशनयद्भुक्तंभिथ्याहारः सकथ्यते ६  
 ह्येयादीक्षाग्नयेमात्रास्नेहस्यपलसम्मिता । मध्यमायेत्रि  
 कर्पास्याब्जघन्याचद्विकर्षिका ७ अथवास्नेहमात्राः स्यु  
 स्तिसौन्याः सर्वसम्भवाः । अहोरात्रेणमहतीजीर्यत्यद्वि  
 तुमध्यगा ८ जीर्यत्यल्पादिनाद्धैवसाविज्ञेयासुखावहा ।  
 अल्पास्वाहीपनीलृप्यारवल्पदोषेषुजिता ९ मध्यमास्ने  
 हनीज्ञेयावृंहणीभ्रमहारिणी । ज्येष्ठीकुष्ठविषोन्मादग्रहाप  
 रमारणाशिनी १० केवलंपैत्तिकेसर्पिर्वातिकेलवणान्वित

म् । पेयं बहुकफेवाधिव्योषक्षारसमन्वितम् ११ रुक्षश्च  
 तद्विपार्त्तानावातपित्तधिकारिणाम् । हीनमेधास्मृतीनांच  
 सर्पिःपानं प्रशस्यते १२ कृमिकोष्ठानिलाविष्टाः प्रवृद्धक  
 फमेदसः । पिवेयुस्तेलरात्म्यायेतैलं दीप्ताग्नेयस्तुये १३  
 व्यायामकरीताः शुष्करेतोरक्तमहारुजः । महाग्नेमारु  
 तप्राणवसायोग्यानराः स्मृताः १४ क्रूराशयाः क्लेशसहा  
 वातार्तादीप्तवह्नयः । मज्जानंचपिवेयुस्तेसर्पिर्वासर्वतो  
 हितम् १५ शीतकालेदिवास्नेहमष्णकालेपिवेन्निशि ।  
 वातपित्ताधिकेरात्रौवातश्लेष्माधिकेदिवा १६ नस्याभ्य  
 ज्ञनगण्डूषमूर्द्धकर्णाक्षितर्पणे । तैलं घृतं वायुञ्जीतदृष्ट्वा दो  
 षबलाबलम् १७ घृतेकोष्णंजलंपेथंतैलेयूषः प्रशस्यते ।

घृत, कफत्रोषमें सौंठ, मिर्च, पीपरिच जवास्वार पीसि घृतमें युक्तकरि प्यावै ॥  
 ११ ॥ ( अपर रोगोंपरघृत ) क्लेश, उद्वेग, विपार्त्त, वात पित्त दोष, हीन-  
 बुद्धि और सुधि भूलना इनमें अवश्य घृत पिलाना भेष्ट कहा है ॥ १२ ॥ ( तेल  
 योग्य रोगी ) कृमिविकार, वायुवृद्धि, शरीर कफ और घेठवृद्धि इनमें तैल  
 पिलावै जो तेल उसे स्वाभाविक अहित न हो तो अग्नि दीप्त करेगा ॥ १३ ॥  
 ( बसापान योग्य ), जो मनुष्य दंड कसरत व कुशलीभावि तथा परिश्रम करि  
 दुर्बल और पीड़ितहो धातुक्षीण शुष्करक्त शरीरपीडा भस्मक आक्षेपकादि वायु  
 प्लिष्ठ इनमें वसा पिलाना योग्य है ॥ १४ ॥ ( अस्थि मज्जा योग्य ) दुष्ट  
 कोष्ठंको क्लेशिनी को वायुपीडित को प्रबलाग्नि को मज्जा पिलाना योग्य है तथा  
 गी, सर्प शरीर को, हितदायक है ॥ १५ ॥ ( अथ स्नेहपान समय ) शीत  
 कालमें दिनको पिलावै उष्णकालमें रात को घात पित्त अधिकवाले को रातको  
 घात कफ अधिकवालेको दिनमें पिलावै ॥ १६ ॥ ( घृतादिक कर्म विशेषपर  
 नामके कारण ) मर्दन को कुलीको मस्तकमें दावने का कान आंखमें डालने

११ अजनावशात्तद्वज्जना मातृशरीरस्थितार्योर्विनि भागुरराव तापि ॥ मज्जोक्तायज्जयास  
 इतिरूपकाशायेति ॥

१ आम, अग्नि, पच व भूव इनके आगप, यहू और ज़ोडा तथा हृदय, उदर और  
 पुच्छस य सब काठ नहात हैं ॥



वसामञ्जोःपिवेन्मण्डमनुपानसुखावहम् १८ स्नेहद्विषः  
 शिशून्वृद्धान्सुकुमाराङ्कशानपि । तृष्णातुरानुष्णकाले  
 सहभक्तेनपाययेत् १९ सर्पिष्मतीबहुतिलायवागुः स्व  
 ल्पतण्डुला । सुखोष्णासेव्यमानातु सद्यः स्नेहस्यकारि  
 णी २० शर्कराचूर्णसम्भृष्टेदोहनस्थेघतेतुगाम् । दुग्ध्वा  
 क्षीरपिवेदुष्णसद्यःस्नेहनमुच्यते २१ मिथ्याहाराद्विहारा  
 द्वायस्यस्नेहानजीर्यति । विष्टभ्यवापिजीर्येत्वारिणोष्णे  
 नवामयेत् २२ स्नेहस्याजीर्णशङ्कायांपिवेदुष्णोदकनरः ।  
 तेनोद्गारोभवेच्छुद्धोभक्तप्रतिरुचिस्तथा २३ स्नेहेनपैत्ति  
 कस्याग्निर्घटातीक्ष्णतरीकृतः । तदास्योदीरयेत्तृष्णावि  
 षमातस्यपाययेत् । शीतजलवामयेच्चपिपासातेनशाम्य

को घृत वा तैल वातादि दोष सबल निबल विचारि वैध युक्तकरे ॥ १७ ॥  
 (अथ स्नेहपानानुपान) घृत उष्णोदकके संगमिय तैल यूपसंयुक्त चरवी द्वाइ  
 मञ्जो मांड युक्त पिये तौ सुखदशोप यूप मांड विधि मन्व्यखण्डमं देखिकरना ॥  
 १८ ॥ स्नेहद्वेषी कहे जिसे स्नेह न भावे तिसे अन्न के राह देना और घालके,  
 घृता, सुकुमार, दुर्बल व तृष्णायुक्त ऐसे मनुष्यको भातके साथ गरमी में देना ॥  
 १९ ॥ (स्नेह चषाणु) तिल मलेप्रकार कूटि थोड़ाचावलका चूर्णदारि  
 थोड़ादान और जल देकर पतला पकायले तब गुनगुना स्वाय तौ तुरन्त घातु  
 को उत्पन्न करताहुया शरीर को चिकना करता है ॥ २० ॥ (अथ घृ-  
 रोष्णे दुग्धविधिः) दोहनी के भीतर मिश्री पीसि घृत मिलाय लिप्तकरे  
 तिस में दुग्ध दुहाय तुरन्त गर्भ गर्भ पिये तौ तुरन्त घातु उत्पन्न होजाये ॥  
 २१ ॥ स्नेह पिये पर परिश्रम करने वा कफहत पदार्थ खानेसे स्नेह न पचावै  
 वा मलारोघ किया हो तौ उष्ण जलसे चमन करावै तौ अजीर्णका दोष मिट्या  
 है ॥ २२ ॥ जो स्नेह अजीर्ण की शंका हो तौ ताम्रजल प्यावे जय शुद्धिकार आवे  
 व अन्नपर इच्छाकरे तब जानै कि अजीर्ण शान्त भया ॥ २३ ॥ (स्नेह जन्म  
 पित्तकोप यन्न) पित्तमज्जतिवाले को स्नेहपान से गरमी होती है प्यास  
 विशेष लगती है उस ठण्डाजल पिला चमन करावै तौ प्यासकी ऊष्मा (गरमी)

यामभारांश्चसेवेतामयमुक्तये । ५ येषानस्यविधातव्यं व  
 स्तिश्चापिहिदेहिनाम् । शोधनीयांश्चयेकेचित्पूत्रस्वेद्या  
 श्चतेमताः ६ पश्चात्स्वेद्यागतेऽल्पे मूढगर्भगदे तथा । स्वे  
 द्याः पूत्रत्रयः श्लिहभगन्दर्शसांतथा ७ अश्मर्याश्चातुरो  
 जन्तुः शमयेच्छस्त्रकर्मणा । सर्वान्स्वेदान्निवातेचजीर्णाहारे  
 चकारयेत् ८ स्वेदान्वातुस्थितादोपाः स्नेहछिन्नस्यदेहि  
 नः । द्रवत्वंप्राप्यकोष्ठान्तर्गतावान्तिविरेकताम् ९ स्विद्य  
 मानशरीरस्यहृदयशीतलैः स्पृशेत् । स्नेहाभ्यक्तशरीरस्य  
 शीतैराच्छाद्यचक्षुषी १० अजीर्णादुर्बलोमेहीक्षतक्षीणः  
 पिपासितः । अतीसारिरक्तपित्तीपाण्डुरोगीतथोदरी ११

कराय शोभ उठवाय ऐसी शुक्तिपां से कफ मेरुयुक्त वायुरोग दूर होता है ॥ ५ ॥  
 और नासयोग्य चस्तियोग्य रेचनयोग्यको प्रथम स्वेद निकलाय उमाय करे ॥ ६ ॥  
 जिस स्त्रीके पेटके भीतर गर्भका शालहो वा मूढगर्भहो, इत दोका गर्भ जब बाहर  
 होनाय तब स्वेदकर जिस मनुष्यकी प्लीहा, मगदर अंश ॥ ७ ॥ और अश्मरी इन  
 चारों रोगियों को प्रथम स्वेदन करि शल उपाय करना, उचितहै स्वेदकर्म करने  
 का समय स्थान आहारपचने के अनन्तर जिस स्थान में पचनेका प्रवेश न होसके  
 तहां बैठपके स्वेदकर्मकरे ॥ ८ ॥ "स्वेदकिये, पुरुषको बड़े पात्रमें तेलभरि बैठाय  
 लै वातादिक दोष और रसादि सप्तधातु के विकार मनको पतला करिके उसके  
 साथ निकलजाते हैं यह अन्य ग्रंथका मतहै" और शाश्वर, मत (राय) से स्वेदी  
 मनुष्य के पसीना निकलतेही रसादि सप्तधातुमें स्थित वातादि विकार मलको पः  
 तलाकरि निकलजाते हैं ॥ ९ ॥ ( स्वेदीके चित्त, स्वस्थकरनेका यत्न )  
 जिसका स्वेदकरि पसीना निकलानेसे मल पतलाहो चित्त सावधानहो तौ छाती  
 पर चंदन लगाने से सावधानहोगा जिसका शरीर पेलमें भिजोया गयाहै और  
 अल पतला गिरनाई उसकी आंसोंपर कदली वा केवड़ाके मलमें वस्त्र भिजोयके  
 करने से चित्त स्वस्थ होगा ॥ १० ॥ स्वेद अयोग्य अजीर्ण, दुर्बल, ममेही उरः  
 क्षतपीडित प्यासांतुर अतीसारयुक्त, रक्तपित्त रोगी पाण्डुरादरी उदररोगी ॥ ११ ॥

१. शश्वरिका में शोषण उल्लेख के प्रयोगको नकारकर कहते हैं ।

२. युरा में विषकारी लगाने के कर्मको चस्ति कहते हैं ।

सदातोर्गभिणीचैव न हि स्वेद्या विजानता । एतानपिमृदुस्वे  
 दैः स्वेदसाध्यानुपाचरेत् १२ मृदुरवेदं प्रयुञ्जीत तथा हन्मु  
 ष्कदृष्टिषु । अतिस्वेदात्सन्धिपीडादाह तृष्णाक्लमोभ्रमः  
 १३ पित्तासृक्पिष्टकाकोपस्तत्र शीतैरुपाचरेत् । तेषु ता  
 पाभिधः स्वेदो बालकावस्त्रपाणिभिः १४ कपालकन्दुकां  
 गारैर्यथायोग्यं प्रयुज्यते । ऊष्मस्वेदः प्रयोक्तव्यो लोहपि  
 ष्ठेष्टिकादिभिः १५ प्रतप्तैरम्लसिक्लैश्च काये वस्त्राववेष्टि  
 ते । अथवा तविनाशार्हद्रव्यकाथरसादिभिः १६ उष्णे  
 र्घटंपूरयित्वा पाश्चैच्छिद्रं विधाय च । विमृद्यास्यंत्रिखण्डांच  
 धातुजां काष्ठवंशजाम् १७ पङ्कजलास्याङ्गोपुच्छान्नाडीयु  
 ञ्ज्याद्विहस्तिकाम् । सुखोपविष्टं स्वभ्यक्तं गुरु प्रावरणावृत  
 म् १८ हस्तिशुण्डिकयानाब्ज्यास्त्रेदयेद्वा त रोगिणाम् । पुरुषा

सदातोर्गभिणी चैव न हि स्वेद्या विजानता तो मृदु  
 स्वेदले ॥ १२ ॥ ( अल्पस्वेदनविधि ) हृदय अंडवृद्धि नैप्ररोग इनरोगों में  
 थोड़ा स्वेदले अतिस्वेदोपद्रव सन्धिपीडा, दाह, तृष्णा, क्लानि, भ्रम ॥ १३ ॥  
 रक्त पित्तसे कुसी इनके शमन करने के लिये शीतोपचारकरे शान्तिहोय ( अथ-  
 तापस्वेद ) ताप, बालु, कपड़ा ॥ १४ ॥ हाथ कपड़े की बंद बनापके और  
 और गार ये द्यः भौतिके तापस्वेद कहे जैसा जहा योग्य हो तैसाकरे ( अथा-  
 ष्मविधिः ) पत्थरादि तप्तकरि सेंकने को ऊष्मकोट लोहेका गोला वा ईट या  
 पत्थर तपाय ॥ १५ ॥ उसपर सहा पदार्थ थोड़ा ब्रिडक सुखोष्ण मधे लेके  
 केवल उदाय स्वेदनकरे दूसरा वातहारी कहे दशमूलादि काथ वा रस ॥  
 १६ ॥ उष्णकरि चढ़े घें भरि मुख मूँदि कमल छेष्टि धातु की वा बांस की  
 टो, हाथ लम्बी नख वनायै गोपूत्र की मूरति तिसके सपट तीनकरे एक द्यः  
 अंगुल बाकीके टो समान पतली औरसे उस द्यः अंगुलके टुकड़े का मोटा,  
 मुख चढ़े के छेद में प्रवेशकर उस में मध्यसष्ट ऊंचा करिजेरै ॥ १७ ॥ १८ ॥  
 फिर तीसरापण्ड साँयालगाय नखशुण्डि सा करि तीनों सन्धि मूँदि तब रोगी  
 को घी व तेल लगाय बलेप करि कम्यल उदाय सब और से ढक निःसन्धि

याम्नात्रीवाभूमिमुत्कीर्यखादिरैः १९ काष्ठैर्दग्धातथोभ्यु  
 द्यक्षीरधान्याम्लवारिभिः । वातघ्नत्रैराच्छाद्यशयानंस्वे  
 दयेन्नरम् ॥ २० ॥ एवंभाषादिभिःस्विन्नैःशयानःस्वेदमाचरे  
 त् ॥ अथोपनाहस्वेदंश्चकुर्याद्वातहरौषधीः २१ प्रदिह्यदेहं  
 वातातैक्षीरमांसरसान्वितैः । अम्लपिष्टैःसलवणैःसुखोष्णैः  
 स्नेहसंयुतैः २२ सतोग्रान्यानूपमांसैर्जीवनीयगणेन च । द  
 धिसौवीरकक्षारैर्वीरतर्वादिना तथा २३ कुलित्थमापगोधू  
 मैरतसीतिलसर्षपैः । शतपुष्पादेवदारुशेफालीस्थूलजी  
 रकैः २४ एरण्डमूलवीजैश्चरास्नामूलकशिग्रुभिः । मिशि  
 कृष्णाकुठेरैश्चलवणैरम्लसंयुतैः २५ प्रसारण्यश्वगन्धा  
 करि तत्र उक्त गजशुण्डि कां मुख कम्बलके भीतरः खोलि स्वेदनकरै तो पसीना  
 निकलै ( तृतीय ) , रोगा के शरीर से बीताभर अधिक लम्बा चौड़ा गदाखो-  
 दि द्वादशगुल गदिरा सैरकी लकड़ी भरि ॥ १६ ॥ फूँकि चारुभारि गडे में  
 दूध व कांजी वा मट्ठा छिड़क वायुहारी रण्डपत्र विद्याय रोगी को सुलाय  
 भारी बख्ख उड़ावै तो पसीना निकलै ॥ २० ॥ ( चौथा ) पूर्वप्रकार गदा  
 तमाय उर्द । आँटि पानीले छिड़क रण्ड चढ़पातादिसे शग्यारिभि पूर्वप्रकार स्वेदनकरै ॥  
 २१ ॥ ( अथ ग्रन्थान्तरे ) वातहारी द्रव्य घडे में धरि जलभरि हुँहण्डकरि  
 चारगड़ी आच दे उतारिलेय रोगीको उष्णतेल मल सरहरीखाटपर सुलाय कपड़ा  
 उदाय नीचे चढ़ाधरि नितम्ब की ओर घटमुखझोर बाफदे पसीना पोंदि पोंदि  
 ले इस उष्ण संज्ञक स्वेदसे रसादिक सातौ धानु के वातादिके दोष पसीने साथ  
 सब निकल जाते हैं ॥ २२ ॥ ( अथोपनाहक्रिया ) दशमूलादि वातहारी  
 द्रव्यों का चूर्णकर उसमें दूध व हरिणादिकों का मांस मिलाय पुच्छ गर्भ कर  
 पायुपीडित जो अंगदो उसमें गाढ़ा लेपकर बख्ख ओढ़ाय पसीना निकाले इस  
 क्रिया को उपनाह कहते हैं ( अथोपनाह महाशाल्वण क्रिया अर्थात्  
 पोटेलिकासिक्तविधि ) आधीमांस, जलचरमांस, जीवनीयगण द्रव्य, गो-  
 दधि, सज्जी, जगत्सार, रांरालोन, वीरतर्वादि गण वा मुखुर्बूल ॥ २३ ॥  
 कुलथी, उड़द, गेहूँ, अलसी, तिल, सरसों, सोंफ, देवदारु, निरगुण्टी, मग-  
 रैला ॥ २४ ॥ रेंडी, रासन, मूल, सदिमना, सोबाजीज, पीपरि, नाजरोई पांचो

भ्यां वलाभिर्दशमूलकैः । गुडचीवानरीवीजैर्यथालाभंसमा  
 हृतैः २६ स्विन्नैश्च वस्त्रसम्बद्धैः सदा संस्वेदयेन्नरम् । महाशा  
 ल्वणसंज्ञोययोगः सर्वानिलात्तिहत् २७ द्रवस्वेदस्तुवात  
 घ्नद्रव्यकाथेनपरिते । कटाहेकोष्ठकेवापिसूपविष्टोवगाहये  
 त् २८ सौवर्णैराजतेवापिताम्यत्रायसदारुजे । कोष्ठकं  
 तत्रकुर्वीतोच्छ्रायेषट्त्रिंशद्गुलम् २९ आयामेनतदेव  
 स्याच्चतुष्टङ्कसृणितथा । नाभेःषडङ्गुलंयावन्मग्नःकाथस्य  
 धारया ३० कोष्ठकेस्कन्धयोःसिक्तस्तिष्ठेत्स्निग्धतनुर्नरः ।  
 एवंतैलेनदुग्धेनसर्पिषास्वेदयेन्नरम् । एकान्तरेद्व्यन्तरेवा  
 स्नेहोयुक्तोवगाहने ३१ शरीरेबलमाधत्तेयुक्तस्नेहोवगाह  
 ने । शिरामुखैरोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत् ३२ जलसिक्त  
 स्यवर्द्धन्तेगधामूलेङ्कुरास्तरोः । तथाधातुर्विष्टुद्धिस्तुस्नेह  
 सिक्तस्यजायते ३३ नातःपरतरःकश्चिदुपायोवातनाश

लोन ॥ २५ ॥ अनार, कटनरैया, असगन्ग, वरियारा, दशमूल. गुर्वे और  
 किमाचविया इनमें जितने मिलें ॥ २६ ॥ उन्हें जलमें पीसि तपाय दोटनी बाँधे  
 सेंकें ठण्डी परे गरम तपेपर तपाय तपाय सेंकें इस शाल्वण-प्रयोग से सब ब्यु  
 पीड़ा दूर होती है ॥ २७ ॥ ( अथ द्रवस्वेदविधि ) दरुलादि बापुहानं  
 द्रव्यों का काथ बनाय रोगी कटाठ वा चौकान कोहर ॥ २८ ॥ सेंगे, चाँदी,  
 तांबा, लोहा वा काठ इत्तीस थ्रंगुल ऊंचा बनाय बँठाप ॥ २९ ॥ वह कानने  
 रोगी के ऊपर पतली धार से नावै नाभिके ऊः थ्रंगुल ऊंचे बाँधें तब हाथ को  
 इटावै इसीप्रकार एक वा दो दिन टार टार करै इसी भाँति तेल, दूध, घृत  
 और द्रवस्वेदन भी करै फिर पत्रन को बचावै ऐसे दो तीनदिन घृत वा तेल  
 लगाय करै सब नसें और रोमों का मुरा खुलि जाता है जो पत्रन प्रवेश करने  
 पावे तो उनके मुख से स्नेहादि पदार्थ प्रवेश के वायु को निजान देने हे  
 शरीर को तृप्त और बलवान् करते हैं ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ दृष्टान्त जैमे जडमें  
 जल सींचनेसे वृक्ष बढ़कर पुष्टहोजाता है तैसेही द्रवन्बद्ध स्नेह ने मनुष्य का  
 रोग नाशहोता व उमर बढ़ती है तैसेही रसादि मत्तगुणों में बापुहोप वदने से

नःशीतशूलान्युपरभेस्तन्मगौरवविग्रहेदीप्तेग्नौष्माद्वैजा  
 तेस्वेदनाद्विरतिर्मता ३४ सम्यक्स्विन्नविमृदितस्नानमु  
 ष्णाम्बुभिरशनैः । भोजयेच्चानभिष्यन्दिव्यायामचनकार  
 येत् ३५ इति श्रीशार्ङ्गधरेस्वेदविधिर्द्वितीयोऽध्यायः २ ॥

शरत्कालेवसन्तेचप्रावृट्कालेचदेहिनाम् । वमनरेच  
 नंचैवकारयेत्कुशलोभिषक् १ वलवन्तंकफव्याप्तहृल्लासा  
 त्तिनिपीडितम् । तथावमनसाल्म्यंचधीरचित्तंचवामयेत्  
 २ विषदोषेस्तन्यरोगेमन्देग्नौश्लीपदेवृदे । हृद्रोगकुष्ठ  
 वीसर्पमेहाजीर्णभ्रमेषुच ३ विदारिकापचीकासश्वासपी  
 नसवृद्धिषु । अपस्मारेज्वरोन्मादेतथारक्तातिसारके ४  
 नात्ताताल्वापुष्पाकेषुकर्णत्वावेद्विजिह्वके । गलगुण्ड्याम  
 तीसारेपित्तश्लेष्मगदेतथा ५ मेदोगदेरुचौचैववमनंका  
 रयेद्विषक् । नवामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः । ना

पेट वा मलमार्ग में भरभराहटहो तो तेलस्वेदकरे ॥ ३३ ॥ इमसेपरे बातनाशक  
 और यत्र नहीं जघताई स्वेदकरे कि वायुगूल देह जकड़ना भारीपन दूरहोय अ-  
 ग्निदीप्त देह कोमल हलकी हो तब न करे ॥ ३४ ॥ स्वेदकरे पर तेल लगाय  
 मुखोष्ण जलसे नहाय कफकारी भोजन करे ॥ ३५ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेवचरखण्डेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

शरद्, वसन्त और भाद्रकाल के आदि चतुरस्रैष वमन ( छर्दि ) व निरे-  
 चन ( दस्त ) को करारैक्योंकि अश्विनीकुमार संहितादि सत्र ग्रन्थकार ऐसेही  
 कहते ध्राये हैं इसमें मनुष्य की मृत्ति शुद्ध रहती है ॥ १ ॥ ( वमन योग्य )  
 जिसे वमन करने की सामर्थ्यहो कफ व्याप्तहो सुप्तसे तार बहती हो जिसे वमन  
 दिताहो धीरचित्तहो उसे वमन करावै ॥ २ ॥ विपरोग, स्तन्यरोग, मंडाग्नि, फील-  
 पांव, अर्बुद, हृद्रोग, कुष्ठ, विसर्प, भ्रमेह, अजीर्ण, भ्रम ॥ ३ ॥ विदारी, अपची, कास,  
 श्वास, पीनस, अयहृद्धि, अपस्मार, ज्वर, उन्माद, रक्तातिसार ॥ ४ ॥ नासा,  
 श्लेष्म, तापुष्पक, कर्णत्वाव, द्विजिह्वक, गलगण्ड, धतीसार, पित्त, श्लेष्म ॥ ५ ॥ मेद-  
 शीर गण्डि इन रोगोंमें वैय वमन करावे ( वमन अयोग्य ) तिमिरी, गुल्मरोगी,

तिवृद्धोगभिषीचनस्थूलोनक्षतातुरः ६ मदातीर्णबालको  
 रूक्षःक्षुधितश्चनिरुहितः । उदावर्त्यूर्ध्वरक्तीचदुरश्रुदिः  
 केवलानिली ७ पाण्डुरोगीकृमिव्याप्तः पठनात्स्वरघात  
 कः । एतेष्वजीर्णव्यथितावाभ्यायेविषपीडिताः ८ कफ  
 व्याप्ताश्चतेवाभ्यासधुक्काथरयपानतः । सुकुमारं कृशं वा  
 लं वृद्धं भीरुं न वा मयेत् ९ पीत्वायुजागमाकरुण्ठीरतक्रद्  
 धीनिच । असात्म्यैः श्लेष्मलैर्भोज्यैर्दोषानुक्लिश्यदेहिनः  
 १० स्निग्धस्विन्न्यायवमनं दत्तं सम्यक् प्रवर्तते । वमनेषु  
 च सर्वेषु सैन्धवं मधुना हितम् ११ बीभत्सं वमनं देयं विपरी  
 तं विरेचनम् । काथ्यद्रव्यस्य कुडवं श्रपयित्वा जलाढके  
 १२ अर्द्धभागावशिष्टं च वमनेष्वेव चारयेत् । काथपाने  
 नवप्रस्था ज्येष्ठामात्राप्रकीर्तिता १३ मध्यमाषण्णिम  
 उदरोगी, कृश ( दुर्बल ), अतिबूढ़ा, भिषीणी, मोटा, घावसे व्याकुल ॥ ६ ॥  
 मदपीडित, बालक, रूपादेही, भूखा, निरुहण चस्ति त्रिधा, उदावर्ती, ऊर्ध्वरक्ती,  
 छदिरोगी, केवल घाताती ॥ ७ ॥ पाण्डुरोगी, कृमी और बहुयावय श्रमसे-स्वर-  
 भङ्गी ऐसे रोगियों को वमन कराने और प्रजीर्णयुक्त व विषपीडित ॥ ८ ॥  
 तथा कफव्याप्त इन मनुष्यों को मुलेठी व महुयाकी छालरा झाष पिलाय वमन  
 कराने और सुफुमार, दुल्ला, गलरु, बूड़ा और भयभीत इनको कमी वमन न  
 कराने ॥ ९ ॥ ( वमन के पूर्व उपचार ) जिसे वमन कराना हो उसे पहिले  
 पेटभर यवागू, दूध, मट्ठा, दही, मनभावन पदार्थ और कफकारी पदार्थ इनके राने  
 से दोष ऊपर उभरयाते हैं ॥ १० ॥ तब वमनको औषध देय तौ वमन अच्छे  
 प्रकार होताहै और स्नेह पानकियेको अच्छे प्रकार होताहै वमन योग्य पदार्थ सब  
 वमन प्रयोग में हैं वमन वा शब्द युक्त औषध हितकारक होती है ॥ ११-॥ जो  
 तृतीया वा तांवा घृत युक्त देते हैं वह बीभत्स वमनहै जिसे बीभत्स वमन दिये  
 पर रेचनदेना हो तौ घृत न स्थानेदेय वमन औषध यदि झाषका प्रमाण झाषकी  
 द्रव्य कुड्वं भारे छूटिके आडकभर जलमें औटाय ॥ १२ ॥ आवा अन्तनाय तब  
 उवारिलेय फिर वमन करनेवाले मनुष्यको पिलाने ( वमन काथ पान-रुके  
 का प्रमाण ) वमन त्रिधाका काथ नवप्रस्थ पिलाने सो ज्येष्ठामात्राहै ॥ १३ ॥

ताप्रोक्तात्रिप्रस्थाचकनीयसी । कल्कचूर्णावलेहांनांत्रि-  
 पलंश्रेष्ठमात्रया १४ मध्यमां द्विपलां विद्यात्कनिष्ठां पलस-  
 त्त्रिप्रस्थावमनेचापिवेगास्स्युरष्टौपित्तान्तमुत्तमाः १५ पङ्-  
 वेगामध्यमावेगाश्चत्वाररत्ववरामताः । वमनेचविरेकेच  
 तथाशोणितमोक्षणे १६ सार्द्धत्रयंदशपलंप्रस्थमाहुर्मनी-  
 षिणः । कफंकटुकतीक्ष्णोष्णैः पित्तस्वाद्दुहिर्मैर्जयेत् । सस्वा-  
 दुलवणाम्लोष्णैस्संसृष्टवायुनाकफम् १७ कृष्णाराठफलैः  
 सिन्धुकफेकोष्णजलैःपिवेत् । पटोलवासानिम्बैश्चपित्तेशी-  
 तजलंपिवेत् १८ सश्लेष्मवातपीडायांसक्षीरंमदनंपिवे-  
 त् । अजीर्णैकोष्णपानीयंसिन्धुपीत्वावमेत्सुधीः १९ वम-

द्वःप्रस्थ पिलावै सो मध्यममात्रा है तीन प्रस्थ पिलावै सो छोटी मात्रा है वमन कार्य  
 में कल्कादिक औषध का प्रमाण वमन में कल्क चूर्ण अबलेह तीन तीन पल  
 देना सो बड़ी मात्रा है ॥ १४ ॥ दो दो पलकी मध्यममात्रा है एक एक पलकी  
 लघुमात्रा जानना वमन कार्य उत्तम, मध्यम व कनिष्ठ तीन भांतिका होता है (वेगका  
 प्रमाण) जिस मनुष्य को वमन की औषध देय उसके सात वारताई सब टोप  
 गिरिं आठवार पित्तगिरिं तो उत्तम वेग है ॥ १५ ॥ पांचवार में, सब दोपगिरि  
 छठीवार पित्त गिरिं वह मध्यमवेग है तीनवार में सब दोपगिरि चौथी वार पित्त  
 गिरे वह कनिष्ठ वेग है वमनादिक में प्रस्थप्रमाण वमन और रेचन तथा सिराहक्त-  
 मोक्षण अर्थात् फस्तलेने में ॥ १६ ॥ प्रस्थ सादेनेरह पलकालना दोषनिरोध  
 में वमनोपचार द्रव्य कटु तीक्ष्ण उस पदार्थ से वमनकराने से कफार्ता का कफ  
 नाश होता है मधुर व शीतल पदार्थकरि वमनकरानेसे पित्त नाश होता है मधुर  
 चार खटाई उष्ण पदार्थ से कफयुक्त वात नाश होता है साठ, मिर्च व पीपरि ये  
 तीक्ष्ण हैं गुणका अनारादि मधुर हैं ॥ १७ ॥ (कफमें वमनविधि) कफप्रकृति  
 को पीपरि, मैनफल व संधव चूर्णकरि उष्णजल में पिलाने से चारवार कफ  
 गिरैगा पित्तप्रकृति को पररनीमत्र चूर्णकरि ठण्डे पानी में पिलानेसे चारवार  
 पित्त गिरैगा ॥ १८ ॥ और कफ, वातपीडित को मैनफल दूधमें पिलानेसे कफ  
 वात दूर होता है और सैंगर उष्णजल में पिलानेसे अजीर्ण मिटता है ॥ १९ ॥



नपाययित्वाचजानुमात्रासनेस्थितम् । कण्ठमेरण्डनालेन  
 स्पृशन्तंघामधेद्विषक् २० ललाटं वमतःपुंसःपार्श्वेद्वौचप्र  
 वोधयेत् । प्रसेकोहृद्ग्रहःकोढःकण्डूदुश्चर्दिताद्भवेत् २१  
 अतिवान्तेभवेत्तृष्णाहिक्रोद्धारौविसंज्ञता । जिह्वानिःसर्प  
 णंचाक्षणोर्व्यावृत्तिर्हनुसंहतिः २२ रक्तच्छर्दिःपृथिवं चक  
 ण्ठेपीडाचजायते । वमनस्यातियोगेतुमृदुकुर्याद्विरेचनम् ।  
 वदनान्तःप्रविष्टायांजिह्वायांकवलग्रहः २३ स्निग्धाम्ल  
 लवणैर्हृद्यैर्घृतक्षीररसैर्हितः । फलान्यम्लानिखादेयुस्त  
 स्यचान्येग्रंतोनराः २४ निःसृतांतुतिलद्राक्षाकल्कलि  
 प्त्वाप्रवेशयेत् । व्यावृत्तेदिणघृताभ्यक्तेपीडयेच्चशनैःश  
 नैः २५ हनुमोक्षेस्मृतःस्वेदोनस्यंचश्लेष्मवातहत् ।  
 वमन करने की रीति वमन औषध पीके दोनों घुटने तौरिके बैठे और रंड  
 पत्र की डण्डी शुद्धकरि गरे में प्रवेश करै तौ वमन होगा और वमन करनेवाले  
 का मस्तक और दोनों ओरकी पसुरी सहाराताजाय इसी रीतिसे वैद्यलोग वमन  
 कराते हैं ॥ २० ॥ ( वमन कोपलक्षण ) जो वमन अच्छी तरह न होय तौ  
 रोगीके मुखसे लार बहै हृदय में पीडाबहै बोटें में खुजली ये उपद्रव होतेहैं ॥  
 २१ ॥ ( अति वमन उपद्रव ) तृष्णा अधिक, हिचकी, डकार, अज्ञानता,  
 जीभ निरलना, नेत्र चंचलता, संभ्रमचित्त, ठोड़ी जकड़ना ॥ २२ ॥ मुख से  
 रुधिर गिरना, दारदार थूकना और कण्ठपीडा ये अतिवमन के लक्षण हैं ॥  
 ( अतिवान्त चिकित्सा ) जो वमन अधिकहो तौ उसे मृदुरेचनकरे ॥ २३ ॥  
 ( वमनमें जिह्वा एंठनेपर चिकित्सा ) अति उबकाई, अति जीभ एंठजातीहै  
 उसे जो पदार्थ अच्छा लगताहो चिकना वा सटा वा सलोना सो दीपुक्त को  
 खवाय उसके मुखमें रखदेना वा दूध, दही व घृत इनमें से कोई में सानिमुखमें  
 राखे और उसके सम्मुख अन्य मनुष्य को सटे फलादि रीपलावे तो उसे देखने  
 से वामनी की जीभमें पानी छूटे तौ जीभ चोमल होजाती है और प्रकृति स्वस्य  
 होती है ॥ २४ ॥ ( अतिवान्त से जीभ बाहर निकल आवै उसका  
 यत्न ) जो उबकाते उबकाते जीभ निकल आवै तौ पिल व दासपीसिजीभपर  
 लेपकर वैद्यपदेय और जो थावे चंचल भईरौ तौ आंसपर घी लगायधीरे धीरे

रक्तपित्तविधानेनरक्तच्छर्दिमुपाचरेत् २६ धात्रीरसाञ्जनो  
 शीरलाजाचन्दनवारिभिः । मन्थं कृत्वा पाययेत्त्रसघृतं शौद्र  
 शर्करम् । शाम्भन्त्यनेन कृष्णाद्याः पीडाश्छर्दिसमुद्भवाः  
 २७ हृत्कण्ठशिरसांशुद्धिदीप्ताग्निचैवलाघवम् । कफपित्त  
 विनाशश्च सम्यग्वान्तस्य चेष्टितम् २८ ततोपराह्णेदीप्ता  
 ग्निमुद्घषटिकशालिभिः । हृद्यैश्चजाङ्गलरसैः कृत्वायूपंच  
 भोजयेत् २९ तन्द्रानिद्रास्यदौर्गन्ध्यंकण्डूश्चग्रहणीविषम् ।  
 सुवान्तस्य नपीडाचैभ्यन्त्येते कदाचन ३० अजीर्णशीत  
 पानीयं व्याघामं मैथुनं तथा । स्नेहाभ्यङ्गप्रकोपंचदिनैकं व  
 र्जयेत्सुधीः ३१ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेत्तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

स्निग्धस्विन्नस्यवान्तस्य दद्यात्सम्यग्विचरेचनम् । अ

सहराय देव ॥ २२ ॥ ( वमन में हनुस्तम्भ उपचार ) जो वमन के अन्त  
 में ठोड़ी जकड़ जाय तो सेंकने व कफवातदारी द्रव्यों के सूंयो से खुजलाती है  
 ( वमन के अन्तमें रक्तगिरने का चक्र ) जो वमनात में रदिर आनेलगे  
 तो म'यरसपटमें कहा रक्तपित्तोपचार करै ॥ २६ ॥ ( अति वमन से प्पास  
 पहने का चक्र ) जो कृष्णा वदें आबले वा रस, रसौत, रस, धानफी खिलि व  
 लालचन्दन ये पाचौ पल भर चारपल ढके पानीमें अधिके भी, शहद संयुक्त मिश्री  
 डालिकै पिलायै तो शांति होय ( रसांजन कटे रसोत बनाने की विधि )  
 दाखइदीका काय करि तिसके समान रसरी का दूध मिलाय शौदि गाढा करि  
 सुगाय ले उसे रसांजन कहते हैं ॥ २७ ॥ ( वमन उत्सम होने का लक्षण )  
 जो वमन अच्छा हो तो हृदय, कण्ठ व मन्तक के बफाटिकरा दोष न रहै अग्नि  
 दीप्तहो अंग हलका हो कफपित्तजनित विहार नाश होयें ॥ २८ ॥ ( वमन पर  
 पथ्य ) मूंग हासाठी के चारताडा यूफदेना वा हिरन वा मास अमायै खसी  
 मासका घूप दे ॥ २९ ॥ सम्यग् वदन भये तन्द्रा, निद्रा, मुखमें दुर्गंध, साज, संग्र-  
 हणी व विपटोप ये रोग नहीं रहते न होते हैं ॥ ३० ॥ ( वमन पर सघम )  
 भारी व गरिष्ठ पटार्थ, त्रंदा जल, परिश्रम, मैथुन, तेलभर्दन व क्रोध जितदिन वमन  
 करै तो इनसे बचारहै ॥ ३१ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेत्तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

( वमनान्तमें विचरेचन ) मयम मनुष्य स्नेह पानादिक कर्मकारि स्नेह कर्म करै

वान्तरैयत्वेधःस्वस्तोग्रहर्णाल्लादयेत्कफः १ मन्दाग्निगौर  
 चंकुर्याज्जनयेद्वाप्रवाहिकाम् । अथवापाचनेरामं बलासं  
 चविपाचयेत् २ स्निग्धस्यस्नेहनैःकार्यंस्वेदैःस्विन्नस्थरे  
 चनम् । शरदृतौवसन्तेचदेहशुद्धौविरेचयेत् । अन्यदात्य  
 यिकेकालेशोधनंशीलयेद्बुधः ३ पित्तेविरेचनंदद्यादामो  
 जूतेगदेतथा । शरीरजानांदोषाणांक्रमेणपरमौषधमावस्ति  
 विरेकोवमनंतथातैलघृतंमधु ४ दोषाःकदाचित्कुप्यन्ति  
 जितालङ्घनपाचनैः । येतुसंशोधनैःशुद्धानतेषांपुनरुद्भवः  
 ५ बालवृद्धावतिस्निग्धःक्षतक्षीणोभयान्वितः । श्रान्त  
 रत्नपार्तःस्थूलश्चगर्भिणीचनवज्वरी ६ नवप्रसूतानारी  
 फिर यमनं करै तब रेचनकरै सो रेचन उचम प्रकार है और प्रथम कर्महीन रेचन  
 करे, कफ नीचेजाय ग्रहणी कहे पित्तपरा अग्निधरा घाइलेताहै ॥ १ ॥ इसकारण  
 ते अग्निमंद, देहभारी, देह जकडना, प्रवाहिका कहे दारण प्रतीसार ये रोग  
 उत्पन्न होते हैं जो कर्महीन रेचन शीघ्रदियाचाहे तौ नीचे गिरनेवाला कफ और  
 आव तिसे मूत्रे रंडकीजड़ आदि सेवन कराय पचाय रेचनकरै और भेड, चरक,  
 सुश्रुत व वाग्भट इनका मत यहहै कि प्रथम यमन कराय छ.दिन वित्ताय तीन  
 दिन स्नेहपान कराय फिर तीन स्वेद साधित तीन वाद सोरहे दिनमें लडुमोचन  
 दे रेचनकरावै ॥ २ ॥ ( रेचनका दूसरा प्रकार ) जो घृत दूधकनि निच  
 मनुष्य वा मट्टीके गोला व रूट करि स्वेदित मनुष्य तिसे रेचन करै वन्ने दवा  
 हार, कातिक, चैत व वैशाखमें रेचन कर्म किये देह शुद्ध होनाही है नून नो  
 वैद्य रोगीका रोग निवार तिनके निवारणार्थ अनुक्तकालमें भी विरेचन करै ॥  
 ३ ॥ विशेष रेचन योग्य पित्त विकार, आमवायु, उदररोग, नादान, बाहुकोठ-  
 वद्ध इनरोगों को विशेष शुद्ध करि क्ताय परमौषध ग्रहने जानना कर्मिकने,  
 रेचनकर्म, यमनकर्म, तैल, घृत, शहद ययारोग यत्रकरै ॥ ४ ॥ ( दोष नि-  
 वारण मे उत्कर्ष रेचन ) वातादि दोष लघन पाचनकरे दन्ताने है परन्तु  
 थोडे कुपय किये ते उमर आते है और जो रेचनकरि वातादि दोषों से शुद्ध  
 किये शरीर वेग नहीं उभरते ॥ ५ ॥ ( रेचन के अघोचन ) चानक, वृद्ध,  
 अतिस्नेह पानपर उरन्तव, क्षीणमनुष्य, भययुक्त, अपित्त, वृषित, स्थूलशरीर,

चमन्दाग्निश्चमदात्ययी ॥ शाल्यादितश्चरूक्षश्चनविरे  
 च्याविजानता ७ जीर्णज्वरीगरव्याप्तोवातरक्तीभगन्द  
 री । अर्शःपाण्डूदरोग्रन्थीहृद्रोगारुचिपीडिताः ८ योनि  
 रोगःप्रमेहार्तागुल्मप्लीहव्रणादिताः । विद्रधिच्छर्दिविस्फो  
 टविसूचीकुष्ठसंयुता ९ कर्णनासाशिरोवक्तुगुदमेहामया  
 न्विताः । ङ्गीहशोफाक्षिरोगार्ताःकृमिक्षारानिलादिताः ।  
 शूलिनोमूत्रघातार्ताविरेकाहानरामताः १० बहुपित्तोमृदुः  
 प्रौक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः । बहुवातःकूरकोष्ठोदुर्विरेच्यः  
 सकथ्यते ११ मृद्धीमात्रामृदौकोष्ठेमध्यकोष्ठेचमध्यमा ।  
 क्रूरेतीक्ष्णामताद्रव्यैर्मृदुमध्यमतीक्ष्णकैः १२ मृदुर्द्राक्षाप  
 यश्चञ्चुतैरपिविरिच्यते । मध्यमखिरतातिकाराजवृक्षै  
 विरिच्यते।कूरःस्नुक्पयसाहेमक्षीरीदन्तीफलादिभिः १३  
 गर्भिणी, नरज्वरी ॥ ६ ॥ तुरन्त पुत्रजनिता री, मन्दाग्नि, अतिमदपीडित,  
 शल्यवेधित, क्षतयुक्त और रुक्ष को निस्तेज मनुष्य इनको रेचन नहीं देना ॥  
 ७ ॥ ( रेचनयोग्य ) जीर्णज्वरी, विपपीडित, वातरक्त व भगंदर रोगी, अ-  
 र्शरोगी, पादुरोगी, उदररोगी, ग्रन्थिरोगी, हृदयरोगी, अरुचिसे पीडित ॥ ८ ॥  
 योनिरोग, प्रमेह, गुल्म, प्लीहा, व्रणी, विद्रधि, छर्दि, विस्फोटक, विसूची, कुष्ठ ॥  
 ९ ॥ कानरोग, नाकरोग, मस्तकरोग, मुखरोग, गुदा रोग, गरमी, यद्वत्, सूजन,  
 नेत्ररोग, कृमिरोग, सोम्लाटि रोग शूल और मूत्राघात इन रोगन करि पीडित  
 मनुष्य को रेचन देवे ॥ १० ॥ ( रेचन तीन प्रकार ) कोमल मध्यम व  
 कराल कोष्ठवेधक जिस मनुष्यकी कोमल मृदुतिहो उसका कोठा मृदुहै जिसकी  
 केवल मृदुतिहै, उसका कोठा मध्यम है जिसकी केवल वात मृदुति हो उसका  
 कठोर कोठा है सो कड़े कोठेवाला रेचन विषम में दुःखपाताहै उसे रेचन करने  
 से मलद्राघ शीघ्र नहीं होताहै ॥ ११ ॥ कोमल कोठा समुक्ति मृदुरेचन करावे  
 मध्यम कोठावाले को मध्यम मात्र विरेचन करावे मृदु मध्यमादिककोष्ठी को  
 मृदु मध्यमादि औषधे कोमलकोष्ठी को दाख, दूध व रंठी का तेलयुक्त करि  
 रेचन दे मध्यमकोष्ठी को निशोष, कुटकी व अमलतास इनका रेचन दे कूर-  
 कोष्ठी को सेंहुड़ का दूध वा जमालगोटा इनका रेचन दे ॥ १२ । १३ ॥

मात्रोत्तमाविरेकस्यत्रिंशद्भेदैः कफान्तिका । वेगैर्विंशति  
 भिर्मध्या हीनोक्तादशवेगिका १४ द्विफलंश्रेष्ठमाख्या  
 तं मध्यमंचपलंभवेत् । पलाच्चैकषायाणां कनीयस्तु  
 विरेचनम् १५ कल्कमोदकचूर्णानां कर्षमध्वाज्यलेह  
 तः । कर्षद्वयंपलंवापि वयोरोगाद्यपेक्षया १६ पित्तो  
 त्तरेत्रिवृत्तूर्णं द्राक्षाकाथादिभिःपिवेत् । त्रिफलाकाथगो  
 मूत्रैःपिवेद्वयोषंकफार्हितः १७ त्रिवृत्सैन्धवशुण्ठीनां चूर्ण  
 मम्लैःपिवेन्नरः । वातार्हितोविरेकायजाङ्गलानारसेनवा  
 १८ एरण्डतैलंत्रिफलाकाथेनद्विगुणेनवा । युक्तम्पीत्वा  
 पयोभिर्वा नचिरेणविरिच्यते १९ त्रिवृताकौटजंबीजं पि  
 प्पलीविड्वभेजम् । मृहीकायारंसशौद्रं वर्षाकालेवि  
 रेचनम् २० त्रिवृद्दुरालभासुस्ताशर्करादिव्यचन्दनम् ।

उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ रेचन प्रमाण मल गिरते गिरते अन्त में कफ गिरे  
 ऐसे तीस वेग आये सो उत्तम मात्रा है वेगकहे ठस्त जिसमें बीस वेग तक  
 अन्तमें कफ गिरे वह मध्यम है जिसमें दश वेग तक कफ गिरे यह शनिरचन  
 मात्रा है ॥ १४ ॥ ( रेचन काथादि प्रमाण ) रेचन में काथा की मात्रा दो  
 पल उत्तम एक मयम आषापल कनिष्ठमात्रा है ॥ १५ ॥ ( रेचन कल्का  
 दिक प्रमाण ) कल्क मोदक चूर्ण तीनों का कर्ष कर्ष प्रमाण है और शूद्र  
 वृत्तयुक्त रेचन देय वा रोगीका रोग, अस्थि वा बलको देखि दो कर्ष से पनमा  
 तक यथोचित मात्रा देना ॥ १६ ॥ ( रेचनमें द्रव्यप्रकार ) पित्तमें निरोध  
 चूर्ण दास काथमें गुलाकन्द गुलाय फूल वही सौंफके तेल में देय कफ दोषमें  
 सौंठ, मिर्च पीपरि चूर्ण व त्रिफला काथमें पियायें कफदोष दूर होइ ॥ १७ ॥  
 वातकोप में निशोय, सौंठ, सैन्धव चूर्ण, नींबूस वा काँचि वा जंगनी चन्दनके  
 मांसका गुणयुक्त देइ तो रेचन अच्छाहो वायुकोप शान्तहो ॥ १८ ॥ ( अपर  
 औषध रेचनपर ) रेंडी तेल से दूना त्रिफलाकाथ प्यावे वा दूनाचूचुन्द  
 प्यावे भाहा जल्दहो ॥ १९ ॥ ( रेचन शूलु भेदसे ) निगोय, उन्धवद, पी-  
 परि, सौंठ व दासके काथ शहद दारि वर्षामें प्यावे ॥ २० ॥ ( जरद में )

द्राक्षाम्बुनासयष्ट्याह्वांशीतलंपघनात्यये २१, त्रिवृताचि  
 त्रकंपाठाह्यजाजीसरलावचा । हेमक्षीरीचहेमन्तेचूर्णमु  
 षणाम्बुनापिवेत् २२ पिप्पलीनागरंसिन्धुंश्यामाचत्रिवृता  
 सह । लिहेत्क्षौद्रेणशिशिरेवसन्तेचविरेचनम् । त्रिवृताश  
 र्करातुल्याग्रीष्मकालेविरेचनम् २३ अभयामरिचंशृण्ठी  
 विडङ्गामलकानिच । पिप्पलीपिप्पलीमूलंत्वक्पत्रंमुस्त  
 भेवच २४ एतानिसमभागानिदन्तीचत्रिगुणाभवेत् ।  
 त्रिवृदष्टगुणाज्ञेयाषड्गुणाचात्रशर्करा २५ मधुनामोद  
 कंकृत्वाकर्षमात्रप्रमाणतः । एकैकंभक्षयेत्प्रातःशीतंवानु  
 पिवेज्जलम् २६ तावद्विरिच्यतेजन्तुर्यावदुष्णंनसेव्यते ।  
 पानाहारविहारेषुभयेन्निर्यन्त्रणंसदा २७ विषमज्वरम  
 न्दाग्निपाण्डुकासभगन्दरान् । दुर्नामकुष्ठगुल्माशौर्गलं  
 गण्डभ्रमोदरान् २८ विदाहप्लीहमेहांश्चयक्षमाणंनयना  
 मयान् । वातरोगंतथाधमानंमूत्रकृच्छ्राणिचाश्मरीम् २९

निशोध, जवासा, मोथा, सुगन्धगता, मिथी श्वेतचन्दन, मुलेठी, दाख कायमें  
 प्याथै तौ रेचनहो ॥ २१ ॥ ( हेमन्तमें ) निशोध, चीता, पादा, जीरा, देवदारु,  
 बच और चूक इनका चूर्ण उष्णजलके साथ पियै तौ रेचनहो ॥ २२ ॥ ( क्षि-  
 शिर व चसन्त में ) पीपरी, सोंठ, सेंपव, विपारा, निशोध इनका चूर्ण शहद  
 युक्त चाटै तौ रेचनहो ग्रीष्म में निशोध का चूर्ण शकर समभाग युक्तकरि फाकै  
 तौ रेचनहो ॥ २३ ॥ ( रेचन पर अभयादिक मोदक ) इष्ट, मिर्च, सोंठ,  
 विडंग, आवला, पीपरी, पीपरापूल, तज, पत्रज व मोथा ॥ २४ ॥ ये सब समान  
 भागले कमालगोटा की जह त्रिगुण निशोध अठगुणा शकर छ'गुणी ॥ २५ ॥  
 शहद में मल कर्ष कर्ष भरकी गोली चाधि प्रभात एकनाथ शीतलजन पियै ॥  
 २६ ॥ जब बेग मल को रोंकाचाहै तब तत्ताजनपियै और खान पान विहार यत्र  
 से परहेज रखते ॥ २७ ॥ तौ विषमज्वर मंदाग्नि, पाण्डु, कास, भगन्दर, दुर्नाम,  
 कुष्ठ, सुन्म, अर्श, गलगण्ड, भ्रम, चदररोग ॥ २८ ॥ दाह, प्लीह, ममेह, यक्ष्मा,

अभयामोदकाह्येतरसायनवराःस्मृताः । पृष्ठपाश्वरोरुज  
 धनकट्युदररुजजयेत् । सततशीलनादेषांपलितानिप्र  
 णाशयेत् ३० पीत्वाविरेचनशीतजलैःसंसिच्यचक्षुषी ।  
 सुगन्धिकिञ्चिदाघ्रायताम्बूलंशीलयेन्नरः ३१निर्घातस्थो  
 नवेगांश्चधारयेन्नस्वपेतथा । शीताम्बुनस्पृशेत्कापिको  
 षणीरंपिवेन्मुहुः ३२ बलादौषभ्रपित्तानिवायुर्वान्तेयथा  
 व्रजेत् । रेकात्तथामलपित्तभेषजचक्रफोत्रजेत् ३३ दुर्वि  
 रक्तस्यनाभेस्तुस्तब्धत्वंकुक्षिशूलता । पुरीषवातसङ्गश्च  
 कण्डमण्डलगोरवम् । विदाहोरुचिराध्मानंभ्रमश्छर्दि  
 श्चजायते ३४तंपुनःपाचनैःस्नेहैःपक्त्वासंस्नेह्यरेचयेत् ।  
 तेनास्थोपद्रवायान्तिदीप्ताग्नेर्लघुताभवेत् ३५ विरेक

नेत्ररोग, वातरोग, पेटफूलना, सूत्रकृच्छ्र, पयरी ॥ २२ ॥ पीठ, पसुरी, क्षाती,  
 जांघ, कटि और पेट इनके रोग दूरहो इस अभयामोदक सेवनसे तुरतही बाल  
 पकना भिदै यह रसायनश्रेष्ठहै ॥ ३० ॥ ( रेचनअच्छेप्रकार होभेका पल)  
 रेचनौषध पीके ठंढे जल से आंखें व मुख पीछे व सुगन्धादि फूल सूंघ पानला-  
 या करै इस योग के करने से चित्त स्वस्थ रहता है व अच्छी तरह वेग धातेहैं ॥  
 ३१ ॥ ( रेचन समय साधना ) पवन व मलपत्र को न रोकें न ओट्टे ठंडा  
 जलन छुवै श्योंज्यों वेग होय त्योंत्यों बारबार तत्तापानी पियै इससे खुलकर मल  
 गिरैगा ॥ ३२ ॥ सम्यक् रेचन में जैसे सम्यक् व्रमन में कफ और त्वांद्दुई औ-  
 षध से पित्त, वायु व सबदोष मुख से गिरते हैं वैसेही ये सब मलमार्ग से गिरते  
 हैं ॥ ३३ ॥ ( रेचन देने पर वेग न होय तिसके उपद्रव ) जिस मनुष्य  
 को रेचन देने से वेग अच्छी तरह न आवै उसकी नाभिके नीचे कड़ापन और  
 कोप में शूल मल में वायु मिलजाय खजुली, मपदंल, देह जकड़ना, दाह, भ्र-  
 वसि, पेटफूलना, भ्रम व छर्दि ये उपद्रव उत्पन्न होते हैं ॥ ३४ ॥ ( अशुद्ध  
 रेचनयत्न ) जिसे रेचन अच्छी तरह न हुआ उसे रातका आसवपादि पा-  
 चन दे फिर स्नेहविधि से शृत पिलाय कोठा धिकना करि रेचन देने से शुद्ध  
 रेचन होगा सब उपद्रव शान्त होंगे और जत्राग्नि दीप्तहो व देह हलकी होजती

स्यातियोगेनमूर्च्छांशोऽगुदस्यचाशूलंकफातियोगःस्या  
 न्मांसधावनसाक्षिभम् । भेदोनिभञ्जलाभासं रक्तंवापिवि  
 रिच्यते ३६ तस्यशीताम्बुभिःसिक्तंशरीरंतन्दुलाम्बु  
 मिः । मधुमिश्रैस्तथाशीतैःकारयेद्भ्रमनंमृदु ३७ सहकार  
 त्वचः कल्कोद्धनासौवीरकेणवा । पिष्टोनाभिप्रलेपेनह  
 न्त्यतीसारमुत्त्रणम् ३८ अजाक्षीरंपिवेद्वापिवैष्णिकंरंहारिणं  
 तथा । शालिभिःषष्टिकैःस्वल्पंमसूरैर्वापिभोजयेत् ३९  
 शीतैःसंग्राहिभिर्द्रव्यैःकुर्यात्संग्रहणंभिषक् । लाघवेमनस  
 स्तृष्ट्यामनुलोमेगतेनिले ४० सुविरिक्तंनरंज्ञात्वापाचनं  
 पाययेत्त्रिंशः । इन्द्रियाणांवलंबुद्धेःप्रसादोवह्निदीपनम् ।  
 धातुस्थैर्यत्रयस्थैर्यत्रभवेद्रेचनसेवनात् ४१ प्रवातसेवा  
 शीताम्बुस्नेहाभ्यङ्गमजीर्णताम् । व्यायामंमैथुनंवापिनसे  
 वेतविरोचितः ४२ शालिषष्टिकमुद्गाद्यैर्यवागुंभोजयेत्कृता

है ॥ ३५ ॥ ( अतिविरेक में उपद्रव ) मूर्च्छा, कांच निकरना, पेटमें शूल,  
 कफ अधिक गिरना, मांस के धोत्रन सदृश गिरना, चरबी सीं वा पानी व रुधिर  
 गिरै ॥ ३६ ॥ ( अतिविरेकोपद्रव यत्न ) ठण्डे जल से शरीर पोंछै व  
 गुलाब कंबुडा छिरके व यत्न से पोंछै वा चावलका धोवन शहदयुक्त पीवै और  
 शर्द्र औपध दे मृदुवमन करावै इससे उपशमन होताहै ॥ ३७ ॥ आम की छाल  
 गोदधि व सौबीर इन्हें पीसि कल्ककरि नाभिपर लगावै तो वेग बन्दहो अथवा  
 सौबीर में आम की छाल पीसि नाभि पर लगावै "सौबीर की क्रिया मध्यखण्ड  
 में कही है" ॥ ३८ ॥ ( झाडा घन्द करने को ) घकरी का दूध, शकुनीचि-  
 डिपा का मांस घूस, भात व मसूरी सत साठीचावलका भात खाय ॥ ३९ ॥  
 और थनार व ठंडे पदार्थका सेवन करै वेग बन्दहोय ( स्वल्प विरेकमें ल-  
 क्षण ) शरीर हलका प्रसन्नचित्त स्वस्थ गमन वायु ॥ ४० ॥ ऐसे लक्षण देखि  
 रातिको पाचन देना वा पाचनार्थ 'रंडमूल, सोंठ, धनियेका काथ दे' रेचन  
 सेचने से इन्द्रियां चलकान् हों बुद्धि प्रसन्नरहे अग्नि दीप्तहो धातुपुष्टो व अवस्था  
 यत्कर स्थिर होभी है ॥ ४१ ॥ ( रेचन पर वर्जित ) व्याय, उण्डा जल



म् । जाङ्गलैर्विष्किराणांवारसैःशाल्योदनंहितम् ॥ ४३ ॥  
इतिःशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेरेचनाऽध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

वस्तिद्विधानुवासाख्योनिरूहश्चततःपरम् । वस्ति  
भिर्दीयतेयस्मात्तस्माद्वस्तिरितिस्मृतः १ यःस्नेहैर्दीयते  
सस्यादनुवासननामकः । कषायक्षीरतैलैर्योनिरूहःसनि  
गद्यते-२ तत्रानुवासनाख्योद्विवस्तिर्यःसोत्रकथ्यते । पू  
र्वमेवततोवस्तिर्निरूहाख्योमविष्यति ३ निरूहादुत्तरंचै  
ववस्तिःस्यादुत्तराभिधः । अनुवासनभेदैश्चमात्रावस्ति  
रुदीरितः ४ पलद्वयंतस्यमात्रातस्मादर्द्धापिवाभवेत् ।  
अनुवासस्तुरूक्षःस्यात्तीक्ष्णाग्निःकेवलानिली ५ नानुवा  
स्यस्तुकुष्ठीस्यान्मेहीस्थूलस्तथोदरी । अस्थाप्यानानुवा  
स्याःस्युरजीर्णान्मादृड्युताः । शोकमूर्च्छारुचिभयश्वा  
तेलस्पर्श, अजीर्ण, श्रम व मैथुन इनसे बचारेहे ॥ ४२ ॥ ( रेचनपर पथ्य )  
चावल, मूंग की यबागू वा हरिणादि मांसका यूप वा लवा बटेर तीतर मांसका  
यूप भात में दे ॥ ४३ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरे उत्तरखण्डे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

( अथ वस्तिकर्म ) गुदाके भीतर अण्डकोशकी जड़ताई द्रव्यभरि पिच-  
कारी देनेको वस्ति कहते हैं सो दो प्रकारकी है अनुवासन १ निरूहण २ जिस  
में धी-बोलादि चिकनी वस्तु भरि दीजै उसे अनुवासनवस्ति कहते हैं और  
कादम, दूध व तेल मिश्रित पिचकारी भरि पीड़ितकरै वह निरूहणवस्ति कहती  
है ॥ १ । २ ॥ सो प्रथम अनुवासन वस्ति है पीछे निरूहण है इसी से निरू-  
हण को उत्तरवस्ति भी कहते हैं ॥ ३ । ४ ॥ ( अनुवासन की द्रव्यका  
प्रमाण ) स्नेहादि दो पल व एक पलका प्रमाण जानना ऐसे पिचकारी के भेद  
हैं ( अनुवासन योग्य ) रूतमकृती वा स्नेहपानराहित को वा अग्नि दीप्त  
करनेको केवल वातरोगी को ये अवश्य अनुवासन योग्यहैं ॥ १ ॥ ( अथानुवा-  
सन अयोग्य निरूहण योग्य ) कुष्ठी, प्रमेही, मोटा शरीर और उदर  
रोगी ये अनुवासन योग्य नहीं हैं और अजीर्ण, उन्मादी, तृपी, शोक, मूर्च्छा-

सकासक्षयांतुराः ६ नेत्रं कार्यं सुवर्णादिधातुभिर्वक्षवेणुभिः ।  
 नलैर्दन्तैर्विषाणाग्रैर्मणिभिर्वाविधीयते ७ एकवर्षानुषङ्गं  
 र्षयावन्मानं पङ्गुलम् । ततोद्वादशकं यावन्मानं स्याद्  
 षट्सम्मितम् । ततः परं द्वादशभिरङ्गुलैर्नेत्रदोर्घतां मुद्ग  
 च्छिद्रं कलायाभं छिद्रं कोलास्थिसन्निभम् । यथासंख्यं भ  
 वेत्नेत्रं श्लक्ष्णं गोपुच्छसन्निभम् ९ आतुराङ्गुष्ठमानेन मू  
 ले स्थूलं विधीयते । कनिष्ठिकापरीणाहमग्रे च गुटिका मुख  
 म् १० तन्मूले कर्णिके द्वे च कार्ये भागाच्चतुर्थकात् । योजयेत्त  
 त्रवस्ति च बन्धद्वयविधानतः ११ मृगाजशूकरगवामोहि  
 षस्यापि वा भवेत् ॥ मूत्रक्रोशस्य वस्तिस्तु तदलाभेन चर्म  
 जः । कषायरक्तः समृद्धुस्तोक्ष्णः स्निग्धो हृद्यो हितः १२

अरुचि, भय, श्वास, कास व ज्वर इनसे पीडित को निरूहण वस्ति अयोग्य है ॥  
 ६ ॥ परन्तु अनुवासन योग्य है वस्ति कहे ( पिचकारी निर्माण विधि )  
 मैत्राहै पिचकारी की नली जो गुदमें प्रवेशी जाय तो सुवर्णादि धातुकी, चांस,  
 नरकुल, राजदन्त व मृगसौं ग की हो और उसका अग्रभाग पक्षा व बिल्लौरका  
 घनायै ॥ ७ ॥ नली योग्य अवस्था जो वर्ष एक से छः वर्षताई बालक के  
 वस्ति की नली छः अंगुल घनायै और छः वर्ष से बारह वर्षताई की आठअंगुलकी  
 घनायै और बारह वर्षसे ऊपरवाले की नली बारह अंगुलकी घनायै ॥ ८ ॥ (नली  
 छिद्रप्रमाण और निर्माणविधि) छ अंगुलकी नलीका प्रवेश करनेवाला मुख  
 ध्रुग समान करे नीचेका छोटी अंगुली समान और आठ अंगुलकी मटरसा दूसरी  
 मध्य अंगुलीसा बारह अंगुलवाली का भरखेरी के घेर समान । दूसरी अंगुली  
 समानराले नली बहुत चिकनी रहै गोपुच्छ सदृश ॥ ९ ॥ एक और पतली दूसरी  
 और मोटी मोटी औरके चौथाई भाग में दो छल्ले जड़ेहीं तिसमें थैली हस्ति  
 ग्यादि के मूतने की चढ़ाई पूर्वोक्त द्रव्योंका भाग थैली समेत बहुत पुष्ट कर्म  
 जिसमें थैली औषध न और राहसे निकले तब पिचकारी ठीक जानो ॥ १० ॥  
 ११ ॥ थैली निर्मित जानो-हरिण, हाथ, बराह, बैल व भैंसा इनके मूत्रकी  
 थैली उस नली में लगावै जो ये न मिळै तो इनके चमड़े को कमलपत्र सम काटि

ब्रणवस्तेस्तुनेत्रस्याच्छुष्णमष्टाङ्गुलोन्मितम् । मुद्गच्छि  
 द्रग्ध्रपक्षनलिकापरिणाहिच १३ शरीरोपचयवर्णवल  
 मारोग्यमायुषः । कुरुतेपरिवृद्धिचवस्तिःसम्यग्गुपासि  
 तः १४ दिवसान्तेवसन्तेचस्नेहवस्तिःप्रदीयते । ग्रीष्म  
 वर्षाशरत्कालरात्रौस्यादनुवासनम् १५ नचातिस्निग्ध  
 मशनभोजयित्वानुवासयेत् । मद्मूर्च्छाचजनयोद्विधास्ने  
 हःप्रयोजितः १६ रुक्षभुक्तवतोत्यन्तंवलवर्णचहीयते । यु  
 क्तस्नेहमतोजन्तुभोजयित्वानुवासयेत् । हीनमात्रावुभौ  
 वस्तीनातिकार्यकरोस्मृतौ १७ अतिमात्रौतथानाहङ्गमा  
 तीसारकारकौ । उत्तमस्यपलैः षड्भिर्मध्यमस्यपलैस्त्रि  
 भिः १८ पलाद्यद्देनहीनस्ययुक्तामात्रानुवासने । शता  
 ह्लासैन्धवाभ्यांचदेयस्नेहेचचूर्णकम् १९ तन्मात्रोत्तमम

दोनों और छीलि साफ करि थली समान बनाय नलीपर चढ़ाये ॥ १२ ॥  
 ( ब्रणादि विषकारी का प्रणाम ) पाव फोड़ा नासुरादि की पिचकारी घाठ  
 अंगुल लम्बी मंग पैठने मुवाफिक डेढ़ रहे शूद्र के पन्नसदृश गोटी अतिधिकनी  
 पतली छोटी नासुर प्रणयोग है ॥ १३ ॥ ( वस्तिगुण ) वस्ति अक्षेप्रकार हो  
 तौ शरीर पुष्ट और कांति, बल, आरोग्य व आहुष्टि करे ॥ १४ ॥ ( वस्ति  
 सेचनका ल ) वसन्तऋतुमें सन्ध्यासमय स्नेहवस्ति करे अनुवस्ति करना ग्रीष्म  
 वर्षा शरत् में रात को करना ॥ १५ ॥ रोगी को उष्ण चिकना भोजन रात को  
 खिलाय अनुवासन करने से मद या मूर्च्छा उत्पन्न होती है और खले भोजन से घला  
 व कांति की हानि होय ये दोनों तरह वस्तिकर्म करे ये रोग होते हैं ॥ १६ ॥ १७ ॥  
 ( वस्तिकर्म में न्यूनाधिकमात्रादोष ) अनुवासन वा निरुद्ध्य में  
 हीन मात्रा देने से रोग नहीं जाता अति मात्रा देने से आनाह, प्लानि व अती-  
 सार ये उत्पन्नते हैं वस्तिकी उत्तम मात्रा छः पलकी थली को अनुवासन देना  
 मध्यम पलको तीन पलकी ॥ १८ ॥ पलहीन को हीन मात्रा डेढ़पल देना स्नेह में  
 और द्रव्य मात्रा शतावरी संघव का चूर्ण छः माशे की उत्तम मात्रा चारि माशे  
 की मध्यम दोमाशे की कनिष्ठ जानना ( विरेचन पर वस्तिप्रकार ) विरे-

ध्यान्ताः पटुचतुर्द्वयमाषकैः । विरेचनात्सप्तरात्रिगतेजात  
 वलायच २० भुक्तात्रायानुवास्यायवस्तिदेयानुवासनः ।  
 अथानुवास्यंस्वभक्तमुष्णाम्बुस्वेदितंशनैः २१ भोजयि  
 त्वायथाशास्त्रकृतंचङ्गमणंततः । उत्सृष्टानिलविष्मत्रयो  
 जयेत्स्नेहवस्तिना २२ सुप्तस्यवामपाश्वेनवामजङ्घाप्र  
 सारिणः । कुञ्चितापरजङ्घस्यनेत्रंस्निग्धगुदेन्यसेत् २३  
 बद्धावस्तिमुखंसूत्रैर्वामहस्तेनधारयेत् । पीडयेद्वक्षिणेनैव  
 मध्यवेगेनधीरधीः २४ जृम्भाकासक्षयादीश्चवस्तिकाले  
 नकारयेत् । त्रिंशन्मात्रामितःकालःप्रोक्तोवस्तेस्तुपीड  
 ने २५ ततःप्राणिहितःस्नेहउत्तानोवाक्छतंभवेत् । जा  
 नुमण्डलमावेष्ट्यकुर्याच्छोठिकयायुतम् २६ एकामात्रा  
 भवेदेपासर्वत्रैषविनिश्चयः । प्रसारितैःसर्वगात्रैर्यथावी  
 र्यंप्रसर्पति २७ ताडयेत्तलयोरेनंत्रीन्वारांश्चशनैःशनैः ।

चन किये को सात दिन बिताय बल आने पर ॥ १९ ॥ २० ॥ भोजन कराथ  
 अनुवासन वस्तिकरना ( पिचकारी पीड़ित प्रकार ) अनुवासन कम्प्रे के मयम  
 तेल लगाय गरम पानी से नहवाय ॥ २१ ॥ यथालिखित भोजन कराथ कुद  
 टहलाय पवन, मल व मूत्र की शक्ल मिटाय ॥ २२ ॥ चाहे करवट पीडाय दाहिना  
 गोड़े सिकोड़ बायां बगारि मलमार्ग में घी लगायै ॥ २३ ॥ तब पिचकारी थैली  
 में गंधा लिखित स्नेह गात्रा अरि वैद्यपर वस्ति का फुल सूत्र से बांधि चाहे कर  
 धारि धीरे धीरे मलमार्ग में दो अंगुल प्रवेश ॥ २४ ॥ तब दाहिने हाथ से द्रव्यभरी  
 थैली मन्द मन्द पीड़ित करे जिसमें भीतर पिचकारी देते हैं उस समय उसांसी  
 छोक खांसी न आवै ( रोगीको चस्तिप्रदसमय ) पिचकारी दे तीस मात्रा  
 साहै रोकै इतनी बेर भे स्नेहादिक अन्दर प्रवेश होजायगा फिर सौ मात्रा तक  
 सीधा गुलाबै ( माथाप्रमाण ) जेय मण्डल कहे "कटि से गुदनी पर्यन्त" तिसके  
 चारों ओर चुटका बजाता हाथ घूमआवे ॥ २५ ॥ २६ ॥ तौ एकमात्राहोय यह  
 सब प्रन्थन में निश्चय है ( चस्तिके पीछे कृत्य ) चस्ति पीड़ित करे रोगी के  
 पाँच हाथ व शरीर फलाय लम्बा करदे इससे सातौ धातु अपने अपने स्थानमें पैल

स्त्रिकजश्चैवंततःश्रीर्णा शय्याभैघोक्षिपेततः २८ जाते  
 त्रिर्धानेतुततःकुर्वाच्चिद्रायशामुखम् । सांनिलःमुपरोष  
 इचस्नेहःप्रत्येतिप्रयत्नम् २९ उपद्रवविनाशीघ्रं ससम्बग  
 नुवासितः ३० जीर्णानिमर्थसायज्ञे । रनेहेप्रत्यागतेपु  
 नः ३१ लक्ष्मिभोजयेत्कामंदास्तागिमस्तुनरोपदिः ३२ ६० धनु  
 वासितायदेयंस्थाद्धितीयेहिसुखोदेकम् । धान्यजुष्टी  
 क्रपायोवारनेहव्यापत्तिनाशनम् ३३ अनेनविधिनाषट्ठा  
 सप्तर्षीष्टीनवाश्रिवा । विधेयान्स्तयस्तेषामेन्ते येवनिस्नेह  
 ग्राम् ३४ दन्तस्तुप्रथमोवस्तिस्नेहयेद्वस्तिघट्टकैर्णैर्निलि  
 स्त्र्यदत्ताद्वितीयस्तुमूर्धस्थमनिलंजयेत् । ३५ अथैवर्षेच  
 धनेयेत्तृतीयस्तुप्रयोजितः । चतुर्थेऽप्यमौवत्तीस्नेहयेत्ता  
 रमापृची ३६ प्रष्टोमांस्नेहयेत्सिस्तमोमेद ३७ च ३८

मोतवमश्चापिमञ्जानचयथाक्रमम् ३५ एवंशुक्रमतान्दी  
 प्राग्निद्विगुणःसाधुसाधयेत् । अष्टादशाष्टादशकान्त्वस्तीनां  
 योनिष्वते ३६ सकुञ्जरबलोप्यशत्रुजयेत्तुल्योमरप्रभः । रु  
 द्धान्त्रहुवाताग्रस्नेहवस्तिदिनेदिने ३७ दद्याद्द्वैद्यस्तथान्ये  
 षामन्यांवाधामपाहरेत् । स्नेहोल्पमात्रोरुक्षाणादीर्घकाल  
 मनात्ययः ३८ तथानिरुहःस्निग्धानामल्पमात्रःप्रशस्य  
 ते । अथत्रायस्यत्कालस्नेहोनिर्घातिकेवलः ३९ तस्यान्यो  
 न्यतरौदेयोनिहिस्निग्धस्यतिष्ठति । अशुद्धस्यमलोन्मिश्रः  
 स्नेहोनेतियदापुनः ४० तथाशैथिल्यसाधमानंशूलंश्वास  
 श्चजायते । पक्काशयैगुरुत्वचतत्रदद्यान्निरुहणम् ४१ ती  
 र्क्षणांतीक्ष्णौपधैर्युक्ताफलवर्तिहितायच । यथानुलोमनंवा  
 युर्मलस्नेहश्चजायते ४२ तथाविरेघनंदद्यात्तीक्ष्णनस्यच

होतै ॥ ३५ ॥ इस मकार से नव द्विगुनी अठारह वेग देने से शुक्रचातुका दोष  
 नाश होजाता है ॥ ३६ ॥ और जैसे छत्तीस वेगहो तिसे हाथी घोड़े सहस्र  
 बलही धीर देवतासपान कातिहा ( अल्पमत म ) जो रुद्ध जातकर अधिक  
 पीडित हो उसे अनुवासन वस्ति जब जब प्रयोजन जानै तब तब देय ॥ ३७ ॥  
 और चिकने या मोटे मनुष्यको जब जब उचित जानै तब तब निरुहणवस्ति  
 देय ही रोग नाश होताहै भूत मनुष्य को स्नेहवस्ति हलकी हलकी नित्य  
 मात देय ॥ ३८ ॥ और जो रोग विरकाल का होय ही निरुहण वस्ति  
 हलकी हलकी नित्यमात देय ( स्नेह शीघ्र निकलनेपर ) जब स्नेहादि शीघ्र  
 निकलपर तब निरुहणवस्ति करेइसी रीतिसे जितने वेग देय सपके अतमवृहण  
 देता जाय ( स्नेहद्याव न हानिपर उपद्रव ) जो विरेघन वमनकर शुद्ध किया  
 वास्तकमे किया तिसमे स्नेहादिक फरमेसे ये उपद्रव होतेहै ॥ ३९ ॥ शिथिल  
 गात्र, पेटहलना, शूल, श्वास, आमरी, मद्योर इन उपद्रवके दूरकरने को तीक्ष्ण  
 निरुहण देना ॥ ४१ ॥ तीक्ष्ण औषध युक्त फलवर्ती जिसमे धातु अधोमासी  
 हुई मल युक्त स्नेहका गिराव तिले तीक्ष्ण रचन तीक्ष्ण नास देने से शमन होते  
 है ॥ ४२ ॥ जो स्नेहवस्ति रुद्धने से कोई उपद्रव न होय और स्नेहादि भीतर रुते

मानिकृतानिमुनिपुद्गवैः १ निरुहस्यापरंतामप्रोक्तमास्था  
 पंतनुधैः। स्वस्थानस्थाप्रताहोपधातुतारंथाप्रनंमतम् २ नि  
 रुहस्यप्रमाणंतुप्रस्थंपादोत्तरंमतम् । मध्यमंअस्थसुहिष्टं  
 हीनं चकुडवास्त्रयः ३ अतिस्तिग्धोत्किष्टदोषोक्षतो रस्कः  
 कृशस्तथा । आध्मान,च्छादिहिकार्शकासंस्वाप्तप्रप्रीडितः  
 ४ गुदशोफालिसारातो वित्तूचीकुपुंसंभुतः ५ गर्भिणीमधु  
 मेहीचतास्थाप्यश्चजलोदरी ५ वार्तक्यावाद्युदावितपाता  
 मृगिप्रपमञ्चरे । मूर्च्छातृष्णादोदरात्ताहिसूत्रकृच्छ्रात्प्ररीपुत्र  
 ६ वृद्धासृग्दरमन्दाग्निप्रमेहेपुनिरुहपाशः । शूलेच्छप्रि  
 त्तहृद्योगेयोजयेद्विधिवद्वधः ७ उत्सृष्टानिलत्रिपमूर्च्छस्तिग्ध  
 स्विन्नमभोजितस्त्रकध्याह्नेष्टहमध्येप्रयथायोग्यंनिरुहये  
 के अनेक भेद हैं जहा टैसा केना चाशिये तहां, मुनी इरनेनेत्साही नाम प्ररा ई  
 यथा तेशनवस्ति दोषात्पुंस्ति न दोषरामनवस्ति चह नाम मकार जानना ॥ १ ॥  
 निरुहणका दूसरा नाम आस्थानवस्ति कहते हैं इस कारण से कि उत्पन्न हुये  
 धांपसंयुक्त रसादिक धातु अग्ने स्थान में प्राप्त हैं उनको, वातादिक, दोष, पा  
 रोगों को दूरकरि शुद्ध धातुओं को स्थितकरती है ॥ ३ ॥ ( निरुह नैऋत्य  
 प्रमाण ) निरुह सत्रामस्थी उचममाना है मस्यभारकी मध्यम तीन कुडन की  
 फानिपटमात्र कदातीह ॥ ३ ॥ ( निरुहमें अघोरघ ) अतिस्तिग्ध कोषेवाला )  
 ऊर्गत्त दोषाना, उरुजती, दृशी, आध्मानी, दृशिरोगी, हिदी, अर्या, मासाती,  
 धार ग्वासी प्रेगे मनुष्य ॥ ४ ॥ गुदाके निरुह पीडित, शोथी, अतीसारी, शीत,  
 रक्त, कुंभी, गर्भिणी, मधुमयी और जलोदरी इन रोगियों को निरुह देना  
 योग्य नहीं ॥ ५ ॥ ( निरुहवस्ति योग्य ) वात, उन्मत्त, वातरक्त, त्रिप,  
 मञ्चर, मूर्च्छा, तृष्णा, उदर, अन्नाह, मृच्छन्, पर्यती ॥ ६ ॥ पुराना रक्तमास  
 मन्दाग्नि, प्रमेह, गुल, अमन चित और वृद्धरोग इन रोगों में युक्त को निरुह  
 देना योग्य है ॥ ७ ॥ ( निरुहवस्तिवियान ) जिसे निरुह देनीहो वित्तो  
 मरु मूत्रकी रचना निरंतरण कराय परन कुदनेरी शूजा विटाय कोटा शूजमरि  
 देह में वेलेनगाय तप्तमल से अत्र पोदनी से मोड़ा सेकि दो पहर मयग से  
 योग्य ह्यागि जिस जता दो प देह तिस तमी आप्रभुमिप्रकारे ने गोरि पुराके

तुटः स्नेहवस्तिविधानेनबुधः कुर्याद्विकृष्टम । जातेनि  
रूहे चततो भवेदुत्कटकासनः ११ तिष्ठन्मूहृत्तमात्रं तु निरू  
हागमनेच्छया ॥ अनायातं मूहृत्तं तु निरूहशोधने हेरत् १०  
निरूहे रवमतिमात्कारमुत्राल्लेन्धवैः । यस्यक्रमेण गच्छ  
त्ति धिष्टमित्तकफत्रायवः । लाघवं चोपजायतसु निरूहं तमा  
दिशत् ११ यस्यस्याद्भस्तिरलपारुपर्वगोहीनमलाशिला  
मूत्रात्तोजाड्यारुचिमान्दु निरूहं तमादिशत् १२ विधित्त  
तामनस्तुष्टिः स्तिरघताद्याधिसिग्रहः आस्थामनस्नेहव  
स्तयो रसम्यग्दानेतु जक्षणम् १३ अनेन विधित्तं युक्त्या नि  
रूहवस्तिदानवित् । द्वितीयात्तृतीयवाचतुर्थवाचथोचितं  
म् १४ सस्नेह एकः पयने पित्तद्वोपग्रसासह । कपायकदुरुत्ना  
द्याः कफकोष्णास्त्रयामताः १५ पित्तश्लेष्मानिलाविष्टक्षीर  
युधरसैः क्रमात्तानिरूहं योजयित्वा चेतस्तदनवासयत् १६

अनुवासेन वास्तिविधानेने निरूहवस्ति करे ॥ १० ॥ ॥ फिर औषध धार  
निकलने के कारण मूहृत्तं कहें "दोपट्टी" कधी "दुहृत्" बंधव इतने में औषध  
गिरितो अन्धा जो न गिरि तो शोधने कहें रत्न ॥ १० ॥ यो भी न गिरि तो  
जत्रालार, गोमूत्र, खट्टे का रस ये सब मिलार फिर निरूहयो देनेसे गिरि  
(अच्छी) निरूहलक्षण) निरूह अच्छी होतो इनसे रज, पित्त, कफ ये  
बाधु गिरि और एरीर हलका शोधन तो निरूह यज्ञा जाये ॥ ११ ॥  
(अशुद्धवस्ति लक्षण) जिसके वास्तिद्वारे से विद्रोपकल्प विकार और मल  
नहीं निकल गये उसके मूत्रमार्ग में पीड़ा रहताइत्या और अस्ति होय ॥ १२ ॥  
(निरूहस्नेहवस्ति लक्षण) देह हलके, मन प्रसन्न, स्तब्ध चिन्ता रोगिनाश ये  
गच्छी वास्ति के लक्षण है ॥ १३ ॥ जो पुर, वासिकप, शनिकाल येथ यो  
निरूहवास्ति करे नहीं तो वास्ति विरुद्ध होता है (निरूहवस्तिदानप्रमाण)  
निरूहवस्ति एक वादो च दोन वा चार वा जत्र दोष उता दे ॥ १४ ॥  
यात्रोपमे स्नेहयुक्त निरूह एकवार देविते ये स्थाने धार कफमे कपायकदु  
रुत्तादिपुत्रा तुष्णोष्णकारे तीनवार दे ॥ १५ ॥ विद्रोपकलाप इव पांशुसयुक्त



सुकुमारस्य वृद्धस्य बालस्य च मृदुर्हितः । वस्तिस्तीक्ष्णः  
 प्रयुक्तस्तुतेषां हन्त्राद्विलायुपीः १७ दद्याद्दुष्केशने पूर्वमध्व  
 दोपहरंततः । पश्चात्संशमनीयं च दद्याद्वास्तिविचक्षणः १८  
 एरण्डबीजं मधुकं पिप्पलीसैन्धवं च । हवुषा फलकलकरचं  
 वस्तिरुच्छेदनं स्मृतः १९ शताह्वामधुकं विल्वं कौटजं फलं  
 मेव चासकाञ्जिकुःसंगोमूत्रो वस्तिर्दोषहरः स्मृतः २० शोधनं  
 नद्रव्यं निष्काथं स्तत्कल्कैः स्नेहसैन्धवैः । युक्त्या खंजेन स  
 थिता वस्तयः शोधनाः स्मृताः २१ प्रियङ्गुर्मधुकोमुस्तात  
 थैव च रसाञ्जनम् । सक्षीरः शस्यते वस्तिर्दोषाणां शमने स्मृ  
 तः २२ त्रिफलाकाथगोमूत्रचौद्रचारसमायुताः । ऊर्षकादि  
 प्रतीवापैर्धस्तयोलेखनास्स्मृताः २३ वृंहणं द्रव्यं निष्काथं

क्रमते चारुण देना तिस्र पीड्ये च्चेद्यस्ति देना ॥ १६ ॥ सुकुमारं वा वृद्ध  
 वा बालकं को हलकी निरुह देना सुकुमारादिकी तीक्ष्णवस्ति से बल और  
 आयु घटती है हडं वा आक्लादि कटुई कुलथी व यवादि रुतई ये द्रव्य आदि  
 मध्यांत अनुसे देना प्रथम दोष चमारना मय से दोष नाशन व अन्त में दोष  
 क्षीण करि शमनकारक देना ॥ १७ ॥ १८ ॥ (दोष चमारन द्रव्य) रेडी  
 धीज, महुआबाल, पीपरि, सैन्धव, घब और हाऊरेर इनकी पिचकारी में दोष  
 उमरता है ॥ १९ ॥ (दोषनाशक द्रव्य) शतावदि, मुलेठी, बेल और इन्द्र  
 यव, इनको कात्री में पीसि गोमूत्र युक्त पिचकारी रोगहारक देना ॥ २० ॥  
 (दोषशमन औषध) निशोध आदिक शोधन द्रव्यका काथकरि तैल मा  
 सैन्धव दारि मथिकै दोष शोधन निमित्त इसीका अथवा और द्रव्यको बल्क भी  
 मथिकै पिचकारी देना ॥ २१ ॥ मकराण्ड, महुआबाल, नागरमोथा और  
 रसांत ये सब समभाग द्रव्यमें पीसि दोषशमनार्थ देना ॥ २२ ॥ (लेखनयेस्ति)  
 त्रिफलादायमें गोमूत्र, गद्द व, जवाखार ये द्रव्य समान भागले ऊर्षकादिगाण  
 द्रव्य मिश्रित करि लेखनवस्ति देना लेखन कहे " जो मंद दूषित तिन रोगिनको  
 द्रावसाकरे " ॥ २३ ॥ (वृंहणयस्ति) मुसली, शुक्ल व केराचरीज इत्यादि  
 द्रव्य हैं सो धातुको चर्चती है इनको फायकरि महुआ की छाल दाख व

१ मदीयगादि २३ वा ओ द्रव्य फर्का इति देनावतिन कजे है ॥

कल्कमधुरकर्मतः । साधिमोसरसोपतावस्तयोवहणाम  
ता ॥ २४ ॥ चदयैरावतीशैलुशाल्मलीधन्वनागराः । क्षी  
रसिद्धाः क्षौद्रयुक्तानाम्नापिच्छिलसंज्ञिताः ॥ २५ ॥ अजोरक्षी  
णरुधिरैयुक्तादेयाविचक्षणैः । मात्रापिच्छिलवस्तीनांपले  
द्वाद्दशभिर्मताः ॥ २६ ॥ दृत्वादौसैन्धवस्याक्षमधुनाप्रसृति  
द्वयम् । त्रिनिर्मथ्यततोदद्यात्स्नेहस्यप्रसृतित्रयम् ॥ २७ ॥  
एकीभूतततस्तद्देककल्कस्यप्रसृतिक्षिपत् । सम्मूर्च्छिते  
कृपायतुचतुष्प्रसृतिसम्मितम् ॥ २८ ॥ त्रिप्त्वाविमथ्यदद्या  
क्षिनिरूहकुशलोभिपक्व । एवतिचतुष्पलक्षौद्रदद्यात्स्नेह  
स्यषट्पलम् ॥ २९ ॥ पित्तेचतुष्पलक्षौद्रस्नेहस्यत्रपलत्र  
यम् । कफेषट्पलिकक्षौद्रस्नेहस्यैवचतुष्पलम् ॥ ३० ॥ एर  
ण्डकाथतुल्यांशमधुतैलपलाष्टकम् । शतपुष्पापलाद्धैत  
सैन्धवाद्धैनसंयुतम् ॥ ३१ ॥ मधुतैलकसंज्ञोयं वस्तिदेवीविलो  
अतरसादि मधुर द्रव्य का कल्क और घृत तथा मांसरस ये सब पूर्वोक्त काय में  
दालि घाहू बदने को पिचकारी देण-॥ २४ ॥ ( पिच्छिलवस्ति ) केशी  
खाल, श्लपिर्वा, लसोईकी खाल, सेमर, जयासा, र साठ, ये सब समान भाग  
ले दूध में पीसि शरद ॥ २५ ॥ क्षौद्र, मेदा, न-हरिण, इनका रुधिर, मिथिवकरी  
चतुर, वैद्य-दोष पिचलाने के लिये पिच्छिलवस्ति को देते हैं इस की मात्रा को  
। प्रमाण आरपल है ( निरूहणवस्ति-प्रमाणाविधि ) अत्र न रूप की एकही  
संज्ञा है मधुव कृपाय, शरद आरपल मर्दन करि बहपल)पी दे ॥ २६ ॥ २७-॥  
एकत्र करि दस घे दोपल पूर्वोक्त कल्क द्रव्य मिलावे अथवा पूर्वोक्त कल्कद्रव्यका  
कायकहे ( काष्ठा ) करि लीजिये ॥ २८ ॥ आठपल अमाण सुराल वैद्य इकरदी  
करि मथि निरूहवस्ति देण निरूहवस्ति की साधारण विधि जानो ( विशेष  
विधान ) वातमें ४ पल मधु-५ पल स्नेह इकरवा करि पिचकारी देना ॥ २९ ॥  
पित्त में ४ पल मधु-३ पल स्नेह इकरवा करि पिचकारी देण कफ में बहपल मधु-४  
( पल स्नेह मरुव करि देना ॥ ३० ॥ ( मधुतैलवस्ति ) सरदमूलकाय २ पल  
शरद तैल आठ आठ पल बड़ी साफ ये सब वर आया आया पल ये सब एकत्रि

डितः । मेदोगुल्मकृमिहोहर्मलौदावर्तनात्रनः ३२ त्रिल  
वर्णकरउचैवृष्योवृहेणदीपनः १, श्रोत्राज्यक्षीरतेलानांप्र  
सृतिः प्रसृतिर्भवेत् ३३ द्रवुपासैन्धवाक्षांशौनस्तिः स्वाही  
पन. परः। एरण्डमूलमिष्काथोसधुतैलंसैसैन्धवम् ३४ एष  
युक्तरसोवस्तिः रावचापिपर्लीफल ॥ पञ्चमूलस्यनिष्को  
थस्तैलमांगविक्रामधु ३५ ससैन्धवः समधुक्ः सिद्धवस्ति  
रितेस्मृतः । स्ननिमुष्णोदकैः कुर्याद्विवास्वप्नमजीर्ण

ताम् १ धर्जयेत्परं सर्वमाचरेत्स्नेहवस्तिवत् ३६ ॥ इति  
श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेनिरूहणविधिः पष्ठोऽध्यायः ६ ॥

१. अतः परं प्रवक्ष्यामि नस्ति मुत्तरसंज्ञितम् । द्वादशमूलकं  
नेत्रमध्ये चकृतकर्पिकम् १ मालतीपुष्पं चन्ताभं चिद्रसपि  
प्रनिर्गमम् । पञ्चविंशतिवर्षाणामेवमात्राद्विकारिणी २

तदूर्ध्वपलमानं त्रस्नेहस्योक्ताविचक्षणैः १ अथाख्यापन  
क्षणपर मधि ॥ ३१ ॥ यह मधुतेल वस्ति है इमे देने मे मेवरोग, गुन्म, रुमि,  
प्लीह, मन वा उदावर्त ये रोग नारो होते हैं। ३२। पल कोति, श्री, इच्छा, शिशु

शुद्धि शग्नि दीप्तोय ( दीपनवस्ति ) शहद, धी, दूध दे मिल ये जो पल ॥ ३३।  
हाकरे व सेत्रव करैकथे मूत्रमपीसे सत्रे मिलाय पिचकारी देय यह युक्तरसवस्ति। सव  
रोगो पर दीजानी है ( सिद्धवस्ति पंचमूल जाये ) तैलां श्रीर मधुआसुजेदी

कायने पीपरि व सैधव मिलाय देय यह सिद्धवस्ति सव रोगनपर भेते है ( वस्ति  
में सैन्धव निपेन पदार्थ ) वस्तिसेवक उष्य जनसे जडाइ दिन में नस्तेरे  
अजीर्णो न होय और स्नेहवस्ति के समान संय व्याकरण भा १।। ३५ ॥ ३६ ॥

३७ ॥ इति श्रीशार्ङ्गसंस्कारोत्तरखण्डेऽध्यायः १६ ॥ ३७ ॥  
॥ (अथोत्तरवस्तिविधानं) उत्तरं वस्ति कहे "मूत्रमार्गो मे विचकारी। देने  
की विधि" तिस मे भ्रमण बोहो श्मश्रुज लेमरी तिसके मध्य में पडुरी ॥ १ ॥ त्रै-

मेली के पुष्प शोशे व चमेली पुष्पकी देवी समान श्रीदी रहै ( मात्रामनाण )  
मनुष्य के २५ वर्षताई स्नेहमात्रा दी वर्षकी देय ॥ २ ॥ पचीसके ऊपर पलगर

शुद्धस्यैतत्तस्यस्नानभोजनैः ३ स्थितस्यजानुमात्रेचपी  
 ठेत्विष्टशलाकया । स्निग्धयामेढुमार्गेचततोनेत्रंनियोज  
 येत् ४ शनैश्शनैर्घृताभ्यक्तमेढुमध्येङ्गुलानिपट्टं । ततोवै  
 पीडयेद्दस्तिंशनैर्नेत्रंचनिर्हरेत् ५ ततःप्रत्यागतेस्नेहेस्ने  
 हवस्तिक्रमोहितः । स्त्रीणांकनिष्ठिकास्थूलंनेत्रंकुर्याद्दशा  
 ङ्गुलम् ६ मूत्रप्रवेशयोज्यंचघोन्धंतश्चतुरङ्गुलम् । ऋयु  
 लंमूत्रमार्गेचसूक्ष्मनेत्रंनियोजयेत् ७ मूत्रकृच्छ्रविकारेषुबा  
 लानांत्वेकमङ्गुलम् । शनैर्निष्कम्पमाधेयंसूक्ष्मनेत्रंविचक्ष  
 णैः ८ योनिमार्गेषुनारीणांस्नेहमात्राद्विपालिकी । मूत्र  
 मार्गेपलोन्मानावालानांचद्विकार्षिकी ९ उत्तानायैस्त्रियै  
 दद्यादूर्ध्वजान्धैविचक्षणः । अप्रत्यागच्छतिमिषग्वस्ता

देना ( अथास्थापनवस्तिविधि ) स्थापन करे उत्तर सेवक को शुद्ध स्नान  
 भोजन कराय ॥ ३ ॥ घुटने टेकाय बैठौवै वा घुटनेको टोंके रुझारहे तब इष्ट श-  
 लाका चांटीका दो अंगुल भुटपरपुरा ५ अंगुलसीधा सरसोतिकरिजाने माफिक  
 छेद होता है उस में घी वा तेल लगाय मूत्रमार्ग में ॥ ४ ॥ धीरे धीरे द्वा तथा  
 आडअंगुल मवेशकरे यत्रपूर्वक जिसमें पीड़ा न करे नर मूत्र यैलीतक पहुँचि ग्यट-  
 रद नजे तो जानो इमके पथरीहे ॥ ५ ॥ इमी शलाका से बन्द मूत्रभी खुनजाता  
 है शलाकादिद्र से बहिजाता है और जो विचकारी देने हो तो शनाकाकी पेंदी  
 पर बैली चढाय औपथभरि पूर्ववत् पीडिनकरे इससे मूत्रकृच्छ्रादि दूरहोते हैं यह  
 उत्तरवस्ति क्रम है ॥ ६ ॥ ( स्त्रीकेउत्तरवस्तिविधान ) स्त्री की योनि में दो  
 दिद्र होते हैं एक मूत्रमार्ग दूसरा गर्भमार्ग योनि यहीं है उसकी शलाका अंगु-  
 निवा की मुटार्ददशागुल की पूंग निकरने माफिक छेद रासि चारि अंगुल योनि  
 में मवेश विचकारी दे और मूत्रमार्ग में सूक्ष्म शलाका दो अंगुल प्रवेश ॥ ७ ॥  
 बालक को अंगुल एक शलाका प्रवेश चतुर वैत्र कृतिपरिन बालक के रसापन  
 से देय विचकारी पीडने में राय न करै ॥ ८ ॥ ( स्त्रियों की वस्ति फी माघा  
 प्रमाण योनिमार्ग ) विचकारी देने की मात्रा दो पल थापन लेना मूत्रमार्ग  
 की मात्रा एकपल है बालक वस्तिरी दो करीहै ॥ ९ ॥ निपुणवैद्य स्त्रीको उत्ताना

वित्तरसंज्ञिते १० भयोवस्तिनिदध्याच्चसंयुक्तैः शोधनैर्गुणैः । फलवर्तिनिदध्याद्वायोनिमार्गेदृढंभिषक् ११ सूत्रे  
 त्विनिर्मितांस्निग्धांशोधनद्रव्यसंयुताम् । दह्यमानेतथा  
 भवस्तौदद्याद्द्वस्तिविचक्षणः १२ क्षीरवृक्षरूपायेणपयसा  
 शीतलेनच । वस्तिःशुक्ररजःपुंसां स्त्रीणामार्तवजारुजः  
 १३ हन्यादुत्तरवस्तिस्तुनोचितोमेहिनांक्वचित् । सम्य  
 ग्दत्तस्यलिङ्गानिव्यापदःक्रमएवच १४ वस्तेरुत्तरसंज्ञ  
 स्यशमनंस्नेहवस्तिना । घृताभ्यक्तेगुदेक्षेप्याश्लक्षणेस्वा  
 दुष्टसन्निभा । मलप्रवर्तिनीवर्तिःफलवर्तिश्चसास्मृता  
 १५ ॥ इति श्रीदामोदरसूनुनाशार्ङ्गधरेणविरचितायांसं  
 हितायांचिकित्सास्थानेउत्तरखण्डेउत्तरवस्तिविधानज्ञाम  
 सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

नस्यतत्कथ्यतेधीरैर्नासाग्राह्यंयदौषधम् । नावनन

पौष्ट्याय पिचकारी पीडितकरै फिर उकुडूविठाय दियाहुंआ स्नेह गिरात्रे ॥ १० ॥  
 ( शोधनद्रव्य मूत्रकृच्छ्रादि में शोधनद्रव्य ) रेंडी तेलादि द्रव्यभरि  
 पिचकारी देय अथवा फलवर्ति रेंडीजादि सूत वा बरखकी कबीवर्ती बनाय रंद  
 तेलादि में तप्तकरि भिजोय उसपर रेंडी पीसि सुपरि योनि में राखे ॥ ११ ॥  
 जो वस्ति किये नाभितरे वस्तिस्थान अधिक उष्णहोय तौ बड़ व गुलर धी छाल के  
 छाथ की पिचकारी देना व बंदे दूध की इन से वस्ति शुद्ध होती है और शुक्रमंथी  
 पीडा और स्त्रीके आर्तवसम्बन्धी रोगपीडा दूरहोय ॥ १२ ॥ प्रमेहीको उत्तरवस्ति  
 कभी अयुक्तनहीं ( उत्तरवस्तिविक्षण ) उत्तरवस्ति में स्नेहवस्ति हुई तत्र शुक्र  
 सम्बन्धी प्रमेहादिक पीडा दूर होती है उससे ये लक्षणहैं ॥ १४ ॥ (मलमार्गे  
 फलवस्तिविधान ) मलमार्ग में नीलगाय मल गिराने के कारण रचन द्रव्य  
 रेंडीजादि कड़ी बत्तीपर लेपि शुद्धा में धरे इसे फलवर्ति कहते हैं ॥ १५ ॥

इति श्रीशार्ङ्गसुधाकरेदत्तरखण्डेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

( अथ नरपक्वम् ) नाक की राह आपन देनेको नास कहते हैं इसके ठो नास

स्यकर्मैति तस्यनासद्वयमंतम् १ नस्यभेदोद्विधाप्रोक्तो  
 रेचनस्नेहनंतथा । रेचनकर्षणंप्रोक्तंस्नेहंतंबृंहणमतम् २  
 कफपित्तानिलध्वसे पूर्वमध्यापराह्लके । दिनस्यग्रह्यते  
 नस्यं रात्रावप्युत्कटेगदे ३ नस्यंत्यजेद्भोजनान्ते दुर्दिने  
 चापतर्पणे । तथानवप्रतिश्यायीगर्भिणीगरदूषितः ४  
 अजीर्णोदत्तवस्तिश्चपीतस्नेहोदकासवः । कुक्षशोकी  
 भिभूतश्च तृपातोद्वद्बालकौ ५ वेगावरोध्नीस्नातश्च  
 स्नातुकामश्चवर्जयेत् ६ अष्टवर्षस्यबालस्य नस्यकर्म  
 समाचरेत् । अशीतिवर्षादूर्ध्वंचनावननैवदीयते ७ अथ  
 वारेचनंनस्यं ग्राह्यंतेलैःसुतीक्ष्णकैः । तीक्ष्णभेषजसिद्धै  
 र्वास्नेहैःकाथैरसैस्तथा ८ नासिकारन्ध्रयोरष्टौ षट्चत्वारि

हैं नासन एक नस्य-दो ॥ १ ॥ नस्य रीति दो विधिकी है एक रेचन दूसरी स्ने-  
 हन और रेचनको कर्षण भी कहिये सो यातादि लेखनको कर्षण करनेवाली  
 है और स्नेहन नस्य धातुको वृद्ध करती है इससे बृंहण कहिये ॥ २ ॥ नस्य-  
 कर्म समय ) कफदूषितको प्रात नस्यदेना पित्तदूषितको मध्याह्न में देना वायु  
 दूषितको संध्या के भीतरदेना और जो अतिपीडितहो तो रात्रिकोदेना ॥ ३-॥  
 (अथ नस्यनिषेधः) नस्यकर्म ऐसे को वर्जितहै भोजन करचुके पर तुरतही  
 न दे दुर्दिन कहे आंधी वा एवन अति चली वा मेघाच्छादितहो और लंगनी को  
 पीनसके आरम्भ में गर्भिणीको निपदूषित को ॥ ४ ॥ अजीर्णपर वस्तिवृत्तको  
 स्नेहरीतको पानी वा मद्यपीको तर्पणकृतको क्रोशशोकार्त्तो वृद्ध और बालकको ॥  
 ५ ॥ मलमूत्र वायु अचरोधीको तुरत स्नान कियेपर स्नानाकांक्षीको ऐसे मनुष्यन  
 को और-इन कर्मन कियेपर नस्यकर्म न करै ॥ ६ ॥ ( नस्यकर्मणि योग्या-  
 योग्य ) आठवर्ष के उपरान्त अस्तीवर्षपर्यंत नासकर्म करना ॥ ७ ॥ ( रेचन  
 नासच्छिधि ) रेचनकारक द्रव्यकी नास देनाचाहै तो सराई वा सरसोंका तेल  
 तीक्ष्ण है, निसकी नासदेना वा तीक्ष्ण द्रव्य में सिद्ध किया तेल वा तीक्ष्णद्रव्य  
 का काय वा तीक्ष्णद्रव्यका स्वरसले तेल गृह सिद्धकरि नासदेना ॥ ८ ॥ ( रे-  
 चने नस्यप्रमाणम् ) रेचनसम्बन्धी श्लेष्मकी याठवृद्ध दोनों नधुनों में नास

रश्चविन्दवः । प्रत्येकरेचनेयोज्यंमुखमध्यान्त्यमात्रया ६  
 नस्यकर्मणिदातव्यंशाणैकैतीक्ष्णमौषधम् । हिङ्गुस्याद्यव  
 मात्रन्तु मापैकैभैन्धवंमतम् १० क्षीरंचैवाष्टशाणंस्या  
 त्पानीयंचत्रिकार्पिकम् । कार्पिकंमधुरंद्रव्यं नस्यकर्मणि  
 योजयेत् ११ अवपीडःप्रधमनंद्रौभेदावपरौस्मृतौ । शि  
 रोविरेचनस्थानेतौतुदेयौयथायथम् १२ कल्कीकृतादौ  
 षधाद्यः पीडितोनिस्सृतोरसः । सोवपीडःसमुद्दिष्टस्ती  
 क्ष्णद्रव्यसमुद्भवः १३ षडङ्गुलाद्विवक्ताया नाडीचूर्णततो  
 भमेत् । तीक्ष्णंकोलमितंबक्तं यातैःप्रधमनंहितम् १४  
 ऊर्ध्वजत्रुगतैरोगे कफजेस्वरसंक्षये । श्रोत्रकेप्रतिश्या  
 ये शिरःशूलेचपीतसे १५ शोफापस्मारकुष्ठेषु नस्यंवेरे  
 चनंहितम् । भीरुस्त्रीकृशवालानानस्यंस्नेहेनदीयते १६  
 गलरोगेसन्निपाते निद्रायांविषमज्वरे । मनोविकारेकृमि  
 पुयुज्यतेचावपीडनम् १७ अत्यन्तोत्कटदोषेषुघिसंज्ञेषुच

देय तौ उत्तममात्रा है छःदूदकी मायम पारिधूदकी कनिष्ठमात्रा कहाती है ॥६॥

( नस्येद्रव्यप्रमाणम् ) नासदेनेको तेलादि सिद्धकरने में तीक्ष्ण औषध एक  
 शाण देना हींग यवभरि संधव मापभरि ॥ १० ॥ दूध याठ शाण पानी तीन कर्ष  
 प्रमाण पीठीद्रव्य कर्षप्रमाण देना ॥ ११ ॥ (मस्तकरेचनविधि ) मस्तकरेचन  
 दो प्रकारवा है एक अवपीडन दूसरा प्रधमन ये मस्तकरेचन जानना ॥ १२ ॥  
 (अवपीडन या प्रधमन विधान) तीक्ष्ण द्रव्य पीसिकैस्वरसलेनेको अवपीडन  
 कहते हैं ॥ १३ ॥ दूसरी छः अंगुल प्रमाण मली दो मुखकी बनाई एकपर तीक्ष्ण  
 द्रव्यका चूर्णभरि नाकमें प्रवेशकरि दूसरेमुखमें मुंहलगाय फूँके उसे प्रधमनकहते हैं  
 तीक्ष्णद्रव्य सौंठि,भिर्च व पीपरि इसे त्रिकुट्टा कहते हैं ॥ १४ ॥ (रेचन वा स्नेहन  
 नासयोग्य ) ऊर्ध्वगत कहे शृकुटी, मस्तक, कपाल, दशमद्वार पर्यंत गतरोग कफ-  
 जन्म, स्वरभंग, श्रोत्रकफ, नाक बधकना, मायेकी पीडा, पीनस, सूजन, मृगी और कुष्ठ  
 इनमें रेचन उचितहै स्त्री, दुर्बल व बालक इन्हें स्नेह उचित नहीं है ॥ १५ ॥ १६ ॥  
 ( अवपीडनयोग्य ) कंत्ररोग, सन्निपात, निद्रा, विषमज्वर व मनोविकार इनमें

दीयते । चूर्णप्रधमनंधीरैस्तद्वितीक्ष्णतरंयतः १८ न  
 स्यंस्याद्गुडशुण्ठीभ्यांपिपल्यासैन्धवेनच । जलपिष्टे  
 नतेनाक्षिकर्णनासाशिरोगदाः १९ हनुमन्यागलोद्भूतान  
 श्यन्तिभुजपृष्ठजाः । मधुकसारकृष्णाभ्यांवचामरिचसैन्ध  
 वैः २० नस्यंकोष्णेजलेपिष्टंद्वात्संज्ञाप्रबोधने । अप  
 स्मारेतधोन्मादेसन्निपातेऽपतन्त्रके २१ सैन्धवंश्वेतमरिचं  
 सर्षपाःकुष्ठमेवच । वस्तमूत्रेणपिष्टानिनस्यंतन्द्रानिवारण  
 म् २२ रोहीतमत्स्यपित्तेनभाधितंसैन्धवंवचा । मरिचंपि  
 प्पलीशुण्ठीकङ्कोलंलशुनंपुरम् । कट्फलंचेतितचूर्णदेयंप्र  
 धमनंबुधैः २३ अथ बृंहणनस्यस्यकल्पनाकथ्यतेऽधुना ।  
 मर्शश्चप्रतिमर्शश्चद्वौभेदोस्नेहनेमतौ २४ मर्शस्यतर्प  
 णीमात्रामुख्यशाणैःस्मृताष्टभिः । मध्यमाचचतुःशाणै

अवपीडन नासयोग्यहै ॥१७॥ ( प्रधमन योग्य ) मूर्द्धा, अपस्मार व संन्या-  
 सादि अचेतन रोगमें अत्यन्त तीक्ष्ण चूर्णादि करि नासदेना ॥२०॥ ( अथ रेचन  
 संज्ञकनस्य ) गुड सोंठि औटिकै व अद्रकरस गुडपोलि नासदे पीपरि व सेंधा  
 औटिके दे तिससे नेत्र, कान, नाक, माथा ॥ १९ ॥ डोड़ी, कंध, गल, हाथ व पांय  
 की पीड़ा अख्दीहोय ( पुनःप्रकार ) महूवे की छालका गाभा, पीपरि, घच,  
 मिरच व सेंवानमक ॥ २० ॥ इन्हें पीसि तप्त जलसे नासदेय तौ मृगी, उन्माद  
 सन्निपात व अपतन्त्र ये सब रोग मिटें शरीर हलका हो बुद्धि सावधानहो तो जान-  
 ना ॥२१॥ ( पुनस्तृतीय प्रकार ) सेंधव, श्वेत मिरच, सरसों व कूट ये सब द्वाग  
 मूत्रमें पीसि नास देने से तन्द्रा नेत्रालस्य दूरहोइ ॥ २२ ॥ ( अथ प्रधमननस्य )  
 सेंधव, घच, मिरच, पीपरि, सोंठि, कंकोल, लहसुन, गुग्गुल व कायफर इनका  
 चूर्ण रोहू मखली के पित्तामें पुटदेइ एकनली के मुंहमेंधरि दूसरा मुरय नाक में म-  
 चेशि औपथ की ओर से फूंकदेय तो तंद्रादि अचेतनरोग नाशहोयें इस चूर्ण का  
 प्रधमन नाम है ॥ २३ ॥ ( अथ बृंहणनस्यविधान ) बृंहणकहे धातुको पुष्ट  
 करै व बढ़ावै इस बृंहणनास की मात्रा-बृंहणता के दो भेद है एकमर्श दूसरा प्र-  
 तिमर्श ये दोनों बृंहण हैं ॥ २४ ॥ इनके योग्य, मर्श, में, तर्पणी नस्यकी मात्रा



नशाम्यन्तिरोगाश्चैवोर्ध्वजत्रजाः ४१ वलीपलितनाश  
 इचवलमिन्द्रियजंभवेत् । विभीतनिम्बकंभारीशिवाशेलु  
 इचकामिनी ४२ एकैकं तैलनस्येनपलितं नश्यतिध्रुवम् ।  
 अथनस्यविधिवक्ष्येनस्यग्रहणहेतवे । देशेवातरजोयुक्ते  
 कृतदन्तनिर्घर्षणम् ४३ विशुद्धं धूमपानेन स्वन्नं भालंगलं  
 तथा १ उत्तानशायिनं किञ्चित्प्रलम्बशिरसं नरम् ४४ आ  
 स्तीर्णहस्तपादं च वस्त्राच्छादितलोचनम् । समुन्नमितना  
 साग्रं वैद्यो नस्येनयोजयेत् ४५ कोष्णमच्छिन्नधारं च हेमं  
 तारादिशुक्लिभिः । शुक्त्यावापत्रशुक्त्यावाप्रोतैर्वा नस्य  
 माचरेत् । नस्यप्रासिच्यमानेषु शिरो नैव प्रकम्पयेत् ४६  
 नकुप्येन्नप्रभाषेत नोच्चिन्द्येन्नहर्सेत्तथा । एतर्हि विहितस्ने  
 हो नैवान्तः सम्प्रपद्यते ४७ ततः कासप्रतिश्यायशिरोक्षि  
 षादसम्भवः । शृङ्गाटकमभिष्ठाव्यस्थापयेन्नगिलेद्द्रवम्  
 ४८ पञ्चमत्तदशैवस्युर्मात्रानस्यस्यधारणे । उपविश्याथ  
 निष्ठीवेन्नासावक्तगतं द्रवम् ४९ वामदक्षिणपार्श्वभ्यांनि

नास ) बहेडा नीर, संभारी, हड, लसोड़ा व क्लृकतुण्डी ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ इनके  
 बीजनका गेल भिन्न भिन्न वादि नास देय ती बाल कारे होयें ( नस्यविधि )  
 पचन व धूरि चर्मित स्थानमें मनुष्य टातूनकरि ॥ ४३ ॥ हुका पी गला मस्तक  
 शुद्धकरि राममें उताना पाँडे पीछे शिर भुकाय नाक ऊँची रहै ॥ ४४ ॥ हाथ  
 पात्र फैनाय काढ़े स आसंदाकि नाकका अग्रभाग नयाय वैद्य नहीं घीरेसे एक  
 एकओर नस्य देय ॥ ४५ ॥ ( नस्य देने का पात्र ) सोने, रुये, तापे वा सीसे  
 का होय वा सौपीपत्र द्रोण वा काढ़ेकी पोटनीसे नामदेय नासलेनेवाला मीयाँ  
 न केंपावे ॥ ४६ ॥ क्रोध न करै गेले नहीं मारपी, मच्छड़ब सटकीरादि काटने न  
 पावे हते नहीं ऐसे सधमयिना नस्यद्रव्य प्रवेश नहीं होनी ॥ ४७ ॥ ग्यासी आजाती  
 है तो उरावहो मस्तक में आपिन में कंठ पीड़ा उत्पन्न करीहै ॥ ४८ ॥ ( नस्ये  
 साधारणप्रकार ) नास देनेसे शृङ्गाटक में औषध प्रवेशनार्थ पाच वा सात या  
 दशमात्रा ताई नास शरखकरे जब मुँहमें उतर आवै तब परेपरे ॥ ४९ ॥ दाहिने

प्रीवेत्संमुखेनहि । नस्येनीतेमनस्तापं रजःक्रोधंचसन्त्य  
 जेत ५० शयीतनिद्रांत्यक्त्वाचउत्तानोवाक्कृतंनरः ।  
 तथावैरेचनस्यान्तेधूमोवाकवज्रोहितः ५१ नस्येत्रीण्युप  
 दिष्टानि लक्षणानिसमांसतः । शुद्धहीनातियोगानिवि  
 शेषाच्छास्त्रचिन्तकैः ५२ लाघवंमनसःशुद्धिं स्रोतसां  
 व्याधिसंज्ञयः । चित्तेन्द्रियप्रसादश्चशिरसःशुद्धिलक्षण  
 म् ५३ कण्डूपदेहौगुरुतास्रोतसांकफसंज्ञवः । मूर्ध्निहीन  
 विशुद्धेतुलक्षणंपेरिकीर्तितम् ५४ मस्तलुङ्गागमोवात  
 वृद्धिरिन्द्रियविभ्रमः । शून्यताशिरसश्चापिमूर्ध्निगाढेवि  
 रेचयेत् ५५ हीनातिशुद्धेशिरसिकफवातघ्नमाचरेत् । स  
 म्यग्विशुद्धेशिरसिसर्पिनस्येनिषेचयेत् ५६ कफप्रसक्तः  
 शिरसोगुरुतेन्द्रियविभ्रमः । लक्षणंतदातिस्निग्धंरुक्षंतत्र  
 प्रदापयेत् ५७ भोजयेच्चानभिष्यन्दिनस्याचारिकमादि

धर्म धूकदे सम्मूल उठके धूकने से भीष्य गिरजाती है शृणाटक उठे कहते हैं  
 जो नाकके दोनों छेद मोहतक पहुँच दो गलेको चलेगये हैं ॥ ५० ॥ एक  
 दीहीनी एकनाई धूकुडी के नीचेही कपाल को चलेगये हैं ( नस्य वाजजत )  
 नास लेकर संताप न करे घृति, क्रोध, वैरना व निद्रा सौमाथा ताई इनसे बचे  
 वताना पराहं धुवां न पीवे शूक न लीले ॥ ५१ ॥ ( नस्यशुद्ध आदिभेद )  
 नास विषे तीन लक्षण शस्त्र कहतेहैं शुद्ध, हीन व अतिपोग सो में संज्ञेप से  
 कहताहूँ ॥ ५२ ॥ उत्तम शुद्धयोग भवे से देह हलकी, मनशुद्ध, मुस, नाकश्च  
 शुद्ध शिर रोगरहित चित ईंद्रिय प्रसन्न ये शुद्धयोग के लक्षणहैं ॥ ५३ ॥ ( ही-  
 नयोग ) लघुयोग भवे देह सुजली, शुष्क, मुस व नाकसे कफ गिरे ये हीनयोग  
 के लक्षण हैं ॥ ५४ ॥ ( अतिपोग लक्षण ) मस्तक की कफ नाकसे  
 गिरे वापु वृद्धि, ईंद्रिय संभ्रम व माया खाली ॥ ५५ ॥ ( हीनवृद्धयोगयत्न )  
 कफचायुहारक द्रव्यकी मलीर्भाति नास दे फिर धी की नासदेय ॥ ५६ ॥  
 ( अतिस्निग्ध लक्षण ) जो नस्यकर्म से स्निग्धता अधिक हो वा कफ अतिर  
 गिरे माया भारी ईंद्रिय भ्रम ऐसे मनुष्य को रुद्ध नामदेना ॥ ५७ ॥ ( नामने

शेतु । वजनं रेचनं नस्यं निरूहमनुवासनम् । एतानि पञ्च  
कर्माणि कथितानि मुनीश्वरैः ५८ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरे उत्तरखण्डेनस्यविधिरष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

धूमस्तुषड्विधः प्रोक्तः शमनो वृंहणस्तथा । रेचनः का  
सहाचैत्रवामनो ब्रणधूपनः १ शमनस्य तु पर्यायौ मध्यः  
प्रायोगिकस्तथा । वृंहणस्यापि पर्यायो स्नेहो मृदुरेव च २  
रेचनस्यापि पर्यायो शोधनस्तीक्ष्ण एव च । अधुमार्हाश्च  
खल्वेते श्रान्तो भीरुश्च मृदुः खितः ३ दत्तवस्ति विरिक्तश्च रा  
त्रौ जागरितस्तथा । पिपासितश्च दाहार्तस्तालुशोषी तथो  
दरी ४ शिरोभितापीतिमिरीच्यर्थाध्मानप्रपीडितः । क्षतो  
रस्कः प्रमेहार्तः पाण्डुरोगी च गर्भिणी ५ रूक्षः क्षीणो भ्यवह  
तक्षीरक्षौद्रघृतासिवः । भुक्तान्नदधिमत्स्यश्च वालो वृद्धः कृ  
शस्तथा ६ अकाले चातिपीतश्च धूमः कुर्यादुपद्रवान् ।

पद्य ) आभिव्यञ्जकहे "दृढयादि भक्षण" र्यागे सुष्ठु पूर्वोक्त आचार करे  
( पञ्चकर्म संख्या ) वमन, विरेक, नस्य, निरूहवस्ति और अनुवासनवस्ति ये  
पञ्चकर्म मुनीश्वरों ने कहे हैं ॥ ५८ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुवाकरे उत्तरखण्डे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

(अथ धूमपानविधानम् ) धूमपान छः प्रकारके हैं शमन, वृंहण, विरे-  
चन, कासहा, वामन और ब्रणधूपन ये छः प्रकार जानना ॥ १ ॥ ( शमनादि  
धूमोंके पर्याय ) शमन धूमपान की पर्याय संज्ञा मध्य और प्रायोगिक वृंहण  
पर्याय स्नेह और मृदु ॥ २ ॥ रेचन पर्याय शोधन और तीक्ष्ण धूम में अयोग्य  
थोवैत भयभीत दुःख पीडित ॥ ३ ॥ धूमसेवन अयोग्य प्राणी वस्ति क्रिया दस्त  
आवे को रातिजगमे को प्यासेको दाहसे पीडित को तालु उदर सूखनेवालेको ॥  
४ ॥ शिररोगी को तिमिररोगी को उचाकी रोगीको आध्मानरोगी को पेट फूलने  
को उरःक्षतीको प्रमेही पाण्डुरोगीको गर्भिणी को ॥ ५ ॥ रूक्षको क्षीणको दूध,  
शहद, घृत स्वरस, मद्य, दही वा मछली इनके भोजन किये को बालक वृद्ध दुर्बल  
इनको धूमपान योग्य नहीं ॥ ६ ॥ और अममय धूमपान करने से उपद्रव उत्पन्न

तत्रैष्टसर्पिणःपानंनावनाञ्जनतर्पणम् ७ सर्पिरिक्षुरसंद्रा  
 क्षापयोवाशर्कराम्बुवा । मधुराम्लौरसौवापिशमनायप्रदा  
 पयेत् ८ धूमश्चद्वादशाङ्गुलैर्द्व्यह्वयेऽग्नीतिकान्नरः । का  
 सश्वासप्रतिश्यायान्मन्याहनुशिरोरुजः ९ वातश्लेष्म  
 विकारांश्च हन्याद्दूमःसुयोजितः १० धूमोपयोगात्पुरुषः  
 प्रसन्नेन्द्रियवाङ्मनाः १० दृढकेशद्विजश्मश्रुसुगन्धवद्  
 नोभवेत् । धूमनाडीभवेत्तत्रत्रिखण्डाचत्रिपर्विका ११ कनि  
 ष्टिकापरीणाहाराजमाषागमान्तरा । धूमनाडीभवेद्दीर्घा  
 शमनेरोगिणोऽङ्गुलैः १२ चत्वारिंशन्मितैरतद्द्वद्वात्रिंश  
 द्भिर्मृदौस्मृता । तीक्ष्णोचत्तर्विंशतिभिःकासघ्नेषोडशोन्मि  
 तैः १३ दंशाङ्गुलैर्वामनीयेतथास्याद्ब्रणनाडिका।कला  
 यमण्डलंस्थूलाकुलिस्थागमरन्ध्रिका १४ अथेषि क्षांप्रलि

हंते हैं (अकाले धूमपानादि कृत उपद्रव की चिकित्सा ) धूमपानभे  
 भये उपद्रव में धी पिलावै नास, देय अंजन करै अर्थात् शरीर हृति करने का  
 दासका रूप दे ॥ ७ ॥ घृत, ऊवरस, दास, दूध, भित्री व शर्करा गोति  
 विलावै वा इनका रस शहद युक्त पिलावै व और मधुर वस्तु वा सद्यमिष्टा पदार्थ  
 दे तो धूमवपद्रव शांतहो ॥ ८ ॥ ( धूमपानायस्था समय ) धूमसेवन गारह  
 वर्ष से अस्मी वर्ष पर्यन्तके मनुष्य को नरावै जो धूमपान अच्छा यनै ता श्वास,  
 कास, नाक पहना, गले व माथे की पीडा ॥ ९ ॥ अत रुफ्रजन्व विकार सप्त  
 दूर हों ( धूमपानविषे उपयोगी की प्रकृति ) अन्धे, धूमपान भये चतु-  
 रादि इन्द्रिय व अन्तःकरण तथा बाणी ये मसन्न होती हैं ॥ १० ॥ और  
 केश, दन्त व छोटी दृढहो धूमनाडी तीन खण्ड तीन पर्व की ॥ ११ ॥ द्रु-  
 निया सी मोटी मटरसाब्जेदहो दीर्घहो ॥ १२ ॥ श्मदाधूपान की नली ४० अंगु  
 ल लम्बी ले मृदुसंज्ञककी ३२ अंगुल लम्बी तीक्ष्णसंज्ञककी २४ अंगुल लम्बी  
 कासत्र की १६ अंगुल लम्बी ॥ १३ ॥ यामनीसंज्ञक की १० अंगुल लम्बी  
 और त्रण कहे याव में धूनी देने की १० अंगुल की लम्बी परन्तु त्रणकी  
 नली पूर्वोक्त नलियों से महीन हो और क्षेत्र कुनयी प्रयोग करने स्वच्छिन्न रहै

म्पेच्चसुखलक्षणाद्वादशाङ्गुलम् । धूमद्रव्यस्यकल्केनलेपः  
 श्याष्टाङ्गुलःस्मृतः १५ कल्कंकर्षमितंलिप्त्वाद्यायाशुष्कं  
 नकारयेत् । ईषिकामपनीयाथस्नेहाक्तांघर्तिमादरात् १६  
 अङ्गारैर्दीपितांकृत्वाघृत्वानेत्रस्यरन्धके । वदनेनपिवेद्धूमं  
 वदनेनैवसन्त्यजेत् १७ नासिकाभ्यांततःपीत्वामुखेनैवव  
 मेत्सुधीः । सरावसम्पुटेक्षिप्त्वाकल्कमङ्गारदीपितम् १८ छि  
 द्रेनेत्रंविवेश्याथत्रणंतैवधूपयेत् । एलादिकल्कंशमने  
 स्निग्धंसर्जरसंमृदौ १९ रेचनेतीक्ष्णकल्कंचकासघ्नेक्षु  
 द्विकोषणम् । वामनेस्नायुचर्माद्यंदद्याद्धूमस्यपानंकम् २०  
 त्रणेनिम्बवचाद्यंचधूपनंसंप्रशस्यते । अन्येपिधूमगेहेषुक  
 र्तव्यारोगशान्तये २१ मयूरपिच्छंनिम्बस्यपत्राणिवहती  
 फलम् । मरिचंहिङ्गुसांसीचत्रीजंकार्पाससम्भवम् २२

तां ग्रण धूमित शैवेगा ॥ १४ ॥ ( धूमपानस्त्रैकविधानम् ) द्वादश अंगुल  
 की सीक दिलके समेत धूमद्रव्य कल्क चढाय छाँह में सुखाय सीक निकारि  
 बकला कल्क लिप्त रहिजाय ॥ १५ ॥ १६ ॥ उसके छेदमें धूमवोरी महीन बत्ती  
 मवेश जलाय देय दूसरा छोर मुँह में ले धुवा खंचे और मुँहसे धुवा छोडे ॥  
 १७ ॥ और शुद्धिमान् नाकसे पी मुँह से छोडे ( धूनी विधान ) दो सकोरे  
 एक संपुट कर ऊपर छेदरहै उस छेद से संपुट में अग्नि धरि कल्क सुलगावै  
 तय दुमुही नलीले एक संपुटके छिद्रमें दूसरे मुँहसेग्रणपर धुवाँ देय ( कल्कधूम  
 द्रव्याणि ) शमन धूमपान में एलादि गणका कल्क देय मृदु में घृतादि स्नेह  
 राल मिलाय पल्ककरि देय ॥ १८ ॥ १९ ॥ तीक्ष्णमें सरसों व मधु आदिकोंको  
 कल्ककरि देय वास में मरिच भटकटैयादि कल्ककरि देय यमन हेतु चर्मादिका  
 धुवादेना ॥ २० ॥ ग्रण में नीच वचादि कल्ककरिदेय ( चाग्भटोक्ते एला-  
 दिगण ) उभय इलायची, शिलारस, फूट, कसेरु मूल, मकरा, जटामांसी,  
 रस, रोदिपट्टण वा अगिया खर, कपूर, कचरी, विरमानी, अजयायन, तज,  
 तपालपत्र, तार, मोया, चमेली, केसर, सीपी, शन्नम, टेन्दारु, अगर, केसर  
 किमाचमूल, गुगल, रान, तपूर, चम्पापुत्र ये एलादिगण हैं ॥ २१ ॥

आगरोमाहिनिर्मोकविप्रावैडालकीतथा । गजदन्तश्चत  
 चूर्णकिञ्चिद्घृतविमिश्रितम् २३ गेहेषुधूपनंदत्तंसर्वान्वा  
 लग्रहञ्जयेत् । पिशाचानाक्षसाञ्जित्वासर्वज्वरहरंभवे  
 त् २४ परिहारस्तुधूमेषुकार्यैरिचननस्यवत् । नेत्राणि  
 धातुजान्याहुर्नलवंशादिजान्यपि २५ ॥ इति श्रीशार्ङ्ग  
 धरेउत्तरखण्डधूमपानविधिर्नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

चतुर्विधः स्याद्गण्डूषः स्नेहिकः शमनस्तथा ॥ शोधनोरोप  
 णश्चैव कवलश्चापि तद्विधः १ स्निग्धोष्णैः स्नेहिको वातं  
 स्वाहुशीतैः प्रसादनः । पित्तकटुम्ललवणैरुच्चैः संशोधनः  
 कफे २ कषायतिक्तमधुरैः कटुष्णारोपणे त्रणे । चतुःप्रका  
 रोगण्डूषः कवलश्चापि कीर्तितः ३ असञ्चारीमुखेष्णैर्गण्डू  
 षाकवलश्चरः । तत्रद्रव्येण गण्डूषः कल्केन कवलः स्मृतः ४

( 'घोलग्रह निवारण धूप' ) मोरंग, निम्बेयत्र, भटकटैया, मरिच, हींग  
 जयमांसी, विनयर ॥ २२ ॥ केचुरी, बिलारसीड और हाथी दांत इन ग्यारहों  
 के चूर्ण में घृत मिलाय ॥ २३ ॥ घर घूपित करने से सब बालग्रह निराश  
 व राक्षसों के उषद्रव और इन सम्बन्धी सब उर नाशहोय ॥ २४ ॥ ( धूम  
 पान में परिहार ) रेचन नस्य सरश करना धुमां पीनेकी नली धातुमय  
 वा बांसकी में पिये ॥ २५ ॥ इति श्रीशार्ङ्गरेउत्तरखण्डेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

( गण्डूष कवल य प्रतिस्तरणकी विधि ) गण्डूष ४ प्रकारके हैं स्नेहिक  
 शमन, शोधन व रोपण योंही ४ प्रकार के कवल भी हैं ॥ १ ॥ ( स्नेहिक गं-  
 दूष भेद ) चिकना उष्ण पदार्थ स्नेहिकहै वायु प्रबलता में दीजे ठंडा पदार्थ  
 शमन में पित्त विकार में कटुवा सटा उष्ण शोधन में कफ विकार में ॥ २ ॥  
 कषाय कटु मधुर तसकरि रोपण में देना त्रणादि में पेशेसे कवल में जानना ॥  
 ३ ॥ ( गण्डूष कवलरिति ) जो भीला कादादि भुरमें भरे सूख गुलगुलावे

१ द्रवपदार्थों से कुड़े करकेना बनार ॥

२ पदार्थों में मुख में घट पतने का प्रकार ॥

दद्याद्द्रवेषूचूर्णचगण्डूषेकोलमात्रकम् । कर्षप्रमाणःक  
 लकश्चदीयतेकवल्लोवुधेः ५ धार्यन्तेपञ्चमाहर्षाद्गण्डूषकव  
 लादयः । गण्डूषात्सुस्थित-कुर्यात्स्विन्नभालगलादिकः६  
 मनुष्यस्त्रीस्तथापञ्चसप्तवादीषनाशनात् । कफपूर्णास्य  
 तांयावच्छेदोदोषस्यवाभवेत् ७ नेत्रघ्राणस्रुतिर्यावत्तावद्ग  
 ण्डूषधारणम् । तिलकल्कोदकक्षीरस्नेहोवास्नौहिकेहितः  
 ८ तिलानीलोत्पलंसर्पिःशर्कराक्षीरमेवच । सक्षौद्रोहनुव  
 क्तस्थोगण्डूषोदाहनाशनः ९ वैशद्यंजनयत्यास्येसन्दधा  
 तिमुखत्रणान् । दाहतृष्णाप्रशमनंमधुगण्डूषधारणम् १०  
 विषक्षारोगिनदग्नेचसर्पिर्धार्यपयोथवा।तैलसैन्धवगण्डूषो  
 दन्तचालेप्रशस्यते ११ शोषंमुखस्यवैरस्यंगण्डूष-काञ्जि  
 कोजयेत् । सिन्धुत्रिमट्टराजीभिरार्द्रकेणकफेहितः १२ त्रिफ

वसे गंडूप कहें जो कलककरि भूहमें धरि फेराकरै सो करल है ॥ ४ ॥ ( उभयो-  
 द्रव्यप्रमाणम् ) गंडूप के काथमें द्रव्य प्रमाण कोल कवल में कर्ष वर्ष देना ॥  
 ५ ॥ ( गंडूप व कवलयोग्य अवस्था ) पाचवर्ष के ऊपर तावधान-करि  
 रोगनिवारणार्थ कपाल, गला व मुख कुळ सेंक तीन वा पाच वा सात दोपनाशक  
 गंडूप ( कुळ्हे ) करै ( पुनःप्रमाण ) जा मुखमें कफ भरनाचै वा तीनों दोष  
 शान्तितक ॥ ६ । ७ ॥ वा नेत्र नाकसे जल टपकनेतक गंडूपकरै यातरोग स्नेह  
 गंडूप तिलकल्क पानी दूध वा तिलादि स्निग्ध ये देना ॥ ८ ॥ ( पित्ते शमन-  
 गंडूपम् ) तिल, नीलकमल, घृत, लाड, दूध व शहद युक्त कुळ्हे करने से पित्त  
 जदाह मोहो और मुखसे द्रहोय ॥ ९ ॥ ( ज्वणादि पर गंडूप ) शहदके कुळ्हे  
 करनेसे मुख निर्मल, गुणमें घाव, दाह व प्यास ये उपद्रव दूरहो मुख शुद्धहो ॥ १० ॥  
 ( धिपादिपर गंडूप ) घृत वा दूध के कुळ्हे करने से गिप विकार चूने से फटा  
 अग्निसे जरामुख अच्छाहो टात हलनेपर तिल तैल सैन्धव युक्त कुळ्हे करने से  
 टात हलना दूर होताहै ॥ ११ ॥ ( मुखशोषपर ) मुख सूखना व पीका  
 रहना काजीके कुळ्हेसे शांति होय ( कफदोषपर ) अदरस के रसमें सैन्धव,  
 त्रिकुटा व राई पीसि मिलाय कुळ्हे करने से कफ दोष गिटजाता है ॥ १२ ॥

लामधुगण्डूषः कफासृक्पित्तनाशनेः । दार्वीगुडूचीत्रिफला  
 द्राक्षाजात्यश्चपल्लवाः १३ यवासश्चेतितत्काथः षष्टांगः  
 क्षौद्रसंयुतः । शीतोमुखेघृतोहन्यान्मुखपाकं त्रिदोषजित्  
 १४ यस्यौषधस्यगण्डूषस्तस्यैवप्रतिसारणम् । कवलश्चा  
 पित्तस्यैवदेयोऽत्रकुशलेनैः । केसरंमातुलुङ्गस्यसैन्धव  
 व्योषसंयुतम् १५ हन्यात्कवलतोजाढ्यमरुचिकफवात  
 जाम् । कल्कोवलेहश्चूर्णंचत्रिविधंप्रतिसारणम् १६ अङ्गु  
 ल्यग्रगृहीतंचयथास्वंमुखरोगिणाम् । कुष्ठं दार्वीसमङ्गाच  
 पाठातिकाचपीतिका १७ तेजनीमुस्तलोघ्नंचूर्णस्यात्  
 प्रतिसारणम् । रक्तस्रातिदन्तपीडांशोथंदाहंचनाशयेत्  
 १८ हीनयोगात्कफोत्क्लेशोरसाज्ञानारुचीतथा । अतियो  
 गान्मुखेपाकःशोपस्तृष्णाक्लमोभवेत् १९ व्याधेरवचय

( कफ रक्तपित्तपर ) त्रिफला शूर्ण शब्द में डारि कुडा करनेसे कफ, रक्त  
 पित्त दोष मुखमें न रहै ( मुखरोगपर ) दारुहल्दी, गुर्च, त्रिफला, दास,  
 चमेला ॥ १३ ॥ और जवासाये समान भागलेकाथकरि छठवा भाग शहदे ठंडे  
 कुड्दे करनेसे त्रिदोष मुखपाक मितताहै ॥ १४ ॥ गंडूष करनेवाली द्रव्य प्रति-  
 सारण ( मंजन ) और कवल भी कुरली जनों को जानना चाहिये ( कवल  
 विधान ) केसर, विनौरा शूदी, सैषय ३ त्रिगुडा ॥ १५ ॥ इन सनका कौर  
 वनाय मुग्न में त्रिलोत्रै ती मुख की कठोरता और कफ व वात की अरुचि दूर  
 हो ( प्रतिसारण प्रकार ) प्रतिसारण में तीन प्रकार औषध देनेकेहैं कर्कक,  
 अवलेह ३ चूर्ण ॥ १६ ॥ जैसा मुख में दोष देखै तैसी औषध अंगुली के अग्र-  
 भाग से मुखके भीतर मलै ( प्रतिसारण चूर्ण ) कूट, दारुहल्दी, धनुष्य,  
 पादा, कुटकी, इरुदी ॥ १७ ॥ तेजमल, नागरमोषा व लोध इनका शूर्ण जीभ  
 और दात की जड में वा रार मल गिरावै इस प्रतिसारण से दातपीडा, रक्त  
 गिरना, मसूदा मंजन और दाद ये रोग दूरहोयें ॥ १८ ॥ ( गण्डूषादि हीन  
 घृत्कभये से उपद्रव के लक्षणः ) हीन भये कफ अधिक, रसाद अज्ञानता  
 होती है अथ से अरुचि, अतियोग से मुख पकना, पिढिकी होना, मुसशोष



स्तुष्टिर्विशद्यं वक्तलाघवम् । इन्द्रियाणां प्रसादश्च गण्डूपैः  
शुद्धिलक्षणम् २० ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरे उत्तरखण्डे गण्डूषा  
दिविधिर्दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

आलेपकस्य नामानिलिप्तोलेपश्च लेपनम् । दोषघ्नो  
विषहावर्ष्यो मुखलेपस्त्रिधामतः १ त्रिप्रमाणश्चतुर्भाग  
स्त्रिभागार्द्धाट्टगुलोनतः । आर्द्रो व्याधिहरः सस्याच्छुष्को  
दूषयति च्छविम् २ पुनर्नवांदा रुशुण्ठीसिद्धार्थं शिशुमेव  
च । पिष्टां चैवारनालेन प्रलेपः सर्वगोथहा ३ विभीतफल  
भज्जाक्तलेपो दाहार्तिनाशनः । शिरीषं मधुयष्टी च तगरं  
क्तचन्दनम् ४ एलायासीनिशायुगमंकुष्ठं त्रालकमेव च । इ  
तिसंचूर्णलेपो यंपञ्चमांशघृतप्लुतः ५ जलेन क्रियते सुज्ञै  
र्दशाङ्ग इति संज्ञितः । विसर्पान्विषविस्फोटाञ्छोथान्दुष्टत्र

प्यास व श्लानि ये उपद्रव इति हे ॥ १२ ॥ (सम्पर्क गण्डूप लक्षण) मूत्र  
व्याधिनाश, विष प्रसन्न, मुग निर्मल, हलका व इन्द्रियों की प्रसन्नता ये लक्षण  
होते हे ॥ २० ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरे उत्तरखण्डे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

(अथ लेपविधानम्) लेपके तीन नाम हैं, लिप्त, लेप व लेपन लेपदोषघ्न  
व विषघ्न होकर गर्णप्रद है ॥ १ ॥ मुखलेप तीन प्रकारका है उसका प्रमाण तीन  
भाति है जो अंगुलभर मोटा लेपहो सो दोषघ्न है, पौन अंगुल मोटा लेप च-  
दावे सो विषघ्न है, अर्द्धांगुललेप वर्ष्य है ऐसे तीन प्रमाण हैं ओदालेप रोग-  
हर्ता है सूखा कातिहर्ता है ॥ २ ॥ (दोषघ्न लेप) गदापुरैना, देवदार,  
सोड, सफेद सरसों और सड़िजेने की दाल ये पाचों समान भागले कांजी में  
पीसि सूजन पर लेपनकरे नयों सूजन दूरहोगे ॥ ३ ॥ घरेडे की मीमीके लेपसे  
दाह व पीडा नाशहो (दगांगलेप) सिरस की दाल, सुलेठी, तगर, लालचं-  
न्दन ॥ ४ ॥ इलायची, जटायासी, हल्दी, दाहहल्दी, कूट और नेत्रगला ये दशौ  
समभाग चूर्णकरि पंचमाश घृत मिलाय ॥ ५ ॥ पानीमें पीसि लेपकरनेसे विसर्प,  
विषदोष, विस्फोटक, सूजन व दुष्ट फोड़ा ये सब पराजयहो इसना दशांगलेप

णाञ्जयेत् ६ अजादुग्धतिलैलेपोनवनीतेनसंयुतः । शो  
थमरुष्करंहन्तिलेपोवाकृष्णमृत्तिकैः ७ लाङ्गल्यतिवि  
षालावृजालिनीमूलबीजैः । लेपोधान्याम्बुसम्पिष्टःकीट  
विस्फोटनाशनःऽरक्तचन्दनमञ्जिष्ठातोष्णकुष्ठप्रियङ्गवः ।  
वटाङ्कुरमिसूराश्चव्यङ्गनासुखकान्तिदाः ९ मातुलुङ्गज  
टासर्पिःशिलागोशकृतोरसः । मुखवाग्निकरोलेपःपिटिका  
व्यङ्गकीलजित् १० । लोघ्रधान्यवज्जालेपस्तारुण्यपिटि  
कापहः । तद्द्वोरोचनायुक्तम्मरिचंमुखलेपनात् ११ सि  
द्धार्थकवचोलोघ्रसैन्धवैश्चप्रलेपनम् । व्यङ्गेषुचार्जुनत्व  
ग्वामञ्जिष्ठावासमाक्षिका १२ लेपःसनवनीतोवाश्वेताश्व  
खुरजामषी । अर्कक्षीरहरिद्राभ्यामर्दयित्वाविलेपनात् १३

नामै ॥ ६ ॥ ( विपन्नलेप ) बकरीके दूधमें तिलोंको पीसि माखनयुक्त लेप  
करे वा काशीमाटी व तिलका लेपकरे तो विपक्षेभय सूजन व भिलावें सूजन दूर  
होवा ॥ ७ ॥ ( पुनर्लेप ) कलिहारी, अतीस, कटुदूध या कटुतुरई मूरी तीनों के  
बीज पांचों के समान कांजी में पीसिके कीटदंश व विस्फोट पर लगाने से टोप  
मिटते हैं ॥ ८ ॥ ( कार्तिकारकलेप ) रक्तचन्दन, मँजीठ, लोघ, कूट, माल-  
कंगनी, बटाङ्कुर व मसूर ये सब समान भागने जलमें पीसि लेपकरे व्यंग (झाई)  
रोग मिटे व कांतिवढ़े ॥ ९ ॥ ( पुनः ) बीजपूर की जड़, मूत, मैनशिल, गोररका रस  
मिलाय लेपै कांति वढ़े मुहाँ और भाईरोग ये सब दूरहोयें ॥ १० ॥ ( तार-  
ण्यपिटिका (मुह्रांसे) पर लेप ) जो तरुण मनुष्य के मुँहपर कोटी २ पिडिकी  
जमरे वह तारुण्यपिटिकाह ( लेप ) लोघ, धनिषां और वच ये तीनों समभाग  
ले पीसि लेपकरे तथा गोरखचन व कालीभिर्च पानी में पीसि लगायें ॥ ११ ॥  
अथवा सरसों, वच, लोघ और सेंधय ये समभाग ले जलमें पीसिले ये तीनमहार  
के लेपवै इनके लगाने से मुँहपर की तरुणपन की पिडिका अच्छी होयें ( व्यंग  
रोगपर लेप ) अर्जुनवृक्ष की बाल वा मँजीठ वा हरेणु घोड़ेके नखकी भस्म इन  
तीनों में से कोई द्रव्य हृष्ट संयुक्त लेपकरे तो व्यंगरोग मिटे ( मुखपर की  
झाईपर लेप ) मदार के दूध में हल्दी को पिस लगायें ॥ १२ । १३ ॥

मुखकाण्ठ्यंशमंयाति चिरकालोद्भवंध्रुवम् । वटस्यपा  
ण्डुपत्राणिमालतीरक्तचन्दनम् १४ कुष्ठं कालीयकं लोध्रमे  
भिल्लेपं प्रयोजयेत् । तारुण्यपिटिकाव्यङ्गनीलिकादिवि  
नाशनम् १५ पुराणमथपिण्याकंपुरीषंकुक्कुटस्य च । मूत्रं  
पिष्टः प्रलेपोयं शीघ्रं हन्यादरुंषिकाम् १६ खदिरारिष्टज  
म्बूनां त्वग्निभर्वा मूत्रसंयुतैः । कुटजत्वक्सैन्धवंवालेपोहन्या  
दरुंषिकाम् १७ प्रियालबीजमधुकुष्ठमाषैः ससैन्धवैः । का  
र्योदारुणकेमूर्ध्नि प्रलेपोमधुसंयुतः १८ दुग्धेन खाखसं  
बीजं प्रलेपाहारुणं जयेत् । आघवीजस्य चूर्णं तु शिवाचूर्णं  
समं द्वयम् १९ दुग्धपिष्टः प्रलेपोयं दारुणं हन्ति दारुणम् ।  
रसस्तिक्कपटोलस्य पत्राणां तद्विलेपनात् २० इन्द्रलुप्तं श  
मंयाति त्रिभिरेवदिने ध्रुवम् । इन्द्रलुप्तापहोलेपोमधुनावृ  
हतीरसः २१ गुञ्जामूलफलं वापि भल्लातकरसोपि वा ।  
गोक्षुरस्ति लपुष्पाणितुल्येन मधुसर्पिषी २२ शिरः प्रलेप

तो बहुत दिनकी भई मुखपरकी भाई निश्चय दूरहोय ( तारुण्य पिटिकापर  
लेप ) वटके पीलेपत्ते, चमेली, रक्तचन्दन ॥ १४ ॥ कुट, दारुहल्दी और लोघ इन  
सर्वाको एकमें पीसि लेपै तो तरुणपिटिका व्यंग ( छलाई ) दूरहोय ॥ १५ ॥  
( रुखी पर लेप ) पुराने तिलोकी रली य कुक्कुट ( मुर्गी ) की बीट दोनों  
गोमूत्र में पीसि लेपकरै रुखी दूरहोय ॥ १६ ॥ ( पुनः प्रकार ) खैर, नषि व  
जामुन इन तीनोंकी छाल गोमूत्रमें पीसि लेपकरै रुखी नाशहोय ( दारुणरोग  
पर लेप ) चिरौंजी, मुलेठी, फूट उड़द और सेंधव ये पांचों समानभागले पीसि  
शददपुक्त लेपकरै दारुणरोग मिटै ॥ १७ ॥ १८ ॥ ( पुनलेप ) खसरस पीस  
दूधमें लेपकरै वा आयकी विजुरी छोटीइइ ॥ १९ ॥ दूधमें पीसिलेपै तो दारुणरोग  
नाशहोय ( इन्द्रलुप्त पर लेप ) कडुवे परजनकी पचीका रस तीन दिनलेपै  
तो वादखोरा दूरहो ( पुनः ) यटकटैया और शददका लेपकरै ॥ २० ॥ २१ ॥ च  
धुंजुबीजइ वा फलके रसका शददके साथ लेपकरै वा भिनावेका रस शददके  
साथ लेपकरने से वादखोरा दूर हो ( केशवईन लेप ) गुजुरु व तिलपुष्प

नतेन केशसंवर्द्धनं परम् । हस्तिदन्तमर्षी कृत्वा छागीदुग्धं र  
 साञ्जनम् २३ रोमाणितेन जायन्ते लेपात्पाणितलेष्वपि ।  
 यष्टीन्दीवरमृद्धीकातैलाज्यक्षीरलेपनैः २४ इन्द्रलुप्तः शर्म  
 यातिकेशाः स्युः सघनादृढाः । चतुष्पदानां त्वग्रोमनखशृ  
 ङ्गास्थिभस्मभिः २५ तैलेन सह लेपोयं रोमसञ्जननः परः ।  
 इन्द्रवारुणिकाबीजतैलेनाभ्यङ्गमाचरेत् २६ प्रत्यहं तेन  
 कालाग्नि सन्निभाः कुन्तलाह्यलम् । अयोरजोभृङ्गराजस्त्रि  
 फलाकृष्णमृत्तिका २७ स्थितमिक्षुरसेमासं लेपनात्पलि  
 तं जयेत् । धात्रीफलत्रयं पथ्ये हेतयैकं विभीतकम् २८ पञ्चा  
 ममञ्जालोहस्य कर्षेकं च प्रदीयते । पिष्ट्वा लोहमये भाण्डे स्था  
 पयेद्दुषितं निशि २९ लेपोऽयं हन्ति नचिरादकालपलितं मह  
 त् । त्रिफलानीलिकापत्रं लोहं भृङ्गरजः समम् ३० अजा  
 मूत्रेणुसम्पिष्टं लेपात्कृष्णीकरं स्मृतम् । त्रिफला लोहचूर्णं च

इनका समान चूर्ण करिके समान घृत व शहद में फेंकि ॥ २२ ॥ लगावे तो  
 बाल ग्राहें बाल जमे पर हापीदातको जलाय रसौत और बरूरीके दूधमें पीसिलेप  
 करे ॥ २३ ॥ जहां बाल न हों यथा हथेली में तौ नारजों और अङ्गमें क्यों न  
 जमेंगे ( रसौतविधि ) निरुदण बस्तिमें कही है ( इन्द्रलुप्तपर लेप ) मु-  
 लेठी, कमल व दासको तिलतेल, गूत व गरुके दूधमें पीसि लेपकरे ॥ २४ ॥  
 घादसोरा दूरहोष बाल सघनहों ( पुनः ) चतुष्पद जीर्वाही चर्म, रोम, नख,  
 साँग और हाड इनकी भस्म ॥ २५ ॥ तिल तेलमें फेंकि लेपकरे तौ नष्ट बाल  
 जायं ( केश कृष्णीकरण ) इन्द्रायनके बीजका तेल पाताल थंयसे निरुदरि  
 संफेदबालों में लगाने तौ काले होजायें ( पुनः ) लोह, शून, भंगरा, त्रिफला,  
 कालीः माटी ये चर्वाँ समान चूर्ण करि ॥ २६ ॥ २७ ॥ उष्ण रस में सांनि  
 मास भर रासि कुछ दिनोंमें लेपकरे तौ अकालके श्वेतबाल काले होयें ( तृ-  
 तीयः ) श्रावरा तीन चहेहा दो ॥ २८ ॥ आमरी त्रिगुली पाच लोहचून  
 एक कर्षे ये सब कड़ाही में अतिसूक्ष्म घोटै उसी में दिन रात रहने दे ॥ २९ ॥  
 फिर लेपकरे तौ श्वेत केश काले हों ( चतुर्थः ) त्रिफला, नीलपत्र, मं.क.

दाडिमत्वग्विसंतथा ३१ प्रत्येकंपञ्चपलिकंचूर्णंकुर्याद्वि  
चक्षणः । मृद्धराजरसस्यापिप्रस्थषट्कंप्रदापयेत् ३२  
मासमेकंततःकुर्याच्छागीदुग्धेनलेपनम् । कूर्चेशिरसिरा  
त्रौचसंवेष्टोरण्डपत्रकैः ३३ स्वपेत्प्रातस्ततःकुर्यात्सना  
न्तेनप्रजायते । पलितंस्यत्रिंशश्चत्रिभिल्लैर्नसंशयः  
३४ शङ्खचूर्णस्यभागोद्द्वौहरितालञ्चभागिकम् । मनः  
शिलाचाद्भागोस्त्रिंशत्त्रिकभागिका ३५ लेपोयंवारि  
पिष्टस्तुकेशानुत्पाद्यदीयते । अनयालेपयुक्त्यात्रसप्तवे  
लंप्रयुक्तया ३६ निर्मूलकेशस्थानंस्यात्क्षपणस्यशिरोय  
था । तालकंशाण्युग्मंस्यात्षट्शाणशङ्खचूर्णकम् ३७  
द्विशाणिवंपलाशस्यक्षारंदत्त्रापमर्दयेत् । कदलीदण्डतो  
येनरविपत्ररसेनत्रा ३८ अस्यापिसप्तभिल्लैर्पेल्लोमशातन

चून और भंगरा ये सम् भागजे ॥ ३० ॥ जगरी के पुत्रमें पीसि पकवालों पर  
लगाये तो काले होयें ( पंचमलेप ) त्रिकजा लोहचून, अनारकी, धाल और  
क्रमलका कन्द ॥ ३१ ॥ ये पांचों औषध पांच पल और भंगरेका रस छः  
प्रस्थ निचारे पूर्वोक्त द्रव्य एकत्र करि; लाहेकी रुड़ाही में सूक्ष्म करि घोंटे ॥  
३२ ॥ एक मासभरि शाली तिस पीले निकारि बकरी के दूधमें घिज् श्वेत वा  
लौपर लेपकरै और ऊपर से इडके पचा वांधे ॥ ३३ ॥ रातिभरि वांधेदे प्र  
भात स्नान करते समय पोय डारै योही तीन दिन लेप करने से सफेद बाल  
काले होयें ॥ ३४ ॥ ( अथ लोमशातन प्रकार बाल गिरानेका लेप )  
शंखचूर्ण दोभाग, हरताल एक भाग, सैनशित्त अर्द्धभाग, सज्जी एक भाग ॥  
३५ ॥ ये सब दवाई पानी में पीसि जहाँके बाल गिराने मेंतरहों वहाँ लेप करै  
वादी बाजोंको कपड़े से ढका राखे लेप के पहिजे बाल दूर करिके तब उस  
दौरमें यह लेप सातबार करै ॥ ३६ ॥ सब बाल गिरै फिर न होयें जेते बाल  
बनगये पर यह रोमशातन अतिउचम है ( पुनः— हरताल दो, शाण्य, शंख  
चूर्ण छःशाय ॥ ३७ ॥ पत्नीशंकार दोदो-शाण्य केले के दूधके पानी में वा  
यारूपके रसमें पीसि ॥ ३८ ॥ रातभरि लेप करने से बाल गिरजायें बाल

मुत्तमम् । सुवर्णपुष्पीकासीसं विडङ्गानिमनःशिलाः ३९  
 रोचनासैन्धवंचैवलेपनाच्छिन्ननाशनम् । वायस्येडगजा  
 कुष्ठकृष्णाभिर्गुटिकाकृता ४० । वस्तमूत्रेणसम्पिष्टाप्रले  
 पाच्छिन्ननाशिनी । वाकुचीवेतसोलाक्षाकाकोदुम्बरिका  
 कणा ४१ रसाञ्जनमयश्चूर्णीतिलाःकृष्णास्तदेकतः । चू  
 र्णयित्वागवांपितैःपिष्टाचगुटिकाकृता ४२ अस्याःप्रले  
 पाच्छिन्नाणिप्रणश्यन्त्यतिवेगतः । धात्रीसर्जरसश्चैवय  
 वक्षारश्चचूर्णितः ४३ सौवीरेणप्रलेपोयंप्रयोज्यःसिध्मना  
 श्नेने । दार्धीमूलकवीजानि तालकंसुरदारुच ४४ ताम्बूल  
 पत्रंसर्वाणिकार्षिकाणिपृथक्पृथक् । शङ्खचूर्णशाणमात्रं  
 सर्वाण्येकत्रचर्णयेत् ४५ लेपोयंवारिणापिष्टःसिध्मनाश  
 करःपरः । हरीतकीसैन्धवंचगैरिकंचरसाञ्जनम् ४६ विडा  
 लकोजलेपिष्टःसर्वनेत्रामयापहः । रसाञ्जनंव्योपयुतंसम्पि

गिराने को यह लेप उच्यते है ( सफेद कुष्ठपर लेप ) पीली चमेली, गजपी-  
 परि, कसीस, विडंग, वैतथिल ॥ ३६ ॥ गोरोचन, सैन्धव खर्चों समभाग गो-  
 मूत्र में पीसि लेप करै श्वेत कुष्ठ दूरहोय ( पुनः ) कौवाढोदी, फूट और पीपरि  
 ये सब समान भागले ॥ ४० ॥ सपी ( बकरे ) के मूत्र में पीसि लेपकरै श्वेत कुष्ठ  
 दूरहोय, ( तीसरा ) यकुची, प्रमलयेतस, लाल, कठगुलरी, पीपरि ॥ ४१ ॥  
 रसांत लोहछून, काले निल आठों समभाग गोपिचमें पीसि लेपकरै ॥ ४२ ॥  
 तो श्वेत कुष्ठ अतिशीघ्र दूरहोय ( सेहूआं परलेप ) आंबरा, राल व जरा-  
 त्कार ये तीन ॥ ४३ ॥ सौरीर या कांजी में पीसि लेप करै सेहूआं दूरहोय  
 "सौरीर और कांजी का विधान रेचनाध्याय से जानना" पुनः ) दासहन्दी,  
 मुरी के बीज, हरताल, देबदारु ॥ ४४ ॥ और पान ये सब कर्प कर्पः भर शैल  
 चूर्ण शाणभर सब ॥ ४५ ॥ पानी में पीसि लेपकरै सिध्म जो सेहूआं सो दूर  
 होय ( नेत्रलेप ) हड, सैन्धव, गेरू और रसांत ये चारों समान भागले ॥  
 ४६ ॥ पानी में पीसि पलकपर लेपकरै तो सर्व नेत्रोग दूरहोय, ( पुनः ) र-  
 सांत, सौंड, मिर्च और पीपरि ये चारों समान भाग ले पानी में पीसि गोली

लानांचमूलैः कुर्यात्प्रलेपनम् ६२ शिरोत्तिपित्तजांहन्यां  
 द्रक्तपित्तरुजंतथा । हरेणुनतशैलेयमुस्तैलांगुरुदारुं  
 भिः ६३ मांसीरासनोरुवकैश्चकोष्णोलेपः कफार्तिनुत् ।  
 शुण्ठीकुष्ठप्रपुत्राटदेवकाष्ठैः सरोहिषैः ६४ मूत्रंपिष्टैः सुखां  
 षणोश्चलेपः श्लेष्मशिरोत्तिनुत् । सारिवाकुष्ठमधुकवंचाकृ  
 ष्णोत्पलैस्तथा ६५ लेपस्सकाञ्जिकस्नेहः सूर्यावर्त्ताद्भेद  
 के । वरीनीलोत्पलंदूर्वातिलाः कृष्णाः पुनर्नवाः ६६ शंङ्खकै  
 नन्तवातेचलेपः सर्वशिरोत्तिजित् । अथलेपविधिश्चान्यः  
 प्रोच्यतेसुज्ञमम्मतः ६७ द्वौतस्यकथितौ भेदौ प्रलेपाख्यप्र  
 देहकौ । चर्माद्रिमाहिषंयद्वत्प्रोन्नतंसमितिस्तयोः ६८ शीत  
 स्तनुविशोषीचप्रलेपः परिकीर्तितः । आद्रौघनस्तथोष्णः

द्रवकी, अड़, खस और नरकद की जड़ ये नवों द्रव्य समान भाग ले पानी में पीसि माथेपर लेप कियेसे ॥ ६२ ॥ पित्तसम्बन्धी और रक्त पित्त सम्बन्धी मस्तक पीड़ा दूरहो । कफसम्बन्ध शिरपीड़ापर ) मेवड़ी बीज, तगर, बाल, छड़, नागरमोथा, इलायची, अमर, देवदारु ॥ ६३ ॥ जटामांसी, रासन और रण्डमूल ये दश द्रव्य पानों में पीसि गरम करि माथे पर लेपे तौ कफसम्बन्धी पीड़ा दूरहो ( पुनः ) सोंठ, कूट, चकौड़ी बीज, देवदारु, रोहिण विना अगिदा खर ये पांचों द्रव्य समान भागले ॥ ६४ ॥ गोमूत्र में पीसि सुरोष्ण माथेपर लेपेसे कफजन्य पीड़ा दूरहो ( सूर्यावर्त्त आघाशोशी पर ) सारिवन, कूट, मुलेठी, वच, पीपरि और नीलकमल ॥ ६५ ॥ ये कांजी में पीसि रण्डतेलयुक्त लेप कियेसे सूर्यावर्त्त ( आघाशोशी ) दूरहो ( शंखक अनन्तवात सर्व शिरोरोग पर ) त्रिदारीकन्द, नीलकमल, दूब, कारे तिल और गदापुरैना ये पांचों समान भागले पानीमें पीसि ॥ ६६ ॥ लेप किये से शंखक अनन्तवात च सब शिरपीड़ा मिटै पुनर्विधान ) ज्ञानी वैद्योंकी सभ्यतिसे लेपका दूसरा विधान करानाता है ॥ ६७ ॥ ( एक प्रलेपाख्य दूसरा प्रदेहक इनकी उँचाई का प्रमाण ) ये दोनों लेप भैसेके गीले खमड़े की मुटाईकी तरह रहें तो गुणदायक हैं ॥ ६८ ॥ शीतकीर्ण मूत्र्यमरेश बाधारहित है और अनाप्रलेप

स्यात्प्रलेपः इलेष्मवातहां ६९ । रोमामिमुखमादेयोप्रलेपा  
 ख्यप्रदेहको । वीर्यमभ्यग्निवेशत्याशुरोमकूपैः शिरामुलैः  
 ७० नरात्रौलेपनंकुर्याच्छुष्यमाणंनधारयेत् । शुष्यमाणमु  
 पेक्षेत्प्रदेहपीडनंप्रति ७१ तमसापिहितोह्रूष्मारोमकूप  
 मुखेस्थितः । त्रिनालेपेननिर्यातिरात्रौनलेपयेत्ततः ७२  
 रात्रावपिप्रलेपोदिविधिः कार्योत्रिचक्षणैः । अपाकिशोधेग  
 म्भीरिरक्तइलेष्मसमुद्भवे ७३ आदौशोथहरालेपोद्वितीयो  
 रक्तसेचनः । तृतीयश्चोपनाहः स्याच्चतुर्थः पाटनक्रमः ७४  
 पञ्चमः शोवनोभूयात्पष्ठोरोपण्डप्यते । सप्तमोवर्णकरणो  
 व्रणरथैतेक्रममताः ७५ बीजंपूरजटामांसीदेवदारुमहौष  
 धम् । रास्नाग्निमन्थोलेपोग्रवातशोधत्रिनाशनः ७६ म  
 धुकंचन्दनमूर्धानलसूलंचपद्मकम् । उशीरंवालकंपद्मं  
 जानो वृष्णमदेहक कफ व वात को हरता है ॥ ६९ ॥ ये दोनों लेप रोम दूर  
 करायने लगाने रोम दूर होनेसे रोममुग सुलकी प्रन्वीतरह से लेप गुण मवेश  
 करताहै ॥ ७० ॥ ( लेपने निषेध ) रातको लेप न करे और बारका लेप गूस्त्र  
 न पावे क्योंकि सुखने से रोम उचरे तौ देह में अत्रिह पीडा करे ॥ ७१ ॥  
 ( रात्रिलेप निषेधकारण ) रात्रिको तम वेगसे शरीर की उष्णता बफाय  
 रोम मुत्पपर आय रहती है त्रिना लेप निरर जानी है इस कारण रात्रिको लेप  
 न करे ॥ ७२ ॥ ( रात्रिक लेपकी विधि ) रात्रिको लेप चतुर वैध नियम  
 करे जहा त्रण चिरकाल तक पवता नहीं और गम्भीर शोथको वा रक्त कफ  
 सम्भव हो ॥ ७३ ॥ ( व्रणोपचार सप्तप्रकार लेपद्रव्य ) प्रथम लेप मूजन  
 दूर करने को दूमग जगह में रधिर दो बर्थास्यान में त्रिपला के फैनाने को  
 तीसरा व्रणपर की साल को मृदु और एतली करने दो चौथा त्रण फोर के  
 दहाने को ॥ ७४ ॥ पांचवां शुद्ध करनेको जो पीप न चाली रामे इजायत पूने  
 को सानवां घात के चर्मको शरीर की रंगनि ठरने को जो पीप न रहे ॥ ७५ ॥  
 ( व्रणमें वातशोपनिवारणलेप ) त्रिजौरापूनं, जटमांसी, देस्टाह, लॉट,  
 रासन और अरखीमूल ये सप्त समान भागजे पानी में पीसि लेपकरे वातशोथ  
 शान्त हो ॥ ७६ ॥ ( पित्तदोष पर ) पुनी, रक्तचन्दन, मूर्ध, नरसलकी



पित्तशोथेप्रलेपनम् ७७ कृष्णापुराणपिएयाकंशियुत्व  
 क्षिपकताशिया । मूत्रपिष्टःसुखोष्णोयंप्रदेहःश्लेष्मशोथ  
 हत् ७८ द्वेनिशेचन्दनेद्वेचशिवादूर्वापुनर्नवा । उशीरंपद्म  
 कंलोध्रंगैरिकञ्चरसाञ्जनम् ७९ आगन्तुकेरक्तजेचशोथे  
 कुर्यात्प्रलेपनम् । शणमूलकशिग्रुणांफलानितिलसर्षपाः  
 ८० सक्तवःकिण्वमतसीप्रदेहःपाचनःस्मृतः । दन्तीचित्र  
 कमूलत्वकस्तुह्यर्कपयसीगुडः ८१ भल्लातकश्चकाशीश  
 सैन्धवंदारणेस्मृतः । चिरविल्वोग्निकोदन्तीचित्रकोह्य  
 मारकः ८२ कपोतकङ्कगृधाणामलंलेपेनदारणम् । स्वर्जि  
 कायावमूकाढ्याःक्षारालेपेनदारणाः ८३ हेमन्तीर्यास्तथा  
 लेपोवूणेपरमदारणः ८४ तिलसैन्धवयष्ट्याह्लनिम्बपत्रनि

जड़, पद्मक, ग्वस, नेत्रबाला और कमल ये आठों समानभागले पानी में पीसि लेप  
 करे तो पित्तशोथ दूरहो ॥ ७७ ॥ ( कफशोथपर लेप ) पीपरि, पीना, सर्हि-  
 जनेकी छाल, पालू वा खांड और हड़ इन पांचोंको गोमूत्रमें पीसि गुनगुना लेप  
 करे यह प्रदेह संज्ञक लेप कफशोथको दूर करता है ॥ ७८ ॥ ( आगन्तुक और  
 रक्तशोथपर लेप ) हल्दी, दाहहल्दी, रक्त व श्वेतचन्दन हड़, रूच, गदापुत्रैना,  
 खस, पद्मक, लोध, गेरु और रसांत ये सप्तसमभागले पानीमें पीसि ॥ ७९ ॥  
 लेप करने से आगन्तुक और रक्तशोथ दूरहो ( ब्रणपकाने पर लेप )  
 सनकी जड़, मूली, सर्हिजने के बीज, तिल, सरसों ॥ ८० ॥ सप्त, लोहकीट,  
 अलसी के बीज ये आठों समानले पानीमें पीसि प्रदेह संज्ञक लेपसे ब्रणपकैगा  
 ( ब्रण फोरनेपर लेप ) जमालगोटा, चीताकी जड़ वा छाल—सेहुँड़ व मदारका  
 दूध, गुड ॥ ८१ ॥ भिलावां, कसीस और सैन्धव ये धौपध दोनों दूधमें पीसि  
 ब्रणपर लेपकरनेसे फूटै ( पुनः ) करंजर्मांगी, भिलावां, दन्तीकीजड़, चीताछाल  
 कनेरकी जड़ ये पाचों चूर्णकरै ॥ ८२ ॥ तथा कवूतर सफेद चील वा गिद्धके  
 बीटमें समान मिलाय लेपकरे फोड़ा फूटै ( तीसरा लेप ) सज्जी व जवात्वार  
 इन दोनोंका लेपकरै ॥ ८३ ॥ अथवा हेमन्तीरी ( चोककी ) जड़की छालका  
 लेप करै फोड़ा फोड़नेमें बहुत प्रयत्नकरै ॥ ८४ ॥ ( ब्रणशोधन लेप ) तिल,  
 सैन्धव, मुन्गुडी, नावपन, हल्दी, दाहहल्दी और निशोय ये सप्त समभागले चूर्ण

शायुगैः तृष्टघृतयुतैः पिष्टैः प्रलेपोत्रणशोधनः ८५ नि  
 म्वपत्रघृतक्षौद्रदार्धिमधुकसंयुतः । तिलैश्चसहसंयुक्तौले  
 पः शोधनरोपणः ८६ करञ्जारिष्टनिर्गुण्डीलेपोहन्याद्व्र  
 णकृमीन् । लशुनस्याथवालेपोहिङ्गुनिब्रमवोधवा ८७ नि  
 म्वपत्रंतिलादन्तीत्रिवृत्सैन्धवमाक्षिकम् । दुष्टव्रणप्रशम  
 नोलेपः शोधनरोपणः ८८ मदनस्यफलंतिक्तांपिष्ट्वाकाञ्जि  
 कंवारिणा । कोष्णंकुर्यान्नाभिलेपंशूलशान्तिर्भवेत्ततः ८९  
 शिशुशोफालिकैरण्डयवगोधूममुद्गैः । सुखोष्णोबहुलोले  
 पः प्रयोज्योवातविद्रवौ ९० पैत्तिके सर्पिषालाजमधुकैः शर्क  
 रान्वितैः । प्रलिम्पेत्क्षीरपिष्टैर्वापयस्योशीरचन्दनैः ९१ इ  
 ष्टिकासिकतालोहकिट्टंगोशकृतासहसुखोष्णश्चप्रदेहोयं

करि धीमें येपि फूटे फोड़ेपर लगावै वा-इनके करक की टिकिया बनाप धीमें  
 छोड़ जलावै जब टिकिया जलजाय तब उतार धी राखिवाँड़ै टिकिया फेंकि  
 देय ये दोनों प्रकार ब्रण शुद्धकरै ॥ ८५ ॥ ( ब्रणशोधन व रोपणपर लेप )  
 नीवपत्र, घृत, शहद, दारुहल्दी, मुलेठी, तिल इन सबको पीसि के लेप किये  
 से ब्रण शुद्ध होके पूरआताहै ॥ ८६ ॥ ( कृमिनिवारण लेप ) करंज, नीव  
 और चकायन इन तीनों को पीसि कृमि के स्थान में भरै तौ कृमि मरजाय वा  
 लहसुन वा हींग पीसिभरै वा हींग वा नीवपत्र भरै तौ कृमि मरजाय ॥ ८७ ॥ ( ब्रण  
 शोधन व रोपण पर लेप ) नीवपत्र, तिल, दन्तीकी जड़ और सैन्धव ये सब  
 समान पीसि शहदयुक्त लेप किये से ब्रण शुद्ध होके पूरि आवै ॥ ८८ ॥ ( पेट  
 पीर पर नाभिलेपन ) मैनफल व छुटकी इन दोनों को काजी में पीसि कुड़  
 गरम करि नाभिपर लेप किये से पेटशूल मिटता है ॥ ८९ ॥ ( वातविद्रधि  
 पर ) सहिजने की जाल चकायनपत्र, रंठमूल, यव, गेहूँ और भूंग ये सब पीसि  
 सुखोष्ण लेप करेसं वातविद्रधि पूरहोती है ॥ ९० ॥ ( पित्तविद्रधिपर ) लाव  
 मुलेठी व शकरको धीमें लेपकरेसे वा असगंध, खस और रक्तचंदनकोदूधमें पीसि-  
 लेपकरे से पित्तविद्रधि दूरहो ॥ ९१ ॥ ( कफविद्रधि पर ) ट, बालू, लोह,  
 कीट और गोबर इनचारोंको गोमूत्रमें पीसि लैकरे इस प्रदेह लेपसे कफविद्रधि-

मूत्रैःस्याच्छेपमविद्रधौ ९२ रक्तचन्द्रममडिजष्ठानिर्गामधु  
 कगैरिकैः।क्षीरेणविद्रभोलैपोरक्तागन्तुनिमित्तजे ९३ निचु  
 लःशिग्रुबीजानिदशमूलमथापिवा । प्रदेहोवातगण्डेषुसु  
 खोष्णःसंप्रदीयते ९४ देवदारुनिशालेचकफगण्डेप्रलेपये  
 त् । सर्पपारिष्टपत्राणिदग्ध्याभल्लातकैःसह ९५ छागमूत्रे  
 णाम्पिष्टमपचीघ्नम्प्रलेपनम् । सर्पपाण्डिच्छुबीजानिशण  
 बीजातसीयवान् ९६ मूलकस्यचबीजानितकेणाम्लेनपे  
 षयेत् । गण्डमालार्बुदंगण्डलोपेनानेनशाम्यति ९७ तक्ष  
 यित्याक्षुरेणाङ्गकेवलानिलपीडितम् । तत्रप्रदेहदद्याच्चपि  
 पृंगुञ्जाफलैःकृतम् ९८ तेन[पवाहुजापीडाविश्वाचीगृह्ण  
 सीतथा । अन्यापिवातजापीडात्रशमयातिचेगतः ९९ ध  
 त्तूरैरण्डनिर्गण्डीवर्षाभूशिग्रुसर्पपैः । प्रलेपःश्लीपदंहन्ति  
 दूरं होजाती है ॥ ९२ ॥ ( आगतुक विद्रधि पर ) रक्तचन्द्र, मँजीठ, हठी,  
 मुलेठी और गेरु ये सब समानभागले दूध में पीसि चोट या रुधिरिक्कारपर  
 लेपकरे अच्छाहो ॥ ९३ ॥ ( वातगलगंड पर ) बेल और सहिजन के बीज  
 इनदोनों को समानभागले जलमें पीसि शीत गरम प्रदेहमद्यत लेप करे तैसे  
 ही दशमूल पीसि नेहकरे ॥ ९४ ॥ ( कफगण्डे पर ) देवदार व इंद्रायण  
 की जड़ इन दोनोंको पीसि प्रदेहकलेप कफ व गण्डमालाको दूरकरे ( अपथी  
 पर ) सरसौ, नीमपत्र और भिलावा इन तीनोंको समभाग राखिकरि ॥ ९५ ॥  
 यकरे के मूत्रमें लेपकरे तो अपथी दूरहो ( गण्डमाला अर्बुद व गण्डगण्डपर  
 लेप ) सरसौ, सहिजनके बीज, सनई के बीज, प्रलसी, यव ॥ ९६ ॥ और  
 मूलों के बीज ये सब औषध समानभागले सटाये भये मद्ये में पीसिके लेपकरे तो  
 गण्डमाना, अर्बुद और गलगंड ये रोग दूरहोयें ॥ ९७ ॥ ( अपवाहुकपरलेप )  
 केवल नानपीडित रोगे धन अपने स्वाभाविक कर्म में पीडाकरे तहां के रोग दूर  
 करि सुगुबीको पीसि सुखोष्ण लेप करने से अश्वत्थक गणु विशाची हाथकी  
 नापु और शूद्रती जंवाकी चायुमंभन पीडा दूरहोयें ॥ ९८ ॥ ( फीलपांच  
 परलेप ) घूरु, रंड और मेरुकी इन तीनों के पत्तों, जड़ासुंरता व सहिजनेरी  
 छाल और सरसौ ये चारों पीसि अतिशय कठोर फीलपांच पर लेप किये अच्छे

चिरोत्थमपिदा रुणम् ३०० अजाजीह्वुषांकुष्ठमेरण्डवद  
 रान्वितम् । काञ्चिकेनतुमपिष्टंरुण्डघ्नप्रलेपनम् १ क  
 रवीरस्यमूलेनपरिपिष्टेनवारिणा । अमाध्यापित्रजत्यस्तं  
 लिङ्गोत्थारुकप्रलेपनात् २ दहेत्कटाहेत्रिफलांसामर्षीमधु  
 संयुताम् । उपदेशेप्रलेपोयंसद्योरोपयतिव्रणम् ३ रसाञ्ज  
 नंशिरीषेणपथ्ययाचसमन्वितम् । सक्षौद्रंलेपनंयोज्यमुपदं  
 शगदोपहम् ४ अग्निदग्धेनुगाक्षीरीहृक्षचन्दनगौरिकैः । सा  
 सृतैःसर्पिषास्निग्धैरालेपंकारयेद्विपक् ५ तिन्दुकीत्वक्का  
 यैर्वाघृतनिश्रैःप्रलेपनात् । यत्रान्दग्ध्वामर्षीकार्यानेलेनयु  
 तयानयाद् दद्यात्सर्वाग्निदग्धेषुप्रलेपोव्रणरोपणः । पला  
 शोदुग्धरफलेस्त्रितलतैलसमन्वितैः ७ मधुनायोनिमालि  
 स्पेद् गाढीकरणमुत्तमम् । माकन्दफलसंयुक्तमधुकर्पूरलेप  
 नात् ८ गतेपियौवनेस्त्रीणांयोनिर्गाढातिजायते । मरिचसै

होय ॥ १०० ॥ ( कुररुण्ड "अण्डवृक्षि" रौमपर ) कालाभीरा, हाउनेर, रूटे  
 रण्डवदालु और नेरवाल ये पांचों समानभागले पांचों में पीसि थयदकोश पर  
 लेप किये अच्छे होय ॥ १ ॥ ( उपदेश कहे गरभीपर लेप ) केनेर की जड़  
 पानी में पीसि इन्द्रियपर लेप तौ वर्षदशसम्पन्नी असाध्य पीडा दृश्योय ॥ २ ॥  
 ( पुनः ) थिकना कटाही में जनाय राखकरि शहद्यों कटिकरि लेपकरे तो गरभी  
 के घात्र शीघ्र पर आगे है ॥ ३ ॥ ( पुनः ) रसोत, सरसों व इह इन तीनों को  
 समानभागले पीसि शहदे में येनि च्चम्पन्पन्नी राद चहते द्रगपर लेपकरे  
 तौ वर्षदश को हस्ता है ॥ ४ ॥ ( अग्निदग्धपर लेप ) वंशजोचन, पाकारि,  
 रक्तचन्दन, गेरु और मुर्च ये पांचों पीसि थो भिना जलेपर लगवै ॥ ५ ॥ अथवा धी  
 को चोरोइकाय में भिलोथ लेप करे तौ जलेपर च्यथा शांतदाय ( पुनः ) यवकी  
 गार्त तिनके तेलमें त्रैपि ॥ ६ ॥ लगावै तौ दग्ध रुण धूरि धार्यै ( योनि  
 स्त्रीकोरुपे ) पलाश ( टारु ) के फूल, मूगरफन मिलके तेलमें पीसि ॥ ७ ॥  
 गर्दभ भिनाय योनिमें लेपकरे दृष्ट संमुचिन होय ( पुनः ) माकण्ड व कपूर को  
 पांस शहद्यों कटि लोकरै ॥ ८ ॥ गिरिहूड योनि तनिदाय ( पुनः इन्द्रिय

न्धयंकृष्णातगरंवृहतीफलम् ९ अपामार्गस्तिलाःकुष्ठं  
 वामापाश्चसर्वपाः । अश्वगन्धाचतच्चूर्णमधुनासहयोजये  
 त् १० अस्यसन्ततलेपेनमर्दनाच्चप्रजायते । लिङ्गवृद्धिः  
 स्तनोत्सेधःसंहतिर्भुजकर्णयोः ११ सिताश्वगन्धासिन्धु  
 त्थच्छागक्षीरैर्घृतंपचेत् । तल्लेपान्मर्दनाल्लिङ्गवृद्धिःसञ्जाय  
 तेपर। १२ इन्द्रवारुणिकापत्ररसैःसूतंविमर्दयेत् । रक्तस्यक  
 र्वारस्यकाष्ठेनचमुहुर्मुहः १३ तल्लिप्तलिङ्गसंयोगाद्योनिद्रा  
 वोभिजायते । ताम्बूलपत्रचूर्णंतुचूर्णकुष्ठशिवाभवम् १४  
 वारिणालेपनंकुर्याद्वात्रदौर्गन्ध्यनाशनम् । कुलित्थसक्तवः  
 कुष्ठंमांसीचन्दनजंरजः १५ सक्तवश्चणकस्यैवत्वचंचै  
 कत्रकारयेत् । स्वेददौर्गन्ध्यनाशश्चजायतेस्यावधूलना  
 त् १६ वचासौवर्चलंकुष्ठंरजन्योमरिचानिच । एतल्लेप  
 प्रभावेणवशीकरणमुत्तमम् १७ श्रृभ्यङ्गःपरिषेकश्चपि

कठोर करनेका लेप ) मरिच, सैषव, पीपरि, तगर, भटकटैया के फल ॥ ६ ॥  
 लटजीरा के बिया, काने तिल, फूट, यव, उड़द, सरसों और असगन्ध ये सब  
 समान पीसि शहद मिश्रितकरि ॥ १० ॥ नित्य इन्द्रिय पर मलाकरै तौ इन्द्रिय  
 मोटीहोय व स्त्री के स्तनपर लगाया करै तौ कठोर पड़जायै और पुरुषके भुजदण्ड  
 व कानपर मर्दन करना भलाहै ॥ ११ ॥ ( पुनर्लेप ) रवेत फूलका असगन्ध व  
 सैषव इन दोनोंको सूक्ष्म पीसि चौगुना घृत व घृतका चौगुना भेड़ीका दूध एक  
 करि आचपर दूध जलाव व ज्वानि इन्द्रियपर लगावै तौ इन्द्रिय मोटीहोय ॥ १२ ॥  
 ( योनिद्रव लेप ) इन्द्रायण पत्रका रसले पारा रक्त कनेर के सोंटेभे घोटि चार  
 चार रस डाले ॥ १३ ॥ जत्र कजरी पीठी सम होजाय तब इन्द्रिय पर लेपि स्त्री  
 प्रसंग करै तौ स्त्री मुख पावै पहिले वीर्यपातकरै ( देहदुर्गन्धनिवारण लेप )  
 पान, फूट व इड़को पानीमें पीसि लेपकरे दुर्गंध दूरहोय ( पुनः ) कुलयी भूँजे फूट,  
 जटाभासी व रवेतचन्दन का बुरादा ॥ १४ ॥ व भूँजे चने इन सबको पीसि कपड-  
 दानकर धूराकरै तौ देहदुर्गंध दूरहो ॥ १५ ॥ ( वशीकरण लेप ) यच, का-  
 लालोन, फूट, हल्दी, दाण्डहल्दी और मिर्च ये सब समान भागले पानीमें पीसि

चुर्वस्तिरितिक्रमात् । मूर्ध्वतैलंचतुर्धास्याद्द्वयञ्चयथोत्तरम् १८ त्रयोभ्यङ्गादयःपूर्वेप्रसिद्धाःसर्वतःस्मृताः । शिरोवस्तिविधिश्चात्रप्रोच्यतेसुज्ञसम्मतः १९ शिरोवस्तिश्चर्भणःस्याद्विमुखोद्वादशाङ्गुलः । शिरःप्रमाणस्तंवद्द्वामस्तकेमाषपिष्टकैः २० सन्धिरोधंविधायादौ स्नेहैःकोष्णैः प्रपूरयेत् । तावद्द्वार्यस्तुयावत्स्यान्नासानेत्रमुखस्रुतिः २१ वेदनोपशमोवापिमात्राणांवासहस्रकम् । विनाभोजनमेवात्रशिरोवस्तिःप्रशस्यते २२ प्रयोज्यस्तुशिरोवस्तिःपञ्चसप्ताहमेववा । विमुच्यशिरसोवस्तिगृहीयाच्चसमन्ततः २३ ऊर्ध्वकायंततःकोष्णनीरैःस्नानंसमाचरेत् । अनेन दुर्जयारोगावातजायान्तिसंक्षयम् २४ शिरःकम्पादय देहमें लोकवश होने के निमित्त लगावै तौ अर्धश्चा हे ॥ १६ । १७ ॥ ( मस्तक में तेल लगानेकी विधि ) अभ्यङ्ग कहे "तैलपर्दन" परिपेक कहे "तेल चुपड़ना" पित्तु कहे "रूई के पहलको तेलमें घोरि माथे में बांधै" वस्ति कहे "माथे में चौकेर चर्भ बाधि तेलभरै" ये चार प्रकार हैं सो क्रमसे उचरोत्तर चलवान् कहाते हैं ॥ १८ ( शिरोवस्तिविधान ) अभ्यङ्ग, परिपेक और पित्तु ये तीनों सर्वत्र प्रसिद्ध हैं और शिरोवस्तिविधि तथा मात्रा यहां नहीं कही सो आगे श्लोक में कहेंगे ॥ १९ ॥ ( शिरोवस्तिप्रकार ) मस्तकपर औषध धारण करनेको शिरोवस्ति कहते हैं वारह अंगुल चौड़ी व हाथभर लम्बी शिरके समान डफ़ाकर हरिणचर्मकी सी लेइ दोनों ओर खुली दीन न हो सो माथेपर चढ़ाय भीतर से चारों ओर उर्द के पीठेसे ॥ २० ॥ निस्संधि करै फिर नीचे चढ़े भये चपड़ेको अंगुलभर पीठेसे चारों ओर निस्संधि करि सुसोप्य तेलभरै ( शिरोवस्तिप्रमाण ) जतक नाक, नेत्र व मुखसे जल न बहे ॥ २१ ॥ अथवा मस्तकव्या न मिटै वा हजार मात्रा तक वस्ति स्थित रहै ( मात्राप्रमाण ) अनुवासनवस्ति में कहिआये है ( शिरोवस्तिकाल ) भोजनके मयम पांच व सातदिन शिरोवस्ति करै ( शिरोवस्तिके पीछे क्रिया ) माथेपर धारण कीहुई वस्तिके चारोंतरफ एकसां उचारकर पटक देने जन वस्तिको उतराइ चुके हो ॥ २२ ॥ २३ ॥ सुसोप्य जल से माथा धोनाय नहाने ( शिरोवस्तिगुण ) वानजन्व शिरःकम्पादि दुर्जय

स्तेनसर्वकालेषु भोजयेत् । स्वदयेत्कर्णदेशंतुकिञ्चिच्चतुःपा  
 र्श्वशायिनः २५ मूत्रैः स्नेहैरसैः कोष्णैस्ततः कर्णं प्रपूरये  
 त् । कर्णंतुपुरितरक्षेच्छतपञ्चशतानि च २६ सहस्रं चाति  
 मात्राणां श्रोत्रकण्ठशिरोगदे । स्वजानुनः करावर्तकुर्वाच्छो  
 टिकवायुतम् २७ एषामात्राभवेदेकासर्वत्रैवैपनिश्चयः ।  
 रसाद्यैः पूरणं कर्णे भोजनात्प्राग्प्रशस्यते २८ तैलाद्यैः पूर  
 णं कर्णे भास्करस्तमुपागते । पीतार्कपत्रमाज्येन लिप्त्वा व  
 ह्नैः प्रतापयेत् २९ तद्रसः श्रवणेक्षितः कर्णशूलहरः परः ।  
 कर्णशूलानुरेकोष्णवस्तुमूत्रससैन्धवम् ३० निक्षिपेत्तेन  
 शाम्यन्ति शूलपाकादिकारुजः । शृङ्गवेरचमधुकंसधुसैन्ध  
 वसामलम् ३१ तिलपर्णीरसस्तेलं टङ्कणानिम्बुकंद्वयम् ।  
 कटुष्णं कर्णयोर्देयमेतद्वैवेदनापहम् ३२ कपित्थमातुलु  
 ङ्गाम्लशृङ्गवेररसेः गुभैः । सुखोष्णैः पूरयेत्कर्णो कर्णशूलो

रोग दूर होते हैं इस से पैय सदा इस रोग में शिरोरस्ति करावे ॥ २४ ॥ २५ ॥  
 ( कर्णोपचार ) मनुष्यको कुछ स्वेदरि गुरस्त गोमूत्र व तेज व स्वरस गुग्गुलीय  
 कान में पूरे ॥ २६ ॥ ( कर्णमें द्रव्यधारण प्रमाण ) कान, कंध व शिरोगो के  
 निवारणार्थ सौ माना व पांचसौ व हजार यात्रातक रात्वे ( मात्राप्रमाण )  
 घुटनों पर चुटकी बनावे हाथरूपे चौफेर सौ माना प्रमाण है ( कर्णोपचार  
 समय ) कान में औषध भोजनके प्रथम रसादिक पूरे ॥ २७ ॥ २८ ॥ और  
 तेल आदि संघ्यासमय पूरे ( कर्णव्यथापर औषध ) अर्कटुप्त में जो गत्त  
 पीलेपड़जाते हैं तिन्हें खोले उनपर घृत लगावे तब लथारे ध्यागि में सके लेप  
 जप गरम होय तब निशालि ॥ २९ ॥ कानमें छोड़े तो संय कर्णगुल दूरहोय  
 ( पुनः ) ध्यागमूत्र में संधारहारि कुछ तेजा ॥ ३० ॥ करि कान में पूरे तो कान  
 के भीतरकी गिटिका दूर होय ( लुनाय ) अद्रकका रस भुमेठी, शहद, संधव,  
 धानरा ॥ ३१ ॥ विजराणी " दूध में होती है और गुग्गुलीकी सी संधि सुरति पत्ती  
 सपेन फली विनामदश होती है वह तिलपर्णी है " सरसों का तेज, सुहागा व  
 नींदूका रस वे सब पीसि कान में डालें तो कानकी पीड़ा दूरकरे ॥ ३२ ॥ कर्ण

पशान्तये ३३ अर्काङ्कुरानम्लपिष्टांस्तैलाक्ताह्वेषुणान्वि-  
 तान् । सन्निद्ध्यात्स्नुहीकाण्डेकोरितेतच्छदावृते ३४ पु-  
 टपाकक्रमंकृत्वारसैस्तच्चप्रपूरयेत् । सुखोष्णोरतेनशाम्य-  
 न्तिकर्णपीडाःसुदारुणाः ३५ महतःपञ्चमूलस्यकाण्डा-  
 न्यष्टाङ्गुलानितु।क्षौमेणावेद्यसंसिच्यतैलेनादीपयेत्ततः  
 ३६ यत्तैलंच्यवतेतेभ्यःसुखोष्णंतेतपूरयेत् । ज्ञेयंतदीपि-  
 कातैलंसद्योगृह्णातिवेदनाम् ३७ एवंस्याद्दीपिकातैलंकुष्ठे-  
 देवतरौतथातैलंइयोनाकमूलेनमन्देग्नौपरिपाचितम् ३८  
 हरेदाशुत्रिदोपोत्थंकर्णशूलंप्रपूरणात् । कल्कक्राथेनच  
 घ्राह्णाकाकोलीमाषधान्यकैः ३९ शूकरस्यवसांपक्त्वाकर्ण-  
 नादातिहारिणी।स्वर्जिकामूलकंशुष्कंहिट्गुहृष्णासमन्वि-

श्रीर कैपफलका रस त्रिजौरारस, प्रमलवेतके रस चिना शूकरस और अदरकरस  
 ये चारों सुखोष्ण कान में डालने से कर्णशूल नाश होयें ॥ ३३ ॥ ( पंचम )  
 मदारका कोमल टिगुसा नींबूरस में पीसि तिलका तेल व सेंधानोन मिलाय  
 गोला बांध सेड्डा के मोटे रण्ड में पोलाकरि गीतारै अचड़ी भांति दाबि  
 उसीके पत्र लपेटि कपडौटी करि माडी चढाय मधुरी यांच में पकाय पुटपाक  
 सदृश पकजाय तत्र निकालि माटी कपडा उतारि फूटके रस निघोरनेय फिर  
 उस रसको सुखोष्णकरि कान में डारै तौ कानकी टारुणशूल शान्तहोय ॥  
 ३४ ॥ ३५ ॥ ( कर्णशूलपर दीपिकातेल ) महापञ्चमूलकी जड़ आटश्रंगुन  
 रुई वा बस्र लपेट टीपमें चारि चिमटी से, पकरि कटेरी में टाकावे, वही, गुनगुना  
 तैल कानमें डालनेसे कानकी तपक, दूर होतीहै तथा शहद, पञ्चमूल, वेल, रण्ड,  
 टेटी, शिवनी और पाटल इनकी जड़को कहते हैं ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ( पुनः ) टेदू  
 तेल व टेदूमूल को पानी में पीसि कल्क करि चौगुना तिल तेलको मिलाय  
 समान जल देय जलजलाय उतारि सदृता सदृता ॥ ३८ ॥ कानमें डालनेसे त्रिदोष-  
 जन्य कर्णशूल मिटै ( कर्णनादपर तेल ) मुलेठी, असगन्ध, पाप और धनियां  
 इनचारोंका षाय व कल्क ॥ ३९ ॥, शूकर की चरनी में पचाय जब चरदी  
 रहिनाय तब कान में डालै तौ कर्णनाद को निकालै ( कर्णनादपर अष्टनेल )



तम् ४० शतपुष्पाचतुर्लंपकंशुक्तंचतुर्गुणम् । प्रणादंशु  
 लवाधिर्यैस्त्रावंकर्णस्यनाशयेत् ४१ अपामार्गक्षारजलेत  
 रक्षारंकलिकतंक्षिपेत् । तेनपक्वजयेत्तैलंवाधिर्यैकर्णनादक  
 म् ४२ शम्बूकरयतुमांसेनपचेत्तैलंतुसार्षषम् । तस्यपूरण  
 मात्रेण कर्णनाडीप्रशाम्यति ४३ चूर्णपञ्चकषायाणांकपि  
 त्थरसमेवच । कर्णस्त्रावेप्रशंसन्तिपूरणंमधुनासह ४४ ति  
 न्दुकान्यभयालोध्रंसमङ्गाचामलक्यपि । ज्ञेयाःपञ्चकषाया  
 स्तुक्कर्मण्यस्मिन्निषगवरैः ४५ स्वर्जिकाचूर्णसंयुक्तंबीजपूर  
 रसंक्षिपेत् । कर्णस्त्रावरुजोदाहाःप्रणश्यन्तिनसंशयः ४६  
 आम्रजम्बूप्रवालानिमधुकस्यवटस्यचाएभिःसंसाधितंते  
 लंपूतिकर्णोपशान्तिकृत् ४७ पूरणंहरितालेनगवांमूत्रयुते

सज्जी, सूती मूली, हीम, पीपरि ॥ ४० ॥ और सौंफ ये पांचों समभाग ले  
 चौगुने तिल तेलमें समान मध्यखण्डोक्त शुक्तमें पचावै जर केवल तेल रहजाय  
 तत्र कान में चुबावै तौ कर्णनादशूल धधिरत्व व कान बहर इन रोगों को  
 नशाता है ॥ ४१ ॥ ( धधिरत्व पर अपामार्गक्षारतेल ) लट्जीरे की  
 रास चौगुने पानी में घोली धौली रातिभर धर भातःनिर्मल जलले चौध्याई  
 तेलदे पचाय पानी जलाय कान में डालै तौ धधिरत्व ( धधिरापन ) मिटै  
 गुनने लगे ॥ ४२ ॥ ( कर्णव्रण पर शम्बूकतेल ) धौयिका मांस चौगुने तेलमें  
 डालकरि पचाय ले वह तेल कान में डालै तो व्रण दूरकरै ॥ ४३ ॥ ( कर्णस्त्राव  
 पर औषध ) पञ्चकषाय का चूर्ण, कैफरस और शहद मिलाय कान में डालै  
 तौ कान बहना बन्द होजाय ॥ ४४ ॥ ( पञ्चकषायवृक्ष ) तेंदू, हड़, लोध,  
 मंजीठ और भांवला इनपाचों में से हड व भांवलाका फल थाकीकी छाललेना  
 चाहिये इस कर्म में श्रेष्ठ बैद्योंको पञ्चकषायसंज्ञक वृक्ष जानना चाहिये ॥ ४५ ॥  
 ( पुनःकर्णस्त्राव पर ) सज्जीको निजौरा रसमें थोटी कान में डाले तो कान  
 का बहना बन्द होय ॥ ४६ ॥ ( पुनः ) आम्र, जापुन, महुआ व बरगद इन  
 चारों के गोंपल की लुगदी चौगुने तिल तेलमें जराय सेन कानमें डालने से  
 पीठ बहना बन्द होय ॥ ४७ ॥ ( कर्णकीटपर तेल ) हरिताळ पीसि गोमूत्र

नच । अथवासार्धपतैलं कर्णकीटहरंपरम् ४८ स्वरसंश्लिष्ट  
मूलस्यसूर्यावर्त्तरसंतथा । त्र्युषणंचूर्णितंचैवकपिकच्छू  
रसंतथा । कृत्वैकत्राक्षिपेत्कर्णकर्णकीटहरंपरम् ४९ स  
द्योमद्योनिहन्त्याशुकर्णकीटंसुदारुणम् । सद्योहिह्निह  
न्त्याशुकर्णकीटंसुदारुणम् ५० इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तर  
खण्डेलेपादिकर्णपूरणविधिरेकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

शोणितंस्त्रावयेज्जन्तोरामयंप्रसमीक्ष्यच । प्रस्थंप्र  
स्थाद्द्विकंचापिप्रस्थाद्द्विर्द्विमथापिवा १ शरत्कालेस्वभावे  
नकुर्याद्रक्तस्रुतिनरः । त्वग्दोषग्रन्थिशोथाद्यानस्यरक्तस्रु  
तेर्यतः २ मधुरंरक्तोवर्णमशीतोष्णंतथागुरु । शोणितं  
स्निग्धविस्त्रंस्याद्विदाहश्चास्यपित्तवत् ३ विस्त्रताद्रवता  
रागश्चलनंविलयस्तथा । भूम्यादिपञ्चभूतानामेतेरक्तगु  
णाःस्मृताःधुरक्तेदुष्टेवेदनास्यात्पाकोदाहश्चजायते । रक्त

या कडुचे तेलमें मिलावे तो कर्णजन्तु दूरहोय ॥ ४८॥ ( पुनः ) सहिजन मूल  
का रस, सूर्यमुलीका रस, सोंठ, मिर्च व पीपरिको पीसि वन वयमाच की जड़  
का रस ये सब मिलाय पेटि कानमें छोड़ै तौ कर्णकीट मरै ॥ ४९ ॥ हींग और  
शाप इन दोनों में से किसी वस्तुको कान में डाले तो शोप्रही कर्णकीट को  
विनाशताई ॥ ५० ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

( अथ रुधिरंमोक्षणप्रयत्न ) मनुष्य के शरीर में रक्तमन्यधिकार से कु-  
ष्ठादि रोग जानि रुधिर निकलवाने का प्रमाण कहते हैं, प्रस्थभर वा अर्द्धप्रस्थ व  
चौप्याई प्रस्थ कहे कुड़म भर ॥ १ ॥ ( रुधिरमोक्षणकाल ) देह से रुधिर  
निकलाने से त्वचापर के रोग, फोड़ा, फुंसी व शोयादिक रोग दूर होतेहैं इस  
कारण शब्द काल में मनुष्य को रुधिर निकलाना उचित है ॥ २ ॥ ( रुधिर  
गुण ) रुधिर मजुर है लाल व कुछ गरम, गरुआ, चिकना, विसर्धि गन्धी,  
पित्त समान उष्णलोह का रूप गुण है ॥ ३ ॥ और रक्त पञ्चवत्त्वमय है नि  
सायंधी गंध पृथ्वीगुण, शीलापन जलगुण, उष्णस्पर्श अग्निगुण, चलना वायु-  
गुण, नीला होना और श्यामता लाना आकाशका गुण है ॥ ४ ॥ ( रुधिर दुष्ट

मण्डलताकण्डूः शोथश्चपिटिकोद्गमः ५ वृद्धेरक्ताङ्गनेत्रत्वं  
 शिराणांपूरणंतथा । गात्राणांगौरवंनिद्रामदोदाहश्चजाय  
 तेदक्षिणेऽम्लमधुराकांक्षीमूर्च्छाचत्वचिरुक्षता । शैथिल्यं  
 चशिराणाम्याद्वातादुन्मार्गगामिता ७ अरुणंफेनिलंरुक्ल  
 म्परुषंतनुशीघ्रगम् । अस्कन्दिस्सूचिनिस्तोदंरक्तंस्याद्वात  
 दूषितमृत्पित्तेनपीतंहरितंनोलंकृष्णंचविलम् । अस्क  
 न्युष्णंमक्षिकाणापिपीलीनामनिष्टकम् ९ शीतलचवहुलं  
 स्निग्धंगौरिजोदकसन्निभम् । मांसपेशीप्रभंस्कन्दिमन्दगं  
 कफदूषितम् १० द्विदोषदुष्टंमंसृष्टंत्रिदुष्टंपूतिगन्धकम् । स  
 र्वलक्षणमंयुक्तंकाञ्जिकाभंचजायते ११ विपदुष्टंभवेच्छ्या  
 ननासिकोन्मार्गगतथा । विस्त्रंकाञ्जिकसंकाशंसर्वदुष्टकरं  
 ज्ञानेके लक्षण ) रगिर गुष्ठभये देह में पीड़ा; प्रण, दाह, रक्तमण्डल, तान, शोथ व देह पाकसा दर्द होता है ॥ ५ ॥ ( रक्त चक्रे का लक्षण ) रगिर बड़े सौ देह नेत्र लाल रंग और नसें रक्तपूरित होकर पूज जाती है वेद गरु रहती है नंद विशेष, मद व दाहये उद्ग्रा होते हैं ॥ ६ ॥ ( चोणरक्तलक्षण ) जिसके रगिर शरीरप्रमाण से घटजाता है उसकी रगि सहे व मीठेपर अधिक रहती है और मूर्च्छा, एत्रा रुची, शिथिल शरीर और तामु ऊर्ध्वगामी होजाता है ऐसे लक्षण जानो ॥ ७ ॥ ( वायु परिष्ठ रक्त उष्ण लक्षण ) वायु कुपित रगिर लाल रग, पेनसहित हो, रुपा, कर्कर, हलका, शीघ्रगामी, पतला व दहमें सुई समान कोंबरा है ॥ ८ ॥ ( पित्तकरि दुष्ट रगिर लक्षण ) पित्त कुपित रगिर-नीला, हरित, नीला व काला, पके आमकी ग पत्राला व तत्ता होकर पीठी वाली न हार्ने ॥ ९ ॥ ( कफकरि दुष्ट रगिर लक्षण ) कफ कुपित रक्तका स्पर्श उबडा, चिकना, गेरुका रङ्ग मांस व कुत्की मिश्रित व गाढ़ा होकर स्थिर होता है ॥ १० ॥ ( दो वा तीन दोष कुपित रगिर लक्षण ) दो दोषकरि दूषित मोहमें दो दोषक लक्षण पाये जाते हैं त्रिदोषदूषित में पीयकी गन्ध होती है और रास लक्षण विद्रावने पाये जाते हैं और कानी सदृश रग होता है ॥ ११ ॥ ( अग्निदुष्ट रक्तलक्षण ) नाशारग रक्त उपरचंद्र के नाककी रास पीया है आमकी सी रास ( गन्ध ) लेती है व कानी सदृश रास भागुओं फो

हु । इन्द्रगोपप्रभंज्ञेयंप्रकृतिस्थमसंहतम् १२ शोथेदाहे  
 ह्रुपाकेचरक्तवर्णसुजःस्रुतो । वातरक्तेतथाकुष्ठेसपीडेदुर्ज  
 येनिले १३ पाणिरोगेश्लीपदेचविषदुष्टेचशोणिते । ग्रन्थ्य  
 बुदापचीक्षुद्रोगरक्ताधिमन्थिषु १४ विदारीस्तनरोगेषु  
 गात्राणांसादगौरवे । रक्ताभिष्यन्दतन्द्रायांपतिघ्राणास्य  
 देहके १५ यकृत्स्नीहविसर्पेपुविद्रघौपिटिकोद्गमे । कर्णोष्ठ  
 घ्राणवक्त्राणांपाकेदाहेशिरोरुजि १६ उपदंशेरक्तपित्तेरक्त  
 स्त्रावःप्रशस्यते । एषुरोगेषुशृङ्गैर्वाजलौकालावुकैरपि १७  
 अथवापिशिरामोक्षैःकुर्याद्रक्तस्रुतिंनरः । नकुर्वीतशिरामो  
 क्षंकृशस्यातिव्यवायिनः १७ क्लीवस्यभीरोगर्भिण्याःस्रुति  
 कापाण्डुरोगिणाम् । पञ्चकर्मविशुद्धस्यपीतस्नेहस्यचा  
 र्शसाम् १९ सर्वाङ्गशोथयुक्तानामुदरश्वासकासिनाम् ।  
 छर्द्यतीसारयुक्तानामतिस्त्रिन्नतनोरपि २० ऊनषोडशव  
 र्धस्यगतसप्ततिकस्यच । आघातक्षुतिरक्तस्यशिरामो

बहुत दुष्ट करता है ( शुद्धरक्तलक्षण ) शुद्धरक्त धीरवृद्धी के रंगवाला हो  
 कर पतला होताहै स्पर्श में उष्ण व शीघ्रचारी कहाताहै ॥ १२ ॥ ( रक्तमो  
 क्षणयोग्य ) शोथमें दाहमें श्रंगपाक में रक्तवर्ण अंग में नाक से बहने में  
 वातरक्त, कुष्ठ, कष्टसाध्य पीडा वातसंयुक्त में ॥ १३ ॥ हाथरोग में पीलपाठे-  
 वा विपकरि गिरे रक्तमें श्रिये, अर्धुद, अपची, क्षुद्ररोग, रक्ताधिमन्थ ॥ १४ ॥  
 विदारी, क्षुचरोग, देहजकडना, रक्ताभिष्यन्द, तन्द्रा, दुर्गंध ॥ १५ ॥ यकृत्, प्लीह,  
 विसर्प, विद्रधि, पिटिका, कान, योठ, नाक व मुस पकने में दाह, माथे की पीडा ॥  
 १६ ॥ उपदंश व रक्तपित्त इनरोगों में रुधिर निकलाना उचित है ( रक्तमो-  
 क्षणप्रकार ) सिंगी, जोंक, तोंधी और फस्त इन चारों से रक्त निकलावै ॥  
 १७ ॥ वा शिरामोक्षों से मनुष्य रक्तनिकलावै ( शिराच्छेदनअयोग्य ) दुर्बल,  
 विपथी ॥ १८ ॥ नपुंसक, भीत ( डरपोक ), गर्भिणी, गोदचाली, पांडुरोगी,  
 वमनादिपंचकर्मकृती, स्नेहादिचर्मकृती, अर्शरोगी ॥ १९ ॥ सर्वांगभोग्ययुक्त,  
 उदर, र्वास, रुस, उगकी, अतीसारी और अतिस्त्रेदी ॥ २० ॥ व सोलहकेभीउर

क्षोनशस्यते २१ एषांचात्ययिकेयोगेजलौकाभिस्तुनिर्ह  
रेत् । तथापित्रिषयुक्कानांशिरामोक्षोपिशस्यते २२ गोशृ  
ङ्गेणजलौकाभिरलावुभिरपित्रिधा । वातपि कफैर्दुष्टंशो  
णितंस्त्रावयेद्बुधः २३ द्विदोषाभ्यांतुसंसृष्टंत्रिदोषैरपिदूषि  
तम् । शोणितंस्त्रावयेद्युक्त्याशिरामोक्षैः पदेस्तथा २४  
गृह्णातिशोणितंशृङ्गंशङ्गुलमितंवलात् । जलौकाहस्त  
मात्रंचतुर्भुवचद्वादशाङ्गुलम् २५ पदमङ्गुलमात्रेणशि  
रासर्वाङ्गशोधिनी । शीतेनिरन्नेमूर्च्छातितन्द्राभीतिमदश्र  
मैः २६ युतानांनस्रवेद्रक्तंतथाविण्मूत्रसङ्गिनाम् । अथप्र  
तिनिरक्तेचकुष्ठचित्रकसैन्धवैः २७ मर्दयेद्द्रवणवक्तंचतेन  
सम्यक्प्रवर्तते । तस्मान्नशीतेनात्युष्णेनस्विन्नेनातिता  
पिते २८ पीत्वायवागूत्तप्तस्यशोणितंस्त्रावयेद्बुधः ।

तथा सत्तर के ऊपर भवस्या (उमर) वाले को अकस्मात् नाकसे रक्तगिरे तो  
ऐसे मनुष्य अयोग्यके वदाचित् फोड़ा फुंसी हो तौ जोक लगाने ऐसे रोगियोंका  
विपाद संयोग से रक्त अतिदुष्ट हो तौ शिरामोक्षण करे २१ । २२ ॥ ( दोषा-  
दिकमें रक्तनिकालनेकाविधान ) वायु दूषित रक्त सिंगीसे लेय, पित्तदूषित  
जोक से लेय, कफदूषित तौबीसे लेय ॥ २३ ॥ दो वा तीन दोषों से दूषित दुष्ट  
रुधिर शिरादेदन करि लेय ॥ २४ ॥ ( सिंगी आदिसे रुधिर खिंचने का  
प्रमाण ) सिंगी, जित और लगाने है उसके कर्णजोर दृश्यभंगुलताई का रक्त लेवती  
है जोक हायमस्ताई तौबी वारह श्रंगुलताई ॥ २५ ॥ सूक्ष्मशिरा श्रंगुलभरकी  
और मोठी शिरा जो सब नसोंको रक्तदेय वह सब शरीरके रुधिरको शुद्ध करती  
है ( रुधिरमोक्षणअर्षाम्प ) शीतकाल में उपास में तंद्रा में मदमें व परिश्रम  
में ॥ २६ ॥ तथा मलमूत्रनिरोधमें ऐसे मनुष्यके शरीरसे रुधिर नहीं निकलता  
( शिरारक्त न देनेका यत्न ) जो नस द्विदूके रुधिर भनीभाति न द्रव तौ कूट,  
चीता और सैधव ये समान भागले पीति ॥ २७ ॥ उस छेदपर रगड़ने से  
अच्छे प्रकार रक्त देयगी ( रक्तमोक्षणकाल ) न जाड़ाहो न गरमीहो न  
स्वेद क्रिये को न उष्णशरीरी को ॥ २८ ॥ जो रक्त निकाले तौ प्रथम यवागु

अतिस्विन्नेसोष्णकालेतथैवातिशिरान्वधात् २९ अति  
 प्रवर्ततेरक्ततत्रकुर्यात्प्रतिक्रियाम् । अतिप्रवृत्तेरक्तेचलोध्र  
 सर्जरसाञ्जनैः ३० यवगोधूमचूर्णैर्वाधवधन्वनगैरिकैः ।  
 सर्पनिर्मोकचूर्णैर्वाभस्मनाक्षौभवस्त्रयोः ३१ मुखत्रणस्यव  
 द्वायशीतैश्चोपचरेद्द्रुणम् । विध्येदूर्ध्वशिरान्तांवादहेत्का  
 रेणवाग्निना ३२ वृषांकपायःसन्धत्तेरक्तंस्कन्दयतेहिमम् ।  
 वृणास्यंपाचयेत्क्षारोदाहःसङ्कोचयेच्छिराम् ३३ वामाण्ड  
 शोथेदक्षस्यकरस्याङ्गुष्ठमूलजाम् । दहेच्छिरान्व्यत्ययेतु  
 वामाङ्गुष्ठशिरांदहेत् ३४ शिरादाहप्रभावेणशुष्कशोथः  
 प्रशाम्यति । विसूच्यांपाददाहेनजायतेग्नेःप्रदीपनम् ३५  
 सङ्कुचन्तियतस्तेनरसश्लेष्मवहाःशिराः । यदावृद्धिर्यकृ  
 त्स्त्रीह्नोःशिशोःसञ्जायतेसृजः ३६ तदातत्स्थानदाहेनस

दे वृषकर लोह निकलावे ( अतिरुधिरस्त्राव ) जिसे स्वेद किये वा  
 ऊष्मासे स्थूल नस से ॥ २६ ॥ रक्तअधिक भावै बन्द न हो तिसके हित यत्र  
 आगेवाले रत्नो रुमें कहतेहैं रुधिर न धँभनेपर ॥ जो शिरामोक्षसे रक्त न बन्दहो  
 तो लोथ, राल व रसाँत इन तीनों का चूर्ण ॥ ३० ॥ वा यव गेहूँ का चूर्ण वा  
 धव, जवासा और गेरु का चूर्ण वा सर्पकी केंजुल वा रेशमी लत्ताकी भस्म इन  
 में कोई ॥ ३१ ॥ फस्त के मुखपर बलकरि दायदे वसपर चन्दनादि शीतोपचार  
 करे शीतल लेपकरै जो इसमें बन्द न होय तो उसके ऊज्ज ऊपर यदिके फस्त  
 दे वा अग्निसम खार उसके मुँहपर लगावे वा अग्निसे दागदे तो बन्द होगा ॥  
 ३२ ॥ इससे क्यों बन्द हो सो कहते हैं लोधादि से घाव मुख अमलाताहै  
 शीतल लेप से रक्त र्थभता है चारादि से जत पचताहै जलानेसे नस का मुख  
 सिकुड़ताहै ॥ ३३ ॥ ( दग्धकृतरोगशांति ) जिसका दहिना अण्डकोशफूल  
 उसके बायें हाथ के अंगूठे की जड़दागै जो बाय अण्डकोश फूल तो दहिने हाथ  
 के अंगूठा की मूल दागै ॥ ३४ ॥ जो यह आरम्भ में करै तो अवश्य अच्छा  
 होय और जिसे शीतरस हो उसके गोड़के नलवे अत्यन्तसेके, तो रसवाहिनीव  
 फफवाहिनी के मुख सिकुड़जाते हैं व अग्निदीप्त होती है ॥ ३५ ॥ ३६ ( दुष्टरक्त

ड्कुचन्त्यसृजःशिराः। रक्तेदुष्टेवशिष्टेपिव्याधिर्नैवप्रकुप्य  
 ति ३७ अतःस्त्रावंसावशेपरक्तेनातिकमोहितः । आन्ध्य  
 माक्षेपकंतृष्णांतिमिरंशिरसोरुजम् ३८ पक्षाघातंश्वा  
 सकासौहिक्कांदाहंचपाण्डुताम् । कुरुतेविस्त्रुंतरक्तंमरणवा  
 करोति च ३९ देहस्योत्पत्तिरसृजादेहस्तेनैवधार्यते । वि  
 नातेनचूजेऽजीवोरक्षेद्रक्तमतोबुधः ४० शीतोपचारैःकुपि  
 तेस्त्रुतरक्तस्यमारुते । कोष्णेनसर्पिषाशोथंसर्वतःपरिषे  
 चयेत् ४१ क्षीणस्यैणशशोरभ्रहरिणच्छागमांसजः । रसः  
 समुचितःपानेक्षीरंवाफट्टिकाहिताः ४२ पीडाशान्तिर्लघु  
 त्वंचव्याधेरुद्रेकसङ्क्षयः । मनःस्वास्थ्यंभवेच्चिह्नंसम्यग्वि  
 स्त्रावितेऽमृजि ४३ व्यायाममैथुनक्रोधशीतस्नानप्रवात

अक्षेप न होनेपर ( दुष्ट रुधिर का देनेमें कुछ बाकी रहिजाय तो रोग भी कोप  
 न करेगा ॥ ३७ ॥ और अक्षेप होने का ज्यादा निकलनेमें उपद्रव उत्पन्न होतेहैं  
 अन्धता, आक्षेपक वायु, तृष्ण, तिमिर, माथे में पीड़ा ॥ ३८ ॥ पक्षाघात वायु,  
 श्वास, कास, हुचकी, जलन और पांडु ये रोग होते हैं और सब रुधिर निकल जाने  
 पर मरनेका भी आशय नहीं होताहै ॥ ३९ ॥ क्योंकि रक्तसे शरीर की उत्पत्ति  
 है और वही देहका आधारहै रक्त रहने से जीवत्वहै इसीकारण बुद्धिमान वैद्य  
 रुधिरकी रक्षा करतेहैं ॥ ४० ॥ ( रुधिरमोक्षणपर दोषकोप ) रुधिर निकले  
 पर श्वास पर विचकोप दीर्घै तौ शीतलचन्दनादि लेपकरै व वायुकोप टीपि तौ  
 वा घावपर सूजन होय पीडा करै तौ सुरोष्ण घी लगावै तौ रोग नाश होय ॥  
 ४१ ॥ ( रुधिरमोक्षणपर पथ्य ) जो रक्त निकालने परनिर्भल भयाहो तौ  
 सरगोश, भेड़, काला इरिण वा ब्याग इनका मांस खिलावै वा गोदूधमें साठी  
 के चावलकी खीर करि खिलावै वा गऊके दूधसाथ भातको खिलावै ये पथ्य  
 हितकारक हैं ॥ ४२ ॥ ( सम्यकरक्तमोक्षणलक्षण ) पीडाचिगत,  
 शरी इलका, रोगका नाश व प्रसन्नमन ऐसे लक्षणहैं तौ रक्तमोक्षण अच्छा  
 भया ॥ ४३ ॥ ( रक्तमोक्षणपरनिषेध ) परिश्रम, मैथुन, क्रोध, ठंडे पानीसे  
 नहाना, बाहर जाना एकार खाना व दिन में सोना तथा जराघार, सदाई व

कात् । एकाशनं दिवा निद्रां क्षाराम्लकटुभोजनम् । शोकं  
 यादमजीर्णं च त्यजेदावलदर्शनात् ४४ ॥ इति श्रीशार्ङ्ग-  
 धरे उत्तरखण्डे रक्तमोक्षणविधिर्नाम द्वादशोऽध्यायः १२ ॥  
 १. सेक आश्च्योतनं पिण्डी विडालस्तर्पणं तथा । पुटपाको  
 उजनं चैभिः कल्केर्नेत्रमुपाचरेत् १ सेकस्तु सूक्ष्मधाराभिः  
 सर्वस्मिन्नयनेहितः । मीलिताक्षस्य मर्त्यरयप्रदेयश्चतुर-  
 ङ्गुलम् २ सचापि स्नेहनावातेरक्तेपित्ते चरोपणः । लेख-  
 नश्च कफकार्यस्तस्य मात्राऽधुनोच्यते ३ षड्वाकच्छतेः  
 स्नेहनेषु चतुर्भिश्चैत्रोपणे । वाक्छलैश्च त्रिभिः कार्यः से-  
 को लेखनकर्माणि । कार्यरतुदिवसे सेको रात्रौ चात्ययिके गदे  
 ४ परण्डत्वक्पत्रमूलैः शृतमाजं पयोहितम् । सुखोपणं सेचनं  
 नेत्रे वाताभिष्यन्दनाशनम् ५ परिपेकोहितो नेत्रेपयः को-  
 षणं ससैन्धवम् ॥ रजनीदारुसिद्धं वासैन्धवेन समन्वितम् ६

कडुवे पटार्योको त्यागै शोक, चकना, अजीर्ण और जिसमें जोर पड़ता देखें उस  
 को न करै ॥ ४४ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरोत्तरखण्डे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

(अथ नेत्रोपचारप्रकार ) नेत्ररोगपर सात प्रकारकी औषध कहते हैं  
 सेक, आश्च्योतन, पिण्डी, विडाल, तर्पण, पुटपाक और अजन ये सात प्रकार  
 नेत्ररोगमें कहे हैं ॥ १ ॥ ( सेकाधिधान ) दूध, घृत व रस आदिक गंगीकी  
 आरिं भुँदवाय चार अंगुल ऊपरसे महीन धारदे औषध गिरावै इसे सेक कहते हैं ॥ २ ॥  
 ( सेकभेद ) वातदूषित नेत्ररोग में स्नेहन सेक देय, रक्तपिचर रोगम्-मेका  
 देय, कफदूषित में लेखन सेक देय, दूरे कृतादि स्नेहन द्रव्य है, लोण, मुलेठी व  
 धिफलादि ये रोपण द्रव्य है इन्हें दूधमें पीसिले सोंट, पिर्च व पीपरि में लेखन  
 द्रव्य कहाते हैं अथ आगे इनकी मात्रा कहे हैं ॥ ३ ॥ स्नेहन सेककी मात्रा छहर्ष  
 रोपण सेककी चारसौ लेखनकी तीनसौ मात्रा ताई रस सेकादिकालमें देन )  
 दिनमें करै व रात्रिको तेज रोममें करै ॥ ४ ॥ ( वाताभिष्यन्दपर सेक )  
 रण्डकी ज्वाल, पत्र, शूल व काय तथा वकरोखा दूध सुखोपणम् इके वां हान  
 अभिष्यन्द तेजमेदूरणे ॥ ५ ॥ ( पुनः ) जर्गी वां दूध सेपत्र रात्रि सुखोपण



चात्ताभिष्यन्दश्मनंहितमारुतपर्यये । शुष्काक्षिपाकेचहि  
 तमिदंसेचनकंतथा ७ शावरंमधुकंतुल्यं घृतभृष्टंसुचू  
 षितम् । आगक्षीरेस्थितंसेकात्पित्तरक्ताभिघातजित् ८  
 त्रिफलालोध्रयष्टीभिः शर्कराभद्रमुस्तकैः । पिष्टैःशीता  
 म्बुनासेकोरक्ताभिष्यन्दनाशनः ९ लाक्षामधुकमञ्जिष्ठा  
 लोध्रकालानुसारिवा । पुण्डरीकयुतःसेकोरक्ताभिष्यन्दना  
 शनः १० श्वेतंलोध्रंघृतेभृष्टंचूणितंपटविस्तृतम् । उष्णाम्बु  
 नाविमृदितंसेकाच्छूलघ्नमम्बके ११ अथाश्च्योतनकंका  
 र्थनिशायांनकथंचन । उन्मीलितेक्षिणहृद्ध्येविन्दुभिर्द्वा  
 ङ्गलाद्धितम् १२ विन्दवोष्टौलेखनेषुस्नेहनेदशविन्दवः ।  
 रौपणेद्वादशप्रोक्तास्तेशीतेकोष्णरूपिणः १३ उष्णेचशी  
 तरूपाःस्युःसर्वत्रैवैषनिश्चयः । चातेतिकंतथास्निग्धंपित्ते

करि सेंकै वा हल्दी देवदारु व सैधवको डालि धगरीपयते सेंकै ॥ ६ ॥ तो अभिष्य-  
 न्द, चातपर्वण व शुष्काक्षिपाक ये रोग दूरहोयें ॥ ७ ॥ ( पित्तरक्त व अ-  
 भिघातपर सेक ) लोपच मुलेठी इन दोनोंके समानघृतमें भूँजि दूधमें मिलाय  
 तप्तकरि सेंककरै तौ पित्त, रक्तविकार व अभिघातजनित दोष दूरहोयें ॥ ८ ॥  
 ( रक्ताभिष्यन्दपर सेक ) त्रिफला, लोप, मुलेठी, शकर व नागंरमोया ये  
 गण समान भागले पीसि ठंडे पानीमें सेक किये से रक्त अभिष्यन्द दूरहोय ॥ ९ ॥  
 ( रक्ताभिष्यन्दपर ) लान्ध, मुलेठी, मँजीठ लोप, कालासारिवा और कपल  
 ये सब पीसि पानीमें सेक करै तौ नेत्रनमे रक्ताभिष्यन्द दूरहो ॥ १० ॥ ( नेत्र  
 शूलपर ) सफेद लोपको घृतमें भूँजि चूर्णकरि पोटलीमें बांधि उष्णजलमें धोरि  
 धोरि आंसकी पलकन पर फेरै तौ नेत्रशूल दूरहो ॥ ११ ॥ ( आश्च्योतन  
 विधान ) आश्च्योतन कहे विंदु जुवावना आंसिलोलि दूध काय स्वरसादि  
 द्रव पदार्थ दे। अंगुनीसे धोरि आंसिमें जुवाय देय इसको "आश्च्योतन" कहते  
 हैं इसको निशासमय कभी न करै ॥ १२ ॥ ( लेखनादि आश्च्योतन  
 में विंदु डालने का प्रमाण ) लेखनकर्म में आठ विंदु ( बूँद ) नेत्र में  
 देय स्नेहन में दश शोणन में बारह शीतकाल में सुखोष्ण ॥ १३ ॥ उष्ण

मधुरशीतलम् १४ तिकोष्णरूक्षचकफेक्रमादाश्च्योतनं  
 हितम् । आश्च्योतनानां सर्वेषां मात्रास्याद्वाक्छतंहितम्  
 १५ निमेषोन्मेषणंपुंसामङ्गुल्योश्श्रोतिकाथवा । गुर्वक्षरो  
 चारणं वावाङ्मात्रेयं स्मृता बुधैः १६ विल्वादिपञ्चमूलेन बृह  
 त्येरण्डशिग्रुभिः । काथ आश्च्योतने कोष्णो वाताभिष्यन्द  
 नाशनः १७ अम्बुपिष्टैर्निम्बपत्रैस्त्वचलोधस्यं लेपयेत् । प्र  
 ताप्यवह्निना पिष्ट्वा तद्रसोनेत्रपूरणात् १८ वातोत्थं रक्त  
 पित्तोत्थमभिष्यन्दं विनाशयेत् । त्रिफलाश्च्योतनं नेत्रे स  
 र्वाभिष्यन्दनाशनम् १९ स्त्रीस्तन्याश्च्योतनं नेत्रैरक्तपि  
 त्तानिलार्तिजित्वाश्रीरंते लघुतं वापित्रातरं कुरु जंजयेत् २०  
 पिण्डीकवलिकाप्रोक्तावध्यतपट्टवल्कैः । नेत्राभिष्यन्द  
 योग्यासात्रणेष्वपि निवध्यते २१ अभिष्यन्देऽधिमन्ये च

( वातादिभ्यो आश्च्योतनं योन्द ) इदं सू-

सञ्जातेऽलेष्मसम्भवे । स्निग्धस्विन्नोत्तमाङ्गस्य शिरस्तीक्ष्णैर्विरेचयेत् २२ अधिमन्थेषसर्वेषु ललाटे वेधघेच्छिराम् । अज्ञान्तेमर्वथामन्थेऽश्रुगोरुपरिदाहयेत् २३ अभिष्यन्देषु सर्पेषु धनीयात्पिण्डिकां बुधः । वाताभिष्यन्दगान्त्यर्थं स्निग्धोष्णापिण्डिका भवेत् । एरण्डपत्रमूलत्वङ्निर्मिता वातनाशिनी २४ पित्ताभिष्यन्दनाशाय धात्रीपिण्डीसुखावहा । महानिम्बफलोद्भूतापिण्डीपित्तविनाशिनी २५ शिशुपत्रकृतापिण्डीऽलेष्माभिष्यन्दनाशिनी । निम्बपत्रकृतापिण्डीऽलेष्मपित्तहरा भवेत् २६ त्रिफलापिण्डिका प्रोक्ता नाशिनीऽलेष्मपित्तयोः । पिप्पुवाकां विजकतोयेन घृतमृष्टा च पिण्डिका २७ शोथस्य हरति क्षिप्रमभिष्यन्दमसृग्भवम् । शुण्ठीनिम्बदलैः पिण्डीसुखोष्णास्वल्पसैन्धवैः २८ धार्या चक्षुषिसंयोगाच्चोथकण्डूषथापहा । विडालंकोवहि

(नेत्राभिष्यन्दपर शिरोरेचन) जिसे कफहत अभिष्यन्द व अधिमन्थयो वसके मस्तकमें तेजजगाय पसीना निकलाय नासलेय यठ मस्तक शुद्ध करनको भला है ॥ २२ ॥ (सर्वाधिनन्धपर) सर अधिमन्थ में शिरकी फस्तले अर्शमन्थ में भीह दन्त्र कर ता प्रगुम होय ॥ २३ ॥ (अभिष्यन्दादि पर) सर्वाभिष्यन्द में वही द्रव्यरा कल्क नेत्रपर यात्रे वाताभिष्यन्दमें चिकनी व उष्णद्रव्य की पिण्डी पाये (यान्त च पित्ताभिष्यन्दपर) रूँडके इन मूत्रा जालको पीसि पिंड़ी परि नेत्र र गये से वाताभिष्यन्द दूरहोय ॥ २४ ॥ आचरे की पिण्डी वाधने व पित्ताभिष्यन्द दूरहोय (पुनःपिलाभिष्यन्दपर) दवायनके फलकी पिंड़ी वात्रे से पित्ताभिष्यन्द दूरहोय ॥ २५ ॥ (कफाभिष्यन्दपर) सर्हिजनके पत्तों की पिंड़ी पायेस कफाभिष्यन्द दूर होय (कफापिलाभिष्यन्दपर) निरपत्र वा त्रिफलेकी पिंड़ी पाये तो कफापिलाभिष्यन्द दूरहोय (रक्ताभिष्यन्दपर) लोषरो कानीमें त्रांदि तृतमें मूत्रे पिंड़ीररि यरनमे ॥ २६ ॥ २७ ॥ रक्ताभिष्यन्द विनाशहोय (नेत्रशु धचन्नाजपर) सोंड, नीमपत्र र थोड़ाता सेंधप गिलाय गुनगुनी पिंड़ीवा ॥ २८ ॥ ता नन्दना गुननी नन्दोया । पिडालादि-

लंपोनेत्रपक्षमविवर्जितः । तन्मात्रासापरिज्ञेयामुखलेप  
 विधानवत् २९ यष्टीगैरिकसिन्धूत्थदावीताक्षर्यैः संसांश  
 कैः । जलपिष्टैर्बहिल्लेपः सर्वनेत्रामयापहः ३० रसाञ्जनेन  
 बालेपः पथ्याविश्वदलेरपि । कुमारिकाग्निपत्रैर्वादाडिमी  
 पल्लवैरपि ३१ वचाहरिद्राविश्वैर्वातथानागरगैरिकैः ।  
 दग्ध्वानौसैन्धवंलोध्रंमधूच्छिष्टयुतेघृते ३२ पिष्टमज्ज  
 नलेपाभ्यांसद्योनेत्ररुजापहम् । लोहस्यपात्रेसंघृष्टोरसो  
 निम्बफलोद्भवः ३३ किञ्चिद्घनोबहिल्लेपोनेत्रवाधां  
 व्यपोहति । संचूर्णमरिचकेशराजस्वरसंमर्दनात् ३४  
 लेपनादर्मणां नाशं करोत्येषः योगराट् । स्वित्नांभित्वा  
 विनिष्पीड्यभित्नामज्जननामिकाम् ३५ शिलैलानत  
 सिन्धूत्थैः सक्षौद्रैः प्रतिसारयेत् । अथतर्पणवाचमिनेत्र  
 तृप्तिकरंपरम् ३६ यद्रूपं परिशुष्कञ्चनेत्रं कुटिलमाविल

धान ) आसि मूँद ताले ऊपरकी पलकार लेपकर परनी बरायदे इसे बिटाल कहें  
 इतकी भाषा मुखलेप रागान जानौ ॥ २९ ॥ ( सर्वाक्षिरोग पर बिटाल )  
 मुलेवी, गेरु, संधं, दाहल्ली व रगरियां ये पांचों समान पानीमें पीसि छेपकर  
 ती सब नेत्रभिष्यन्दार्थ ॥ ३० ॥ ( पुनः ) रसांजनेन जलमें पीसि छेपकर अथवा  
 पट्ट, सौंठ धीनुवार, चीता, अनारपत्र ॥ ३१ ॥ अथवा वचा, हल्ली व मोंठ या ताठ,  
 गेरु ये भिन्न २ पानी में पीसि लेप कियेसे सब नेत्ररोग दूरहोय ( पुनः ) संधं व  
 लोषको भूने मोम यीमें रगरि अंजन करि लेप मी करे ती बेतदी नेत्ररोग अन्धे  
 होय ( पुनः ) नींदूतको लोहपात्रमें रगरि ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ मादामये लेप किये से  
 नेत्रवापा हन होय ( अर्भरोगपर छेप ) भंगरेट्ट रसमें मरिचको रगरि ॥ ३४ ॥  
 लेप करे ती सब अर्भरोग नाश करे यह सत्रयपोगा है ( प्रतिसारण अंतन-  
 नामिका पिष्टिका पर ) वह आग्निवरी कोरार होनी है इतः सिद्धिती पर  
 पकरावे फेरि संगुनी से टागि भित्तात् ॥ ३५ ॥ अंशुज, इलायची, तगोर,  
 संधं पीसि शुकटयें रगरि लगाने ती सिद्धितीको दूरकरे ॥ ( नेत्रपर त-  
 र्पण ) नेत्रके मंडुष्ट करने को वर्यज कहते हैं ॥ ३६ ॥ दर्शक योग्य जो नेत्र

म् । शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मीलनसंयुतम् ३७ ति  
 मिरार्जुनशुक्राद्यैरभिष्यन्दाधिमन्थकैः । शुक्राक्षिपाक  
 शोथाभ्यायुक्तं वातविपर्ययैः ३८ तन्नेत्रंतर्पणैर्ये ज्यनेत्रक  
 र्मविशारदैः । दुर्दिनात्युष्णशीतेषु चिन्तायासभ्रमेपु  
 च ३९ अशान्तोपद्रवेचाक्षिणतर्पणं न प्रशस्यते । वाता  
 तपग्जोहीनेदेशे चोत्तानशायिनः ४० आधारीमापचर्णे  
 नक्षित्रेण परिमण्डलौ । समौदढावसम्बाधौ कर्तव्यो नैत्र  
 कोशयोः ४१ पूरयेद्घृतमण्डेन विलीनेन सुखोदकैः ।  
 अथवाशतधौतेन सर्पिषाक्षीरजेन वा ४२ निमग्नान्य  
 क्षिपक्ष्माणि यावत्स्युस्तावदेव हि । परयेन्मीलितेनेत्रे त  
 तउन्मीलयेच्छनैः ४३ धारयेद्दूर्तमरोगेषु वा द्वात्राणांश  
 तं युधः । स्वच्छेकफेसन्धिरोगे मात्रापञ्चशतं हितम् ४४  
 शुक्ले च षट्शतं कृष्णरोगे सप्तशतं मतम् । दृष्टिरोगेष्वष्ट

रुचे ९ कठोरता व गुरुता युक्तहो भरित वरुनी शिर उत्पात, कृच्छ्रोन्मीलन  
 कदे जलदी पलकें लगे ॥ ३७ ॥ तिमिर, अर्जुन, कुली, अभिष्यन्द, अधिमन्थ  
 शुक्राक्षिपाक, सूजन और वातसंबन्धी व्यया ॥ ३८ ॥ ये रोग दृष्टियोग्य हैं  
 ( तर्पण यर्जित ) दुर्दिनमें अति उष्णकाल में अतिशीतकाल में चिन्ता परि-  
 श्रम और भ्रमों में ॥ ३९ ॥ और यदि नेत्र उपद्रव शान्त न हों तो ये तर्पण  
 लायक नहीं कहते हैं ( तर्पणविधान ) जिस स्थानमें बयारि, गरमी व घूरि-  
 न जाप इनके उच्चावको ठौर रोगी उताना पाई ॥ ४० ॥ तत्र उतके नेत्रों के चारों  
 ओर जो दृष्टी है तिसपर उदृक्ती पीठीले मेढवायै जैसे कटोरी दिवली होती है  
 तत्र आसि मुँदवाय उसमें दिग्गला घी वा औषधों का मंड करि वा सुखाप्य जल  
 वा सौवारका घोषा घृत वा दूधरा फेन वा नक्नीत ( नयनू ) इनमें से कोई  
 भरे ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ कुड्द वेरमें धीरे धीरे पलक पिनमिलावै जिसमें सूक्ष्मसी  
 औषध भीतर भी जाय ॥ ४३ ॥ ( तर्पणमात्रा ) जो पलक वा पोटे के रोमों  
 पर तर्पण हो नौ सी चाड्धाना चाई औषध भरी राखै जो कफादिजन्य नेत्रमें  
 कोई दृष्टिहो तो पात्रमें मात्रा तर्पण औषध स्थिर रहै ॥ ४४ ॥ सफेदी के

शतमधिमन्थसहस्रकम् ४५ सहस्रवातरोगेषु धार्यमेवं हि  
 तर्पणे । स्थिन्ननयवपिष्टेनस्नेहवीर्यैरितंततः ४६ यथा  
 स्वंधूमपानेनकफमस्यविशोधयेत् । एकाहंवात्र्यहंवापि  
 पञ्चाहंचेष्यतेपरम् ४७ तर्पणेतृप्तलिङ्गानिनेत्रस्येमानि  
 भावयेत् । सुखस्वप्नावबोधत्वंवैशद्यंवर्णपाटवम् ४८ नि  
 वृत्तिव्याधिशान्तिश्चक्रियालाघवमेवच । अथसाश्रुगुरु  
 स्निग्धनेत्रंस्यादतितर्पितम् ४९ रुक्षमस्त्राविलंरुग्णं  
 नेत्रंस्याद्धीनतर्पितम् । रुक्षस्निग्धोपचाराभ्यामेतयोः  
 स्यात्प्रतिक्रिया ५० अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि पुटपाकस्य  
 साधनम् । ह्रौविल्वमात्रौ मांसस्यपिण्डौ स्निग्धौ सुपेषि  
 तौ ५१ द्रव्याणां विल्वमात्रन्तु द्रवाणां कुडयोमतः । तदे  
 कस्थं समालोढ्य पत्रैः सुपरिवेष्टितम् ५२ पुटपाकेन तस्य  
 रोगं ह्यसौ ताई काने डेले के रोगमें सातसै ताई रहै पुतरी रोग में आठसै  
 ताई अधिमन्थ ॥ ४५ ॥ वा वात रोग में हजार मात्रा ताई औषध भरै, रहै  
 ( तर्पण में कफाधि के उपाय ) जो स्निग्ध तर्पण से कफ उत्पन्नहो तो यह  
 पीसि घूमपान कराय कफका शोधनकरै ( तर्पणमें दिनप्रमाण ) तर्पण एक  
 दिन व तीन दिन व पांच दिन करै ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ( सम्यक् तर्पणलक्षण )  
 तर्पण अच्छाहो तो सुखसे सोवि जागे नेत्र निर्मलहों और कांति बढ़े ॥ ४८ ॥  
 दृष्टि शुद्धहो रोग नाश पलकें इलकी ये लक्षण अच्छे तर्पण के हैं ( अति-  
 तर्पणलक्षण ) अतितर्पण से नेत्र पानी बहावें भारी रहें व चिर चिराहें ॥  
 ४९ ॥ ( हीनतर्पणलक्षण ) नेत्र तेज लाल बीड़ो युक्त व रोग करान्ति  
 हो ( नेत्र सूक्ष्म स्निग्ध यत्न ) जो नेत्र चिकने हों तो रुद्ध उपाय करै  
 रुवेहों तो स्निग्ध उपायकरै ॥ ५० ॥ ( पुटपाक की रीति कहने हैं ) हरि-  
 यादि मांस दोपल महीन करि एकपल घृतादि स्निग्ध भिन्नाय ॥ ५१ ॥ दूकन्न  
 सूत्री औषध दूध व द्रवपदार्थ कुड़ुचभर ये सब मिलाय गेला बाणि यथा कार्य  
 पत्र से वेष्टितकरि ॥ ५२ ॥ काढ़ांटी पाटी चढ़ान हुटगक करलेप वर गोला

१ तर्पणरूप धारण को नेत्र मुँदाय ऊपरसे काने हैं । २ हुटगक उन्कनो समझा नेत्र न-  
 भाय पीयोपीच गेले हैं नेत्र उप्तानी नेत्र पातनार्थ ई ३

क्त्वांगृहीयात्तद्रसम्बुधः । तर्पणोक्तविधानेनयथावदुपचा  
 रयेत् ५३, दृष्टिमध्वेनिपेच्यः स्यान्नित्यमुत्तानशायिनः ।  
 स्नेहनोलेखनश्चैवरोपणश्चेतिमात्रिद्या ५४ हितःस्नि  
 ग्धोतिरुक्षस्यस्निग्धस्यापिहिलेखनः । दृष्टेर्बलार्थमित  
 रःपित्ताम्बुवृणवातनुत् ५५ सर्पिर्मांसवसामञ्जामेदः  
 स्वाह्वौषधैःकृतः । स्नेहनःपुटपाकश्च धार्योद्वेत्राक्छते  
 दृशोः ५६ जाङ्गलानांयकृन्मारौलेखनद्रव्यसंयुतैः । कृ  
 ष्णालोहरजस्ताम्रशङ्खविद्रुमसिन्धुजैः ५७ समुद्रफेनं  
 कासीसस्रोतोजलधिमस्तुभिः । लेखनोवाक्छतंधार्यस्त  
 स्यतावद्विधारणम् ५८ स्तन्यजाङ्गलमध्वाज्यतिक्तकद्र  
 व्यपाचितः । लेखनात्त्रिगुणोधार्यः पुटपाकस्तुगोपणः  
 ५९ वितरेत्तर्पणोक्तांतु क्रियांव्यापत्तिदर्शने । अथसम्प

निकालि रस निचौरि नेत्रपर मेरला वापि रसभरै ॥ ५३ ॥ ( नेत्रपुटपाक  
 रस धारण विधान ) पुटपाक रस स्नेहन, लेखन व रोपण भेदकरि ये तीन  
 प्रकारका है रोगी को उताना मुलाय नेत्र खोलिकै, भीतर डारै ॥ ५४ ॥ ( स्ने-  
 हादि भेद ॥ पुटपाकक्रिया ) रुग्ने नेत्रर चिकना चिकनेपर रुवा पुटपाक  
 करना संयत्तदृष्टि पर रोपण पुटपाक।योग्यहै जो नेत्रमें दुष्टरोग व रक्तपित्तत्रय  
 व वायु उपद्रवहो तो मानेवाले दलोक में कही द्रव्य दारोण पुटपाक करी ॥  
 ५५ ॥ ( स्नेहन पुटपाक ) घृतमें हरिणादि माम, वसा, मञ्जा, मेदा और स्वा-  
 दौषध “काकोल्यादिगणना चूर्ण” शरार एककरि पीसि मोल्यराधि पुटपाक  
 करि रसले नेत्रमें देय दोसै मात्रा तक राखै इसे पुटपाक कहते हैं ॥ ५६ ॥  
 लेखन, पुटपाक यथोचित करै मुगैका यकृत, मांस, लोहनून, तांग, शंख, भूंगा,  
 सेंघन ॥ ५७ ॥ समुद्रफेन, कसीस, सुरया व वकरी के दहीका पानी, पूर्वोक्त  
 रीति पुटपा करस नेत्रमें सौमात्राताई राखै यह लेखन पुटपाक कहाताहै ॥ ५८ ॥  
 ( रोपण पुटपाक ) स्त्रीका दूध, मुगामांस, मधु, घृत व कुटकी ये सब मिलाय  
 पुटपाककरि रसले आँखों में देय यह रोपण पुटपाक है तीनसै मात्रातक राखै  
 जो पुटपाक शून्याधिक होय तो नेत्र भारी रहै व निम्नेगता दौष उत्पन्न होय

कदोपस्य प्राप्तमञ्जनमाचरेत् ६० हेमन्तेशिशिरेच्चैवं  
 मध्याह्नेऽञ्जनमिष्यते । पूर्वाह्णेचापराह्णे च ग्रीष्मे शरदि  
 चेष्यते ६१ वर्षास्वनभ्रेनात्युष्णेष्वसन्ते च सदाहितः ।  
 लेखनरोपणंचैव तथास्यात्स्नेहनाञ्जनम् ६२ लेखनं  
 चारतीक्ष्णाम्लरसैरञ्जनमिष्यते । कपायतीक्ष्णरसयुक्  
 सस्नेहरोपणं मतम् ६३ मधुरस्नेहसम्पन्नमञ्जनं च प्रसाद  
 नम् । गुटिकारसचूर्णानि त्रिविधान्यञ्जनानि च ६४ कुर्या  
 च्छलाक्याङ्गुल्याहीनानि च यथोत्तरम् । श्रान्ते प्ररुदिते  
 भीतेपीतमद्येन वज्ररे ६५ अजीर्णवैगघाते च नाञ्जनं संप्र  
 शस्यते । हरेणुमात्रां कुर्ध्वीतवर्तिन्तीक्ष्णाञ्जनेभिषक् ६६  
 प्रमाणं मध्यमेध्यर्द्धद्विगुणं तु मृदा भवेत् । रसक्रियात्तत्तमा

तत्र पहे हूये सदृश तर्पणक्रिया करै तो पूर्वोक्तहोय ( संपक दोष अञ्जनः )  
 निसकी आतिदेसै भलीभाति पकचुकीहों तो उसके नेत्रों में अञ्जन लगाना  
 फिर पंचमै दिन लगारै ॥ ५६ । ६० ॥ और साधारण में हेमंत व शि  
 शिरश्रतु में मध्याह्न में लगारै तथा ग्रीष्म व शरद् में पहर दिन चंद्र और  
 पहर दिन रहे लगारै ॥ ६१ ॥ वर्षा में घरसत्ता न हो बदरी न हो उत्प्ला  
 अधिक न हो तत्र लगारै वसन्त में सब समय अञ्जन लगाना हितहै ( अञ्जन  
 भेद ) अञ्जन लेसन, रोपण और स्नेहन भेदसे तीन प्रकारकाहै ॥ ६२ ॥ सो  
 तीक्ष्ण खट्टा, दो रस लेखन अञ्जन जानना कपाय कटु स्नेहन युक्त दो रस  
 रोपण जानो ॥ ६३ ॥ मधुर रस स्नेह युक्त प्रसादन स्नेह जानो ( अञ्जन  
 प्रकार ) गोली अञ्जन, रस अञ्जन, चूर्ण अञ्जन ॥ ६४ ॥ गोलीसे रसाञ्जन  
 जेष्ठ रसते चूर्णाञ्जन श्रेष्ठ ये एकसे एक उत्तमहैं सो सलाह व अंगुली से लगावे  
 ( अञ्जन अयोग्य ) यकित, रोनेवाला, भयभीत, मद्यपिये, नवीनचरि ॥ ६५ ॥  
 अजीर्णो वै मूत्रादिरोधी र्द्धे अञ्जन अयोग्यहै ( तीक्ष्णाञ्जन की चर्ती )  
 मोतीरीज सम मोटी क्लारै ॥ ६६ ॥ मध्यम में देह बीज सम मृदु में दो बीज  
 सम गीले अञ्जन में मात्रा तीन विदंगसम उत्तमहै दो विदंगसम मध्यमहै एक  
 विदंग समान छोटी मात्राहै ( शुष्क वैरेचनाञ्जन प्रमाण ) वैरेचन अञ्जन



स्यात्त्रिविडङ्गमिताहिता ६७ मध्यमाद्विविडङ्गास्याद्धीः  
 नात्वेकविडङ्गा । वैरेचनिकचूर्णतुद्विशलाकंविधीयते-  
 ६८ मृदौतुत्रिशलाकंस्याच्चतस्रःस्नेहिकेञ्जने । मुखयोःकु-  
 ष्ठिताइलक्षणाशलाकाष्टाङ्गुलीन्मिता ६९ अश्मजाधा-  
 तुजावास्यात्कलायपरिमण्डला । तावलोहाश्मसञ्जाता-  
 शलाकालेखनेमता ७० सुवर्णरजतोद्भूताशलाकास्नेहने-  
 मता । अङ्गुलीचमृदुत्वेनकथितारोगणेषुधैः ७१ सायं  
 प्रातश्चाञ्जनंस्यात्तत्सदानैवकारयेत् । नातिशीतोष्णवाता-  
 भ्रवेलायांसम्प्रशस्यते ७२ कृष्णभागादधःकुर्यादपाङ्ग्या-  
 वदञ्जनम् । शङ्खनाभिर्विभीतस्य मञ्जापथ्यमनःशिला-  
 ७३ पिप्पलीमरिचकुष्ठं वचाचेतिसमांशकम् । छागीक्षीरे-  
 णसम्पिप्यवर्तिकुर्याद्यथोन्मिताम् ७४ हरेणुमात्रांसंघृष्य-  
 जलैःकुर्यादथाञ्जनम् । तिनिरंमांसवृद्धिञ्चकाचंपटलम-  
 र्बुदम् ७५ रात्र्यन्धंवार्षिकंपुष्पवर्तिश्चन्द्रोदयाभवेत् ।

सलाई से नेत्रमें दोवार देय ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ मृदु अञ्जन का चूर्ण तीन बार फेरे  
 मृतादि युक्त चूर्ण चारवार देय, वैरेचन कहे जिसके लगाने से नेत्रन से, पानी  
 गिरै ( शरणाका प्रमाण ) पत्थर-वा घातु की सलाई आठ अंगुल की  
 मृदंगाकार मुख दोनों तिल समान महीन अति चिकने लेखन शलाका प्रमाण  
 लेखन सलाई तावे वा लोहेकी बनावे ॥ ६८ ॥ ७० ॥ स्नेहन अञ्जनकी सोने  
 वा चाटी की बनावे रोगण मृदुता से अंगुली बोरि नेत्रन में आजै ॥ ७१ ॥  
 ( अञ्जनसमय ) अञ्जन सन्ध्या वा प्रभातकाल-करै सहज समय न करै  
 न अनिश्चित न छण कालमें न अतिवायु में न वदरी में अञ्जन करै ॥ ७२ ॥  
 और नेत्र में काले भाग के तरे करै, ( चन्द्रोदयवर्ती ) शंखपेंदी, बहेड़े-की  
 भींगी, इड़, बैनशिन ॥ ७३ ॥ पीपरि, भिच, फूट और बच ये आठों समानभाग  
 ले चकरी के दूध में बहुत धोष्टि यथभरि ॥ ७४ ॥ मेवड़ी बीजके समान बटो  
 बनाय पानी में रगरि नेत्र में आजै जो विमिद, मांसवृद्धि, काच बिंदु, पटलरोग,  
 बर्तुः ॥ ७५ ॥ रतींधी वर्षभरकी गौर फुडी ये सब वरहोथ ( श्लुकादिकपर

पलाशपुष्पस्वरसैर्वहुशःपरिभाविता ७६ करञ्जबीजव  
 तिस्तुशुक्रादीञ्छस्त्रवल्लिखेत । समुद्रफेनसिन्धूत्थशङ्ख  
 शौण्ड्यण्डवल्कलैः ७७ शिशुबीजयुतैर्वर्तिःशुक्रादीञ्छस्त्र  
 वल्लिखेत । दन्तैर्दन्तवराहोष्ट्रगोहयाजखरोद्रवैः ७८ श  
 ङ्खमुक्ताम्भोधिफेनयुतैःसर्वैर्विचूर्णितैः । दन्तवर्तिःकृता  
 श्लक्ष्णशुक्राणांनाशिनीपरा ७९ नीलोत्पलंशिशुबीजना  
 गफेसरकन्तथा । एतत्कल्कैःकृतावर्तिरतितन्द्राविनाश  
 येत् ८० तिलपुष्पाण्यशीतिःस्युःषष्टिसङ्ख्याकणाभधे  
 त् । जातीकुसुमपञ्चाशन्मरिचानिचषोडश ८१ सूक्ष्मपि  
 ष्ट्वाम्बुनावर्तिःकृताकुसुमिकाभिधा । तिग्मिर्जुनशुक्राणां  
 नाशिनीमांसवृद्धिदत् ८२ एतस्याश्चाञ्जनेनात्राप्रोक्ता  
 सार्धहरेणुकारसाञ्जनंहरिद्रेद्वेमालतानिम्बपल्लवाः ८३

लेखनवर्ती ) डाक के फूलका रस करंज की मींगी कईबार घोटि घोटि यत्र  
 स्वरूप वर्ता बनाय पानी में रगिर नेत्रमें आजै तो फुली व मासदृद्धि आदिको  
 दूर करती है जैसे शत्रु से शुद्ध होजाती है ( पुनः ) समुद्रफेन, संधर, शङ्ख,  
 मुरगे के शण्डे का बिलका ॥ ७६ । ७७ ॥ सर्दिजन के बीज ये पांचों समान  
 भागले महीनकरि जलमें पीसि गोली वाय सुखाय पानीमें घिसि अञ्जनकरैतौ  
 शत्रुादि का कुछ काम नहीं रहता ( लेखनी दन्तवर्ती ) हाथी, घोड़ा,  
 घंराह, ऊँट, बैल, बकरा, खर इन सातोंके ॥७८॥ दात शंख, मोती व समुद्रफेन  
 इन सत्रोंका पूर्यकरि जलमें पीसि गोली वायि सुखाय पानीमें घिसि अञ्जनकरे  
 सें फुली गिरिजाती है ॥७९॥ ( तन्द्रानिवारण लेखनीवर्ती ) नीलकमल,  
 सर्दिजनबीज और नामकैसर ये तीनों सम जति महीन पानीमें पीसि गोली  
 करि सुखाय पानीमें घिसि आजै तो तंत्र दूरहो ॥ ८० ॥ ( रोपणीकुसुमवर्ती )  
 तिलपुष्प अस्सी ८० पीपरि दाना साठि ६० चमेली पुष्प ५० मिर्च १६ इन्हें  
 महीन पीसि देव भेन्डीबीज तुल्य दही बनाइये इमे कुसुमिका वर्ती दहते हैं  
 इसको आजै तो तिग्मि, अर्जुन, फुली व मासदृद्धि ये सब दूरहोयें ॥ ८१ ॥ ८२ ॥  
 इसके आजोती माता देहमेवर्तीबीज गण रशीरे ( रतौषीपर वर्ती ) रसांत

गोशकृद्रससंयुक्तावर्तिर्नक्तान्ध्यनाशिनी । धात्र्यक्षपथ्या  
 वीजानिएकद्वित्रिगुणानिच ८४ पिण्डावर्तिऽजलैः कुर्या  
 दऽजनद्विहरेणकम् । नेत्रस्त्रावंहरत्याशुवातरत्तरुजन्त  
 था ८५ तुत्यमाक्षिसिन्धूत्थसितागङ्गमनःशिलाः । गै  
 रिकोदधिकेनौचमरिचंचेतिचूर्णयेत् ८६ संयोज्यमधुना  
 कुर्यादऽजनार्थरसक्रियाम् । वर्त्मरोगार्भितिमिरकाचशुक्रा  
 पहारकम् ८७ वटक्षीरेणसंयुक्तंमुख्यःकर्पूरजंरजः । क्षिप्र  
 मऽजनतोहन्तिकुसुमंचद्विमासिकम् ८८ त्रौद्राश्वत्थालासं  
 घृष्टैर्मरिचैर्नेत्रमऽजयेत् । अतिनिद्राशमंयातितमःसूर्योद  
 यादिव ८९ ज्ञातीपुष्पंप्रवालंचमरिचंचकटुकीवचा । सैन्ध  
 वंवस्तमूत्रेणपिष्टं तन्द्राघ्नमऽजनम् ९० शिरीषबीजगोमूत्र  
 कृष्णामरिचसैन्धवेः॥ अऽजनस्यात्प्रबोधायसरसोनशिला

इल्दी, दासहल्ली, चमेनी पत्र और नींबूपत्र ये पांजी समान ॥ ८३ ॥ गोबरकेपानी  
 में गोली बनाय आजसे रतींधी नाशहोयें ( नेत्रस्त्राव पर स्नेह्यती ) आवला  
 मिगी १ भाग बहेडा मिगी २ भाग इडमिगी ३ भाग ॥ ८४ ॥ जलमें महीन  
 पीसि दो मेवड़ी पीजसम गोलीकरि पानीमें घिसि आजनेसे पानी वहना व बात  
 रक्त जन्य पीडा मिजताहै ॥ ८५ ॥ ( रसक्रिया ) हूतिया, सोनामाली, संधव,  
 मिश्री, शरप, पैनशिन, गेरु, समुद्रफेन और मिरच ये नव सम भागले सूक्ष्म पीसि ॥  
 ८६ ॥ शहद मिलाय गोली बाधि अजन करेसे पलकरोग, तिभिर, अर्भ, काच-  
 बिन्दु और कुडी ये रोग दूरहोयें ॥ ८७ ॥ ( शुक्रपर रसक्रिया ) वटदुग्ध  
 व गुडकपूर पीसि अजनकरे दोमासकी कुडी परी दूरहो ॥ ८८ ॥ ( तन्द्रापर  
 लेखनी रसक्रिया ) शहद और घोड़ेकी लारसे मरिच पिसके अजन करनेसे  
 देने तन्द्रा दृष्टो जैसे सूर्यके सदयसे अन्यकार दूर होताहै ॥ ८९ ॥ ( पुमरजन )  
 चमेनी के पुष्प मूंग, मरिच, कुटरी, वच और सैधव ये सत्र समान भागले  
 छागके घूबमें गोलीबापि रागापै तो तन्द्रा निवारणहो ॥ ९० ॥ ( सन्निपात  
 परलेखन रसक्रिया ) सिरसबीज, पीपरि, मरिच, संधव, लहसुन, मैनशिल  
 और वच ये सातों समानभागले मोघ्न में पीसि आजै तो सनिपात शस्त

व्रचैः ९१ दावीपटोलंमधुकंसनिम्बंपद्मकोत्पलम् । प्रपौ  
ण्डरीकंथैतानिपचेत्तोयेचतुर्गुणे ९२ विपाच्यपादशेषंतु  
शृनंतीत्वापुनःपचेत् । शीतेतस्मिन्मधुसितांदद्यात्पादां  
शकांतरः ९३ रसक्रियैषादाहाश्रुरक्तरोगरुजंहरेत् । र  
साञ्जनंसर्जरसोजानीपुष्पमनःशिला ९४ समुद्रफेनोल  
वणंगैरिकंमरिचानिच । एतत्समांशंमधुनापिष्ट्वाप्रक्लिन्न  
वर्तन्ति ९५ अञ्जनंक्लेदकण्डूघ्नम्पचमाषिचप्ररोहति । गुडू  
चीस्वरसःकर्षःक्षौद्रंस्यान्माषकोन्मितम् ९६ सैन्धवक्षौद्र  
तुल्यंस्यात्सर्वमेकत्रमर्दयेत् । अञ्जयेन्नयनेतेनविस्तारतिमि  
रंजयेत् । काश्चंकण्डूलिङ्गनाशंशुककृष्णगतान्गदान् ९७  
दुग्धेनकण्डूक्षौद्रेणनेत्रस्त्रावंचसर्पिषा । पुष्पंतैलेनतिमिरं  
काञ्जिकेननिशान्धताम् ९८ पुनर्नवाजयेद्दाशुभास्करस्ति

हो ॥ ९१ ॥ ( नेत्रदाहपर रसक्रिया ) दाहदी, पटोल, मुलेठी, नीर, पशास  
कमल और रचेतकमल ये सातों समभागले कूटके चौगुने पानी में फ्रायकरि ॥ ९२ ॥  
चौध्वाई रहै वज उतारि छाने फिर औटाव गादारोग जन सिराय तन मधु  
मिथी मिलाय अंजनकरै तौ नेत्र जलना, बहना, रक्तविकार व नेत्ररोग दूरहोके  
( यरुनी रोगपर रसक्रिया ) रसांत, राल, चमेली फूल, पैरिशिज ॥ ९३ ॥  
९४ ॥ समुद्रफेन, संघव, गेरू और मिरच ये आठों समानभागले शहदेके अञ्जन  
करै तौ पाकरोग बर्ध ॥ ९५ ॥ चिपचिपाहट और खाज ये सय दूरहों और पलक  
भरना न भरै फिर जमै ( तिमिररोगपर रोपणी रसक्रिया ) गुर्यका  
स्वरस कर्षभर मधु व संघव माशे माशे भर सब सूक्ष्म धीसि अंजन करै तौ  
पिद्धार्य, तिमिर, काचकिन्दु, गुजली, लिंगनाश, सक्केद कृष्ण डेले के सय रोग  
दूरहों ॥ ९६ ॥ ( अंजनांते अनोपान ) जो अञ्जन करे रानहो तौ द्य  
घसि लगाये तौ मुखली मिटै शहद में लगाये तो जल बटना दूरहो पृतपुक्त से  
फुली दूरहो तिल युक्त लगाये से तिमिररोग दूरहो कांभी में लगाये से रतौधी  
दूरहो ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ नेत्रे मूर्योदय से अंधकार दूरहो तँभे गटापुरना से अधि-  
पान सहाय से सत्र नेत्र रोग दूर होतै है ( नेत्रस्त्रावण रोपणी रसक्रिया )

मिरंयथा॥ वञ्जलदलनिष्काथोलेहीभूतस्तदञ्जनात् ६६ ने  
 त्रस्त्रांजयत्येपः मधुयुक्तो न संशयः । हिज्जलस्य फलं घृष्टा  
 पानीयेनित्यमञ्जनम् १०० चक्षुःस्त्रावोपशान्त्यर्थं कार्थमे  
 तन्महौषधम् । कतकस्य फलं घृष्ट्वा मधुनानेत्रमञ्जयेत् १३  
 षत्कपूरसहितं स्मृतं नेत्रप्रसादनम् । सर्पिः चोदं चाञ्जनं स्या  
 च्छिरोत्पातस्य शान्तये २ कृष्णसर्पवसाशङ्खः कतकाफल  
 मञ्जनम् । रसक्रियेयनचिरादन्धानां दर्शनप्रियाश्चक्षुषोः  
 त्वक्छिलाकाचैः शङ्खचन्दनगौरिकैः । द्रव्यैरञ्जनयोगोयं  
 पुष्पामादिविलेखनः ४ कणाच्छागयत्नमध्ये पक्त्वा तद्रस  
 पेयिता । अचिराद्दन्तिनक्तान्ध्यं तद्वत्सञ्चोद्रयुषणम् ५ शा  
 णार्द्धं मरिचं द्वौ च पिप्पल्यर्णवफेनयोः । शणाद्धै सैन्धवं शा  
 णानवसौवीरकांजनात् ६ पिष्टं सुसूक्ष्मं चित्राद्यांचूर्णांजनमि

घूरपत्रका काय प्रतिगाढाभये ॥ ६६ ॥ शब्द मिलाय आंजै तौ निरचय नेत्र  
 से पानी बहना दूरहो ( पुनर्नेत्रस्त्राव पर ) निर्मली फल पानी में रगरि  
 लगावै तौ नेत्रसे पानी बहना बन्दहोय ॥ १०० ॥ ( नेत्रशुद्ध होने के अर्थ  
 स्नेहनी रसक्रिया ) निर्मली शब्दमें यसि किंचित् कपूर मिलाय आंजै तौ  
 नेत्र अरोग होयें ॥ १ ॥ ( शिरोत्पातपर रसक्रिया ) घृत व शब्द मिलाय  
 अंजनकरै तौ शिरोत्पातरोग दूर होयें ॥ २ ॥ ( भ्रूषपर रसक्रिया ) काले  
 सापकी चरबी, शंख और निर्मली ये सब सरलकरि आंजै तौ अंधियारा दिराई  
 देना दूरहोकर साफ दिराई देय ॥ ३ ॥ ( लेखनचूर्ण अञ्जन ) मुर्गेके अण्डे  
 का बिल्ला सफेद कांथ, शंख, चन्दन, गेरू व सैन्धव मे चरों समान अञ्जन  
 करि आंजने से फुली मांसामादि नाशहो ॥ ४ ॥ ( रतौषी पर चूर्ण ) छात्र  
 की करेजीपर पीपरि घरि पकाय पीपरि ले उसी मांसके रसमें रगरि आंजै चा  
 सोठि, मिर्च और पीपरि को शब्द में यिसि आंजै तौ रतौषी न रहै ॥ ५ ॥  
 ( फण्डादि पर ) मरिच अर्द्धशाण, पीपरि व समुद्रफेन दोदो शाय सुरमा  
 नव शाण ॥ ६ ॥ ये सब द्रव्य चित्रा नक्षत्रमे ले महीन सुरमा घनाय नेत्रों में  
 धारने से भावि रज्जुआना, कान्ताइन्दु, कफत्रय पीडा व गल इनमे नेत्रको

दंशुभमाकण्डूकाचकफार्तानांमलानांचविशोधनम् ७ शि  
 लायारसकंपिष्टासम्यगाह्लाव्यवारिणा । गृह्णीयात्तज्जलंस  
 र्वेत्यजेच्चूर्णमधोगतम् ८ शुष्कंचतज्जलंसर्वपर्पटीसन्निभं  
 भवेत् । विचूर्ण्यभावयेत्सम्यक्त्रिवेलंत्रिफलारसैः ९ कर्पूर  
 स्थरजस्तत्रदशमांशेननिक्षिपेत् । अजयेन्नयनेतेनसर्वदौ  
 षहरंहितम् १० सर्वरोगहरंचूर्णंचक्षुषोःसुखकारिच । अ-  
 ग्निनतप्तंचसौवीरंनिषिञ्चेत्त्रिफलारसैः ११ सप्तवेलंतथा  
 स्तन्यैः स्त्रीणांसिक्लविचूर्णितम् । अजयेन्नयनेतेनप्रत्यहं  
 चक्षुषोर्हितम् १२ सर्वानक्षिविकारांस्तुह्न्यादेतन्नसंशयः ।  
 गतदोषमपेताश्रुसंपश्येत्सम्यगाशुतम् १३ त्रिफलाभृङ्ग  
 शुण्ठीनारसैस्तद्वच्चसर्पिषा । गोमूत्रमध्वजाक्षीरैःसिक्तोना  
 गःप्रतापितः १४ तच्छलाकाहरत्येवसर्वाशेत्रभवान्गदा  
 न् । गतदोषमपेताश्रुसंपश्यन्सम्यगम्भसि १५ प्रक्षाल्या  
 क्षियथादोषकार्यप्रत्यञ्जनंततः । नवानिर्गतदोषेक्षिणधा

शुद्ध करे ॥ ७ ॥ ( सर्व नेत्ररोगपर स्रुदुचूर्णांजन ) खपरियाले अति  
 महीन खरलकरि वासन में पानी भरि घोलि थेंगेइले पानी निकारि पात्रमें भरि  
 आंच में जरपकै खुरचि लेय सो खरल में ढारि त्रिफलाकापकी तीनभागना  
 देय ॥ ८ ॥ ९ ॥ तब उसका दशवा अंश कपूर भिलाय फिर घोटै सो नेत्र में  
 ध्राजे से सत्र रोग दूरहों ॥ १० ॥ नेत्र सुत पावै ( सर्वाक्षिरोगपर सौवीर  
 अंजन ) सुरमा सातवार खरल करि करि तपाय त्रिफलाकाथ में बुझाय ॥  
 ११ ॥ वैसेही सातवार स्त्री के दूध में बुझाय अतिमहीन पिसाय नेत्राजन  
 करेसे सत्र नेत्ररोग दूरहोय यह नेत्रको निःसंदेह हितकारकहै ॥ १२ ॥ १३ ॥  
 ( सीसशलाका विधान ), त्रिफलाकाय, भंगरारस व सौंठिकाथ इनकी  
 पुट दिया सीसा गलाय गलाय धी, गोमूत्र, शहद, जगरीदूध सबनमें सातसात  
 वार बुझाय ॥ १४ ॥ शलाई बनाय नेत्रमें फेरसे सबरोग दूरहों इसलिये आर  
 अंजनादि भी इससे लगाना भला है ॥ १५ ॥ ( प्रत्यंजनधिधि ) जन, सीस-  
 शलाका फेरने से टोप दूरहोके नेत्रसे आंशु गिरते हैं तिसके पीछे शीतल बड़े

वनसम्प्रयोजयेत् १६ प्रत्यञ्जनंतीक्ष्णतप्तेनेत्रेचूर्णः प्रसा-  
दनः । शुद्धेनागेद्रुतेतुल्यं शुद्धं सूतं विनिक्षिपेत् १७ कृष्णा  
ञ्जनंतयोस्तुल्यं सर्वमेकत्र चूर्णयेत् । दशमांशेन कर्पूरं तस्मिन्  
श्चूर्णं प्रदापयेत् १८ एतत्प्रत्यञ्जनं नेत्रगदजिन्नयनामृ-  
तम् । जयपालस्य मञ्जानं भावयेन्निम्बुकद्रवैः १९ एक  
विंशतिवेलंतत्ततो घृतिं प्रकल्पयेत् । मनुष्यलालया घृष्ट्वा त-  
तो नेत्रे तयाञ्जयेत् २० सर्पदंष्ट्रविषं जित्वा सञ्जीवयति मान-  
वम् । भुक्त्वा पाणितलं घृष्ट्वा चक्षुषोर्यदि दीयते । जातरोगा वि-  
नश्यन्ति तिभिराणितथैव च २१ शीताम्बुपूरितमुखः प्रति  
वासरं यः कालत्रयेण न च नं द्विनयं जलेन । आसिञ्चति ध्रुवम-  
सौ न कदाचिदक्षिरोगव्यथा विधुरतां भजते मनुष्यः २२ आ-  
युर्वेदसमुद्रस्य गूढार्थमणिसञ्चयम् । ज्ञात्वा कौशिकद्वयुधै-

पानमें जलभरि शिखोरि उस पानी में आंखि सोलि देखे फिर नेत्रघोष प्रत्यं-  
जन लगावे सो आगेकरेगे ॥ १६ ॥ ( सदोपनेत्रपर निषेध ) जिस नेत्रमें  
दोषकी हे तो नेत्र धुआवे क्योंकि तीक्ष्णयंजन कर नेत्र सन्तप्तहो तिससे प्रत्यं-  
जन प्रसाधनकरे सो कहते हैं ( प्रत्यञ्जन चूर्ण ) शुद्ध सीसागलाय समभाग  
शुद्ध पारादे ॥ १७ ॥ तब दो भाग सुरमादे उतारिले सब खरलकरि दशवां  
अंश कपूर दे फिर छेटे ॥ १८ ॥ इसे प्रत्यंजन बहते हैं इससे सम्पूर्ण नेत्ररोग  
नाश हेतु हैं और यह आंखिको धमृत है ( सर्पविषनिवारण अञ्जन )  
भीतररा अक्षुर दूर किया जमालगोटा नीरूरस में इकीस पुटदे छोटि गोली  
यनाय मनुष्यकी लारसे जिस सर्प दसे की आंखिमें झरै ॥ १९ ॥ २० ॥ ती  
विष शान्तहो मनुष्य जिसे भोजन करके हाथ में पसै और नेत्रों में लगावे तो  
नेत्रों के तिभिरादि रोग नाश होयें ॥ २१ ॥ ( क्षीनलज्जल प्रकार ) जो  
मनुष्य नित्यप्रति धीन बेला सीतल जल से छुले कियाकरे व सुप्त घोषा करे  
और नेत्रों को छीटेदेके सींचाकरे तब पानमें भरि नेत्र उन्मीलन किया करे उस  
मनुष्य को नेत्रबाधा कभी न होय ॥ २२ ॥ ( अथ ग्रन्थप्रसोसा ) आयुर्वे-  
दायुद्ध के विषय गूढार्थकी मणि संचित है तिनको अरिषनीफुमार व अग्नि-

स्तैस्तुकृताविविधसंहिताः २३ किञ्चिदर्थततोनीत्वाकृते  
 यंसंहितामया । कृपाकटाक्षविक्षेपमस्यांकुर्वन्तुसाधवः  
 २४ विविधगंदातिदरिद्रनाशनंयाहरिरमणीवकरोतियो  
 गरत्नैः । विलसतुशार्ङ्गधरस्यसंहितासाकविहृदयेषुसरो  
 जनिर्मलेषु २५ अल्पायुषामल्पधियामिदानींकृतंसमस्तं  
 श्रुतिपाठशक्ति । तदत्रयुक्तम्प्रतिबीजमात्रमभ्यस्यतामा  
 त्महितंप्रयत्नात् २६ इति त्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥ इति  
 तृतीयःखण्डः ॥

वेदादिक मुनियोंने सम्यक्प्रकार स्यसंहिता शुद्धकरि राखा ॥ २३ ॥ किञ्चिन्  
 सारांश ले शार्ङ्गधर ने सञ्चय करी इसे साधुजन कृपाकरि देंतें ॥ २४ ॥ ( अ-  
 न्यपाठफलम् ) जिन वैद्य कथिनके निर्मल हृदयकमल में कायादि योगरत्न  
 विलास करें ते शार्ङ्गधरसंहिता लक्ष्मी इय धारण करें हैं कैसी लक्ष्मी है कि रोग-  
 प्रसित दरिद्रनके दरिद्रको नाश करती है ॥ २५ ॥ इस कलियुगने मनुष्यों की  
 आयु और बुद्धिको अल्प करदिया इस कारण आयुर्वेद पढ़ने की शक्ति नहीं  
 इससे आत्मरक्षणार्थ इस आयुर्वेद बीजमात्र में अभ्यास करें ॥ २६ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरमुयाकरेउत्तरखण्डेजयपालकृतेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

इति शार्ङ्गधरस्यतृतीयखण्डस्तमाप्तः ॥

२०२५५

( समाप्तोयंग्रन्थः )